'The fullest [account] we have had of the attack on the Taj' *New York Times*

ADRIAN LEVY &
CATHY SCOTT-CLARK

# THE SIEGE

## THE ATTACK ON THE TAJ

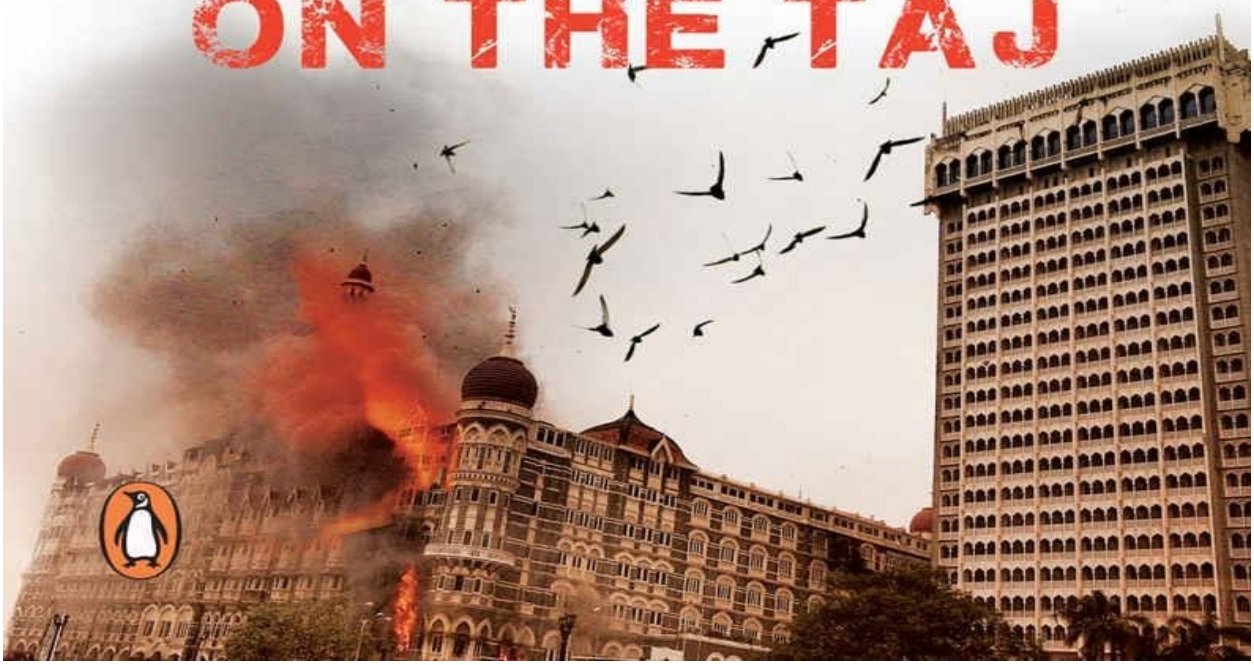

एड्रियान लेवी और कैथी स्कॉट -क्लार्क

# घेराबंदी

## ताज महल पर हमला

अंतर्वस्तु

लेखक के बारे में

पुस्तक की प्रशंसा

समर्पण

नाटक के पात्र

एमएपीएस

प्रस्तावना

1. जादू घर (जादू का घर)

2. राजकुमार डेविड

3. आप पर शांति हो।

4. एक बकरी, एक चाकू और एक माचिस की डिब्बी

5. मेमने और मुर्गियाँ

6. आग की सुरंग

7. गहरी रात

8. मृत्यु की छाया

9. [illegible]

10. [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

पेंगुइन बुक्स
घेराबंदी

कैथी स्कॉट-क्लार्क और एड्रियन लेवी चार पुस्तकों के लेखक हैं, जिनमें प्रशंसित पुस्तक "द मीडो: कश्मीर 1995—वेयर द टेरर बिगन" भी शामिल है। सोलह वर्षों तक उन्होंने संडे टाइम्स और द गार्जियन के लिए विदेशी संवाददाता और खोजी पत्रकार के रूप में काम किया। उन्हें 2004 में 'फॉरेन कॉरेस्पोंडेंट ऑफ द ईयर' का खिताब मिला। 2009 में वन वर्ल्ड ट्रस्ट ने उन्हें 'ब्रिटिश जर्नलिस्ट ऑफ द ईयर' नामित किया। वे वृत्तचित्रों के सह-निर्माता हैं, जिनमें से एक "कश्मीर टॉर्चर ट्रेल" है, जिसे 2013 में एमनेस्टी इंटरनेशनल मीडिया पुरस्कार मिला था। वर्तमान में, वे दक्षिण एशिया में कई नई परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं।

पुस्तक की प्रशंसा

‘एक बेहद दिलचस्प वृत्तांत’—द हिंदू

‘षड्यंत्र, सुनियोजित हत्या, वीरता और व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्षति की पीड़ादायक यादों को समेटे हुए एक उत्कृष्ट रिपोर्टिंग कृति’—टेलीग्राफ

हाल के समय के सबसे भयावह आतंकवादी हमलों में से एक का प्रत्यक्ष अनुभव [और] आतंकवाद, खुफिया जानकारी और भू-राजनीतिक नेटवर्क की गहरी समझ... आधुनिक आतंकवाद की भयावहता के जीवंत चित्रण के लिए यादगार है। - मिंट

‘एक बेहद गहन और रोमांचक वृत्तांत’—बिजनेस स्टैंडर्ड

‘द सीज ने खोजी लेखन में नए मानदंड स्थापित किए’—डीएनए

‘चल रहे युद्ध का एक महत्वपूर्ण समकालीन दस्तावेज होने के साथ-साथ एक चेतावनी भरी कहानी भी है।. . . महाद्वीप में चल रहा यह क्रूर युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है—यह तो अभी शुरू ही हुआ है’—एशियन एज

‘लेवी और स्कॉट-क्लार्क... लगभग फोरेंसिक जांच कौशल और हमारे समय के भूले हुए रहस्यों को उजागर करने की एक मजबूत प्रतिष्ठा लेकर आते हैं’—कारवां

‘कहा जाता है कि टीवी के दृश्य प्रभाव को कोई मात नहीं दे सकता, लेकिन यहाँ की सशक्त लेखन शैली इसे गलत साबित करती है’—टाइम आउट ‘रहस्योद्घाटन करने वाला... एक दिल को छू लेने वाला मानवीय नाटक। आधुनिक युद्ध की एक असाधारण घटना का अंतर्दृष्टिपूर्ण और नाटकीय वर्णन’—पब्लिशर्स वीकली

‘यह एक बेहतरीन ढंग से रची गई रोमांचक कहानी की तरह लगती है, जो और भी दिल दहला देने वाली इसलिए है क्योंकि यह वास्तव में घटी थी।. . . एक सावधानीपूर्वक और दिल को छू लेने वाला पुनर्निर्माण’—डेली बीस्ट

‘□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□’—□□□□ □□□□□,
‘□□□□□□ □□□□ □□□□’ □□ □□□□

ज़ेड और अवा के लिए

नाटक के पात्र

अतिथि/भोजन करने वाले

विल पाइक और केली डॉयल - लंदन के रहने वाले विल (अट्ठाईस वर्ष) और केली (तीस वर्ष) गोवा में दो सप्ताह की छुट्टियां बिताकर लौटे थे। उन्होंने ताज होटल में एक रात रुकने का फैसला किया और 26 नवंबर 2008 की दोपहर को चेक-इन किया। उन्हें अगली सुबह घर लौटना था। विल की यह भारत की पहली यात्रा थी।

एंड्रियास लिवेरस - तिहत्तर वर्षीय अरबपति एंड्रियास ने युवावस्था में अपने गृह देश साइप्रस से लंदन आकर बेकरी व्यवसाय में अपनी संपत्ति अर्जित की। संडे टाइम्स की धनी व्यक्तियों की सूची में 265 वें स्थान पर रहे एंड्रियास की अनुमानित संपत्ति 315 मिलियन पाउंड है और वे आलीशान नौकाओं के भी मालिक हैं। नवंबर 2008 में वे अपने मित्र निक एडमिस्टन और अपने भारतीय क्रूज निदेशक रमेश चेरुवोथ के साथ उपमहाद्वीप में एक नया नौका चार्टर व्यवसाय शुरू करने के लिए भारत में थे।

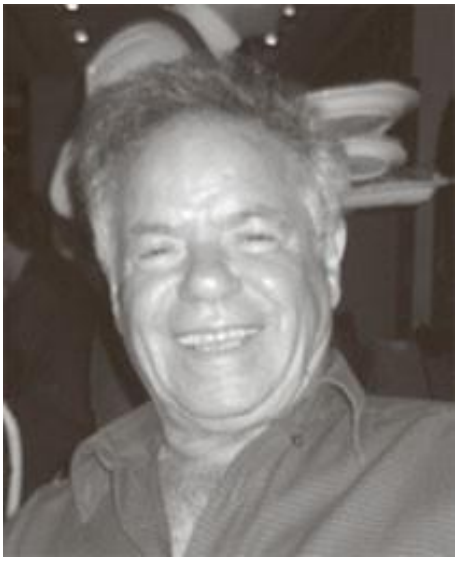

सबीना सहगल सैकिया, पैंतालीस वर्ष की उम्र में, एक प्रखर भोजन प्रेमी और रेस्तरां समीक्षक, टीवी हस्ती और पत्रकार थीं। वह अपने पति शांतनु और बच्चों, चौदह वर्षीय अरुंधति और ग्यारह वर्षीय अनिरुद्ध के साथ नई दिल्ली में रहती थीं। वह ताज होटल के एक नए आउटलेट की समीक्षा करने और एक प्रतिष्ठित शादी में शामिल होने के लिए मुंबई आई थीं।

ब्रिटिश मूल के 44 वर्षीय सुरक्षा विशेषज्ञ बॉब निकोल्स दक्षिण अफ्रीका में स्थित एक वीआईपी सुरक्षा कंपनी चलाते थे। आगामी चैंपियंस लीग ट्वेंटी20 के लिए सुरक्षा प्रदान करने का अनुबंध जीतने के बाद, वे नवंबर 2008 में अपने छह सहयोगियों - फैसुल नागल, रूबेन नीकेर्क, रीगन वाल्टर्स, जुनैद वाडी, चार्ल्स शिफर और ज़ेन विल्मन्स के साथ मुंबई आए।

रवि धर्निधारका - अमेरिकी मरीन में एक कप्तान, 31 वर्षीय रवि ने पिछले चार साल इराक में लड़ाकू अभियानों में बिताए थे, जिसमें नवंबर और दिसंबर 2004 में फालुजा की खूनी लड़ाई भी शामिल थी। वह अपने परिवार के भारतीय पक्ष से फिर से जुड़ने के लिए एक दशक से अधिक समय में पहली बार मुंबई आए थे।

माइक और अंजली पोलैक - न्यूयॉर्क में रहने वाले बत्तीस वर्षीय माइक पोलैक, जो सार्वजनिक इक्विटी निवेश फर्म ग्लेनहिल कैपिटल में प्रबंध भागीदार हैं, अपनी भारतीय पत्नी अंजली (तैंतीस वर्षीय) के साथ उनके माता-पिता से मिलने मुंबई आए थे। हमले की रात वे अपने दोस्तों के साथ होटल में रात का खाना खाने वाले थे और अपने दो छोटे बेटों को अंजली के माता-पिता के पास छोड़कर आए थे।

अमित और वर्षा थडानी - मुंबई के कपड़ा और रेस्तरां साम्राज्य के उत्तराधिकारी अमित (बत्तीस वर्षीय) ने हमलों की रात क्रिस्टल रूम में अपनी शादी का रिसेप्शन बुक किया था। उन्होंने और उनकी नवविवाहित पत्नी वर्षा (तीस वर्षीय) ने, जिन्होंने एक दिन पहले ही धार्मिक प्रतिज्ञा ली थी, 500 मेहमानों को आमंत्रित किया था।

भीष्म मनसुखानी, टाइम आउट इंडिया के प्रकाशक, पैप्रिका मीडिया में सहायक संपादक थे और खाद्य एवं पेय पदार्थों के विशेषज्ञ थे। तीस वर्ष की आयु में, भीष्म अपने स्कूली मित्र अमित थडानी के विवाह समारोह में शामिल होने के लिए ताज होटल में आए थे।

कुट्टलम राजगोपालन राममूर्ति तमिलनाडु के रहने वाले 69 वर्षीय बैंकिंग अधिकारी थे, जिन्हें उनके दोस्त राम के नाम से जानते थे। वे 26 नवंबर को व्यापारिक यात्रा पर मुंबई आए थे और दोपहर के भोजन के बाद होटल में चेक-इन किया था। उन्होंने शहर के बाहरी इलाके में अपने भतीजे के साथ रहने का प्रस्ताव ठुकरा दिया था।

लाइन क्रिस्टिन वोल्डबेक - नॉर्वे की एक मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव, अपने बॉयफ्रेंड, लैंडस्केप आर्किटेक्ट आर्ने स्ट्रॉमे के साथ भारत में एक महीने की छुट्टियां मनाने आई थीं। लाइन और आर्ने दोनों को फोटोग्राफी और यात्रा का बहुत शौक था और यह उनकी भारत की चौथी यात्रा थी। वे 26 नवंबर की सुबह गुजरात से मुंबई पहुंचे और अगले दिन उन्हें दिल्ली के लिए उड़ान भरनी थी।

कर्मचारी

39 वर्षीय कराम्बिर कांग ताज होटल के महाप्रबंधक और उपाध्यक्ष हैं। उन्होंने स्नातक होने के बाद से ही इस होटल श्रृंखला में काम किया है, जिसकी शुरुआत उन्होंने बिक्री विभाग से की थी। भारतीय सेना में एक सिख जनरल के पुत्र, उन्होंने एक साल पहले ही ताज होटल की बागडोर संभाली थी और अपनी पत्नी नीति और बेटों उदय (बारह वर्ष) और समर (पांच वर्ष) को छठी मंजिल के एक सुइट में स्थानांतरित कर दिया था।

पुणे के दो सामान्य चिकित्सकों के पुत्र अमित पेशावे, 27 वर्षीय अमित ने होटल में सात साल तक काम किया था, जिसकी शुरुआत उन्होंने प्रशिक्षु वेटर के रूप में की थी। हमलों से कुछ सप्ताह पहले ही उन्हें होटल के भूतल पर स्थित चौबीसों घंटे खुले रहने वाले कॉफी शॉप शामियाना का महाप्रबंधक नियुक्त किया गया था।

ताज होटल के 53 वर्षीय ग्रैंड एग्जीक्यूटिव शेफ हेमंत ओबेरॉय ने अपने पूरे करियर में टाटा समूह के लिए काम किया है। पूरे भारत में ख्यातिप्राप्त ओबेरॉय का लेखन और टीवी जगत में शानदार करियर रहा है और उन्होंने कई रेस्तरां श्रृंखलाओं को प्रेरित किया है, साथ ही ताज के अधिकांश रेस्तरां को उन्होंने व्यक्तिगत रूप से डिजाइन भी किया है।

फ्लोरेंस और फॉस्टीन मार्टिस – सैंतालीस वर्षीय फॉस्टीन मार्टिस, होटल की पहली मंजिल पर स्थित सी लाउंज नामक चायघर के मुख्य वेटर थे और ताज होटल में दो दशकों से अधिक समय से कार्यरत थे। मूल रूप से केरल के रहने वाले, वे अपनी पत्नी प्रिसिला और बच्चों, इक्कीस वर्षीय फ्लोरेंस और सोलह वर्षीय फ्लॉयड के साथ मुंबई के उत्तर-पूर्व में स्थित ठाणे में रहते थे। हमलों से दो महीने पहले उन्होंने अपनी बेटी के लिए होटल में डेटा सेंटर में प्रशिक्षु कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में नौकरी दिलवाई थी।

सुरक्षा सेवाएं

विश्वास नांगरे पाटिल को जून 2008 में जोन 1 का पुलिस उपायुक्त नियुक्त किया गया था, जिससे उन्हें मुंबई के अधिकांश पांच सितारा होटलों और प्रमुख पर्यटन स्थलों के अधिकार क्षेत्र में आने का अधिकार मिला। दक्षिणी महाराष्ट्र के एक गांव में पले-बढ़े बत्तीस वर्षीय पाटिल 1997 में पुलिस में शामिल हुए और तेजी से तरक्की करते हुए राज्य के दूसरे सबसे बड़े शहर पुणे में अवैध पार्टियों पर नकेल कसकर अपनी पहचान बनाई।

राजवर्धन सिन्हा - विशेष शाखा 2 के पुलिस उपायुक्त, राजवर्धन शहर में विदेशियों की निगरानी के लिए जिम्मेदार थे। बिहार में जन्मे, वे पूर्वी महाराष्ट्र में सक्रिय नक्सली गुटों के खिलाफ जंगल युद्ध के अनुभवी थे और विश्वास पाटिल के सहपाठी थे, जिसका अर्थ है कि उन्होंने एक साथ प्रशिक्षण लिया था।

राकेश मारिया - मुंबई के क्राइम ब्रांच के दिग्गज प्रमुख, संयुक्त पुलिस आयुक्त मारिया, जिनकी उम्र 51 वर्ष थी, ने 1993 में शहर को हिला देने वाले सिलसिलेवार बम धमाकों के दोषियों को पकड़ने में अपना नाम कमाया। उन्होंने इस मामले को कैसे सुलझाया, इसकी कहानी पर बाद में बॉलीवुड फिल्म 'ब्लैक फ्राइडे' बनी। मारिया, जिनके पिता एक बॉलीवुड निर्माता थे, सुकेतु मेहता की यादगार गैर-काल्पनिक रचना 'बॉम्बे मैक्सिमम सिटी' में एक प्रमुख किरदार थे, जिसमें उन्होंने पुलिस प्रमुख अजय लाल के छद्म नाम से अभिनय किया था।

हसन गफूर - मुंबई के पुलिस आयुक्त, 58 वर्षीय गफूर, मुंबई में इस पद को संभालने वाले दूसरे मुस्लिम थे। हैदराबाद के एक नवाब के पुत्र, गफूर उन कई विशेषाधिकार प्राप्त अधिकारियों में से थे जिनका मुंबई पुलिस बल के उच्च पदों पर दबदबा था।

देवेन भारती - अतिरिक्त पुलिस आयुक्त। भारती क्राइम ब्रांच में राकेश मारिया के अधीन दूसरे नंबर के अधिकारी थे। वे पूर्वी महाराष्ट्र के नक्सलवादी विद्रोह के भी अनुभवी थे।

गोविंद सिंह सिसोदिया - ब्रिगेडियर, राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के उप महानिरीक्षक, जो भारत का विशेष आतंकवाद-विरोधी बल है। देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी, जो उपमहाद्वीप का प्रतिष्ठित अधिकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय है, में प्रवेश लेने के बाद, सिसोदिया ने 1975 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और 16 सिख रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त किया।

आतंकवादियों

डेविड हेडली का जन्म 1960 में वाशिंगटन डीसी में दाऊद सलीम गिलानी के नाम से हुआ था। उनके पिता एक प्रसिद्ध पाकिस्तानी प्रसारक थे और उनकी माता एक अमेरिकी उत्तराधिकारी थीं। उनका पालन-पोषण पाकिस्तान में हुआ, लेकिन सोलह वर्ष की आयु में वे वापस अमेरिका लौट आए। अस्सी के दशक में उन्हें मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया गया और वे ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन (डीएनए) के लिए एक गुप्त एजेंट बन गए। अपना नाम बदलकर डेविड हेडली रखने के बाद, वे पाकिस्तानी मिलिशिया लश्कर-ए-तैबा में शामिल हो गए और मुंबई हमलों की योजना बनाने और उसे अंजाम देने में मदद की। इस दौरान उन्होंने अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के लिए भी काम किया और लश्कर के मुंबई हमलों की मंशा के बारे में जानकारी साझा की।

अजमल कसाब का जन्म 1987 में पाकिस्तान के पूर्वी पंजाब के फरीदकोट गांव में एक गरीब परिवार में हुआ था। वह मुंबई हमलों के लिए लश्कर-ए-तैबा द्वारा भर्ती और प्रशिक्षित किए गए दस युवकों में से एक था। उसे धार्मिक

शिक्षा और लगभग एक वर्ष का शारीरिक प्रशिक्षण दिया गया, जिसके बाद नवंबर 2008 में उसे भारत भेजा गया।

लश्कर-ए-तैयबा - एक पाकिस्तानी मिलिशिया जिसका गठन 1990 में लड़ने के लिए किया गया था
भारतीय प्रशासित कश्मीर। लश्कर, जिसे पाकिस्तान की अंतर-सेवा खुफिया निदेशालय द्वारा वित्त पोषित और हथियारबंद किया जाता था, की गतिविधियाँ उच्च प्रशिक्षित फिदायीन (गुरिल्ला) इकाइयों को भारतीय सैनिकों से जान की बाजी लगाकर लड़ने के लिए भेजने पर केंद्रित थीं।

हाफ़िज़ सईद, लश्कर-ए-तैबा की मूल संस्था जमात-उद-दावा के अमीर (आध्यात्मिक नेता) थे। पंजाब में जन्मे सईद, मुंबई हमलों के समय अठ्ठावन वर्ष के थे। वे लाहौर में इस्लामी अध्ययन के व्याख्याता थे, जब तक कि अस्सी के दशक में वे सऊदी अरब नहीं चले गए और अफ़गानिस्तान में सोवियत संघ से लड़ रहे मुजाहिदीनों का सक्रिय रूप से समर्थन करने लगे। पाकिस्तान लौटने के तुरंत बाद उन्होंने अहले हदीस संप्रदाय पर आधारित एक इस्लामी आंदोलन की स्थापना की। इसी आंदोलन के परिणामस्वरूप 1990 में लश्कर-ए-तैबा की स्थापना हुई।

ज़की-उर-रहमान लखवी, लश्कर-ए-तैबा के अमीर और सह-संस्थापक, जिन्हें लश्कर के सभी रंगरूट चाचा ज़की के नाम से जानते थे, का जन्म ओकारा में हुआ था, जो पूर्वी पंजाब का वही ज़िला है जहाँ अजमल कसाब का जन्म हुआ था। अस्सी के दशक में उन्होंने अफ़गानिस्तान में सोवियत संघ से लड़ने के लिए अपनी पढ़ाई

छोड़ दी थी। वे लश्कर के प्रमुख सैन्य कमांडर थे और भारतीय जांचकर्ताओं ने उन्हें मुंबई ऑपरेशन का मास्टरमाइंड बताया था।

# [illegible]

## [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

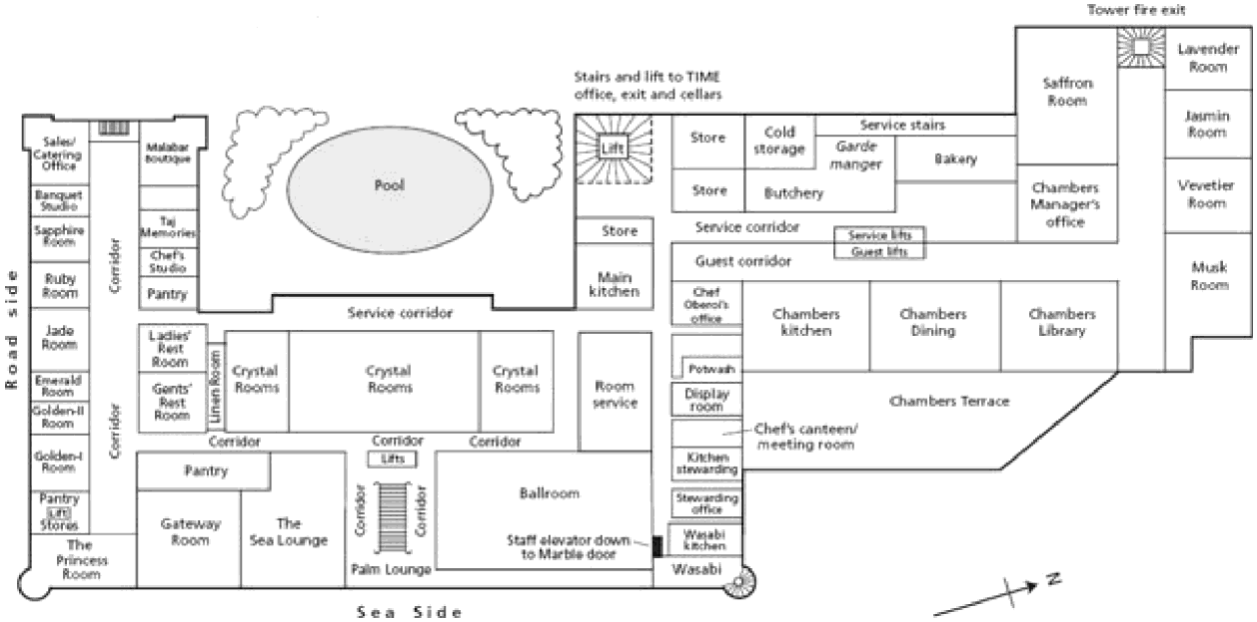
Tower fire exit
Lavender Room
Saffron Room
Jasmin Room
Vevetier Room
Musk Room
Stairs and lift to TIME office, exit and cellars
Lift
Store
Cold storage
Service stairs
Garde manger
Bakery
Store
Butchery
Chambers Manager's office
Service corridor
Service lifts
Guest lifts
Guest corridor
Store
Main kitchen
Pool
Sales/ Catering Office
Malabar Boutique
Banquet Studio
Taj Memories
Sapphire Room
Chef's Studio
Ruby Room
Pantry
Corridor
Service corridor
Jade Room
Ladies' Rest Room
Emerald Room
Gents' Rest Room
Linen Room
Crystal Rooms
Crystal Rooms
Crystal Rooms
Room service
Golden-II Room
Corridor
Corridor
Corridor
Golden-I Room
Lifts
Pantry
Pantry
Lift
Stores
Gateway Room
The Sea Lounge
Corridor
Corridor
Palm Lounge
Ballroom
Staff elevator down to Marble door
The Princess Room
Chef Oberoi's office
Chambers kitchen
Chambers Dining
Chambers Library
Potwash
Display room
Chef's canteen/ meeting room
Chambers Terrace
Kitchen stewarding
Stewarding office
Wasabi kitchen
Wasabi
Road side
Sea Side
N

## [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

First floor

## [illegible] [illegible] +[illegible] [illegible]

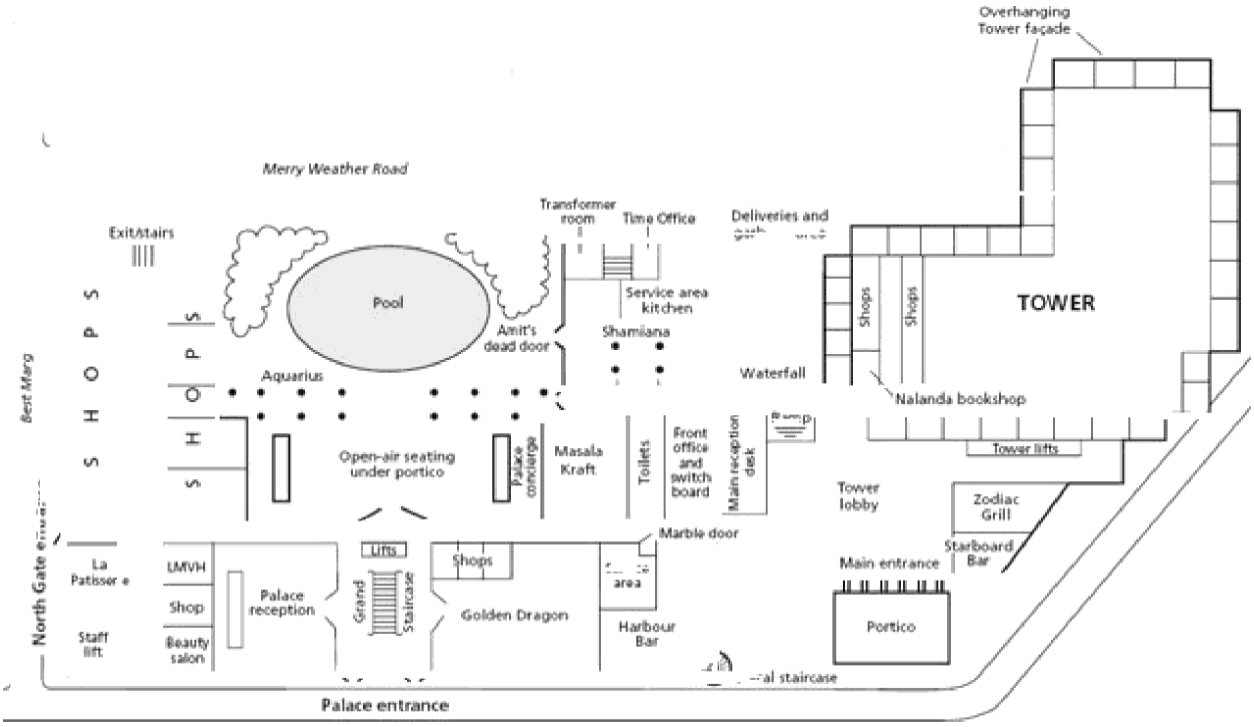
Overhanging Tower façade
Merry Weather Road
Exit/Stairs
Transformer room
Time Office
Deliveries and
Pool
Service area kitchen
Amit's dead door
Shamiana
TOWER
Shops
Shops
Waterfall
Aquarius
Nalanda bookshop
Best Marg
S H O P S
Open-air seating under portico
Palace concierge
Masala Kraft
Toilets
Front office and switch board
Main reception desk
Pump
Tower lifts
Tower lobby
Zodiac Grill
Starboard Bar
Marble door
Main entrance
La Patisser e
LMVH
Shop
Beauty salon
Palace reception
Lifts
Grand Staircase
Shops
Golden Dragon
area
Harbour Bar
Portico
Staff lift
North Gate
al staircase
Palace entrance

N
Mahalaxmi racecourse
Arthur Road Jail
To Chhatrapati Airport and Vile Parle
Wellington Sports Club
Tardeo AC Market
Nair Hospital
BREACH CANDY
Jaslock Hospital
Pedder Road
MAZGAON
(taxi explosion)
MALABAR HILL
Chowpatty Beach
BANDRA
Netaji Subhash Chandra Bhose Road (Marine Drive)
Mumbai Police HQ
Crawford Market
Metro Junction
Metro cinema
SBI2
Footbridge to Rang Bhavan Lane
Cama Hospital
Back Bay
MARINE LINES
AZAD MAIDAN
Bombay Hospital
Chhatrapati Shivaji Terminus (Victoria Terminus)
Churchgate or Veer Nariman Road
Brabourne cricket stadium
Mantralaya state government complex
Trident–Oberoi Hotel
Maharashtra State Police Headquarters
Indian Navy Docks
NARIMAN POINT
Regal cinema
Royal Bombay Yacht Club
Leopold Café
Colaba Police Station
Taj Mahal Palace Hotel
The Gateway to India
Landing spot of the 26/11 attackers
APOLLO BUNDER
Front Bay or Bombay Harbour
Alysia
BADHWAR PARK
CUFFE PARADE
Chabad House
1 Merry Weather Road
2 Nowraji Ferdonji Road

'मुग़ल काल की छतों, आज रात अपनी दर्पणमय उत्तल आकृतियों से मुझे एक ही बार में कई गुना बढ़ा दो, अपने जादू के वश में कर लो।'

उसने स्वर्ग पर दया करते हुए बर्फ से आग को मुक्त कर दिया है। उसने आज रात भगवान के लिए नरक के द्वार खोल दिए हैं।

हृदय के नसों से भरे मंदिर में, सभी मूर्तियाँ चकनाचूर हो चुकी हैं। आज रात इसकी शोकगाथा सुनाने के लिए भगवा वस्त्र पहने कोई पुजारी नहीं बचा है।

हे भगवान, इन सजाओं को सीमित करो, न्याय का दिन अभी आना बाकी है – मैं तो बस एक पापी हूँ, आज रात मैं नास्तिक नहीं हूँ।

आगा शाहिद अली की ग़ज़लों की पुस्तक 'कॉल मी इस्माइल टुनाइट' में रचित 'टुनाइट' (टुनाइट)
(डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी इंक., 2003)

प्रस्तावना

बुधवार, 26 नवंबर 2008, रात 8 बजे।

अरब सागर के ऊपर चाँद की एक पतली सी किरण लटकी हुई थी, जब छोटी नाव मुंबई के बैक बे में फैली रोशनी की श्रृंखला, 'क्वीन्स नेकलेस' की ओर बढ़ रही थी। पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों का दस सदस्यीय दल खामोशी से काली लहरों पर सवार था, आउटबोर्ड मोटर की गड़गड़ाहट सुन रहा था और चीनी रकसैक पर झुका हुआ था, जिन पर अंग्रेजी लोगो छपा था: 'चेंजिंग द टाइड'। दस एके-47, दस पिस्तौल, गोला-बारूद, ग्रेनेड, विस्फोटक और टाइमर, नक्शे, पानी, बादाम और किशमिश - उन्होंने अपने दिमाग में इन सब चीजों का ब्यौरा तैयार कर लिया था। दुनिया के चौथे सबसे बड़े शहर से मुकाबला करने के लिए यह शायद ही काफी लग रहा था। उनके प्रशिक्षकों ने उन्हें भरोसा दिलाया था, 'अचानक हमला करके आप अंदर घुस सकते हैं और डर से पुलिस तितर-बितर हो जाएगी।' उन्होंने रात में उतरने का अभ्यास किया था और पूरे शहर में टैक्सी में टाइमर बम लगाने का भी अभ्यास किया था, ताकि यह भ्रम पैदा किया जा सके कि मुंबई पर सेना ने आक्रमण कर दिया है। टीम लीडर, ब्रदर इस्माइल ने लैंडिंग कोऑर्डिनेट्स से प्रोग्राम किए गए जीपीएस यूनिट को ऊपर उठा रखा था, जबकि समुद्र की लहरें उन पर उछल रही थीं और उनके धूप से झुलसे चेहरों पर चुभन पैदा कर रही थीं।
उन्होंने एक साल पहले जिहाद के लिए स्वेच्छा से भाग लिया था और उन्हें धार्मिक शिक्षा और सैन्य प्रशिक्षण दिया गया था, जिसके तहत उन्हें पाकिस्तान-प्रशासित कश्मीर के पहाड़ों पर बने गुप्त शिविरों से कराची के भीड़भाड़ वाले बंदरगाह शहर में बने सुरक्षित ठिकानों तक पहुंचाया गया था। चार दिन पहले, 22 नवंबर की सुबह, उन्होंने आखिरकार लंगर उठाया।
एक दिन खुले समुद्र में उन्होंने एक भारतीय ट्रॉलर को अगवा कर लिया, जो हर किसी के साहस की पहली परीक्षा थी। दूसरी परीक्षा अपने उन संचालकों को अलविदा कहना था, जिनसे उनका अटूट रिश्ता बन गया था, और जो समुद्र की धुंध में विलीन होकर पाकिस्तान की ओर वापस चले गए। तीसरी परीक्षा एक बंदी भारतीय कप्तान को मजबूर करना था कि वह जब्त किए गए ट्रॉलर को अजेय मुंबई की

ओर ले जाए, जो 309 समुद्री मील दूर था, इस जानकारी के साथ कि यह पहली बार था जब वे अकेले थे।
असल में वे अकेले नहीं थे। एक सैटेलाइट फोन उन्हें कराची स्थित एक नियंत्रण कक्ष से जोड़े रखता था, जो नियमित रूप से अपडेट भेजता रहता था। लेकिन ये गरीब ग्रामीण समुदायों के लड़के थे, जो ज़मीन से घिरे हुए थे, जिन्हें केवल मुर्गियों और बकरियों के बारे में ही पता था, और वे अपने ऊपर टूटते तारों को देखकर दंग रह गए थे। दूसरी रात, 24 नवंबर को, वे सभी डेक पर लेट गए और कल्पना करने लगे कि वे आकाश में समा रहे हैं, जबकि उनमें से एक ने सिंदबाद की कहानी सुनाई, जिसने अरब सागर की खोज की थी, जहाँ 'चट्टानी तट हजारों वीर जहाजों के मलबे से भरा पड़ा था, जबकि दुर्भाग्यशाली नाविकों की हड्डियाँ धूप में सफेद चमक रही थीं, और हम यह सोचकर कांप गए कि कितनी जल्दी हमारी हड्डियाँ भी उस ढेर में शामिल हो जाएँगी।'
अंततः, 26 नवंबर को जीपीएस ने मुंबई तट के पास उनके आगमन की सूचना दी और उन्होंने कराची फोन करके पता लगाया कि पकड़े गए कप्तान का क्या किया जाए। यह ज़िम्मेदारी अजमल कसाब पर आ पड़ी। वह अभी इक्कीस साल का ही हुआ था और अपनी काबिलियत साबित करने के लिए बेताब था। दो अन्य लोगों ने भारतीय नाविक को पकड़ रखा था, जबकि अजमल ने उसका गला काट दिया। खून से लथपथ होकर वे एक पीली नाव में सवार हो गए, जो उन्हें जगमगाते भारतीय शहर की ओर ले गई।
अजमल को याद आया कि उनमें से हर कोई सोच में डूबा हुआ लग रहा था। यह एकतरफा सफर था जिसका अंत उनकी मौत से होना तय था। न तो कोई हीरो बनकर लौटेगा, न ही गांव में उनकी जीत का जश्न मनाया जाएगा, और न ही स्थानीय मस्जिद में उनकी बहादुरी को अमर करने वाला कोई शहीद का पोस्टर लगेगा। न ही किसी जिहाद पत्रिका में उनकी प्रशंसा में कोई लेख छपेगा। जैसे ही वे शहर के पास पहुंचे, अजमल की मां नूर इलाही फरीदकोट में घर पर आग के पास बैठी अपने छोटे भाई-बहन के लिए भरवां पराठे तल रही थीं, रसोई की अलमारी पर गाढ़ा दही का बर्तन रखा था। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनका लाडला बेटा तेजी से पास आते विदेशी तट को घूर रहा था, और उसके दिमाग में 'निर्दयता से मार डालने' के निर्देश भरे हुए थे।
अजमल ने नवंबर 2007 में अपने हमउम्र एक और लड़के के साथ इस राह पर चलना शुरू किया था। दोनों ने मुजाहिदों की तरह एक-दूसरे के लिए अंत तक लड़ने की कसम खाई थी। लेकिन उस लड़के का परिवार था जिसने उसे वापस घर बुला लिया,

जबकि अन्य कार्यकर्ताओं को घर की याद सताने लगी और उन्हें भी उनके चिंतित पिता, भाई या चाचा लेने आ गए। मई 2008 तक, आधे भावी योद्धाओं ने अपना इरादा बदल लिया था। अजमल शिविर के द्वार पर इंतजार करता रहा, लेकिन कोई उसे लेने नहीं आया। अंत में, अकेले ही, उसने संगठन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और एक वसीयत पर हस्ताक्षर किए जिसमें उसने 'अपने क्रोध को शांत करने के लिए काफिरों की गर्दन चीर देने' की प्रतिज्ञा की।
फिर, संचालकों ने उसका बैग पैक किया और उसे नौ अन्य लोगों के साथ समुद्र में छोड़ दिया, वे सभी नए पश्चिमी कपड़े पहने हुए थे, उनके बाल छोटे थे और उनके पास नकली भारतीय पहचान पत्र थे।
रात 8:20 बजे, सूखी ज़मीन नज़र आने लगी। जैसे ही अजमल ने अपना सामान कंधे पर रखा, उसे अपने अमीर, उस मौलवी का वादा याद आया जिसने उन्हें विदा किया था और उनकी मृत्यु का आह्वान किया था: 'तुम्हारे चेहरे चाँद की तरह चमकेंगे। तुम्हारे शरीर से सुगंध निकलेगी, और तुम स्वर्ग जाओगे।' पर्यटन के केंद्र कोलाबा के पास स्थित मछुआरों की अस्त-व्यस्त झुग्गी बस्ती (किराना मकान) उस समय सुनसान थी जब वे किनारे पर उतरे। निवासी टीवी पर भारत-इंग्लैंड क्रिकेट मैच देखने में व्यस्त थे। केवल स्थानीय निवासी भरत टंडेल ने ही उन्हें चुनौती दी, जब वे सड़क की ओर भागे: 'तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?' जवाब में चिल्लाकर कहा गया: 'हम पहले से ही तंग हैं। हमें परेशान मत करो।'
एक घंटे बाद, गोलियों की गड़गड़ाहट और विस्फोटों की गूंज पूरे शहर में सुनाई दी।

1

जादू घर (House of Magic)

फॉस्टीन मार्टिस एक यादगार मृत्यु चाहते थे। लेकिन ताज होटल में दो दशकों से अधिक समय से काम कर रहे इस वरिष्ठ वेटर को अपनी चंचल, 21 वर्षीय बातूनी बेटी फ्लोरेंस से इस विषय पर बात करने का सही समय नहीं मिल पा रहा था। शहर जाते समय फ्लोरेंस को बातें करना बहुत पसंद था और आमतौर पर फॉस्टीन खुशी- खुशी सुनते थे। हाल ही में उन्होंने फ्लोरेंस को होटल में नौकरी दिलवाई थी, लेकिन अक्सर उनकी शिफ्टें मेल नहीं खाती थीं। यहां तक कि जब उनकी शिफ्टें एक ही समय पर होती थीं, तब भी उन्हें अपने आने-जाने के समय की समस्या से जूझना पड़ता था।
लगभग हर सुबह, अपने लहराते काले बालों के साथ फ्लोरेंस अपने पिता से चिपकी रहती थी, जब वह मुंबई के शोरगुल भरे उत्तर-पूर्वी उपनगरों में अपनी होंडा मोटरसाइकिल पर सवार होकर निकलते थे। बाइक पार्क करके वे ठाणे रेलवे स्टेशन और सेंट्रल लाइन की भीड़ में उतर जाते थे। वह एक घंटे तक फिल्मी प्रेम गीत गुनगुनाती बैठी रहती थी, जबकि उसके पिता दूसरे यात्रियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहते थे, जैसे टिफिन में पराठे एक के ऊपर एक रखे हों।
भारत के सबसे व्यस्त स्टेशनों में से एक, छत्रपति शिवाजी टर्मिनस पर, उन्होंने पुरानी विक्टोरियन रेलवे घड़ी के नीचे अपनी घड़ियाँ देखने के लिए कुछ पल रुके, फिर भीड़भाड़ वाले कॉनकोर्स से होते हुए कोलाबा जाने वाली बस पकड़ी। रीगल सिनेमा के पास उतरकर, क्रिकेट अंपायर की तरह चौड़ी टोपी पहने फॉस्टीन और पतली काया वाली, लंबी और चुलबुली फ्लोरेंस, किसी जलपक्षी की तरह, केवल आमंत्रित लोगों के लिए बने बॉम्बे यॉट क्लब से गुज़रे, जहाँ बासी ब्रेड और लेमन केक की महक आ रही थी, और फिर मुंबई के पर्यटक केंद्र में प्रवेश किया। सामने, ताज महल एक भव्य रेत के महल की तरह खड़ा दिखाई दे रहा था।
मेरी वेदर रोड पर स्थित होटल के स्टाफ एंट्रेंस, टाइम ऑफिस में, सैंतालीस वर्षीय फॉस्टीन ने अपने स्टाफ कार्ड पर अंगूठे का निशान लगाया, जबकि उनकी बेटी, जो अभी तीन सप्ताह से प्रोबेशनरी कॉन्ट्रैक्ट पर थी, ने दीवार पर लगी पुरानी मशीन का उपयोग करके अपनी हाजिरी लगाई। अपने पिता को अलविदा कहते हुए, वह दूसरी मंजिल पर स्थित डेटा सेंटर में काम के लिए रवाना हो गई, जहाँ से ताज ग्रुप के वैश्विक सिस्टम की निगरानी की जाती थी, जबकि वह नीचे तहखाने में जाकर अपनी सफेद जैकेट और काली पतलून बदलने के बाद पहली मंजिल

पर स्थित सी लाउंज की ओर चल दिए, जहाँ मेहमान नाश्ता और हाई टी का आनंद लेते थे।
बातचीत का अगला मौका शाम को लगभग 9 बजे, सी लाउंज से सटे एक हवादार कमरे, पाम लाउंज में मिलेगा। फ्लोरेंस को अपने अवकाश के दौरान वहाँ बैठना अच्छा लगता था, जहाँ वह जगमगाते गेटवे ऑफ इंडिया के चारों ओर घूमते हनीमून मनाने वालों और पर्यटकों की भीड़ को निहारती थी, और शेफ उसे कॉफी आइसक्रीम का एक स्कूप खिलाकर खुश कर देते थे।
फॉस्टीन कई दिनों से अपनी मृत्यु के बारे में सोच रहा था, जबकि फ्लोरेंस उसकी भावुक बातों को सुनने से बचती रही। यह विचार उसकी शादी की 22 वीं सालगिरह (तांबे की सालगिरह) से ठीक पहले चरम पर पहुँच गया था, जब उसकी पत्नी प्रिसिला से शादी को 22 साल पूरे हो गए थे। अब, 26 नवंबर का दिन आ गया था और उसने अपनी पत्नी को एक नया मंगलसूत्र, पीले धागे में पिरोया हुआ सोने का झुमका और एक चमकदार सुनहरे और हरे रंग की रेशमी साड़ी भेंट करके अपनी शादी की प्रतिज्ञाओं को फिर से दोहराया था। इस अवसर पर, उसने फ्लोरेंस को सफेद रंग के जूते दिए, जिन्हें उसने तुरंत पहन लिया। फॉस्टीन ने वादा किया था कि वह उसी रात अपने सोलह वर्षीय बेटे फ्लॉयड के लिए कुछ खास लेकर आएगा। ताज होटल का संबंध फॉस्टीन के जीवन से इतने लंबे समय से था कि उन्हें याद भी नहीं था। मूल रूप से केरल के रहने वाले ईसाई फॉस्टीन ने उस समय वहां काम करना शुरू किया था जब शहर का नाम बॉम्बे था - यह नाम सोलहवीं शताब्दी के पुर्तगाली प्रवासियों ने रखा था जो इसके सुंदर बंदरगाह (बॉम्बे) की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गए थे। यह नज़ारा होटल के कई रेस्तरां और बार को रोशन करता था - और इसे सबसे अच्छे सुइट्स से देखा जा सकता था, जिनकी कीमत आजकल 5,000 पाउंड प्रति रात तक है।
फॉस्टीन ने अपने करियर की शुरुआत रूम सर्विस से की थी, उनके सिर पर भूरे बालों का घना मुकुट था। वे 1995 तक वहीं काम करते रहे, जब महाराष्ट्र की जमीनी स्तर की पार्टी शिवसेना ने शहर का नाम बदलकर मुंबई कर दिया। शिवसेना ने प्रवासियों और मुसलमानों के खिलाफ भड़काऊ भाषण देकर घोर कट्टरता को राजनीतिक हथियार बना लिया था। इसके कुछ ही समय बाद, वे वेटर बन गए और अंत में हल्के नीले रंग के 'सी लाउंज' के सर्विस कैप्टन बन गए, जो एकांत मुलाकातों का अड्डा था, जहाँ प्रेमियों के लिए एक खास कुर्सी थी। वहाँ उन्हें ग्राहक की इच्छा के अनुसार सेवा करने के लिए वेतन मिलता था। इसी

कारण जब उनका समय आया, तो वे चाहते थे कि उनकी सेवा दूसरे लोग करें, और उनके गुमनाम जीवन का जश्न शोक मनाने वालों की एक विशाल और शोरगुल भरी भीड़ द्वारा मनाया जाए। अब उन्हें बस फ्लोरेंस को मनाना था और उसे समझाना था।

मंगलवार, 25 नवंबर 2008, शाम 7 बजे – खरीद विभाग

ताज जैसे भव्य होटल किसी बोतल में बंद विशाल जहाज की तरह थे, एक ऐसी निजी दुनिया जिसमें एक बार प्रवेश करने के बाद धनी लोगों को कभी बाहर निकलने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। इसमें मूल यू-आकार का भव्य होटल पैलेस शामिल था, जो 1903 में बंदरगाह के सामने बनाया गया था, जिसमें पहले पाँच और बाद में छह मंजिलें थीं, साथ ही 1973 में जोड़ा गया एक आधुनिक टावर भी था। दक्षिण-पश्चिम फ्रांस से भागकर आए हों और क्रोस्टेड खाने का मन हो, तो पैलेस के दक्षिणी कोने में स्थित ला पैटिसरी में क्यों न जाएँ? अफगानिस्तान-पाकिस्तान से लौटकर गांधार मूर्तिकला पर कोई किताब चाहिए हो? बेलबॉय आपको टावर की लॉबी के पार नालंदा बुकशॉप तक ले जाएगा। एक कायरोप्रैक्टर हमेशा उपलब्ध रहता था, जबकि पूल के पास पिलेट्स क्लासेस होती थीं और आप अपने कमरे की गोपनीयता में डिपिलेशन और डिटॉक्सिफिकेशन करवा सकते थे। पैलेस की सबसे ऊपरी मंजिल पर, जहाँ सबसे खास सुइट्स स्थित थे, वर्दीधारी बटलर की टीमें हर इच्छा का ख्याल रखती थीं।
ताज महल बेले एपोक काल में निर्मित एक प्रतीक था, जब इसका अनूठा धूसर और सफेद बेसाल्ट का अग्रभाग पेनिनसुलर एंड ओरिएंटल लाइनर्स के डेक से दिखाई देने वाला पहला लैंडमार्क बन गया था। अलंकृत बालकनियों और खाड़ी खिड़कियों का एक अनूठा संगम, जिसके ऊपर भव्य गुलाबी गुंबद और एक केंद्रीय गुंबद था, सौ से अधिक वर्षों तक सुबह की धुंध में जगमगाता रहा और इसे मुंबई का जादू घर कहा जाता था।
पुराने समय में, जैसे ही यात्री जहाज दिखाई देते, होटल के भीतरी हिस्से में घंटी बज उठती, जो कर्मचारियों को धनी यात्रियों के उतरने की सूचना देती थी। इन यात्रियों का स्वागत 'अतिथि देवो भव' (अतिथि भगवान के समान) की भावना से किया जाता था। यह विचार होटल के संस्थापक, पारसी उद्योगपति और परोपकारी जमशेदजी टाटा का था। वे एक ऐसा होटल बनाना चाहते थे जो भविष्य की

ओर इशारा करे और उन्नीसवीं सदी के उन अंतिम वर्षों को भुला दे, जब बॉम्बे प्लेग से तबाह हो गया था। आज, फ्लोरेंस मार्टिस जैसे नए कर्मचारियों को ऐसे कार्ड दिए जाते हैं जिन्हें वे अपनी कमीज की जेब में रखते हैं और जिनमें टाटा के ऐतिहासिक मूल्यों का उल्लेख होता है।
इस पूरे आयोजन को एक सैन्य संगठन की आवश्यकता थी, जिसकी देखरेख ग्रैंड एक्जीक्यूटिव शेफ हेमंत ओबेरॉय कर रहे थे, जिन्हें उनके कर्मचारी पर्दे के देवता के रूप में वर्णित करते थे। छोटे कद के, थोड़े मोटे और शांत स्वभाव के, सफ़ेद-काली मूंछों और ऊंचे माथे वाले ओबेरॉय, जो रसोई की पूरी रफ्तार में काम करते समय चमक उठते थे, अपने साम्राज्य पर एक छोटी सी कोठरी से शासन करते थे, जिसे वे अपना अड्डा (पवित्र स्थान) कहते थे। यह कोठरी दो दर्जन से अधिक गणेश प्रतिमाओं, झंडों और दुनिया भर के प्रमुख शेफों के प्रशस्ति पत्रों से भरी हुई थी। यह महल और टावर के बीच स्थित पहली मंजिल के सेवा क्षेत्र के मध्य में थी, और दीवार पर एक सिरेमिक टाइल लगी थी: 'हे प्रभु, मेरी इस छोटी रसोई को आशीर्वाद दें, और जो भी इसमें प्रवेश करें, उन्हें केवल आनंद और शांति मिले, और उन्हें इसमें सुख मिले।'
अगले दिन की योजना एक शाम पहले ही शुरू हो गई थी, जब फॉस्टीन मार्टिस और सी लाउंज की दिन की शिफ्ट के कर्मचारी घर चले गए थे। ओबेरॉय को यह सुनिश्चित करना था कि दोपहर और शाम के भोजन के लिए खराब होने वाली सभी चीजें (जो कोल्ड स्टोर में रखी जाती थीं) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों: फ्रेंच थीम वाले ज़ोडियाक ग्रिल के लिए सोल मछली, मसाला क्राफ्ट के सिग्नेचर प्रॉन स्कीवर्स के लिए सीपियाँ, और वासाबी के सुशी शेफ के लिए मालदीव से रोजाना मंगाई जाने वाली फैटी टूना मछली। केवल मांस और मुर्गी के लिए ही बीस से अधिक आपूर्तिकर्ता हमेशा उपलब्ध थे ताकि किसी भी चीज की कमी न हो। दुनिया भर के ताज़े व्यंजन परोसना – ऐसे शहर में जहाँ तापमान कभी-कभी 38 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता था और हवा में 80 प्रतिशत तक नमी हो सकती थी – इसके लिए विशेष इंतज़ाम ज़रूरी थे। शहर के बंदरगाहों से लाए गए अत्यधिक ठंडे कंटेनर, रत्नागिरी के तटीय इलाकों से चिपचिपे अल्फ़ोंसो आमों से भरे ट्रकों और उत्तर-पूर्वी पहाड़ी इलाकों से लाए गए कलिम्पोंग पनीर के बड़े-बड़े टुकड़ों के साथ डिलीवरी गेट के बाहर जगह के लिए होड़ करते थे। साइकिल रिक्शा और हाथगाड़ियाँ तेज़ी से अंदर-बाहर आती-जाती रहती थीं, स्थानीय बाज़ारों से फल, मेवे और जड़ी-बूटियाँ लाती थीं, साथ ही हर

शेफ़ के स्वादानुसार पीसे गए मसाले भी। डिलीवरी हॉल में, बक्सों को हाथ से छाँटा और भेजा जाता था: मुर्गियाँ और मेमने महल की पहली मंज़िल पर स्थित कसाईखाने में, और मांस से बने खाद्य पदार्थ पीछे स्थित कोल्ड स्टोर में। ज़्यादा होने पर सब कुछ गल जाता। कम होने पर ओबेरॉय के शेफ़ काम करना बंद कर देते।
26 नवंबर की आधी रात तक, जब अपोलो बंदर के आसपास के पेड़ों पर सोए हुए कौवे डोमिनोज़ की तरह एक के बाद एक खड़े हो गए थे, तब भी शेफ ओबेरॉय काम में लगे हुए थे। होटल शादियों के मौसम की चरम सीमा पर था और उन्हें पता था कि कल ताज के सभी दर्जन भर रेस्तरां और बार नाश्ते, दोपहर के भोजन और रात के खाने के लिए पूरी तरह से बुक होंगे। उनकी रसोई से हजारों व्यंजन तैयार करने की उम्मीद की जाएगी, जिनमें 100 किलो चावल, 20,000 अंडे, 200 किलो झींगे छीलने, सैकड़ों ताजे नारियल काटने, 200 किलो मैदा और छह ट्रक सब्जियां और फल शामिल होंगे। बाद में, 30,000 कपड़े धोने के लिए लॉन्ड्री में होंगे, जिनमें 100 गैलन सफाई उत्पाद लगेंगे। उन्होंने थके हुए अंदाज़ में हर चीज़ पर टिक लगाया और हस्ताक्षर किए।

बुधवार, 26 नवंबर 2008, सुबह 4 बजे – रसोई में शेफ ओबेरॉय देर से सोए और खाना पकाने का काम सुबह जल्दी शुरू हो गया। जब अमीर मेहमान मिस्र के सूती चादरों पर आराम कर रहे थे, तब ताज बेकरी में काम शुरू हो गया। बेकरी में, ज्यादातर महिला कर्मचारियों का दल आटे, नमक और खमीर में पूरी तरह से डूबा हुआ था, जिससे वातावरण में किण्वन की मीठी सुगंध फैल रही थी। जल्द ही, दरवाजे के पास रखी क्रोम की ट्रे स्वादिष्ट मिठाइयों से भर गईं। सुबह 5 बजे तक, स्टेनलेस स्टील की रसोई में कार्यकारी शेफ, सहायक शेफ, सॉसियर, कमी और बर्तन धोने वालों के आने से खड़खड़ाहट की आवाज गूंजने लगती थी। सुबह 6 बजे तक, गार्ड मैंगर में सलाद धोने और काटने का काम चल रहा होता था, वहीं गलियारे के पार मुख्य रसोई में सॉस, ग्रेवी, जूस और स्टॉक तैयार किए जा रहे होते थे। दुनिया के सबसे गर्म रियल एस्टेट बाजार वाले शहर में, जहां ब्लूमबर्ग के एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, ताज होटल के वेतन पर चलने वाले किसी व्यक्ति को दक्षिण मुंबई के आलीशान इलाके में एक औसत आकार के अपार्टमेंट के लिए बचत करने में 308 साल लगेंगे, होटल अपने

कर्मचारियों को आसपास के सस्ते आवासों में ठहराता था, जिनमें पैलेस के दक्षिणी विंग के सामने स्थित पुरुषों के लिए जर्जर चार मंजिला अब्बास मेंशन और पास के रोज़मोंट कोर्ट में रहने वाली महिलाएं शामिल थीं।
अब से लेकर सुबह के शुरुआती घंटों तक, शेफ ओबेरॉय अपनी जेब में चम्मच लिए रसोई में इधर-उधर घूमते रहते, परोसी जा रही प्लेटों में चम्मच डालते और फिर उन्हें वापस खींचते हुए कहते: 'मेनू में जैसा लिखा है वैसा नहीं है!' दो दशकों से अधिक समय में, पाकिस्तान की सीमा से सटे पंजाब के एक छोटे से कस्बे से आए इस शेफ ने स्थानीय स्वादों की अपनी बचपन की यादों को अंतरराष्ट्रीय पसंदीदा व्यंजनों में बदल दिया था। टावर लॉबी को महल से जोड़ने वाले भूतल पर स्थित संगमरमर के गलियारे में बने भारतीय रेस्तरां मसाला क्राफ्ट का मुख्य आकर्षण उनकी मां की अट्टा चिकन की आधुनिक रेसिपी थी, जिसमें पूरे चिकन को मसालों में मैरीनेट करके तंदूर में भुना जाता था। जब स्टेशन मास्टर के बेटे ओबेरॉय ने यात्रा करना शुरू किया, तो उनका संग्रह करने का जुनून गहरा गया। चलती हुई स्लीपर ट्रेन के कैंटीन के स्वादिष्ट व्यंजन उनके रेस्तरां के सबसे ज्यादा बिकने वाले व्यंजनों की प्रेरणा बन गए। जैसे-जैसे वे दूर जाते गए, उनकी महत्वाकांक्षा बढ़ती गई। मुंबई का पहला असली जापानी खाना 2001 में पैलेस की पहली मंजिल पर स्थित वासाबी रेस्तरां में परोसा गया, जो ओबेरॉय की अमेरिकी सेलिब्रिटी शेफ मसाहारू मोरीमोटो से मुलाकात से प्रेरित था। मध्य पूर्व में कुछ समय बिताने के बाद, ओबेरॉय ने टावर की सबसे ऊपरी मंजिल पर लेबनानी थीम वाला रेस्तरां 'सूक' भी खोला। नोवेल कुज़ीन के फ्रांसीसी ग्रैंड मास्टर पॉल बोक्यूज़ ने उन्हें ज़ोडियाक ग्रिल खोलने का सुझाव दिया, ताकि मुंबई के 'अल्ट्रा' यानी उन अति-अमीरों तक पहुंचा जा सके जो बोक्यूज़ के महंगे व्यंजनों का भुगतान कर सकते थे।
ओबेरॉय को खाना बनाना बेहद पसंद था। उनके दफ्तर के दरवाजे के पीछे हमेशा नए सफेद कपड़े रखे रहते थे, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे रात भर काम कर सकें। उनकी पत्नी, जो पास ही रहती थीं, शिकायत करती थीं कि वे उन्हें कभी देख ही नहीं पाती थीं। उनके 200 रसोइयों के दल में उनके प्रति अटूट निष्ठा थी।
उनके प्रतिभाशाली रसोइयों की एक शानदार सामूहिक तस्वीर शेफ के डाइनिंग रूम में लगी थी, जिसमें उनके चेहरे पर मुस्कान थी और उनके पसंदीदा औजार - चाकू, काली मिर्च पीसने की मशीन, स्पैचुला और टमाटर - ऊपर उठाए हुए थे।

ओबेरॉय व्यंग्य करते हुए कहते थे, "हम टाटा परिवार की वजह से यहाँ टिके हैं। हम पैसे के लिए तो बिल्कुल नहीं।" ताज होटल के एक रेस्तरां प्रबंधक को महीने में 300 पाउंड मिलते थे, जबकि मुंबई में उनका कोई प्रतिद्वंद्वी उन्हें इससे दुगुना वेतन देता था।

सुबह 6 बजे तक, हवादार अब्बास मेंशन में, दिन की शिफ्ट के शोर ने रात की शिफ्ट के कर्मचारियों की नींद तोड़ दी। होटल के चौबीसों घंटे खुले रहने वाले कॉफी शॉप, शामियाना के 27 वर्षीय युवा मैनेजर अमित पेशावे ने शोर को रोकने की व्यर्थ कोशिश में अपने सिर पर एक पतली सूती चादर ओढ़ ली। साल के इस समय, ठंडी सुबहों की आदत पड़ने में थोड़ा समय लगता है। आज वह थका हुआ महसूस कर रहा था। शामियाना की नौकरी (जिसमें पूल के किनारे स्थित कैफे एक्वेरियस का प्रबंधन भी शामिल था) उसकी पहली वरिष्ठ नौकरी थी, और उसे यह काम करते हुए कुछ ही सप्ताह हुए थे। भूतल पर, टावर लॉबी को पूल और पैलेस गार्डन से जोड़ने वाले गलियारे में स्थित, शामियाना वह जगह थी जहाँ रात भर शराब पीने वाले और अनिद्रा के शिकार लोग आकर ठहरते थे। सभी इस बात से सहमत थे कि यह होटल की सबसे कठिन नौकरियों में से एक थी।
आज अमित को उस रिपोर्ट पर काम पूरा करना था जो वह पिछले सप्ताहांत आयोजित इतालवी खाद्य महोत्सव के बारे में लिख रहा था। वह रात 2 बजे तक उस पर काम करता रहा था और अभी तक उसे पूरा नहीं कर पाया था। पिछले दो दिन उसके लिए और भी थकाने वाले रहे थे, क्योंकि शेफ ओबेरॉय ने उसे सबीना सैकिया का भी ध्यान रखने को कहा था, जो एक बेहद नखरे वाली रेस्तरां समीक्षक थीं और नए 'शेफ्स स्टूडियो' की समीक्षा कर रही थीं। वह रूखी और अपनी बात मनवाने वाली थीं, लेकिन अमित ने इसे सहजता से स्वीकार कर लिया। 'बस दो दिन और,' अमित ने करवट बदलते हुए खुद से कहा। शुक्रवार उसका लंबे समय से प्रतीक्षित 'छुट्टी का दिन' था, पदोन्नति मिलने के बाद पहला। शायद वह अपनी मोटरसाइकिल से उत्तर में जुहू बीच पर जाए, स्नूकर का एक मैच देखे, या मरीन ड्राइव पर स्थित एक शानदार, पूरी तरह से सफेद रेस्तरां 'पिज़्ज़ा बाय द बे' में कॉलेज की लड़कियों को निहारे।
सात साल पहले जब अमित ने ताज होटल में औद्योगिक प्रशिक्षु के रूप में काम शुरू किया था और सी लाउंज में फॉस्टीन मार्टिस के अधीन काम कर रहा था, तब उस वरिष्ठ व्यक्ति ने उसे ट्रे संतुलित करने का काम दिया था, 'यह देखने के

लिए कि मैं सब कुछ गिराने से पहले कितनी तेज़ी से दौड़ सकता हूँ'। 2006 तक, वह फॉस्टीन का बॉस बन चुका था। 'लेकिन ऐसा ही होता था: मैं स्नातक था और वह नहीं।'
अमित फिर से सो गया। जब वह जागा, तो उसे देर हो चुकी थी। वह झट से उठा, नहाया और दौड़ते हुए टाइम ऑफिस पहुंचा। अपने काले मैनेजर के सूट में बदलते हुए, उसने अपनी जेब में 'ताज वैल्यूज़' का नोट ढूंढा। 'प्रतिभा को अपनाएं और विशेषज्ञता का उपयोग करके आतिथ्य सत्कार की कला में उत्कृष्टता के मानक स्थापित करें।' हर दिन वह शामियाना के वेटरों को इकट्ठा करता और उनकी भी परीक्षा लेता। यह उन पहली चीजों में से एक थी जो फॉस्टीन ने उसे सिखाई थीं। ताज वैल्यूज़ को याद करो। उन्हें कंठस्थ कर लो। बाकी सब अपने आप हो जाएगा। फॉस्टीन के काम शुरू करने के बाद से कार्ड में बहुत बदलाव आ चुका था और अब इसमें टाटा के महत्वाकांक्षी वित्तीय लक्ष्य भी समाहित थे, जो सभी को याद दिलाते थे कि कैसे एक होटल से वे अब बारह देशों में 112 आउटलेट्स के वैश्विक साम्राज्य को नियंत्रित करते हैं, जिनमें 13,629 कमरे हैं, और 2016 तक 2 अरब डॉलर या 650 मिलियन पाउंड का कारोबार करने का लक्ष्य है। जब अमित शामियाना पहुंचे, जो भारतीय शादी के तंबू की तरह सजा हुआ था, जिसमें पारदर्शी छत के पर्दे और जगमगाते झूमर लगे थे, तो वह खचाखच भरा हुआ था। हेड वेटर, रहमतुल्लाह शौकतली, जो ताज में इतने लंबे समय से काम कर रहे थे कि कुछ सहकर्मी उन्हें 'वंशानुगत' कहते थे, बहुत व्यस्त थे। अमित ने उनका और उनके युवा सहायक शेफ, बोरिस रेगो का अभिवादन किया, जो डिस्प्ले किचन संभाल रहे थे। रेगो के पिता गोवा के सबसे प्रसिद्ध शेफ थे, और उन्होंने सत्तर के दशक में ताज में प्रशिक्षण लिया था, जहाँ वे ओबेरॉय के मित्र बन गए थे। अमित ने रेगो जूनियर को 'अथक' कहकर पुकारा। मुस्कुराते हुए शेफ ने शोरगुल के बीच चिल्लाकर पूछा, 'रात के खाने में क्या चाहिए, बॉस?' रेगो कई दिनों से अपने मैनेजर के लिए एक खास पिज्जा बनाने का वादा कर रहे थे। अमित ने चिल्लाकर जवाब दिया, 'तंदूरी चिकन, ढेर सारी शिमला मिर्च, अतिरिक्त मोज़ेरेला चीज़ और बहुत सारा प्याज, शेफ।' रेगो ने अभिवादन करते हुए कहा: 'यह रात 9:30 बजे तक तैयार हो जाएगा, महोदय।'
शामियाना के मैनेजर ने रसोई में लगे नोटिस बोर्ड को देखा, जहाँ शेफ ओबेरॉय सुबह-सुबह अपडेट लगाते थे। कई वीआईपी और सांसद आने वाले थे। अमित ने सोचा, हमेशा की तरह बुरा हाल है। वे ज़रूरत से ज़्यादा शराब पीते हैं,

कर्मचारियों को परेशान करते हैं और बिल चुकाए बिना भागने की कोशिश करते हैं। आज रात एक बड़ी सिंधी शादी है, तीन भोज हैं और रात 8 बजे एक जन्मदिन की पार्टी बुक है। बहुत भागदौड़ रहेगी। उसने देखा कि स्विमिंग पूल टेरेस का सुपरवाइज़र बीमार होने की वजह से छुट्टी पर है। उसके सहायक को आज रात पूलसाइड बारबेक्यू संभालना होगा। उसने एक्वेरियस के उभरते हुए वेटर आदिल ईरानी को फोन किया और उससे भी काम में हाथ बंटाने को कहा।

सुबह 7 बजे तक, टावर की लॉबी में, कराम्बिर कांग चहलकदमी में जुट गए थे। उनके दोस्त मज़ाक में कहते थे कि उनकी चाल ऐसी लग रही थी जैसे कोई शार्क सीलों के झुंड को चीर रही हो। होटल के महाप्रबंधक ने दिन का अपना पहला दौरा शुरू किया, हर चीज़ का जायज़ा लेते हुए, मोम की बढ़ती हुई खुशबू ताज़ा कटी हुई नाइट क्वीन की खुशबू के साथ घुलमिल रही थी।
अन्य होटल श्रृंखलाओं में काम करने वाले करमबीर के प्रतिद्वंद्वी उन्हें ताज होटल का सबसे कड़ा प्रतिनिधि मानते थे। लेकिन उनके कर्मचारी, जो महल के केंद्रीय प्रांगण में स्थित कैंटिलीवर वाली भव्य सीढ़ी को चमकाने- संवारने में लगे रहते थे, उनके बीच नीली आंखों वाले महाप्रबंधक करमबीर को मिलनसार माना जाता था। उनतालीस वर्ष की आयु में भी वे एक युवा 'कप्तान' थे, जैसा कि वे महाप्रबंधक के पद का वर्णन करते थे - एक ऐसा व्यक्ति जो आगे बढ़कर नेतृत्व करता था, होटल के ब्रिज पर ताज होटल का चेहरा, एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी टीम को प्रेरित करता था और कहता था कि वह 'हमेशा सबसे आखिर में निकलता है'। अपने दौरों पर चलते हुए, वे बीच-बीच में रुककर कोई चुटकुला सुनाते या पारिवारिक समस्या के बारे में पूछते, मेहमानों और कर्मचारियों दोनों को जानना उनका काम था। मेज़ानाइन पर, जो पहली मंजिल से पहले का आधा लैंडिंग है, वे होटल के संस्थापक की काली प्रतिमा को निजी तौर पर नमस्कार करने के लिए भी कुछ क्षण रुकते थे। टाटा समूह से पूरी तरह जुड़े करमबीर उन लोगों के प्रति श्रद्धा रखते थे जिन्होंने इसकी शुरुआत की थी।
होटल के साथ-साथ अपने पहनावे को लेकर भी वे उतने ही सजग थे: नेवी ब्लू सूट, साफ सूती कमीज, मैचिंग सिल्क टाई और रूमाल, जो आमतौर पर उनकी पत्नी नीति चुनती थीं। आज उन्होंने नारंगी और सुनहरे रंग का चेक सूट पहना था, जो व्यस्त दिन को खुशनुमा बनाने के लिए एक चमकीला रंग था, क्योंकि पीक सीजन शुरू हो चुका था और उससे जुड़े सारे तनाव भी। पैलेस की तीसरी मंजिल पर,

उनके डिप्टी फूड एंड बेवरेज मैनेजर होटल के शराब भंडार में सुबह का स्टॉक चेक कर रहे थे, जो एक नकली दरवाजे के पीछे छिपा हुआ था और जिसका नंबर कमरा नंबर 324 था। पांचवीं मंजिल पर, फूलों से सजे एक कमरे में, होटल के 'पब्लिक एरिया' के फूलवाले ऊंचे-ऊंचे गुलदस्ते सजा रहे थे। आज उत्तर-पूर्व के गुलाबों को केरल के चटख गुलाबी गुलदाउदी और हिबिस्कस फूलों के आधार के चारों ओर सजाया गया था।
वह महल की लॉबी से निकलकर ताज के पूलसाइड गलियारे में दाखिल हुए, जो कांच के कांच के मोज़ाइक से सजा था और प्याज के आकार के गुंबदों से ढका था, जिससे वह फ्लोरेंस के किसी बोर्डिंग स्कूल में बने हमाम जैसा दिखता था। वास्तुकार इसे भव्यता से इंडो-सारासेनिक शैली कहते हैं, जो इंडो-इस्लामिक, गोथिक रिवाइवल और नियो-क्लासिकल शैलियों का मिश्रण है, ठीक उसी तरह जैसे भारत भी इस्लामी, हिंदू, सिख, ईसाई और बौद्ध मूल्यों का मिश्रण था। करमबीर के लिए, ताज कुछ हद तक क्यू गार्डन्स जैसा और कुछ हद तक रहस्यमय महल जैसा था। उनके चारों ओर ताड़ के पत्तों से बनी झाड़ूओं की सरसराहट सुनाई दे रही थी, क्योंकि ग्राउंड्समैन रात भर के पत्ते हटा रहे थे। उनकी मासिक आय 6,000 रुपये (70 पाउंड) थी और मेहमानों के आने तक वे अपने चॉल में जा चुके थे। अपना दौरा पूरा करके, वह टावर के रिसेप्शन एरिया के पीछे स्थित अपने कार्यालय में वापस गए और दिन के कार्यक्रमों की सूची देखने लगे।
वह यह सब अपने लैपटॉप या ब्लैकबेरी पर भी कर सकता था। आने वाले दिनों और हफ्तों का डिजिटल रूप से आकलन करने के लिए सब कुछ तैयार था। लेकिन करमबीर को अपनी उंगलियों से हर चीज़ को महसूस करना पसंद था। ताज होटल इसी तरह की आत्मीयता का हकदार था। उसके लिए, यह होटल एक खास जगह थी, इतना खास कि वह यहीं रहता भी था, महल की छठी मंजिल पर, अरब सागर के नज़ारे वाले एक शानदार सुइट में, जिसे वह नीति और अपने दो बेटों, बारह साल के उदय और पांच साल के समर के साथ साझा करता था। सबसे दक्षिणी कोने में स्थित, यह सुइट होटल के कुछ सबसे खास अपार्टमेंट से घिरा हुआ था।
1965 और 1971 में पाकिस्तान से युद्ध लड़ चुके सिख मेजर जनरल के बेटे करमबीर ने पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से स्नातक होने के तुरंत बाद ताज समूह के बिक्री विभाग में अपना करियर बनाया। जब उनकी पोस्टिंग नई दिल्ली में हुई, तो उन्होंने एक साल से भी कम समय में इस कमजोर पड़ते ब्रांड को शहर का सबसे लोकप्रिय होटल बना दिया। उन्हें लखनऊ भेजा गया, जहाँ उन्हें बिल्कुल

नए सिरे से एक नया ताज होटल स्थापित करना था। उनके दोस्त मज़ाक में कहते थे कि समूह के मालिक रतन टाटा करमबीर को किसी नए शहर के लिए सुबह की फ्लाइट लेने को कहते थे और वहाँ पहुँचकर उन्हें बताते थे कि अब उन्हें ही कमान संभालनी है। चूंकि करमबीर का अधिकांश जीवन पाँच सितारा होटलों में बीता था, इसलिए यह सौभाग्य की बात थी कि उन्हें उनसे जुड़ी हर चीज़ पसंद थी: अच्छी संगत, एक गिलास वाइन और एक महँगी सिगार। जब उनकी माँ ने यह बात स्वीकार कर ली कि वह कभी सेना में नहीं जाएँगे, तो उन्होंने मज़ाक में कहा कि उनका बेटा इतना मेहमाननवाज हो गया है कि उसे गृहिणी बन जाना चाहिए था। 1994 में ताज में आयोजित एक सम्मेलन में जब करमबीर की मुलाकात उत्तर भारतीय लड़की नीति माथुर से हुई, जिसके बाल काले थे, तो उन्होंने अपने पिता से कहा कि वही उनकी जीवनसाथी हैं। नीति ने पूर्णकालिक माँ बनने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी। उनका बड़ा बेटा उदय अपने पिता की तरह शांत और गंभीर था, और समर अपनी माँ की तरह चंचल था। नीति को अपने पति के कपड़े नई जगहों पर भेजने और उनसे ज्यादातर फोन पर बात करने की आदत हो गई थी। किसी तरह वह हमेशा अभिभावक सभा या स्कूल के नाटकों के लिए घर पहुँच जाते थे, अक्सर देर से ही सही। परिवार तब बेहद खुश हुआ जब उदय को भारत के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक, मुंबई के कैथेड्रल स्कूल में दाखिला मिल गया।
सत्रह साल बिक्री के क्षेत्र में बिताने के बाद, 2006 में करमबीर को अपना पहला होटल संभालने का ज़िम्मा मिला - बांद्रा का पुराना और मशहूर होटल ताज लैंड्स एंड, जो उत्तर-पश्चिम में स्थित एक फैशनेबल इलाका है और बॉलीवुड सितारों का चहेता है। उन्होंने याद करते हुए कहा, 'यह मेरे लिए एक चुनौतीपूर्ण अनुभव था।' उनके बेटे बेहद खुश थे और उन्हें उम्मीद थी कि अब वे उन्हें ज़्यादा देख पाएंगे। और उन्होंने उम्मीद से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया, एक साल से भी कम समय में होटल की ऑक्यूपेंसी दोगुनी से भी ज़्यादा हो गई। नवंबर 2007 में, उन्हें टाटा समूह का सबसे शानदार होटल, अपोलो बंडर स्थित ताज पैलेस एंड टावर सौंपा गया, जहाँ वे महाप्रबंधक और उपाध्यक्ष बन गए। नीति मुंबई के केंद्र में वापस आकर बेहद उत्साहित थीं। लेकिन ताज होटल में काम का बोझ काफ़ी ज़्यादा था, और परिवार शिकायत करता था कि करमबीर पहले की तुलना में कम नज़र आते थे, क्योंकि वे हमेशा ड्यूटी पर रहते थे।

आज भी कुछ अलग नहीं था। उनके योजनाकार ने दिखाया कि होटल के 20,000 वर्ग फुट के सम्मेलन, भोज और समारोह कक्षों का अधिकांश भाग - जो महल की पहली मंजिल पर स्थित हैं - बुक हो चुके थे। शेफ ओबेरॉय द्वारा प्रस्तुत विवरण और कार्यक्रम पत्रक में क्रिस्टल रूम में सिंधी शादी का उल्लेख था, जो सामाजिक समारोहों के लिए एक पसंदीदा स्थान है और पूरी तरह से खुलने पर पूल की लंबाई तक फैला हुआ है। होटल के सबसे प्रभावशाली ग्राहकों में से एक, हिंदुस्तान यूनिलीवर के बोर्ड के सदस्यों के भी आने की उम्मीद थी, जिसमें पैंतीस फ्रांसीसी, डच और भारतीय अधिकारी और उनकी पत्नियां होटल के सबसे दक्षिणी कोने में स्थित एक अंतरंग निजी भोजन कक्ष, प्रिंस रूम में एक शानदार रात्रिभोज के लिए आ रहे थे।
यूरोपीय संसद का एक बड़ा दल जल्द ही पहुँचने वाला था, जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, नीदरलैंड, स्पेन, इटली और जर्मनी के व्यापार आयुक्त और यूरोपीय संसद के सदस्य (एमईपी) शामिल थे। भारतीय सांसदों की एक समिति भी वहाँ चेक-इन कर रही थी। ताज होटल जल्द ही कई अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट सितारों की मेजबानी करने वाला था, जिनमें शेन वार्न और केविन पीटरसन भी शामिल थे, जो नई चैंपियंस लीग ट्वेंटी20 का शुभारंभ कर रहे थे, और उनकी अग्रिम टीम आज होटल में पहुँच रही थी। करम्बिर के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुड़ियादी अपने पाँचवीं मंजिल के कार्यालय में होटल की सुरक्षा योजना को अंतिम रूप दे रहे थे। आधुनिक टावर में भी चहल-पहल जारी थी। सौ से अधिक सदस्यों वाले कोरियाई व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित सौक के बगल में स्थित फंक्शन रूम, रेंडेज़वस, बुक किया था।
आज सुबह काफ़ी भागदौड़ भरी रहने वाली थी क्योंकि दोपहर के भोजन के बाद करमबीर को होटल छोड़ना था। मुंबई के जाने-माने भारतीय सूट निर्माता रेमंड्स के चेयरमैन ताज लैंड्स एंड होटल में एक पार्टी दे रहे थे और करमबीर को वहाँ जाना ही था। इस पार्टी में फ़ॉर्मूला वन ड्राइवर मीका हैकिनन भी अतिथि के रूप में शामिल होने वाले थे। सी लिंक टोल ब्रिज के साथ भी आने-जाने में एक घंटा या उससे ज़्यादा का समय लगता, इसलिए हो सकता है कि करमबीर और नीति सुबह तक एक-दूसरे से न मिल पाएँ। उनकी अनुपस्थिति में, ग्रैंड एक्ज़ीक्यूटिव शेफ़ ओबेरॉय ज़िम्मेदारी संभालेंगे।

किया: 'रिचर्ड गेरे शहर में हैं और तिब्बत के लिए एक संगीत कार्यक्रम आयोजित करना चाहते हैं। क्या आप इसका आयोजन कर सकती हैं?' सबीना ने गेरे के बारे में नहीं सुना था, लेकिन इंटरकॉन्टिनेंटल के कॉफी शॉप में उनसे मिलने के लिए सहमत हो गईं। उन्हें तुरंत चिंता होने लगी कि 'यह आकर्षक व्यक्ति' उनके प्रेमी, शांतनु सैकिया, जो 'असमिया स्वभाव के गुस्सैल व्यक्ति' थे और बाहर अपनी कार में इंतजार कर रहे थे, को नाराज कर देगा।
सबीना ने सबको बताया कि गेरे लगातार बोलता ही जा रहा था। उसने याद करते हुए कहा, ‘जितना ज़्यादा समय बीतता जा रहा था, मुझे पता था कि शांतनु उतना ही ज़्यादा नाराज़ होता जा रहा है।’ ‘मैं सोचती रही कि बाकी लोग गेरे को क्यों घूर रहे हैं। क्या ये भारतीय एक अच्छे दिखने वाले गोरे आदमी को देखकर उसे अकेला नहीं छोड़ सकते?’ तभी उसका फ़ोन बज उठा। उसने माफ़ी मांगते हुए कहा कि उसकी गर्लफ्रेंड सिंडी क्रॉफर्ड का फ़ोन है। सबीना ने सिंडी का नाम तक नहीं सुना था और वह बस यही सोच रही थी: ‘ठीक है, तुम्हारी गर्लफ्रेंड फ़ोन कर रही है और मेरा बॉयफ्रेंड बाहर इंतज़ार कर रहा है। ये क्या धंधा है?’ आख़िरकार, गेरे ने उसे धन्यवाद दिया और अपना कार्ड दिया, जिस पर उसका निजी नंबर लिखा था। जब उसने उसे दरवाज़े तक छोड़ने की पेशकश की, तो उसने मना कर दिया। ‘तुम अंदर ही रहो वरना मुझे कुछ समझाना पड़ेगा।’ उस सप्ताहांत, सबीना और शांतनु ने ‘एन ऑफिसर एंड ए जेंटलमैन’ नाम की एक फ़िल्म किराए पर ली। ‘हे भगवान!’ वह चीखी और गेरे का कार्ड ढूंढने के लिए अपने बैग में इधर-उधर हाथ-पैर मारने लगी। उसका कार्ड खो गया था।
1998 में, दोबारा कोशिश करते हुए, सबीना ने एक फूड कॉलम लिखने की कोशिश की। यह बेहद सफल रहा। लेकिन इन दिनों उनका द टाइम्स से मनमुटाव हो गया था, हालांकि वह अपने लेख कहीं भी प्रकाशित करवा सकती थीं। अंबरीन ने कहा, 'वह या तो जगहों की जमकर आलोचना करती थीं या उनकी मेहमाननवाजी का भरपूर आनंद उठाती थीं।' अंबरीन ने अपनी दोस्त को चेतावनी देते हुए कहा, 'तुम लोगों के प्रति कठोर और निर्दयी हो। इसका बुरा नतीजा निकलेगा।'
अब सबीना मुंबई जाने को लेकर आनाकानी कर रही थी और अंबरीन को उस पर ज़रा भी हमदर्दी नहीं थी। अपनी दोस्त की बात काटते हुए उसने पूछा, 'क्या बात है?' सबीना ने जवाब दिया, 'मुंबई की शादी में तो पूरा दिल्ली ही आने वाला है।' यह सुनकर सबीना में जोश आ गया और उसने आने का वादा कर दिया।

सोमवार, 24 नवंबर को मुंबई पहुँचने पर करमबीर द्वारा भेजी गई ड्राइवर-चालित जगुआर कार से उनका स्वागत किया गया। सबीना दंग रह गईं और उन्होंने मुंबई में रहने वाली और ऑस्ट्रेलियाई ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन सहित कई संस्थानों के लिए काम करने वाली एक और दृढ़ निश्चयी फ्रीलांस पत्रकार सावित्री चौधरी को फोन किया। 'सबी, वे शेफ स्टूडियो शुरू कर रहे हैं। हेमंत ओबेरॉय मेरे लिए एक विशेष डिनर का आयोजन कर रहे हैं।' थोड़ी देर रुककर उन्होंने कहा, 'मैं चाहती हूँ कि तुम और विक्रम भी आओ। चलो इसे एक शानदार पार्टी बनाते हैं। ठीक है?'
ताज होटल में, करमबीर ने सबीना को सनराइज सुइट तक पहुंचाया था। संगमरमर के फर्श, शानदार लकड़ी की छत, एक लाउंज, एक बेडरूम और एक डाइनिंग एरिया से सुसज्जित, यह सुइट होटल के सबसे दक्षिणी गुंबद के अधिकांश हिस्से में फैला हुआ था और करमबीर के परिवार के अपार्टमेंट के ठीक बगल में था। जब सावित्री और उनके पति रात 8:30 बजे आए, तो वहां बर्फ में रखी शैम्पेन रखी थी। उत्साह से भरी सबीना ने उन्हें अंदर खींच लिया। 'चलो, इस विशाल बिस्तर पर कूदते हैं।'
ओबेरॉय के शेफ स्टूडियो का विचार अमेरिका और यूरोप से लिया गया था, जहाँ उन्होंने कई शेफ टेबल्स पर भोजन किया था - ये किसी स्टार शेफ की रसोई के अंदर बने अंतरंग व्यंजन होते हैं। मुंबई के लिए उन्हें इस विचार को परिष्कृत करना पड़ा, क्योंकि कोई भी 'अल्ट्रा' (अमीर और अमीर) व्यक्ति रसोई में बैठकर छह लोगों के लिए 125,000 रुपये (1,500 पाउंड) का डिनर (वाइन को छोड़कर) नहीं खाने वाला था। अमित पेशावे द्वारा परोसी गई वर्साचे प्लेटों में भोजन करते हुए सावित्री ने सबीना से कहा, 'सबीना, तुम बेहतरीन फॉर्म में हो। खाना लाजवाब है।' वे और खाना लाते रहे। सबीना ने कहा, 'मैंने पहली बार कोबे बीफ खाया। सबीना के साथ तो उन्होंने हद ही कर दी। ताज का यही अंदाज़ है।'
आठ कोर्स खाने के बाद, सबीना सुस्ती महसूस करते हुए अपने सुइट में गई। उसने शांतनु को फोन किया, जो अब उसका पति था। उसने शांतनु से कहा, 'ये लोग तो हद ही कर रहे हैं।' लेकिन वह दिल्ली में पारिवारिक शादी की पार्टी में व्यस्त था। सबीना के किसी और के समारोह में मुंबई जाने से पूरा परिवार हैरान था। ज़रूरतमंद सबीना को यह बात समझ नहीं आई और उसे दुख हुआ। उसने फोन काटते हुए कहा, 'तुम्हें पता नहीं तुम क्या खो रहे हो।' उसने अंबरीन को फोन किया: 'तुम

इस सुइट को देखकर हैरान हो जाओगी। कृपया आ जाओ।' लेकिन अंबरीन काम में व्यस्त थी। इंडियन एक्सप्रेस की महाप्रबंधक होने के नाते, उसे एक सम्मेलन में भाग लेना था। सबीना ने राजाओं के बिस्तर पर अकेले ही रात बिताई।

26 नवंबर 2008, शाम 4 बजे – महल की लॉबी

करमबीर कांग बांद्रा में थे, शेफ ओबेरॉय अपने केबिन में ऑर्डर देख रहे थे, अमित पेशावे अभी भी अपने इतालवी फूड फेस्टिवल की रिपोर्ट पूरी नहीं कर पाए थे, और टावर की लॉबी में छुट्टियां मनाने वाले और व्यापारी रिसेप्शन डेस्क के सामने तीन-तीन की कतार में खड़े थे। संगमरमर के गलियारे के साथ-साथ, भव्य सीढ़ियों के बगल में, शांत पैलेस रिसेप्शन था, जहाँ वीआईपी मेहमान पंखों वाली कुर्सियों पर बैठकर चेक-इन का इंतजार कर रहे थे। विल पाइक और केली डॉयल भी उनमें शामिल थे, जो फ्लिप-फ्लॉप और बीच के कपड़ों में थे, और दरबान की निगाहों का सामना कर रहे थे।
दो हफ्ते गोवा में बिताने के बाद वे अभी-अभी लौटे थे और एयरपोर्ट से ताजमहल तक का सफर उनके लिए किसी अग्निपरीक्षा जैसा था। हर ट्रैफिक सिग्नल पर सेल्समैन किताबों, फोन चार्जर और डस्टर लिए उनकी टैक्सी के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे, तभी विल ने धीरे से कहा, 'असली भारत का मेरा पहला अनुभव।' 'यह तो पागलपन है।' ताजमहल की खुशबूदार शांति में पहुँचकर उन्हें सुकून महसूस होने लगा। रिसेप्शनिस्ट ने केली का सरनेम इस्तेमाल करते हुए कहा, 'शुभ दोपहर, मिस्टर डॉयल,' क्योंकि सारा भुगतान केली के क्रेडिट कार्ड से हो चुका था। विल मुस्कुराया, और यह मुस्कान उसके चेहरे पर तब तक बनी रही जब तक उन्हें तीसरी मंजिल पर बने भव्य सीढ़ी से समुद्र के सामने वाले कमरे में नहीं ले जाया गया। वह केली से दो साल छोटा था और काम में उसका जूनियर था, और उसकी तनख्वाह के मुकाबले बहुत कम थी। उसने मजाक में कहा कि वह हमेशा के लिए नपुंसक बन गया है।
कमरा नंबर 316 में प्रवेश करते ही अरब सागर का मनोरम दृश्य उनकी आंखों के सामने आ गया। क्या नज़ारा था! अपने बैग खोलते ही रेत और गीले कपड़े ज़मीन पर बिखर गए, और केली बाथरूम की ओर चल पड़ी। विल ने खिड़की खोलने की कोशिश की, लेकिन वह दोहरी शीशे की थी और हिली नहीं। उसने टीवी चैनल और होटल के

रेस्टोरेंट की सूची देखी। दो हफ़्तों तक किंगफ़िशर बियर, ग्रिल्ड मछली और मलाई कोफ़्ता खाने के बाद, इतने सारे विकल्प उसके लिए बहुत ज़्यादा थे। जब वह रेशमी पर्दों को निहारते हुए लेटा, तो उसे लगा जैसे वह हफ्तों से लंदन से दूर रहा हो। छुट्टियों की पूरी योजना अव्यवस्थित और जल्दबाजी में बनाई गई थी। केली ने फ्लाइट तो बुक कर ली, लेकिन वीजा के बारे में भूल गई, जिसके चलते एयरपोर्ट पर शर्मनाक स्थिति पैदा हो गई और काम पर लौटना भी अपमानजनक रहा। आखिरकार वे 10 नवंबर को एक हफ्ते की देरी से रवाना हुए, लेकिन यह सब कुछ सार्थक रहा। गोवा के समुद्र तटों पर बिताए गए दो सप्ताह यादगार रहे, उन्होंने ट्रेन की सवारी की और एक योगा सेंटर में भी समय बिताया।
आखिरी समय में इतना खर्च करने का सुझाव केली ने ही दिया था। विल, जिसने दो हफ्ते चरस (हशीश) का सेवन किया था, इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं था कि वह वहां के माहौल में ढल पाएगा या नहीं, या शायद वह ढलना भी नहीं चाहता था। ताज होटल भारत का सबसे मशहूर होटल है, जहां ग्रेगरी पेक और ड्यूक एलिंगटन जैसे दिग्गज भी आते-जाते थे, इतिहास और शान-शौकत से भरपूर, लेकिन यह उसकी पसंद की जगह नहीं थी। केली ने तर्क दिया कि उन्हें घर वापसी की फ्लाइट पकड़ने के लिए शहर से होकर गुजरना ही था, तो क्यों न इस होटल में रुका जाए?

दिसंबर 1903 में जब ताज होटल खुला, तो यह एक बड़ी विफलता साबित हुआ। अंग्रेजों को यह होटल पसंद नहीं आया और भारतीयों के लिए यह बहुत महंगा था। निराश होकर इसके संस्थापक जमशेदजी टाटा यूरोप के लिए रवाना हो गए और अगले ही साल हृदय रोग से उनका निधन हो गया। उन्हें सरे के ब्रुकवुड कब्रिस्तान में टाटा परिवार के मकबरे में दफनाया गया। लेकिन धीरे-धीरे महाराजा और नवाब इस होटल को अपना दूसरा घर मानने लगे और अपने साथ नौकरों का दल लेकर आने लगे। नवंबर 1905 में जब वेल्स के राजकुमार और राजकुमारी मैरी राजकीय यात्रा के लिए अपोलो बंदरगाह पर उतरे, तब तक ताज होटल की लोकप्रियता बढ़ने लगी थी और यह स्थानीय शाही परिवारों से भर गया था।
भारत में आए बदलावों के साथ-साथ होटल भी बदलता रहा। पुराने कुलीन वर्ग की जगह स्वतंत्रता आंदोलन के धनी नेताओं ने ले ली, जिनमें मुहम्मद अली जिन्ना भी शामिल थे, जिन्होंने समुद्र के सामने वाले बॉलरूम में अपनी पत्नी रुत्ती को शादी का प्रस्ताव दिया था और 1947 में नए पाकिस्तान का नेतृत्व

किया था। सरोजिनी नायडू, जो एक बाल प्रतिभा और कवयित्री थीं और बाद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं, ने भी इसी होटल में भाषण दिया था। भारत के विभाजन की घोषणा के बाद, ताज होटल से ही स्वतंत्रता के पहले गीत गूंजे थे। जब अंग्रेजों ने औपचारिक रूप से विदाई ली, तो उन्होंने गेटवे ऑफ इंडिया से विदाई ली, जिसे 1911 में राजा जॉर्ज पंचम और रानी मैरी की यात्रा की याद में बनाया गया था। कभी उपनिवेशवाद का गढ़ रहा ताज होटल, सहजता से आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में स्थापित हो गया।
अगले तीन दशकों में हॉलीवुड भी इससे प्रभावित हुआ, जहाँ फ्रैंक सिनात्रा और सोफिया लॉरेन विश्व नेताओं, उद्यमियों और उद्योगपतियों के साथ मेलजोल रखते थे। 1973 में, अत्यधिक मांग वाले इस होटल ने अमेरिकी डिज़ाइन वाले ताज टॉवर के निर्माण के साथ अपनी क्षमता दोगुनी कर ली। बंदरगाह की ओर, इसके आधार पर एक नई लॉबी बनाई गई, जिसके ऊपर एक निजी क्लब स्थित था, जिसका नाम होटल के वास्तुकार विलियम चैंबर्स के नाम पर रखा गया था।
सार्वजनिक क्षेत्रों को सुव्यवस्थित किया गया, लेकिन हर नवीनीकरण के साथ सेवा क्षेत्र और भी जटिल होते चले गए। 1930 के दशक में रसोईघर सबसे ऊपरी मंजिल से नीचे पहली मंजिल पर आ गए थे और 1969 में महल में एक नई छठी मंजिल जोड़ी गई थी। टावर के निर्माण के बाद, नए सेवा क्षेत्र टावर और महल के बीच में बनाए गए, लेकिन वे पूरी तरह से एक सीध में नहीं थे। जगह-जगह सीढ़ियाँ उन भंडारगृहों तक जाती थीं जो अन्यथा दुर्गम छत की गुहाओं में छिपे होते थे। खिड़कियाँ दरवाज़े बन गईं, पैनल घूमकर सेवा लिफ्टों को दिखाते थे। अतिरिक्त सीढ़ियाँ बनाई गईं, लेकिन उन्हें वास्तुशिल्प योजना में शामिल नहीं किया गया। आपस में जुड़े गलियारों के कोण अनियमित हो गए।

विल को मनाने में थोड़ा समय लगा, और गोवा में अपने आखिरी दिन से एक दिन पहले केली उसे लगातार समझाती रही। उसे अपना मन बना लेना था। लंदन में मिलने वाली उसकी तनख्वाह की वजह से वे एक महंगा पैकेज ले सकते थे, जिसमें एयरपोर्ट से मुफ्त पिक-अप, एक बटलर और समुद्र के नज़ारे वाला एक हेरिटेज रूम शामिल था। केली पहले से ही किंग-साइज़ बेड, फ्लैट-स्क्रीन टीवी, बाथटब और मुलायम तौलियों के बारे में सोच रही थी, जो समुद्र तट पर दो हफ्ते नंगे पैर बिताने के बाद एक शानदार अनुभव होता। 'कितने दिन तक हिप्पी बने रह सकते हैं?' विल ने कहा, और सोचने लगा कि क्या यह सच है। आधा मन बना लेने के बाद,

उन्होंने ताज होटल के लिए पैकिंग कर ली, सोमवार सुबह लंदन में असली ज़िंदगी शुरू होने से पहले एक रात की शान-शौकत के लालच में, जहाँ हल्की बारिश का पूर्वानुमान था। सबसे आसान रास्ता वही था जिस पर वह अपनी ज़िंदगी का ज़्यादातर समय चलता आया था, हालाँकि अब यह बदल रहा था।
भारत की यात्रा दो शानदार वर्षों की परिणति थी। रवाना होने से पहले उन्होंने मन ही मन कहा था, 'यही मेरा पल है।' उनका काम अच्छा चल रहा था। उनका एक 'बेहद प्यारी लड़की' से रिश्ता था और वे दोनों हमेशा साथ रहने वाले थे। डिग्री में असफल होने और कई साल सोहो के बार्स का प्रबंधन करने के बाद, 2007 की शुरुआत में उन्होंने अपनी जिंदगी में एक नया मोड़ लिया था। एक रात एक ग्राहक ने उन्हें लंदन स्थित टीवी प्रोडक्शन कंपनी बेयर फिल्म्स में सहायक कर्मचारी के रूप में नौकरी की पेशकश की, जहाँ उन्होंने पहली बार केली को देखा था। उसके बाद से सब कुछ सही दिशा में बढ़ने लगा।
सटीक, खूबसूरत और ऊर्जावान केली एक उभरती हुई प्रोड्यूसर थीं। वह शादीशुदा भी थीं। लेकिन विल – अपने लहराते बालों, फुटबॉलर जैसी कद-काठी और सहज स्वभाव से – ने उन पर गहरी छाप छोड़ी। एक रात वे ड्रिंक के लिए बाहर गए और 'बस सब कुछ अपने आप होने लगा'। अगली सुबह जब वह उठे तो अपनी जींस पहनने में उन्हें बहुत मुश्किल हो रही थी, उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने कोई शर्मनाक गलती कर दी हो और अपनी नौकरी खो दी हो। तीन हफ्ते बाद फिर वही हुआ। जल्द ही वे एक ऐसे रिश्ते में उलझ गए जो कभी होना ही नहीं चाहिए था, लेकिन जिसे वे दोनों रोक नहीं पा रहे थे। केली की ऊर्जा संक्रामक थी। विल ने अपने दोस्तों से कहा, 'अगर आप उसका साथ देंगे तो आपको बहुत मजा आएगा, यह आप जानते ही होंगे।' इससे पहले उन्हें ऐसा एहसास सिर्फ तब हुआ था जब वह सोलह साल के थे और स्कूल की एक लड़की से उन्हें प्यार हो गया था। जब वह रिश्ता टूटा तो वह 'एक हफ्ते तक रोते रहे'।
केली ने अपने पति को छोड़ दिया। 2008 की शुरुआत में, उसने और विल ने कैमडेन टाउन में एक शानदार फ्लैट किराए पर लिया। अब से, वे सप्ताहांत में विल की लाल एमजी कूप कार में लंदन में घूमते या कैमडेन बाजार में ऐसे अनोखे फर्नीचर की तलाश करते हुए बिताते थे जो उस छोटे से फ्लैट में फिट नहीं होते थे। दोनों को मेहमाननवाज़ी करना पसंद था, वे एक दर्जन दोस्तों के लिए पाएला बनाते या फैंसी ड्रेस पार्टी आयोजित करते। विल स्थानीय क्लबों में डीजे का काम करता था और खुद को 'लेज़ीपाइक (द जंगलियर)' कहता था।

काम में भी तेज़ी आने लगी। विल के मन में प्रेट ए मैंगर के लिए एक विज्ञापन का जो अस्पष्ट विचार था, वह कंपनी की वेबसाइट के 'टिप्पणी' अनुभाग के माध्यम से जमा करने के बाद साकार होने लगा। इसे पोस्ट करते समय उसने सोचा था कि क्या कोई इसे पढ़ता भी है। कुछ ही समय बाद मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने फोन किया और विल को जनवरी में मिलने के लिए कहा। योजना बनाना विल की खासियत नहीं थी। 'और फिर भी, यह सब मेरे कुछ किए बिना ही हो रहा था।' गर्मियों का सबसे यादगार पल बिग चिल फेस्टिवल में दोस्तों और परिवार के साथ संगीत और कैंपिंग का एक लंबा, आरामदेह सप्ताहांत था, जिसमें केली, उसका छोटा भाई बेन, उसकी बहन रोजी और उनके बेहद शांत स्वभाव वाले पिता, निगेल, जो एक सेवानिवृत्त विज्ञापन कार्यकारी थे, शामिल थे।
केली ने ही भारत की शरद ऋतु यात्रा का सुझाव दिया था, ताकि विल को प्रेट ए मैंगर के प्रस्ताव से पहले थोड़ा आराम मिल सके। उन्हें यह भी सोचना था कि वे कहाँ जा रहे हैं। उन्होंने अपनी छुट्टियों का अधिकांश समय दक्षिणी गोवा के पालोलेम रिसॉर्ट में बिताया, जहाँ ताड़ के पेड़ों से घिरे बार और सस्ते गेस्ट हाउसों की भरमार थी, जिससे बड़ी संख्या में लोग गांजा पीने के शौकीन थे। विल पढ़ते और संगीत सुनते हुए गांजा पी रहा था।
उसके बैग में कंप्यूटर विज्ञान के जनक एलन ट्यूरिंग की जीवनी और जी. एच. हार्डी की अपनी ढलती हुई करियर की शोकगीत 'ए मैथमैटिशियंस अपोलॉजी' थी। विल को किताबों में खो जाने का शौक था और वह हर चीज़ में डूब जाता था। जब वह पढ़ नहीं रहा होता था, तो वह समुद्र तट पर स्थानीय बच्चों के साथ फुटबॉल खेलता था या पुराने सुपर 8 कैमरे से सूर्यास्त, ट्रेन यात्रा और बाज़ारों के दृश्य रिकॉर्ड करता था। उसने केन और बार्बी गुड़ियों के भारतीय संस्करण खरीदे थे, जिनका इस्तेमाल वह स्टॉप-एनिमेशन शॉर्ट फिल्म बनाने के लिए करना चाहता था। विल और केली मौज-मस्ती कर रहे थे। उसने अपने भाई से कहा, 'हम कुछ भी न करने में बिल्कुल माहिर थे।'

बुधवार, 26 नवंबर 2008, शाम 6 बजे। ताज होटल से शहर के उस पार दस मिनट की ड्राइव पर स्थित ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल (जिसे करमबीर कांग 'शहर का दूसरा सबसे अच्छा होटल' कहा करते थे) में जोन 1 के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) विश्वास नांगरे पाटिल का दिन बेहद व्यस्त था। उन्होंने अनुमान लगाया कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के 28

नवंबर को शहर के दौरे से पहले विशेष सुरक्षा समूह द्वारा आयोजित आठ घंटे की सुरक्षा समीक्षा अभी आधी ही पूरी हुई थी।
जम्हाई रोकते हुए उसने खुद को याद दिलाया कि यह तो एक छोटी सी कीमत है। जोन 1 में पुलिसिंग करना शान-शौकत की बात थी। इसमें शहर के सबसे आलीशान होटल, अपार्टमेंट और विला, मुंबई का ऐतिहासिक केंद्र, साथ ही कोलाबा का मशहूर बैकपैकर इलाका शामिल था। जोन 1 के साथ कई खामियां भी जुड़ी थीं: वीआईपी दौरे (जैसे प्रधानमंत्री का), विदेशी मेहमानों का आना-जाना, और मुंहफट अमीर निवासी। ये ऐसे लोग थे जो एक दिन में उतना कमा लेते थे जितना एक बेईमान पुलिसकर्मी अपने पूरे करियर में कमाता, और जितना एक ईमानदार पुलिसकर्मी कभी नहीं कमा सकता था।
अपनी इस्त्री की हुई कमीज़ की आस्तीनें करीने से मोड़े हुए, पाटिल ने करीने से सँवारी हुई मूंछें और एक मज़बूत, दृढ़ ठुड्डी रखी हुई थी। पाँच महीने पहले जब उन्हें ज़ोन 1 की ज़िम्मेदारी मिली थी, तब उनका चयन आश्चर्यजनक था। दक्षिण में लगभग 220 मील दूर स्थित मंदिरों और किसानों के गाँव कोकरुड़ के मूल निवासी, जो मराठी भाषी थे, उन्होंने अपने देहाती पालन-पोषण से ऊपर उठकर एक उच्च पद प्राप्त किया था। एक ऐसे उपमहाद्वीप में जहाँ नाम का बहुत महत्व होता है, पाटिल परिवार पारंपरिक रूप से ज़मींदार और योद्धा रहे हैं, और एक प्रसिद्ध भारोत्तोलक के पुत्र विश्वास पाटिल ने अपना अधिकांश बचपन सेना में भर्ती होने के सपने देखते हुए बिताया। बचपन से ही उन्हें वर्दी का बहुत शौक था, किशोरावस्था में ही उन्होंने राष्ट्रीय कैडेट कॉलेज में दाखिला लिया और निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीता। लेकिन अपनी कक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने पिता की अपेक्षाओं के विपरीत जाकर 1997 में प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में बैठने से पहले स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश लिया, जहाँ उनकी पहली पोस्टिंग एक ग्रामीण क्षेत्र में हुई, जहाँ उन्होंने लोगों को अपने परिवार की तरह समझा।
कोकरूड के उस लड़के ने कभी सोचा भी नहीं था कि वह इतनी दूर तक पहुँच पाएगा। महाराष्ट्र और अन्य जगहों पर पुलिस बल का नेतृत्व मुंबई के कमिश्नर गफूर जैसे विशेषाधिकार प्राप्त अधिकारियों द्वारा किया जाता था, जो हैदराबाद के एक नवाब के पुत्र थे और शहर के पुलिस प्रमुख थे। लेकिन एक दशक से भी कम समय में, बाहरी व्यक्ति पाटिल ने अपनी पहचान बनाई, हाई-प्रोफाइल अभियानों

से हलचल मचाई, विशेषाधिकारों को चुनौती दी और रूढ़िवादियों को खुश किया, और जून 2008 में दक्षिण मुंबई में प्रतिष्ठित डीसीपी पद पर पदोन्नत हुए। और अब वह शीर्ष स्तर पर, कमिश्नर गफूर और क्राइम ब्रांच के दिग्गज प्रमुख राकेश मारिया सहित शहर के सबसे वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ बैठे थे। अपने वरिष्ठों की बातें सुनते हुए पाटिल काफी चिंतित हो रहे थे। उन्हें इस बात का गहरा दुख था कि उनके यहाँ आने के बाद से ही उन्हें जो कई चेतावनियाँ मिल रही थीं, उन पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। अगर उन चेतावनियों को गंभीरता से लिया जाता, तो प्रधानमंत्री के आने या न आने की परवाह किए बिना शहर को युद्ध स्तर पर तैयार कर दिया जाता।
उन्हें अपने पहले सप्ताह में ही पहली सूचना मिली थी कि ताजमहल के पास स्थित लोकप्रिय पर्यटक स्थल लियोपोल्ड कैफे आतंकवादियों की सूची में है। अगले कुछ दिनों में, खुफिया पर्चियों की छानबीन करते हुए, पाटिल ने लगातार और विस्तृत चेतावनियों का एक चिंताजनक सिलसिला पाया। उनके पूर्ववर्तियों को शहर पर संभावित आतंकवादी हमलों के बारे में दर्जनों गोपनीय बुलेटिन प्राप्त हुए थे। लेकिन, जहाँ तक उन्हें पता था, खुफिया एजेंसियों और पुलिस ने उन्हें नजरअंदाज कर दिया था।
पहली सूचना अगस्त 2006 में मिली थी जिसमें बताया गया था कि लश्कर-ए-तैबा, एक प्रभावशाली पाकिस्तानी जिहादी संगठन जिसने विभाजित कश्मीर में भारतीय सुरक्षा बलों से लड़ने के लिए मुस्लिम विद्रोहियों को भेजकर अपनी पैठ बनाई थी, मुंबई पर एक बड़े हमले की 'तैयारी कर रहा है'। कई पांच सितारा होटलों को लक्ष्य के रूप में बताया गया था, जिनमें ट्राइडेंट-ओबेरॉय और ताज होटल शामिल थे। तब से पच्चीस और चेतावनियाँ जारी की गईं, जिनमें से कई सीआईए द्वारा भारतीय सरकार की बाहरी खुफिया एजेंसी, अनुसंधान एवं विश्लेषण शाखा (सीआईए) को भेजी गईं और फिर भारत के घरेलू खुफिया ब्यूरो को हस्तांतरित कर दी गईं।
पाटिल ने सूचना के स्रोत पर विचार किया। जब उन्होंने विवरण की जांच की, तो यह स्पष्ट प्रतीत हुआ कि अमेरिका एक महत्वपूर्ण स्रोत का उपयोग कर रहा था, सुरागों के अंबार से यह स्पष्ट हो रहा था कि कोई व्यक्ति कुख्यात रूप से गुप्त लश्कर संगठन के भीतर ही मौजूद था, एक ऐसा संगठन जिसके बारे में सभी का मानना था कि उसे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी द्वारा वित्त पोषित किया जाता था।

ऐसा नहीं था कि मुंबई में आतंकवाद कोई नई घटना थी। पिछले कुछ दशकों में, शहर में एक दर्जन से अधिक गंभीर हमले हुए थे जिनमें 500 से अधिक लोग मारे गए थे और लगभग 2,000 घायल हुए थे। जुलाई 2006 में हुए सबसे हालिया नरसंहार के बाद, जब सिलसिलेवार ट्रेन विस्फोटों में 181 लोग मारे गए थे, महाराष्ट्र सरकार ने एक अध्ययन समूह का गठन किया था। कई महीनों की देरी के बाद भी, इसने अभी तक कोई सिफारिश प्रस्तुत नहीं की थी।
पाटिल ने देखा कि पिछली सभी घटनाओं में साइकिलों और स्कूटरों पर छिपाए गए बमों का इस्तेमाल किया गया था, जिन्हें बाज़ारों और प्रमुख इमारतों के बाहर छोड़ दिया गया था। कुछ सामग्री घर में ही बनाई गई थी, जो कपड़ा मिलों से चुराए गए पोटेशियम क्लोरेट से बनी थी, जहाँ इसका इस्तेमाल रंग को स्थिर करने के लिए किया जाता था। अन्य विस्फोटों में काले साबुन का इस्तेमाल किया गया था, जिसे स्थानीय लोग चिपचिपा सैन्य विस्फोटक आरडीएक्स कहते थे, जिसे पाकिस्तान या मध्य पूर्व से तस्करी करके देश में लाया जाता था। लेकिन हाल की खुफिया जानकारी से पता चला कि लश्कर कुछ नया करने की योजना बना रहा था, शहर पर सीधा हमला। तीन चेतावनियों में विशेष रूप से फिदायीन के इस्तेमाल का ज़िक्र था, यानी ग्रेनेड और एके-47 से लैस गुरिल्ला जो मरने तक लड़ते थे और भारी नुकसान पहुँचाते थे, लेकिन अंत में हार जाते थे। लश्कर ने भारतीय प्रशासित कश्मीर में इस रणनीति को घातक परिणामों के साथ लागू किया था।
ग्यारह चेतावनियों से संकेत मिला कि योजना में एक साथ कई हमले शामिल होंगे। छह चेतावनियों में समुद्री घुसपैठ का जिक्र था, जो भारत में पहली बार होगी। जोन 1 शहर के प्रायद्वीप के सबसे संकरे हिस्से में स्थित था और पश्चिम में बैक बे और पूर्व में बंदरगाह और गोदी से पहुँचा जा सकता था। पाटिल ने तटरक्षक बल से संपर्क किया और पूछा कि सुरक्षा बढ़ाने के लिए क्या किया जा रहा है। उन्हें बताया गया, 'कुछ नहीं।' उन्होंने बंदरगाह के प्रभारी डीसीपी को फोन किया, जिन्होंने बताया कि उनके पास धन की इतनी कमी है कि उनके पास पानी के रास्ते संदिग्धों का पीछा करने के लिए एक भी तेज गति वाली नाव नहीं है। उन्होंने अपने क्षेत्र में आने-जाने के लिए अपने पैसे से मछली पकड़ने वाली नौकाएँ किराए पर ली थीं।
आगे कैसे बढ़ना है, इस बारे में असमंजस में पड़े पाटिल ने पुलिस बल में अपने एक करीबी मित्र, डीसीपी राजवर्धन सिन्हा से सलाह ली, जो विशेष शाखा की

विदेशी नागरिकों की निगरानी करने वाली शाखा एसबी2 के उप प्रभारी थे। पाटिल और सिन्हा, जिन्हें सर्वत्र राजवर्धन के नाम से जाना जाता था, दोनों ने 1997 में एक ही बैच में पुलिस सेवा में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, हालांकि उनके करियर पथ अलग-अलग दिशाओं में चले गए थे। राजवर्धन का जन्म उत्तर भारतीय राज्य बिहार के अशांत इलाके में हुआ था, और उनकी पहली अधीक्षक की पोस्टिंग किसी भी पुलिसकर्मी के लिए कल्पना से परे सबसे कठिन पोस्टिंग में से एक थी: महाराष्ट्र के सुदूर पूर्वी इलाके में स्थित गढ़चिरोली शहर। यह तथाकथित रेड कॉरिडोर का हिस्सा था, जो नक्सली विद्रोहियों का गढ़ था। पश्चिम बंगाल के एक गांव के नाम पर, जहां से आंदोलन शुरू हुआ था, नक्सलियों ने कथित तौर पर भ्रष्ट जमींदारों को उखाड़ फेंकने, स्थानीय जनजातियों को शोषण से बचाने और निगमों द्वारा भूमि हड़पने को रोकने के लिए हथियार उठाए थे। पुलिस बीच में फंस गई थी, कुछ अधिकारी सरकार के गंदे काम करने के लिए मजबूर होने से नाराज थे, जबकि अन्य ने युद्ध के लिए तैयार होने का अवसर लिया।
राजवर्धन, जिनकी नाक के ऊपरी हिस्से पर तिरछी रेखा में बना द्वंद्वयुद्ध का एक गहरा निशान था, दूसरे पक्ष में थे। उन्होंने अपने साथियों से मज़ाक में कहा, 'जंगल में रहते हुए आपमें हत्यारा बनने की प्रवृत्ति जाग उठती है।' अपने पहले ही सप्ताह में उनके काफिले पर एक IED से हमला हुआ, ट्रक और जीपें पलट गईं, और जंगल में भागते समय घात लगाकर किए गए हमले में उन पर गोलियों की बौछार कर दी गई। शांत स्वभाव वाले राजवर्धन ने बिना किसी को खोए पैदल ही उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। मुंबई में खुफिया जानकारी इकट्ठा होने की खबर मिलने पर उन्होंने पाटिल को सलाह दी कि वे चेतावनियों को गंभीरता से लें। उन्होंने अपने मित्र से कहा, 'अगर हालात बिगड़ते हैं, तो तुम्हें ही इससे निपटना होगा।'
पाटिल ने अपने सबसे होनहार अधिकारियों के लिए रात्रिकालीन बैठकें शुरू कीं, जिनमें उन्हें महत्वपूर्ण स्थानों पर विशिष्ट कार्य सौंपे जाते थे। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से कई लक्षित स्थानों का दौरा किया। जुलाई 2008 में, उन्होंने बैक बे के दक्षिणी छोर पर स्थित बडवार पार्क नामक अनियमित मछुआरा बस्ती पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। यह वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल और ताज होटल के निकट था। पाटिल ने पश्चिमी क्षेत्र मुख्यालय के तटरक्षक कमांडेंट को पत्र लिखकर चेतावनी दी: 'यदि

असामाजिक/आतंकवादी/राष्ट्र-विरोधी तत्व रॉकेट लॉन्चर से हमला करना चाहें, तो इन नौकाओं का उपयोग किया जा सकता है।'
इसके बाद, खुफिया ब्यूरो को ताज होटल के बारे में दो और तारीख-विशिष्ट चेतावनियाँ मिलीं। एक 24 मई को संभावित हमले से संबंधित थी और दूसरी 11 अगस्त को, दोनों ही चेतावनियाँ पाकिस्तान के एक सूत्र से मिली सूचनाओं के आधार पर थीं, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह लश्कर के अंदरूनी सूत्र थे। एक अधिक राजनीतिक अधिकारी शायद देश के सबसे शानदार होटल, जिसका संचालन उपमहाद्वीप के सबसे शक्तिशाली उद्योगपति परिवारों में से एक, टाटा परिवार द्वारा किया जाता था, से पंगा लेने से बचता। लेकिन पाटिल ने सीधे हस्तक्षेप किया, 12 अगस्त को बैठक की मांग की और सुरक्षा प्रमुख सुनील कुड़ियादी के साथ नौ घंटे बिताए। कमिश्नर गफूर को अपनी बाद की रिपोर्ट में, जोन 1 के डीसीपी ने निष्कर्ष निकाला: 'कुल मिलाकर, प्रबंधन ने शहर के बदलते सुरक्षा माहौल के अनुरूप होटल को ढालने के लिए बहुत कम प्रयास किए हैं।'
पाटिल होटल व्यवसायी नहीं थे और उन्हें मेहमानों को लुभाने की ज़रूरत का कोई अंदाज़ा नहीं था। उन्होंने जो देखा, वह एक ऐतिहासिक इमारत थी जिसके चारों ओर बड़ी संख्या में असुरक्षित, रक्षाहीन प्रवेश द्वार और आसानी से भेदने योग्य छिद्रपूर्ण दीवारें थीं। सीसीटीवी कैमरे तो थे, लेकिन उन पर अस्पष्ट लेबल लगे थे और वे अव्यवस्थित ढंग से व्यवस्थित थे। तीसरी मंज़िल पर एक शराब का गोदाम था, जो आग के खतरे के कारण प्रतिबंधित था। होटल में हथियारों और विस्फोटकों की तस्करी का पता लगाने के लिए जो व्यवस्थाएँ थीं, वे लापरवाही से बनाई गई थीं। कोई विस्फोट रोधी अवरोधक या स्क्रीन नहीं लगाई गई थीं, जिसका मतलब था कि ताज होटल चलती गाड़ी से या गाड़ी से घुसकर आत्मघाती हमलावर के हमले के लिए असुरक्षित बना हुआ था। पाटिल ने कुडियादी से कहा: 'इस शहर में जो हुआ है, उसके बारे में मत सोचो। सोचो कि उन्होंने अभी तक क्या नहीं किया है। अगर उन्होंने मोटरसाइकिलों पर बम लगा दिए हैं, तो आसमान की ओर देखो।' पाटिल एक किले का निर्माण करना चाहते थे, जबकि ताज होटल को एक रंगमंच बने रहने की ज़रूरत थी।
12 अगस्त की बैठक के बाद पाटिल ने मामले को आधिकारिक रूप देने का फैसला किया। उन्होंने कुडियादी को लिखित सलाह जारी की, जिसकी एक प्रति महाप्रबंधक करमबीर कांग को भी भेजी गई। अमेरिका द्वारा दी गई चेतावनियों

के बढ़ते पैटर्न को देखते हुए, उन्होंने होटल को विस्फोट रोधी अवरोधक, सशस्त्र पुलिस चौकियां और छत पर स्नाइपर तैनात करने की सिफारिश की। इस सलाह को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया गया: मेहमानों का स्वागत चमकीले रंग की वर्दी पहने चौकीदारों द्वारा किया जाना चाहिए, न कि किसी ऐसी सुरक्षा टीम द्वारा जो होटल की विलासितापूर्ण छवि को धूमिल कर दे।
20 सितंबर 2008 के बाद उन्होंने कुछ प्रगति की, जब एक भीषण ट्रक बम विस्फोट ने पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में स्थित पांच सितारा मैरियट होटल को तबाह कर दिया, जिसमें पचास से अधिक लोग मारे गए। विस्फोट स्थल के भयावह दृश्य पूरे भारत में प्रसारित होने के बाद, पाटिल ने ताज होटल प्रबंधन के साथ एक बैठक की व्यवस्था की। अगले कुछ दिनों में, उन्होंने छब्बीस आपातकालीन उपाय तैयार किए, जिनमें मुख्य बरामदे पर पुलिस बंदूकधारियों की तैनाती और नीचे छह से नौ सशस्त्र अधिकारियों की तैनाती शामिल थी। उन्होंने पैलेस के दक्षिणी छोर पर स्थित कांच के सामने वाले नॉर्थ-कोट साइड के दरवाजे के लिए एक सुरक्षा ग्रिल, अन्य प्रवेश द्वारों के लिए स्वचालित ताला व्यवस्था और बैक बे की ओर खुलने वाले पैलेस लॉबी के दरवाजों को स्थायी रूप से बंद करने की सिफारिश की। सभी कर्मचारियों, मेहमानों और आगंतुकों को होटल में एक ही प्रवेश द्वार, टावर लॉबी से प्रवेश करना चाहिए, जहां मेटल डिटेक्टर, बैग की जांच और तलाशी की व्यवस्था होगी। अक्टूबर के दूसरे सप्ताह तक, ताज होटल ने इनमें से कई सुझावों को लागू कर दिया था और पाटिल छुट्टी पर चले गए, होटल ने शेष उपायों को पूरा करने का वादा किया।
सुरक्षा बैठक में पाटिल ने सुझाव दिया कि ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल में भी कुछ ऐसा ही किया जाए, जहां प्रधानमंत्री भाषण देने वाले थे। उन्होंने चेतावनी दी, 'शहर हमले के लिए पूरी तरह तैयार है।' खुफिया एजेंसियों को भी इस बात का अंदाजा था। सीआईए की हालिया चेतावनी में कहा गया था कि 'लश्कर पूरी तरह से सुसज्जित है और शहर पर व्यापक हमला करने के लिए तैयार है।'

शाम 7 बजे – कमरा नंबर 316, पैलेस विंग

ताज होटल में वापस आकर, केली अभी भी बाथरूम में 'लड़कियों वाली हरकतें' कर रही थी, जबकि विल आसमान को बैंगनी रंग में बदलते हुए देख रहा था। उसने

दरवाज़ा खटखटाया। 'हमारे पास शॉपिंग और बीयर के लिए समय नहीं होगा।' वह स्ट्रैपलेस मैक्सी ड्रेस और सैंडल पहने, गहरे लाल रंग के नाखूनों और मैचिंग लिपस्टिक के साथ बाहर आई। एकदम परफेक्ट।
वे होटल से दो ब्लॉक पीछे स्थित भीड़भाड़ वाली कोलाबा कॉज़वे की दुकानों की ओर चल पड़े। वे यहाँ थोड़े समय के लिए ही रुके थे, इसलिए वे हर चीज़ का अनुभव करना चाहते थे। लेकिन समुद्र तट के सुकून और होटल की लॉबी की नीरसता के बाद, यह जगह बहुत ही हलचल भरी थी, और लियोपोल्ड कैफ़े में एक खाली मेज देखकर वे वहीं बैठ गए। मुंबई का यह प्रसिद्ध कैफ़े किसी विक्टोरियन औषधालय और आइसक्रीम पार्लर का मिलाजुला रूप लगता था, और 1871 से एक ही पारसी परिवार के स्वामित्व में था।
खुशनुमा माहौल था। विल ने कहा, 'चलो बीयर और जलपीनो खाते हैं,' उसे माहौल का पूरा आनंद आ रहा था। उन्होंने दो-तीन गिलास पी लिए, वहीं खाने के बारे में बात की और फिर ताज होटल में शानदार डिनर करने की योजना पर अड़े रहे। वापस लौटते हुए वे बेस्ट मार्ग पर आए और नॉर्थकोट के प्रवेश द्वार से होटल में दाखिल हुए। विल ने केली को चिढ़ाते हुए कहा, 'यहाँ कोई सुरक्षा नहीं है। अगर तुम्हें यहाँ छापा मारना होता तो तुम इसी रास्ते से आते।' ठंडे संगमरमर के गलियारे से होते हुए पैलेस लॉबी की ओर बढ़ते हुए, खाली बुटीक और नील आर्मस्ट्रांग, येहुदी मेनुहिन और गमाल अब्देल नासिर जैसे मशहूर पूर्व मेहमानों की तस्वीरों से सजे एक डिस्प्ले केस को पार करते हुए, वे पूलसाइड बार पर रुके और एक और ड्रिंक ली, जिसे एक मिलनसार वेटर आदिल ईरानी ने परोसा।
कुछ क्षणों के लिए उन्होंने उससे गोवा के बारे में बातचीत की। वह वहाँ एक-दो बार जा चुका था और उसका एक चचेरा भाई वहाँ एक बार चलाता था। लेकिन जल्द ही सड़क पर पटाखों के शोर और चिल्लाहट से उसका ध्यान भटक गया और उसने अपने मैनेजर अमित पेशवे को बुलाया। ‘क्या बात है?’ अमित ने कंधे उचकाते हुए कहा: ‘कुछ नहीं।’ मैनेजर अभी भी अपनी इतालवी रिपोर्ट को लेकर परेशान था। वह इसे कब जमा करेगा? वह मुख्य लॉबी के पीछे स्थित शामियाना में क्या हो रहा है, यह देखने के लिए दौड़ पड़ा।
केली और विल ने बिल चुकाया और घर वापसी की फ्लाइट के लिए ऑनलाइन चेक-इन करने चले गए। विल ने अपने पिता और भाई-बहनों को भी एक छोटा सा ईमेल भेजा। वह बीयर, संगीत और आर्सेनल में मैच देखने के लिए उत्सुक था। उसने अंत में

लिखा, 'क्या आप रविवार को करी खाने के लिए आना चाहेंगे? मैं खाना बना रहा हूँ।'
महल की छठी मंजिल पर, समीक्षक सबीना सैकिया अपने सुइट में थीं, खूबसूरत साड़ी पहने, माथे पर बड़ी हिंदू बिंदी लगाए और बालों को सिर के ऊपर एक टाइट जूड़े में बांधे हुए। पारसी हॉल में एक भव्य शादी में शामिल होने के बाद, वह चक्कर आने और गुर्दों में दर्द के कारण ताज महल लौट आई थीं। तीन दिनों तक लगातार खाने-पीने के बाद, उनके शरीर ने विद्रोह कर दिया था, और जब उनका बटलर मदद के लिए आया, तो उन्होंने उसके जूते पर उल्टी कर दी। शांत भाव से, वह गंदगी साफ करने में जुट गया और पूछा कि क्या उन्हें डॉक्टर की ज़रूरत है। शर्मिंदा होकर, सबीना ने उसे दवा लाने के लिए बाहर भेज दिया, क्योंकि उन्हें अकेले रहने की ज़रूरत थी।
सबीना ने घबराई हुई और परेशान आवाज़ में अंबरीन खान को सलाह के लिए मैसेज किया। अंबरीन ने कहा, 'अपनी ट्रैक पैंट पहन लो,' और साथ ही यह भी कहा कि ट्राइडेंट-ओबेरॉय में तुम्हारा कार्यक्रम खत्म होते ही वह आ जाएगी। सबीना ने खिड़की से बंदरगाह में चमकती हुई एक शानदार नौका को देखा। ऐसा लग रहा था जैसे कोई पार्टी चल रही हो। उसने अंबरीन को फिर मैसेज किया: 'आ जाओ, मैंने मोमबत्तियां जलाई हैं, फूल और खाना तैयार है। मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ।'
कुछ ही कदम दूर, छठी मंजिल पर स्थित अपने अपार्टमेंट में, करमबीर कांग का परिवार दोपहर की खरीदारी के बाद वापस लौटा था। बड़ा बेटा उदय स्कूल के प्रोजेक्ट पर काम में व्यस्त था और समर 3 दिसंबर को कैथेड्रल स्कूल में दाखिले के लिए होने वाले अपने इंटरव्यू की तैयारी कर रहा था। लड़के बहुत खुश और ऊर्जावान लग रहे थे, इसलिए नीति ने अपने पति को सरप्राइज देने के लिए कुछ नए पोर्ट्रेट फोटो खिंचवाने का फैसला किया। उन्होंने पहली मंजिल पर स्थित ताज मेमोरीज स्टूडियो के फोटोग्राफरों को फोन किया। मैनेजर पर्ल दुबाश ने रात 8 बजे किसी को आने का इंतजाम किया। नीति ने करमबीर को फोन करके हालचाल पूछा। हमेशा की तरह ट्रैफिक जाम था, लेकिन वह ताज लैंड्स एंड पार्टी में पहुंच गए थे। उन्होंने बताया कि पार्टी काफी शानदार थी और ऐसी अफवाह थी कि बॉलीवुड के बड़े सितारे शाहरुख खान भी आ सकते हैं। उन्होंने वादा किया कि वह जल्द से जल्द वहां से निकल जाएंगे। नीति ने कहा कि उनके

पास उनके लिए कुछ खास है। 'बच्चों के पास है,' उन्होंने बताया। वह फोटो उनके लिए सरप्राइज होगी।
रात 9 बजे – टावर की लॉबी

सूट पहने मेहमान और साड़ी-गाउन में सजे शादी के अतिथि धीरे-धीरे क्रिस्टल रूम में आयोजित रिसेप्शन या डिनर के लिए प्रवेश कर रहे थे, वे सफेद इतालवी संगमरमर और खुबानी रंग के रेशमी कालीनों पर चल रहे थे। अतिथि लॉबी की घुमावदार पीठ वाली कुर्सियों पर बैठे थे और भारी क्रिस्टल के गिलासों में नींबू पानी पी रहे थे, जो ओनेक्स की मेजों पर रखे थे।
बाहर सीढ़ियों पर, शोर मचाते हुए यूरोपीय संसद सदस्यों और उनके कर्मचारियों की भीड़ अपनी बस से बाहर निकली, जिनका गेंदे के फूलों की मालाओं से स्वागत किया गया। चेक-इन काउंटर पर छह हट्टे-कट्टे पूर्व कमांडो खड़े थे, जो निकोल्स स्टेन एंड एसोसिएट्स के लिए काम करते थे। यह दक्षिण अफ्रीका की एक वीआईपी सुरक्षा कंपनी थी, जिसके पास कई आकर्षक अनुबंध थे, जिनमें लॉस एंजिल्स में होने वाले वार्षिक ऑस्कर समारोह के लिए सुरक्षा सलाह देना भी शामिल था। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा नियुक्त, वे आगामी चैंपियंस लीग ट्वेंटी20 क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए अग्रिम दल का हिस्सा थे और दुबई में एक अन्य काम पूरा करने के बाद यहाँ पहुँचे थे। पिछली रात काफी देर तक चली थी - आतिशबाजी और काइली मिनोग की प्रस्तुति - और वे थके हुए महसूस कर रहे थे।
ब्रिटिश मूल के बॉस बॉब निकोल्स ने अपने आदमियों से कहा, 'जाओ और सामान रख दो।' वह पहले से ही दो दिन से शहर में थे और ताज के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुडियादी, करमबीर कांग, पुलिस और बीसीसीआई से मुलाकात कर रहे थे। 'चलो खाना खाते हैं और कुछ बीयर पीते हैं।' नए आए लोग चाइनीज खाना चाहते थे। लेकिन सात लोगों के लिए एकमात्र उपलब्ध टेबल टावर की सबसे ऊपरी मंजिल पर, सौक में थी। 'और बकरी का मांस लाओ,' कमांडो में से एक ने बुदबुदाते हुए कहा, जब वे फ्रेश होने गए।
रात 9.15 बजे तक, टावर के सबसे ऊंचे हिस्से में स्थित, कांच की दीवारों वाला चिकना बाज़ार, जहाँ से गेटवे ऑफ इंडिया और अरब सागर का शानदार नज़ारा दिखता है, खाने वालों से भर गया था। निकोल्स और उनकी टीम खिड़कियों के पास कांच की मेजों में से एक पर झुके हुए बातचीत कर रहे थे। मुंबई पुलिस आगामी

क्रिकेट टूर्नामेंट की सुरक्षा ज़रूरतों को पूरा करने में समय ले रही थी और अगले कुछ दिनों में उन्हें सुरक्षा का दबाव बढ़ाना होगा।
कमरे के दूसरी ओर, भारतीय मूल के 31 वर्षीय अमेरिकी मरीन कैप्टन और लड़ाकू पायलट रवि धर्निधारका, दूर की दीवार के पास एक मेज पर बैठ गए। वे अपने भाई और भारतीय रिश्तेदारों के साथ थे। सैन डिएगो में रहने वाले रवि की यह मुंबई यात्रा थी, जब वे किशोरावस्था में अपने पिता के साथ आए थे। उनके पिता की कम उम्र में अचानक मृत्यु हो जाने के बाद, रवि का मुंबई स्थित परिवार से संपर्क टूट गया था और उन्होंने तेरह वर्षों से अपने दादा को नहीं देखा था। लंबे समय से वे उनसे दोबारा जुड़ना चाहते थे, लेकिन इराक में दो कठिन दौरों में उलझ गए, जिनमें नवंबर 2004 में शुरू हुए फालुजा के भयंकर युद्ध, ऑपरेशन फैंटम फ्यूरी के दौरान लड़ाकू मिशनों में उड़ान भरना भी शामिल था। मरीन कोर के नेतृत्व में, सौ से अधिक अमेरिकी सैनिक हजारों इराकियों के साथ मारे गए थे। रवि, जिन्होंने विद्रोहियों के गढ़ों को कमजोर करने के लिए हैरियर विमान उड़ाए थे, ने तुरंत काम शुरू कर दिया था। जब वे आखिरकार घर लौटे, तो उन्हें सामान्य जीवन में ढलने में थोड़ा समय लगा।
अब उन्हें भारत आने का समय मिल गया था, और पिछले दस दिन पुराने और नए रिश्तेदारों से मिलने-जुलने में ही बीत गए थे। पिछले चार सालों से अमेरिका के 'आतंकवाद विरोधी युद्ध' में उलझे रहने के कारण, उनके मन में अपनी विदेशी पहचान और एशियाई जड़ों को लेकर मिली-जुली भावनाएँ उमड़ रही थीं। आज शाम को वे कफ परेड के पास बडवार पार्क के नजदीक रहने वाली अपनी एक चचेरी बहन से मिलने गए थे, और उसने उन्हें अपनी खिड़की से मछुआरों की झोपड़ियों का नज़ारा दिखाया, जो एक छोटी सी खाड़ी के किनारे बनी थीं, जहाँ रंग-बिरंगी नावें लंगर डाले खड़ी थीं। जैसे ही उन्होंने सूर्यास्त देखा और मछुआरों को अपने जाल ठीक करते देखा, उन्हें सालों बाद पहली बार सचमुच सुकून महसूस हुआ। अब वे एक अच्छे डिनर और एक और चचेरी बहन से मिलने के लिए उत्सुक थे। बाद में, उन्होंने ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल में खाना खा रहे रिश्तेदारों से मिलने की योजना बनाई थी। उनकी चचेरी बहन ने सूक की खिड़कियों से होटल की ओर इशारा किया, जो नरीमन पॉइंट पर लाइटहाउस की तरह जगमगा रहा था। उन्होंने कहा, 'क्या अद्भुत नज़ारा है!' 'यह ऐसा है मानो आप दुनिया के शीर्ष पर स्थित मछलीघर में बैठे हों।'

टावर की लॉबी में, भोजन करने वाले और शादी के मेहमान जैसे-जैसे विदा होते गए, शांति लौटती जा रही थी। ताज होटल के पियानोवादक मोरेनो अल्फोंसो ने 'ऑलवेज' धुन बजाना समाप्त किया। हफ्ते में छह रातें, यह गंजे सिर वाला संगीत शिक्षक, जिसके पिता ने तीस के दशक में यहाँ वायलिन बजाया था, मुख्य कांच के दरवाजों के दाईं ओर रखे भव्य पियानो पर बजाता था। 'अल' ने लगभग अपना पूरा जीवन होटल में ही बिताया था; उसकी सबसे पुरानी यादें अपने भाई के साथ छोटी लकड़ी की कुर्सियों पर बैठने की थीं, जिनके नीचे उनके नाम लिखे होते थे, और वे अपने पिता के साथ पियानो बजाते थे। उसने अपनी घड़ी देखी: 21.36। यह उसके शाम के मध्य के अवकाश का समय था। अल ने ढक्कन बंद किया और कर्मचारियों के लिए बने एक सादे दरवाजे से बाहर निकल गया।

2

राजकुमार डेविड

जब डेविड हेडली सितंबर 2006 में पहली बार ताज होटल में दाखिल हुए, तो वे इसकी सहज भव्यता, शालीन कर्मचारियों और मिलनसार नियमित ग्राहकों से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या वे इसे ध्वस्त करने की योजना बना पाएंगे। इस भव्यता ने उन्हें अपने कुलीन वंश, अपने परिवार की अपार संपत्ति और प्रभाव, और उन कहानियों की याद दिला दी जो उन्होंने अपनी माँ की गोद में सीखी थीं।
चोबेदारों ने दरवाजे खोलते हुए जोरदार अभिवादन किया, मानो उन्हें विशेष रूप से उनके लिए ही तैनात किया गया हो। टावर की लॉबी में फैली फ्रैंगिपानी की खट्टी और टैल्कम पाउडर जैसी खुशबू, और सी लाउंज की खिड़कियों से दिखने वाला नज़ारा, जिसके सामने भीड़भाड़ वाला गेटवे ऑफ इंडिया किसी कलात्मक चित्र जैसा लग रहा था, ने हेडली को लगभग आश्वस्त कर दिया कि यह होटल एक धर्मनिरपेक्ष और अनमोल वस्तु है जिसे बचाना आवश्यक है।
हेडली को अनिद्रा से ग्रस्त यह शहर स्फूर्तिदायक लगा। उन्होंने इसके इतिहास को बड़ी उत्सुकता से आत्मसात किया, कि कैसे सात द्वीपों का यह द्वीपसमूह 1661 में राजा चार्ल्स द्वितीय को उनकी नई पत्नी कैथरीन ऑफ ब्रागांज़ा द्वारा दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था, हालांकि उन्नीसवीं शताब्दी तक यह मुख्य रूप से कोली मछुआरों द्वारा बसा हुआ था। फिर टाटा जैसे पारसी प्रवासियों ने खारे दलदल को साम्राज्य (और ताज महल) में तब्दील कर दिया और शहर को एशिया के सबसे व्यस्त बंदरगाह और बॉम्बे प्रेसीडेंसी की राजधानी में बदल दिया, जो ब्रिटिश भारत के सबसे समृद्ध और शांतिपूर्ण क्षेत्रों में से एक था। हेडली टाटा के दृढ़ संकल्प से प्रभावित थे। उन्हें मुंबई की हलचल और उसके तेजतर्रार, उद्यमशील स्वभाव

से प्यार हो गया था। उन्हें भारत की अवधारणा से ही घृणा थी - उनके पैतृक पूर्वजों की भूमि से। और उन्होंने शहर और देश के बीच, जनता और जिसे उन्होंने 'उनके हिंदू शासक' बताया, के बीच की इस छोटी सी खाई का इस्तेमाल अपने गुप्त षड्यंत्र को जायज ठहराने के लिए किया, जिसका उद्देश्य मृत्यु और अराजकता फैलाना था।
अपनी पहली यात्रा में, वह ताज होटल में ठहरने का खर्च नहीं उठा सकते थे, क्योंकि उनका काम अभी शुरू ही हुआ था और बजट सीमित था। लेकिन यहाँ, उन अधिकांश जगहों की तरह जहाँ उन्होंने मेहनत की थी, दिखावा ही सब कुछ था। उन्होंने ताज होटल से साढ़े चार मील दूर, पॉश ब्रीच कैंडी इलाके में एक शानदार निजी कमरा किराए पर ले लिया और ताज होटल का ज़िक्र करते हुए वहाँ नियमित रूप से रहने लगे। वेटर, मैनेजर और मेहमान उन्हें अक्सर हार्बर बार में डोम पेरिनॉन शैम्पेन पीते हुए या फॉस्टीन मार्टिस के सी लाउंज में किसी ऐसे व्यक्ति का मनोरंजन करते हुए देखते थे, जिसे वह 'एक ग्राहक' के रूप में पेश करते थे, और अपने साथियों को अपनी बुलंद अमेरिकी आवाज़ में अपने 'शानदार ब्रीच कैंडी बैचलर पैड' के बारे में बताते थे।
हेडली को नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था: छह फुट दो इंच लंबा, सुनहरे बाल पोनीटेल में बंधे, चौड़े कंधे और गोरा रंग, सिकुड़ी हुई अरमानी जींस और शर्ट पहने, कंधे पर चमड़े की जैकेट लटकी हुई। उनका हाव-भाव ऐसा था मानो वो खतरनाक हों, उनकी कलाई से 10,000 पाउंड की रोलेक्स सबमरीनार घड़ी झाँक रही थी। लेकिन वो आसानी से घुलमिल जाते थे और स्टारबोर्ड बार में, ताज की लॉबी में, और एक्वेरियस होटल में, पूल के किनारे, मुंबई के लोग इस बात पर बहस करते थे कि उन्हें सबसे अच्छी तरह कौन जानता है, और उन महिलाओं के बारे में किस्से सुनाते थे जो उन पर फिदा थीं। डेविड आपकी परेशानियाँ सुनते और आपको हाई-फाइव देते। 'हाँ, कोई बात नहीं,' वो कहते। 'जो चाहो।' डेविड शांत स्वभाव के थे। 'मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।' वो साधन संपन्न और उदार थे। 'मैं लाता हूँ।'
लेकिन जो भी उन्हें फिलाडेल्फिया के एक अमेरिकी उद्यमी डेविड के रूप में जानता था, उन्हें उनकी असलियत का आधा ही पता था। उनकी बहन शेरी और सौतेले भाइयों हमजा और दान्याल, उनकी पत्नियों पोर्टिया, शाज़िया और फ़ैज़ा, उनके चचेरे भाइयों फरीद और एलेक्स, उनके चाचा विलियम, उनके सबसे अच्छे दोस्त तहाव्वुर राणा और पाकिस्तान की सर्वव्यापी अंतर-सेवा खुफिया एजेंसी

(आईएसआई) में कार्यरत जासूस मेजर इकबाल के लिए, वे दाऊद सलीम गिलानी थे - पाकिस्तानी मूल के एक अमेरिकी नागरिक।
उनकी मिश्रित विरासत और उलझी हुई वंशावली, जिसके कारण वे आतंकवादी हमले की योजना बनाने के लिए भारत आए थे, उनकी दो अलग-अलग आंखों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी: एक नीली और एक भूरी।

दाऊद के पिता सैयद सलीम गिलानी एक प्रतिष्ठित लाहौरी परिवार से ताल्लुक रखने वाले जाने-माने पाकिस्तानी रेडियो प्रसारक थे। उनकी मां सेरिल हेडली मैरीलैंड की एक समृद्ध और साहसी महिला थीं। उनकी परदादी एक अमेरिकी परोपकारी और विद्रोही स्वभाव की महिला थीं, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों और यहां तक कि अल्बर्ट आइंस्टीन के शोध को भी वित्त पोषित किया था। लेकिन 1952 में सेरिल के सुखमय बचपन पर उस समय एक दुखद घटना का साया पड़ गया जब उनके पिता, जो कॉलेज के पूर्व फुटबॉल स्टार थे, एक बार में झगड़ा शांत कराने की कोशिश करते समय गोली लगने से शहीद हो गए। सेरिल की मां और उनके चार बच्चों ने पड़ोसी राज्य पेंसिल्वेनिया में एक नई शुरुआत की और फिलाडेल्फिया के एक समृद्ध उपनगर मेन लाइन में एक बड़ा फार्म खरीदा। लेकिन अपने पिता की मृत्यु के समय तेरह वर्ष की सेरिल बेकाबू हो गईं। जब उनकी मुलाकात गिलानी से हुई, जो वॉयस ऑफ अमेरिका में प्रतिनियुक्ति पर थे, तब वह मैरीलैंड विश्वविद्यालय में उन्नीस वर्ष की स्नातक छात्रा थीं और यह मुलाकात दो संयोगों के समान थी। गिलानी, जो सुसंस्कृत और परिष्कृत थे, पाकिस्तान में पारंपरिक ग़ज़लों के पारखी के रूप में प्रसिद्ध थे और उन्होंने संगीत के माध्यम से सेरिल का दिल जीता। 1960 में वाशिंगटन डीसी में दाऊद के जन्म के बाद, सेरिल रोमांच की संभावना से उत्साहित होकर पाकिस्तान जाने के लिए सहमत हो गईं। लेकिन पूर्वी तट पर, संघीय काल के एक टाउन हाउस में जो बात कारगर साबित हुई थी, वह लाहौर के अब्बास हाउस में, गिलानी के पैतृक घर में, पूरी तरह विफल हो गई। 1966 में उनका तलाक हो गया और सेरिल ने एक वृद्ध अफगान बीमा अधिकारी से शादी कर ली, जिससे दाऊद का पालन-पोषण गिलानी की दूसरी पत्नी, लाहौर की एक प्रभावशाली उत्तराधिकारी के हाथों में हो गया।
ठुकराए जाने के कारण दाऊद अपनी अनुपस्थित माँ की तरह ही अनियंत्रित हो गया। उसे सुधारने के लिए उसके पिता ने उसे पश्चिमी पंजाब के एक छोटे से

कस्बे में स्थित कैडेट कॉलेज में दाखिला दिला दिया, जो सैन्य परिवारों के बीच लोकप्रिय था। हालाँकि गिलानी एक अधिकारी नहीं थे, फिर भी वे उसी परिवेश से जुड़े हुए थे। वे एक मुहाजिर थे, भारत से आए प्रवासी, जिनका परिवार पंजाब के कपूरथला से था, जहाँ से उन्हें विभाजन के कारण शुरू हुए नरसंहारों में जबरन निकाला गया था। विभाजन का खूनी मंजर गिलानी परिवार के खाने की मेज पर मंडराता रहता था, जबकि कैडेट कॉलेज की कक्षाओं में भारत के साथ शत्रुता की चर्चा होती थी और परेड ग्राउंड पर उसका प्रदर्शन किया जाता था।
अपनी अमेरिकी माँ की तरह, दाऊद भी जीवन में मन लगाकर काम करने से कतराता था और उसके पाकिस्तानी परिवार द्वारा उसे लगातार अपने विदेशी होने का एहसास दिलाया जाता था। जल्द ही उसके परिवार में दो नए भाई, दान्याल और हमज़ा भी शामिल हो गए। सोलह वर्ष की आयु में, दाऊद को जैसे ही मौका मिला, वह अपनी माँ से मिलने के लिए अमेरिका चला गया। सेरिल अपने अफ़ग़ान पति की मृत्यु के बाद फिलाडेल्फिया लौट आई थी और उसने चेस्टनट के पास सेकंड स्ट्रीट पर एक पुराना अवैध शराबखाना खरीद लिया था, जो उस समय शहर का थोड़ा उजाड़ इलाका था। उसने उस जगह को खैबर पास पब में बदल दिया और बगीचे में एक पाकिस्तानी शामियाना (शादी का तम्बू) लगा दिया। हालाँकि, वह एक नए आदमी, फिलाडेल्फिया इन्क्वायरर के एक रिपोर्टर, के प्रति आकर्षित हो गई और अपने बिछड़े हुए बेटे को पब के नियमित ग्राहकों की देखभाल में छोड़ दिया, जिन्होंने उसे 'राजकुमार' का नाम दिया। पब के ऊपर रहने वाला एक रूढ़िवादी मुस्लिम किशोर दाऊद अपने नए जीवन से जूझ रहा था। उसके चाचा विलियम, सेरिल के भाई, ने याद किया कि वह अपना अधिकांश समय पब के टीवी पर 'हैप्पी डेज़' देखते हुए अपनी माँ के घर आने का इंतज़ार करते हुए बिताता था। लेकिन आखिरकार उन्होंने सत्तर के दशक के अमेरिका में मौजूद अवसरों को अपना लिया। एक स्थानीय टीवी चैनल पब पर एक कार्यक्रम बनाने के लिए आया और उन्होंने दाऊद को लंबे बालों और कंधों तक लटकते लंबे बालों के साथ फिल्माया, उनके लंबे पैर फ्लेयर पैंट में लहरा रहे थे, और सेरिल एक शानदार फर कोट में सजी हुई थीं। दो साल के भीतर ही वह मैनहट्टन चले गए, परिवार के पैसों से अपर वेस्ट साइड में एक आलीशान अपार्टमेंट किराए पर लिया और एक वीडियो स्टोर खोल लिया।
दाऊद के शौक भी काफी ऊंचे दर्जे के थे, और जब परिवार का पैसा खत्म हो गया तो उसने सोचा कि वह अपना गुजारा कैसे चलाएगा। वह दो देशों की भाषाएं बोल सकता

था और उन अराजक इलाकों में भी बेधड़क यात्रा कर सकता था जहां अमेरिकियों का जाना मना था। 1984 में उसने अपने कॉलेज के सबसे अच्छे दोस्त तहव्वुर राणा से संपर्क किया, जो अंतर्मुखी स्वभाव का एक मेधावी छात्र था और पाकिस्तानी सेना में सैन्य चिकित्सक बनने का प्रशिक्षण ले रहा था। दाऊद पाकिस्तान लौट रहा था और उसने राणा से आदिवासी इलाकों की सड़क यात्रा पर साथ चलने को कहा। राणा ने अपने सैन्य संपर्कों और पहचान पत्र का इस्तेमाल करके उन्हें पाकिस्तान के एक संवेदनशील हिस्से से सुरक्षित निकाल लिया – उसे इस बात की जानकारी नहीं थी कि दाऊद ने स्थानीय तस्करों से आधा किलो हेरोइन खरीदी थी और उसे गाड़ी की डिक्की में छिपा रखा था। अफ़गानिस्तान-पाकिस्तान सीमा से अपना माल लेकर लौटा दाऊद लाहौर में बह गया। एक महिला के साथ संबंध बनाकर उसने उसे बिना उसकी शुद्धता जाने ही ड्रग्स चखा दी। महिला ने ड्रग्स का ओवरडोज ले लिया और पुलिस ने उसे पकड़ लिया। अपने पिता के संपर्कों के कारण वह बच गया और मामला चुपचाप निपटा दिया गया। लेकिन उस घटना के बाद से दाऊद के पिता उससे दूर हो गए और अपने बेटों को अपने सौतेले भाई से 'दूर रहने' की सलाह देने लगे।
दाऊद ने हार न मानते हुए फिर से वही कोशिश की। वह खैबर दर्रे के प्रवेश द्वार पेशावर लौट आया और वहाँ नियमित रूप से आने-जाने लगा, अक्सर राणा और उसकी जीप को गालियाँ देता रहता था। उसने निर्यात के धंधे में भी हाथ आजमाने का फैसला किया, अपने सामान में हेरोइन छिपाकर अमेरिका ले जाता और मैनहट्टन स्थित अपने स्टोर, फ्लिक्स वीडियो के ज़रिए बेचता था। कभी-कभी वह अपने अमेरिकी चचेरे भाइयों को प्रभावित करने के लिए वीएचएस टेपों से भरा एक बड़ा सूटकेस लेकर फिलाडेल्फिया पहुँच जाता था। एक रिश्तेदार ने बताया, 'वह करिश्माई और आकर्षक था। लेकिन हमें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह असल में क्या कर रहा है।'
चार साल बाद जब सीमा शुल्क अधिकारियों ने फिलाडेल्फिया जाते समय फ्रैंकफर्ट हवाई अड्डे पर दाऊद को दो किलोग्राम हेरोइन के साथ पकड़ा, तो उसे लंबी जेल की सजा सुनाई गई और उसके पिता ने उसे त्याग दिया। अमेरिकी अधिकारियों को सौंपे जाने के बाद, अब वह अकेला था, उसने ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन (DEA) को एक सौदा पेश किया: उसके अमेरिकी साथी। उन्हें आठ से दस साल की जेल हुई, जबकि दाऊद ने पाला बदलकर DEA के लिए एक वेतनभोगी मुखबिर के रूप में काम करना शुरू कर दिया, जिसे पाकिस्तान-अमेरिका हेरोइन

तस्करी नेटवर्क में घुसपैठ करने के निर्देश दिए गए थे। उसने घंटों तक टेलीफोन पर हुई बातचीत का अनुवाद किया, साथ ही एजेंटों को पाकिस्तानी लोगों से पूछताछ करने का तरीका सिखाया। उसने नियमों का पालन करने से भी इनकार कर दिया। एक DEA एजेंट ने शिकायत की कि वह व्यापारिक यात्रा के दौरान गायब हो जाता था और ऐसी बैठकें आयोजित करता था जिन पर नज़र नहीं रखी जाती थी। लेकिन उसका उत्पाद इतना प्रभावशाली था, जानकारी इतनी सटीक थी कि जब वह वापस आया तो उसे माफ कर दिया गया।
दाऊद किसी भी बात से खुद को बचा सकता था, एक पूर्व डीईए एजेंट ने याद किया। अनुभवी ड्रग जांचकर्ता भी उसकी कमियों को नज़रअंदाज़ कर देते थे क्योंकि वह उन्हें उन जगहों तक ले जाता था जहाँ वे पहुँच नहीं सकते थे। उसकी अमेरिकी माँ, सेरिल, दूर से ही अपने बेटे को अपना आदर्श मानती थीं, और हालाँकि वह उससे आमने-सामने कम ही मिलती थीं, फिर भी उन्होंने अपने लिविंग रूम की दीवार पर उसकी एक बड़ी लैमिनेटेड तस्वीर लगा रखी थी। उसके परिवार के अमेरिकी पक्ष के अन्य लोग इतने आश्वस्त नहीं थे। उन्होंने चेतावनी दी कि दाऊद को केवल अपने बारे में ही चिंता थी, और उनका तर्क था कि उसकी स्वार्थपरता उसके आत्म-बोध की कमी से पैदा हुई थी: एक ऐसा युवक जिसे अपनी माँ से शिकायत थी और अपने पिता से अलग-थलग था, जिसकी कई अस्पष्ट पहचानें थीं, जिनमें से कोई भी ठीक से मेल नहीं खाती थी। उसके चाचा विलियम ने कहा, 'हम मज़ाक में कहते थे कि उसकी एक बांह में कुरान और दूसरी में डोम पेरिनॉन की बोतल है।'
जब भारतीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (डीईए) पूर्वी तट पर हेरोइन के व्यापार पर लगाम कस रही थी, तब उनका प्रमुख मुखबिर दाऊद गिलानी पाकिस्तान लौट आया और लाहौर के एक व्यस्त इलाके में स्थित ऐतिहासिक चौराहे के विशाल मदरसे और प्रार्थना कक्ष, 'चार स्तंभ' नामक मस्जिद में समय बिताने लगा। जामिया क़दीसिया लश्कर-ए-तैबा का गढ़ था, जो भारतीय प्रशासित कश्मीर में अपना नाम बना चुका था। मस्जिद के लाउडस्पीकरों से लश्कर का कश्मीर को भारत से मुक्त कराने का संदेश प्रसारित होता था। मस्जिद के बाहर लगे बैनरों पर 'जिहाद' का नारा लिखा था, जो कुरान की सेवा में एक पवित्र युद्ध था। पाकिस्तान, जो पतन की ओर अग्रसर था, जहाँ विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा, आपातकालीन सेवाएँ या सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था नहीं थी, वहाँ सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध लश्कर

अक्सर किसी भी प्रकार की आपदा के बाद सबसे पहले मदद के लिए पहुँचता था। इसी वजह से यह कई लोगों के लिए आकर्षक था।
दाऊद, जो अपने पिता से विभाजन की कहानियाँ अच्छी तरह जानता था, भारत-विरोधी अभियान और इस्लाम के कमांडो बनने के रोमांटिक विचार से आकर्षित हुआ। उसने एक व्यावसायिक अवसर भी देखा: हेरोइन की घटती मांग के बीच, मादक पदार्थों के धंधे से आगे बढ़कर एक ऐसे नए खतरे के बारे में संवेदनशील जानकारी जुटाने की संभावना, जिससे अमेरिका में उसके आका चिंतित होने लगे थे। जब दाऊद 1997 में न्यूयॉर्क में दोबारा पकड़ा गया, तो उसने इस विचार को आजमाया और कट्टरपंथियों से अपनी निकटता का फायदा उठाते हुए एक सौदा किया। अदालत के सामने पेश किए गए एक पत्र ने इसकी प्रभावशीलता को दिखाया, क्योंकि अभियोजकों ने स्वीकार किया कि दाऊद ने भले ही 947,000 पाउंड मूल्य की पंद्रह किलोग्राम हेरोइन की आपूर्ति की हो, लेकिन वह एजेंसी के साथ 'विभिन्न मुद्दों' पर 'विश्वसनीय और खुलकर जानकारी देने वाला' भी रहा था। उसे न्यू जर्सी के फोर्ट डिक्स में पंद्रह महीने की कम सुरक्षा वाली जेल में सजा सुनाई गई, जबकि उसके सह-अपराधी को चार साल की उच्च सुरक्षा वाली जेल में सजा मिली, लेकिन दाऊद को केवल नौ महीने बाद रिहा कर दिया गया। अगस्त 1999 में, वह पाकिस्तान लौट आए, उनके टिकट का खर्च अमेरिकी सरकार ने उठाया था। यह घटना तंजानिया के दार एस सलाम और केन्या के नैरोबी में अमेरिकी दूतावासों पर अल-कायदा द्वारा किए गए एक साथ बम हमलों के एक साल बाद घटी थी, जिनमें सैकड़ों लोग मारे गए थे। इसके जवाब में वाशिंगटन ने जवाबी कार्रवाई करते हुए अफगानिस्तान में अल-कायदा के पांच प्रशिक्षण शिविरों पर पचहत्तर क्रूज मिसाइलें दागी थीं। वह रक्षा मंत्रालय (डीईए) से जुड़े रहे, लेकिन अमेरिकी आतंकवाद-विरोधी एजेंसियां भी अब उनमें दिलचस्पी लेने लगी थीं, क्योंकि वाशिंगटन अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा से सक्रिय चरमपंथी ताकतों के प्रति सतर्क हो गया था।
लाहौर लौटकर दाऊद ने मानो किसी सुनियोजित घुसपैठ की योजना बनाई हो। उसने एक रूढ़िवादी पाकिस्तानी महिला शाज़िया अहमद से शादी कर ली और लाहौर नहर के किनारे एक बस्ती में बस गया, जिसे प्रेमियों का जलमार्ग कहा जाता था। हालांकि उसके पिता, जो उस समय रेडियो पाकिस्तान के महानिदेशक थे, और उसका भाई दान्याल, जो सिविल सेवा परीक्षा दे रहा था, उससे दूरी बनाए रखते थे। 2000 के अंत में, यमन में अल-कायदा द्वारा अमेरिकी विध्वंसक पोत यूएसएस

कोल पर हमले के तुरंत बाद, दाऊद ने लश्कर के जिहाद कोष में 50,000 रुपये (600 पाउंड) दान किए और लश्कर के मूल संगठन जमात-उद-दावा के अमीर हाफ़िज़ सईद द्वारा दिए गए एक निजी व्याख्यान में प्रवेश का टिकट खरीदा। सईद, जो बारबरोसा शैली में घनी और लाल मेहंदी वाली दाढ़ी रखता था, पहले से ही अमेरिकी रडार पर था। बातचीत के बाद दाऊद ने अमीर से पूछा कि क्या वह सेना में भर्ती हो सकता है, लेकिन उसके अनुरोध को 'बहुत ही विनम्रता से अस्वीकार कर दिया गया', उसने याद किया। आधे अमेरिकी और गोरी चमड़ी वाले दाऊद के साथ संदेहपूर्ण व्यवहार किया गया। उसे स्वीकार्यता पाने के लिए और अधिक मेहनत करनी होगी।
वह अमेरिका लौट आया और अपने दूसरे कामों में लग गया। उसने अपनी नई प्रेमिका, पोर्टिया पीटर, जो एक कनाडाई मेकअप आर्टिस्ट थी, को अपने अपर वेस्ट साइड वाले अपार्टमेंट में रहने के लिए बुला लिया, और उसे पाकिस्तान में छोड़ी अपनी पत्नी के बारे में कुछ नहीं बताया। 9/11 की घटना से पहले तक, वह उसे एक सच्चे अमेरिकी की तरह लगता था। लेकिन उस दिन दाऊद टीवी से चिपका हुआ था और जब उसने उसे गुस्से में यह कहते हुए देखा कि अमेरिका पर हमला होना ही चाहिए था, तो वह सहम गई। जिहाद की दुनिया में उसकी तल्लीनता साफ झलक रही थी।
राष्ट्रीय संकट के इस क्षण में दाऊद के रवैये से भयभीत होकर, पोर्टिया ने न्यूयॉर्क के एक बार में अपने एक मित्र को दाऊद की टिप्पणियाँ बताईं, जिसने पुलिस को इसकी सूचना दी। एफबीआई ने पोर्टिया से पूछताछ की। 4 अक्टूबर को, संयुक्त आतंकवाद विरोधी कार्य बल (जेटीटीएफ) के लिए काम कर रहे रक्षा विभाग के दो एजेंटों ने दाऊद से उसके डीईए अधिकारियों के सामने पूछताछ की। नोट्स की समीक्षा करने वाले एक रक्षा अधिकारी ने याद किया कि दाऊद ने कहा था, 'आपको लगता है कि मैं एक चरमपंथी हूँ। लेकिन आपको जाँच करनी चाहिए, क्योंकि मैं अमेरिकी सरकार के लिए काम कर रहा हूँ।' उसने यह दावा करके भी जोखिम भरा खेल खेला कि उसका संबंध पाकिस्तान की आईएसआई जासूसी एजेंसी के उप निदेशक से है, और उसे संदेह था, जो सही साबित हुआ, कि अमेरिका में कोई भी जल्दी से यह पता नहीं लगा पाएगा कि यह सच है या नहीं। फरवरी 2002 तक, 9/11 के पांच महीने बाद, दाऊद एक बार फिर पाकिस्तान में था, अमेरिकी सरकार ने उसे लश्कर के अंदर घुसपैठ करने के अपने प्रयासों को दोगुना करने के लिए कहा था, जिसके कई कैडर अब अल-कायदा के इर्द-गिर्द भी

घूम रहे थे, जिनमें दाऊद का नया सबसे अच्छा दोस्त और लाहौर में पड़ोसी पाशा भी शामिल था।
पाशा का पूरा नाम अब्दुर रहमान हाशिम था; वह छठी बलूच राइफल्स के पूर्व सैन्य अधिकारी थे, आकर्षक व्यक्तित्व वाले और युद्ध के मैदान में माहिर थे। उन्होंने तोरा बोरा पहाड़ों में ओसामा बिन लादेन के खिलाफ लड़ने के आदेश को ठुकराने के बाद अपना कमीशन छोड़ दिया था, जब पाकिस्तानी सेना ने अमेरिकी 'आतंकवाद विरोधी युद्ध' में हिस्सा लिया था। दाऊद पाशा की युद्ध कहानियों से मंत्रमुग्ध हो गया था, पूर्व सैनिक ने बताया कि कैसे वह अफगान तालिबान के साथ शामिल हो गया था। पाशा के प्रभाव में आकर, दाऊद 2001 से पहले पाकिस्तान में साल में एक महीने से भी कम समय बिताता था, लेकिन पाशा साल का अधिकांश समय वहीं बिताने लगा।
उसने सलवार कमीज़ (पारंपरिक पोशाक) पहनी। उसने अपने दोस्तों से कहा कि उसने शराब, टीवी और मोबाइल फोन त्याग दिए हैं। वह लाहौर के बाहर मुरीदके स्थित लश्कर के मुख्यालय में ठहरा, जो एक विशाल परिसर था। उसने संगठन के मूल अहल-ए-हदीस संप्रदाय को अपना लिया, जो सुन्नी इस्लाम का एक रूढ़िवादी सलाफी संप्रदाय है और पैगंबर के कथनों और कार्यों पर आधारित है। उसने तीन महीने के कठिन अर्धसैनिक प्रशिक्षण में भी भाग लिया, जिसके लिए वह बस से पाकिस्तान के कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्र में लश्कर के गुप्त प्रशिक्षण केंद्र, बैत-उल-मुजाहिदीन (पवित्र योद्धाओं का घर) तक जाता था। यह केंद्र संगठन के अमीर, सह-संस्थापक और सैन्य कमांडर ज़की-उर-रहमान लखवी के नियंत्रण में था, जिसे उसके छात्र चाचा कहते थे।
बयालीस वर्ष की आयु में दाऊद अधिकांश रंगरूटों की आयु से दोगुने से भी अधिक था। वह प्रशिक्षण में असफल रहा और 2002 के अंत में अपमानित होकर न्यूयॉर्क लौट आया। फिलहाल, उसके पास किसी से कुछ भी देने को नहीं था और अगले कुछ महीनों तक वह अमेरिकी जीवन से ऊबता रहा और अपने करीबी रिश्तेदारों के अलावा किसी से भी मिलने से इनकार करता रहा। उसने एक बेतरतीब दाढ़ी बढ़ा ली थी, जैसा कि सभी हदीसियों के लिए अनिवार्य था, और अपना अधिकांश समय प्रार्थना में बिताता था, अपने हाथों को पेट पर एक कठोर और विशिष्ट शैली में बांधे रखता था। उसकी माँ सेरिल और प्रेमिका पोर्टिया उसके इस बदलाव से चिंतित थीं, सेरिल ने अपनी चिंता एक स्थानीय कॉफी शॉप चलाने वाली दोस्त से साझा की। उसने कहा, 'वह पाकिस्तान में प्रशिक्षण

समूहों की सूची में शामिल किया गया था। जेटीटीएफ ने उससे तीन बार पूछताछ की, लेकिन उसके बाद उससे कोई संपर्क नहीं हो पाया क्योंकि दाऊद ने एक बार फिर अमेरिकी अधिकारियों को आश्वस्त कर दिया कि उसने जो कुछ भी किया वह उसकी गुप्त जिंदगी का हिस्सा था, जिसके बारे में अब सभी दस्तावेजी सबूत मौजूद थे। उसने अमेरिकियों को न केवल लश्कर के बारे में, बल्कि उसके भीतर अल-कायदा की ओर झुकाव रखने वाले कार्यकर्ताओं के बारे में भी अनूठी जानकारी दी, और अब उसने पाशा के साथ अपनी दोस्ती का खुलासा किया, जो 'ओसामा बिन लादेन को जानता था'। अल-कायदा नेता की तलाश के छह साल बाद, दाऊद को आतंकवाद विरोधी हलकों में 'महत्वपूर्ण' माना जाता था, वह उन गिने-चुने अमेरिकी पासपोर्ट धारकों में से एक था जो कुछ हद तक विश्वसनीयता के साथ यह दावा कर सकता था कि वह अमेरिका के सबसे वांछित अपराधियों के साथ उठता- बैठता है।

जनवरी 2006 में, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा लश्कर-ए-तैबा को प्रतिबंधित संगठनों की सूची में शामिल करने, उसके नेताओं की संपत्ति ज़ब्त करने और यात्रा प्रतिबंध तथा हथियार प्रतिबंध लागू करने के बाद, दाऊद ने एक जोखिम भरा कदम उठाने का फैसला किया। उसने पाशा को फोन किया और अपने ड्रग-तैराकी के दिनों के संपर्कों से मिलने के लिए एक अनधिकृत सड़क यात्रा का सुझाव दिया, जो 'उन रास्तों का इस्तेमाल भारत में हथियार तस्करी करने के लिए कर सकते थे'। निश्चित रूप से इससे लश्कर के लिए रास्ते खुल जाते। लेकिन 9/11 के बाद से स्थिति पूरी तरह बदल चुकी थी। पेशावर के पश्चिम में, खैबर दर्रे के प्रवेश द्वार पर, दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। ये सीमावर्ती क्षेत्र विशेष रूप से संवेदनशील थे, क्योंकि पश्चिम ने पाकिस्तान पर तालिबान शरणार्थियों और अल-कायदा के नेतृत्व को वहाँ छिपाने का आरोप लगाया था। पाकिस्तानी सेना ने इस क्षेत्र में जासूसों, एजेंटों और खोजकर्ताओं की भरमार कर दी थी, और दाऊद गिलानी जैसे विदेशी पासपोर्ट धारकों के लिए वहाँ यात्रा करना प्रतिबंधित था।
पाशा ने अपना सैन्य पहचान पत्र निकाला और एक रात जेल में बिताने के बाद उसे एक फोन करने की अनुमति दी गई। पूर्व सैनिक ने खैबर राइफल्स में अपने एक पुराने दोस्त को फोन किया। पाशा और दाऊद को एक सेना शिविर में ले जाया गया, जहाँ एक अधिकारी ने अपना परिचय मेजर अली के रूप में दिया। उसने लश्कर के

सदस्य पाशा को सलाम किया और उनके साथ हुए दुर्व्यवहार के लिए माफी मांगी। पाशा ने दाऊद से फुसफुसाकर कहा कि 'मेजर एक जासूस है', आईएसआई का एजेंट है, जो सेना द्वारा संचालित खुफिया एजेंसी है और भारत के खिलाफ लड़ने वाले जिहादी गुटों को धन और हथियार वितरित करती है।
बैंक क्लर्क की तरह कपड़े पहने, कटी हुई मूंछों और काले रंगे बालों वाले मेजर दाऊद की कल्पना में किसी आईएसआई एजेंट जैसे नहीं दिखते थे। पाशा ने समझाया कि आईएसआई में कई तरह के लोग होते हैं। जिहाद मिशन पर तैनात रहने वाले लोग अपने ग्राहकों जैसे बन जाते हैं, अक्सर स्वेच्छा से रूढ़िवादी धार्मिक संगठनों के अधीन भी हो जाते हैं। दूसरी ओर, मेजर को लश्कर के लिए अल्पकालिक ड्यूटी पर रखा गया था, उन्हें संयुक्त खुफिया उत्तर में शामिल किया गया था, जिसका मतलब था जिहादी संगठनों से निपटने का दो से तीन साल का चक्र, जिसके बाद उन्हें जासूसों के साम्राज्य में कहीं और भेज दिया जाता था।
दाऊद ने वही किया जो वो हमेशा करता था जब वो बेबस हो जाता था: उसने मेजर को एक सौदा पेश किया। उसे उम्मीद थी कि अगर उसे कभी वापस जाने की इजाज़त मिली, तो यह सौदा पाकिस्तान में भी उतना ही कारगर साबित होगा जितना अमेरिका में। मध्य-अटलांटिक लहजे में बोलते हुए उसने बताया कि वो असल में आधा पाकिस्तानी है और उसके पास अमेरिकी पासपोर्ट भी है, और वो भारत के खिलाफ जिहाद में मदद करने के लिए उत्सुक है। मेजर चौंक गया, लेकिन दाऊद ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि वो उनका आदमी है। ‘क्यों न एक बेदाग चमड़ी वाले व्यक्ति का इस्तेमाल मुंबई जैसे महान भारतीय व्यापारिक केंद्र पर ज़बरदस्त हमले की रेकी के लिए किया जाए?’ वो अपना नाम भी कानूनी तौर पर बदलकर पश्चिमी लहजे में रखने को तैयार था।
रात के खाने पर दाऊद ने अपने पिता के नाम और प्रतिष्ठा का इस्तेमाल करते हुए अपना प्रभाव जमाया और खुलासा किया कि उसका भाई दान्याल, यूसुफ रजा गिलानी के लिए काम कर रहा था, जो एक उभरता हुआ राजनीतिक सितारा और पाकिस्तान नेशनल असेंबली का पूर्व स्पीकर था। मेजर ने कहा, 'कुछ लोग आपसे संपर्क करेंगे,' और अंततः दाऊद और पाशा को लाहौर लौटने की अनुमति दे दी। कुछ ही देर बाद, 'मेजर इकबाल' का फोन आया, जिसने दाऊद को एयरपोर्ट रोड पर स्थित लाहौर आर्मी कैंटोनमेंट के एक पते पर बुलाया। मेजर इकबाल, मेजर अली जैसा ही था और दाऊद को पूरा यकीन था कि वह भी आईएसआई का एजेंट है। मेजर ने

मुंबई जाने की योजना पर चर्चा की, और वह भी सीमा पर तैनात अपने साथी की तरह ही उत्सुक था। लेकिन इस तरह की साहसिक योजना ने सभी को घबरा दिया और बैठक बिना किसी ठोस निर्णय के समाप्त हो गई।
एक महीने बाद मेजर ने संपर्क किया। दाऊद के पारिवारिक संबंधों की जाँच हो चुकी थी और उनके पास अच्छी खबर थी। उन्होंने दाऊद को अमेरिका लौटने और अंग्रेज़ी नाम से पासपोर्ट बनवाने के लिए पैसे देने की पेशकश की। दाऊद ने अपना नाम डेविड कोलमैन हेडली चुना, जिसके आखिरी दो हिस्से उन्होंने अपने अमेरिकी दादा से लिए थे, जिनकी 37 साल की उम्र में दुखद मृत्यु हो गई थी। उसी महीने उन्होंने पासपोर्ट बनवाने की प्रक्रिया पूरी कर ली और अपने अमेरिकी रिश्तेदारों को बताया कि पाकिस्तानी नाम के कारण आव्रजन पर रोके जाने से वे तंग आ चुके हैं। उनमें से एक, जो अमेरिकी सेना में था, को शक हुआ। 'मुझे बहुत बुरा लगा और मैंने सोचा कि इसकी शिकायत अपने वरिष्ठों से करूँ।' लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और दाऊद की हरकतों से किसी भी अमेरिकी अधिकारी को कोई आगाह नहीं हुआ, जिनसे आम तौर पर यह उम्मीद की जाती थी कि वे किसी ऐसे व्यक्ति के आवेदन पर सवाल उठाएँगे जिसका आपराधिक रिकॉर्ड हो और आतंकवाद का समर्थन करने के आरोप में कई बार जाँच हो चुकी हो। यह एक अपवाद था या अधिकारी इस साजिश में शामिल थे, जैसा कि दाऊद के अमेरिकी सरकार के एजेंट प्रोवोकेटर और मुखबिर के रूप में उतार-चढ़ाव भरे करियर में कई अन्य मामलों में भी हुआ था।
दाऊद के पाकिस्तान लौटने पर, मेजर इकबाल ने एक सेना अधिकारी को नवगठित 'डेविड हेडली' को आईएसआई के दो वर्षीय जासूसी और प्रति-खुफिया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के संक्षिप्त संस्करण में प्रशिक्षित करने का काम सौंपा। मुंबई की जासूसी करने के लिए, उसे यह जानना आवश्यक था कि अपने निष्कर्षों को कैसे दर्ज किया जाए, किन बातों पर नज़र रखी जाए और यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि उस पर नज़र नहीं रखी जा रही है। मेजर इकबाल ने उसे वे दस्तावेज़ दिए जिन्हें उन्होंने 'वर्गीकृत भारतीय फाइलें' बताया और कहा कि ये भारतीय पुलिस और सेना के भीतर से प्राप्त की गई थीं और जिनसे 'उनके प्रशिक्षण और सीमाओं का खुलासा होता है'। मेजर ने दावा किया कि नई दिल्ली में उनका एक सुपर-एजेंट काम कर रहा है जिसे 'हनी बी' के नाम से जाना जाता है। मेजर ने खुलासा किया कि हेडली को वह मार्गदर्शन देंगे, लेकिन मुंबई ऑपरेशन का संचालन लश्कर द्वारा किया जाना था।

[illegible] [illegible] a [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on on [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] '[illegible] on a [illegible] [illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on on 7,500 [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on on [illegible] on [illegible] [illegible], on [illegible] on [illegible]-[illegible] on on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] on [illegible] (on [illegible] on [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible] on) on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on on, on [illegible] [illegible]-[illegible], [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

लगाया, साथ ही नफरत फैलाने वाले अपराधों को बढ़ावा देने, यहूदियों और हिंदुओं पर हमला करने और आत्मघाती हमलावरों की प्रशंसा करने का भी आरोप लगाया।
उसके आरोपों को दबा दिया गया, और बाद में एफबीआई ने यह कहते हुए मामला टाल दिया कि गोपनीयता कानूनों के कारण आव्रजन विभाग अपनी चिंताओं की रिपोर्ट नहीं कर सकता। हालांकि, तब तक जेटीटीएफ ने पोर्टिया, हेडली की मां, और परिवार के कई अन्य सदस्यों के साथ-साथ उन पारिवारिक मित्रों से भी पूछताछ कर ली थी जिन्होंने अधिकारियों को सूचना दी थी। इससे या तो खुफिया जानकारी जुटाने में गंभीर चूक हुई, या जैसा कि सेरिल और पोर्टिया को यकीन होने लगा था, यह मानने के पुख्ता सबूत मिले कि डेविड/दाऊद अमेरिकी खुफिया समुदाय के लिए लश्कर की जानकारी दे रहा था (और इसके विपरीत भी)।
2006 की शरद ऋतु में, डेविड हेडली ने मेजर इकबाल से मिले 15,000 पाउंड का इस्तेमाल मुंबई के पॉश विलिंगडन स्पोर्ट्स क्लब के पास स्थित व्यावसायिक क्षेत्र टार्डेओ एसी मार्केट में इमिग्रेशन लॉ सेंटर खोलने के लिए किया। उन्होंने स्थानीय अखबारों में विज्ञापन दिए – ‘कुशल और अकुशल भारतीयों के लिए अमेरिका और कनाडा के लिए गारंटीशुदा वर्क वीजा’ – और एक सचिव को नियुक्त किया जो अकेले ही कार्यालय संभालती थी और सोचती थी कि हेडली के पास फैक्स या अंतरराष्ट्रीय फोन क्यों नहीं है। उसे यह भी अजीब लगता था कि हेडली ने कभी उससे अपनी यात्रा की व्यवस्था करने के लिए नहीं कहा। लेकिन आखिर वह एक विदेशी थे।
असल में, हेडली का एक और दफ्तर था जिसके बारे में उसकी सेक्रेटरी को कुछ पता नहीं था: चर्चगेट रेलवे स्टेशन के पास रिलायंस साइबर कैफे, जहाँ वह तहाव्वुर राणा, साजिद मीर, मेजर इकबाल और पाशा के साथ लगातार ईमेल का आदान-प्रदान करता था, जिसका ऑनलाइन उपनाम स्कॉर्पियन 6 था। मीर वासी कोडनेम और दो ईमेल पतों का इस्तेमाल करता था – rare.layman@gmail.com और get.me.some.books@gmail.com – जबकि मेजर इकबाल, जो हेडली को ‘मेरे प्रिय’ कहकर संबोधित करते थे, ने इसी ईमेल पते से लिखा था। chaudherykhan@yahoo.com. हेडली, जो कभी-कभी हस्ताक्षर समाप्त करते थे डेव सलाफी, जिनका ईमेल पता ranger1david@yahoo.com था, हमेशा स्थानीय प्रतिभाओं के बारे में जानकारी देने के लिए समय निकाल लेते थे। उन्होंने

राणा को एक ईमेल में लिखा, 'यहां की लड़कियां वाकई बहुत खूबसूरत हैं। हम दोनों को अपनी गर्लफ्रेंड के बिना यहां आकर अच्छा समय बिताना चाहिए।'
अब उसे अपनी जगह पक्की करनी थी। उसने अपने अपार्टमेंट के पास स्थित मोक्ष (Salvation) नाम के एक जिम में दाखिला लिया, जहाँ बॉलीवुड के छोटे-मोटे सितारे भी कसरत करते थे। वहाँ उसकी दोस्ती विलास वारेक नाम के एक फिटनेस ट्रेनर से हो गई। वे फिल्मों के बारे में बातें करते और बॉलीवुड पार्टियों में बिना बुलाए चले जाते। वारेक, हेडली की महिलाओं को आकर्षित करने की कला से प्रभावित हुआ और वे वारेक की मोटरसाइकिल पर बांद्रा के देर रात तक खुले रहने वाले बारों में घूमने लगे। वारेक लड़कियों से शेखी बघारते हुए कहता, 'हम तो भाई हैं।'
एक रात, वे हेडली को शिवाजी मंदिर ले गए, जो एक थिएटर और मंदिर परिसर था, ताकि वे बॉडीबिल्डिंग का शो देख सकें। वहाँ, वेरक ने हेडली का परिचय राहुल भट्ट से कराया, जो भारत के सबसे प्रशंसित फिल्म निर्देशकों में से एक महेश भट्ट के बेटे थे। महेश की पत्नी, जो एक धर्मनिष्ठ मुस्लिम थीं, ने अपने बेटे का पालन-पोषण भी उसी धर्म में किया था। जल्द ही हेडली, वेरक और भट्ट घनिष्ठ मित्र बन गए, और भारतीय अपने नए दोस्त को उसके कपड़ों के कारण 'डेविड अरमानी' कहने लगे। माहौल को सहज बनाए रखने के लिए, हेडली अपने अमेरिकी जीवन के कुछ किस्से सुनाते थे: फिलाडेल्फिया में वह बार जिसे उनकी बोहेमियन माँ चलाती थीं, उनके दादा की दुखद कहानी और कैसे उनके अमेरिकी पूर्वजों ने न्यूयॉर्क राज्य में पहला तेल कुआँ बनाया था और रॉकफेलर परिवार को जानते थे। वे ताज होटल में, खासकर सी लाउंज में, जहाँ फॉस्टीन मार्टिस हाई टी की देखरेख करती थीं, अक्सर होने वाली मुलाकातों का बिल भी हेडली ही चुकाते थे। उनके पाकिस्तानी परिवार का ज़िक्र कभी नहीं हुआ। भट्ट को हेडली के हथियारों के बारे में ज्ञान देखकर हैरानी होती थी। वह दुनिया भर में सुरक्षा बलों द्वारा किए गए हमलों और छापों का ब्यौरा देते रहते थे। वे लगभग सभी हथियारों की क्षमता और सामर्थ्य का वर्णन कर सकते थे। लेकिन एक बार जब भट्ट ने मज़ाक में उन्हें 'एजेंट हेडली' कहकर पुकारा, तो वे भड़क उठे। 'बस करो।' भट्ट को लगा कि हेडली अजीबोगरीब बातों पर भी बहुत संवेदनशील थे और कई बार तो थोड़े सनकी भी थे। उन्होंने अपने दोस्तों से कहा कि वे उन्हें अफ़गानिस्तान-पाकिस्तान सीमा दिखाने ले जाना चाहते हैं। भट्ट हंसते हुए सिर हिलाते हैं: 'मुझे बहुत डर लगता है,' उन्होंने कहा।

'मुझे डेनियल पर्ल की तरह मार दिया जाएगा।' हेडली हंसे। 'अगर मैं आस-पास हूं तो कोई तुम्हें हाथ नहीं लगाएगा। तुम्हें अपना नाम बदल लेना चाहिए।' उन्होंने भट्ट की ओर देखा और कहा: 'शायद तुम्हें मोहम्मद अट्टा बन जाना चाहिए!' 9/11 के षड्यंत्रकारी को तो सब जानते थे। हेडली ने उनके सामने हंसते हुए कहा, 'जो बात साफ़-साफ़ दिखती है, उसी में सुरक्षा है।'
जब हेडली वारेक या भट्ट के साथ नहीं होते थे, तो वे अक्सर अकेले ही ताज होटल जाया करते थे। उनके मन में ताज होटल पहले से ही सबसे पसंदीदा जगह के रूप में उभर रहा था। एक प्रभावशाली स्थानीय व्यापारी, सुनील पटेल के साथ शराब पीते हुए, उन्होंने क्रिस्टल रूम में आयोजित एक बॉलीवुड पार्टी में आमंत्रित होने का मौका पाया और होटल की दुकान से एक मोंट ब्लैंक पेन खरीदा। वे नालंदा होटल में भी घूमते-फिरते थे। उन्हें ताज होटल और वहाँ का रहन-सहन बहुत पसंद था, और वे इसे बारीकी से देखते थे। कम से कम दो बार, वे शुक्रवार के टूर में शामिल हुए, जो पर्यटकों के बीच लोकप्रिय एक सशुल्क वॉक-एंड-टॉक टूर था। उन्होंने इस टूर की वीडियो रिकॉर्डिंग भी की, जिनमें से एक वीडियो में उन्होंने होटल का लेआउट और उसका इतिहास दर्ज किया। उन्होंने इसके संस्थापक, जमशेदजी टाटा के बारे में भी पढ़ा, जिनका परिवार मूल रूप से गुजरात के पुजारी थे और शहर में आकर बस गए थे। उन्होंने अपने बेटे को 1858 में एक खोज यात्रा पर लंदन भेजा था।
सब कुछ शोध सामग्री थी। हेडली ने उस गाइड को टेप किया जिसमें बताया गया था कि टाटा राजवंश के वंशज यूरोप से कपास मिलें खोलने की योजना के साथ लौटे थे और व्यक्तिगत वफादारी पर आधारित एक औद्योगिक साम्राज्य का निर्माण कर रहे थे। जमशेदजी टाटा ने अपोलो बंडर स्थित बंदरगाह के सामने एक आयताकार भूखंड भी खरीदा था, जहाँ उन्होंने मुगल, राजपूत और प्राच्य शैली को औपनिवेशिक मानकों के साथ मिलाकर एक होटल बनाने की कल्पना की थी।
एक होटल के पैम्फलेट में, हेडली ने ताज होटल के डिजाइन के बारे में कुछ अंशों को रेखांकित किया, जिसमें बताया गया था कि कैसे उद्योगपति टाटा ने बॉम्बे के महान विक्टोरियन मास्टर बिल्डर फ्रेडरिक स्टीवंस के नेतृत्व में एक गतिशील इंडो-यूरोपीय टीम को काम पर रखा था, जिन्होंने रॉयल अल्फ्रेड सेलर्स होम (बाद में राज्य पुलिस मुख्यालय), साथ ही विक्टोरिया टर्मिनस (बाद में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस नाम दिया गया) और चर्चगेट स्टेशन का निर्माण किया था।

उस पुस्तिका में बताया गया था कि स्टीवंस ने टिकाऊ भूरे बेसाल्ट पत्थर से एक यू-आकार की संरचना बनाई थी, जो बंदरगाह से अंदर की ओर मुड़ती थी, और जिसमें विशाल दीर्घाएँ इमारत की पूरी लंबाई में, प्रत्येक पंख के साथ और दूसरी मंजिल से छत तक फैली हुई थीं: शाम की ठंडी हवाओं को पकड़ने के लिए एक शानदार जाल। हेडली समूह के साथ इन दीर्घाओं में चले, पूरे रास्ते का वीडियो बनाते रहे और बाद में मार्ग का रेखाचित्र बनाया, जबकि आगंतुकों को बताया गया कि स्टीवंस ने इन दीर्घाओं को गुजराती जाली और एडवर्डियन शैली में ढाली गई रेलिंग से जोड़ने की योजना बनाई थी।
हेडली ने होटल के जटिल लेआउट को समझने के लिए, जहाँ-जहाँ वे गए थे, विस्तृत रेखाचित्र बनाए, और साथ ही होटल के नवाचार के इतिहास के बारे में भी जाना। उन्होंने गाइडबुक में उन अंशों को चिह्नित किया जिनमें बताया गया था कि होटल की आगे से पीछे की ओर की स्थिति से अधिक से अधिक मेहमानों को समुद्र का नज़ारा देखने का अवसर मिलता है। विक्टोरिया टर्मिनस की तरह, ताज होटल के प्रत्येक कोने पर गुंबद थे और एक भव्य केंद्रीय गुंबद था जो एक कैंटिलीवर वाली केंद्रीय सीढ़ी को ढकता था। तहखानों में एक रेफ्रिजरेशन प्लांट था, भूतल और पहली मंजिल पर दुकानें और रेस्तरां थे, जबकि शयनकक्ष दूसरी से पाँचवीं मंजिल तक थे, और इमारत के ऊपर एक छत पर बगीचा था। जब 1900 में स्टीवंस का अचानक निधन हो गया, तो उनके उत्तराधिकारी विलियम चैंबर्स ने इसमें फ्लोरेंटाइन पुनर्जागरण शैली को जोड़ा। जमशेदजी ने तीस निजी अपार्टमेंट और 350 डबल और सिंगल कमरों के लिए 26 मिलियन रुपये खर्च किए - जो आज के 200 मिलियन पाउंड के बराबर है - जिनमें बिजली की रोशनी, पंखे, घंटियाँ और घड़ियाँ थीं, साथ ही जर्मनी से आयातित चार यांत्रिक यात्री लिफ्ट भी थीं। होटल में अपना खुद का बिजली संयंत्र, एक दवाखाना और एक तुर्की स्नानघर था। शहर के शाही माहौल को और बढ़ाते हुए, एक डाकघर भी खोला गया। तकनीकी उन्नति करते हुए, निवासियों को कार्बन डाइऑक्साइड से चलने वाले रेफ्रिजरेशन सिस्टम से ठंडा रखा जाता था, जो बॉम्बे के पहले लाइसेंस प्राप्त बार के लिए बर्फ भी प्रदान करता था। एक अंग्रेज प्रबंधक और एक फ्रांसीसी मुख्य शेफ के साथ, ताज होटल 1902 में लगभग आधा बनकर तैयार था, जब जमशेदजी यूरोप और अमेरिका के भव्य दौरे पर निकले और एफिल टॉवर के निर्माताओं से बेल्जियम के क्रिस्टल झूमर और स्टील के खंभे मंगवाए।

14 दिसंबर 2006 तक, हेडली के सभी मेमोरी कार्ड भर चुके थे, उनका बैग होटल और शहर के पर्यटक मानचित्रों और पुस्तिकाओं से भरा हुआ था। उन्होंने अपने नए दोस्तों को बताया कि वह क्रिसमस अपनी माँ के साथ बिताने के लिए फिलाडेल्फिया लौट रहे हैं, लेकिन इसके बजाय उन्होंने लाहौर के लिए उड़ान भरी। वह सीधे मेजर इकबाल के पास गए और उन्हें फुटेज सौंप दिया। कुछ दिनों बाद, वह चेलाबंदी पहाड़ियों में स्थित आइस बॉक्स गए, जहाँ उन्होंने साजिद मीर को ऑपरेशन बॉम्बे का फुटेज दिखाया। लेकिन लश्कर में कुछ और लोग भी थे जिन्हें हेडली को प्रभावित करना था। उन्हें सैन्य प्रमुख चाचा ज़की से निजी मुलाकात का मौका मिला, जिनसे वह मुजाहिद प्रशिक्षण शिविर में असफल होने के बाद से नहीं मिले थे। सैन्य प्रमुख ज़की ने सम्मान के प्रतीक के रूप में हेडली को दूध और केसर भेंट किया, लेकिन अपनी दूरी बनाए रखी। मीर ने बाद में हेडली को आश्वस्त किया कि चाचा का दिल जीतने में समय लगता है। मीर ने कहा, 'योजना को मनवाना मुश्किल है, लेकिन हम कोशिश कर रहे हैं।' ‘सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप उसकी नज़र में हैं।’ अब से हेडली को आश्वस्त होना चाहिए कि लश्कर उन सभी लक्ष्यों पर हमला करने की योजना पर गंभीरता से विचार कर रहा था जिनकी वह रेकी कर रहा था, जिनमें शहर का पुलिस मुख्यालय, लियोपोल्ड कैफे नामक एक पर्यटक स्थल और ताज होटल शामिल थे।

लाहौर लौटकर हेडली अपनी पाकिस्तानी पत्नी शाज़िया के साथ घर पर बेचैनी से बैठा रहा, जो उनके तीसरे बच्चे के साथ आठ महीने की गर्भवती थी। उसे इंतज़ार करना बिल्कुल पसंद नहीं था, और जब उसे अपने ड्रग्स के धंधे के दिनों के पुराने परिचित चांद भाई का फोन आया, तो वह उससे मिलने के लिए तुरंत निकल पड़ा।
हेडली उसे सीबी कहकर बुलाता था। वह लाहौर के मुस्लिम टाउन में एक कबाड़ की दुकान और पोकर अड्डा चलाता था। उसने हेडली को बताया कि उसे एक ऐसी लड़की मिली है जो उसे पसंद आएगी। फ़ैज़ा औटलहा एक युवा मोरक्कन मेडिकल छात्रा थी, पश्चिमी सोच वाली, आज़ाद ख्यालों वाली और आकर्षक। वह डॉक्टर बनने की ट्रेनिंग के लिए पाकिस्तान आई थी, लेकिन एक साल बाद ही वह इंसानी चीर-फाड़ से तंग आ चुकी थी। पढ़ी-लिखी और अंग्रेज़ी, अरबी और फ़्रेंच में माहिर फ़ैज़ा ने अपने मध्यमवर्गीय मोरक्कन पालन-पोषण, खेलकूद और पियानो बजाने को छोड़कर उस जगह को चुना था जिसे अब वह 'तीसरी दुनिया का नरक' मानती थी।

डॉक्टरों ने उसे उच्च रक्तचाप से पीड़ित बताया था और इंजेक्शनों का एक कोर्स दिया था जिससे उसे चक्कर और भ्रम होने लगे थे। उसे डर था कि ये दवाएँ दूषित थीं। फ़ैज़ा घर जाना चाहती थी और सीबी के यहाँ गांजा पीकर अपना समय बिताती थी, जो 'मकड़ियों से भरा हुआ था, हर जगह धूल ही धूल थी'। जब हेडली अंदर आया, तो वह दुकान के पीछे ताश खेल रही थी।
चौड़े कंधों, संक्षिप्त पश्चिमी शैली और मोहक मुस्कान वाले उस व्यक्ति को निहारते हुए, फ़ैज़ा को तुरंत लगा कि उसकी किस्मत बदल रही है। उसने अपनी डायरी में लिखा, "जब वह मुझसे नज़रें मिला रहा था, तो मेरे भीतर से एक आवाज़ आई, 'यही वह है, मुझे पता है कि मैं इसी से शादी करूंगी'।"
लश्कर को मनाने और आईएसआई को खुश करने में बीते तनाव भरे महीनों और मुंबई की तनावपूर्ण जासूसी यात्रा के बाद, खूबसूरत, जीवंत और बेबाक फ़ैज़ा एक ताज़गी देने वाली साबित हुईं। एक हफ्ते के भीतर ही उनकी 'शादी' हो गई और हेडली ने उन्हें अपनी पत्नी से कुछ दूरी पर एक किराए के अपार्टमेंट में रहने के लिए बुला लिया, जिसके बारे में उन्होंने किसी को नहीं बताया। नया जोड़ा बादशाही मस्जिद के नज़ारे वाले कैंडललाइट डिनर पर जाने लगा और फ़ैज़ा उनकी मोटरसाइकिल पर लाहौर की पुरानी गलियों में घूमने लगीं। जब उन्होंने फ़ैज़ा से हिजाब पहनने को कहा, तो वह मान गईं। फ़ैज़ा ने लिखा, 'मेरा दवे एक बहुत ही सुंदर आदमी था, जिसकी एक आँख भूरी और दूसरी नीली थी, बहुत प्यारा, शर्मीला, बुद्धिमान और नेक दिल। कभी-कभी वह मासूम होता था, कभी-कभी बच्चे जैसा। वह मुझसे कहा करता था: "जान, तुम्हें पता है, तुम इस दुनिया में भी हो और आख़िरत में भी।" मानो उसने मुझे दो दुनियाओं में पाया हो।'
हालांकि, हनीमून का समय जल्द ही खत्म हो गया जब हेडली ने अचानक घोषणा की कि उसे विदेश जाना है। उसे मेजर इकबाल से एक ईमेल रिमाइंडर मिला था जिसमें लिखा था कि चाचा जाकी की आपत्तियों के बावजूद, उनसे ऑपरेशन बॉम्बे के लिए अपनी टोही पूरी करने की उम्मीद की जाती है: 'हाय, कैसे हो? कोई संपर्क नहीं हो रहा है। परियोजनाओं पर क्या प्रगति है? कृपया मुझे अपडेट करते रहो।' वह 21 फरवरी 2007 को पाकिस्तान से रवाना हो गया, जिससे फ़ैज़ा परेशान और शंकालु रह गई। उसने हेडली के फ़ोन बिल खंगाले और कई लोगों को फ़ोन करके गर्भवती शाज़िया और उसके दो बच्चों के बारे में पता लगाया। दोनों महिलाओं ने मुंबई में हेडली को फ़ोन किया और बहुत परेशान थीं। हेडली को चिंता थी कि

उसकी उलझी हुई प्रेम कहानी से काम बिगड़ सकता है, इसलिए उसने सब कुछ रोक दिया और लाहौर वापस चला गया। शाज़िया को शांत करने में उसे पाँच दिन लगे। उसकी नई पत्नी फ़ैज़ा, जिसने अपनी प्रतिद्वंदी को उसके रूढ़िवादी इस्लामी पहनावे के कारण तिरस्कारपूर्वक 'एक नकाबपोश औरत' कहा, को शांत करने में ज़्यादा समय लगा।
हेडली 20 मार्च 2007 को मुंबई लौट आए। फ़ैज़ा ने भी साथ आने की ज़िद की और इस यात्रा को 'हमारा हनीमून' बताया। हेडली की राय अलग थी: 'मुझे उसे भारत लाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन उसने ज़िद की।' वह भी उनके साथ चल पड़े, खूब पैसे खर्च किए और पहली बार ताज होटल में कमरा बुक कराया। आख़िरकार, उन्हें होटल के उन सभी कोनों और गलियों को देखने का मौका मिल रहा था जो सिर्फ़ मेहमानों के लिए खुले थे, जैसे पैलेस की पाँचवीं और छठी मंज़िल के खास गलियारे। लेकिन लॉबी में कदम रखते ही उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया। कभी आज़ादी की मिसाल रहीं, चरस पीने वाली, जुआ खेलने वाली और शराब पीने वाली फ़ैज़ा ने अब हिजाब उतारने से इनकार कर दिया।
हेडली के ताज होटल में शराब पीने वाले दोस्तों ने उसे तुरंत पहचान लिया और दौड़कर उसके पास आ गए। उनका नास्तिक अमेरिकी दोस्त एक बुर्का पहनी मुस्लिम महिला के साथ क्या कर रहा था? 'अरे, वह एक ग्राहक है,' उसने तुरंत बहाना बनाया और अगले कुछ दिनों तक उसने फ़ैज़ा को ताज होटल घुमाने का बहाना बनाया, उसकी सैकड़ों तस्वीरें खींचीं और साथ ही यह सोचता रहा कि उसे वापस घर कैसे ले जाए। यात्रा के कुछ दिनों बाद, शाज़िया का फोन आया, जिससे दबाव और बढ़ गया: उसने अभी-अभी एक बेटे को जन्म दिया था।
हेडली ने फ़ैज़ा के लिए लाहौर का वापसी टिकट बुक किया, लेकिन उसने जाने से इनकार कर दिया और इसके बजाय मोरक्को में अपने माता-पिता के पास भाग गई, क्योंकि उसे यह महसूस होने लगा था कि हेडली का पूरा जीवन झूठ था। उसने अपनी डायरी में लिखा, 'उसने मुझे बताया कि वह एक आव्रजन कार्यालय में काम करता है, लेकिन किसी वास्तविक व्यवसाय का कोई सबूत नहीं था।' सबसे पहले, हेडली को शाज़िया को संभालना था, जो दुबई में अपने ननिहाल के पास चली गई थी। वह अपने नए बेटे से मिला और व्यंग्य के बिना सुझाव दिया कि उसका नाम ओसामा रखा जाए। अमेरिका में रहने वाले चचेरे भाई-बहन तब चिंतित हो गए जब हेडली ने फिलाडेल्फिया में एक पारिवारिक समारोह में यह खबर सुनाई और परिवार के नए सदस्य को 'मेरा छोटा आतंकवादी' बताया। फ़ैज़ा की स्थिति को अधर में छोड़कर,

वह पाकिस्तान लौट आया और लश्कर के मीर और आईएसआई के मेजर इकबाल से वादा किया कि वह निगरानी पूरी करेगा। इसके बिना, पूरा ऑपरेशन रद्द हो जाएगा। जून 2007 के मध्य में, हेडली मुंबई से नए निगरानी फुटेज लेकर लौटा और तुरंत ही कुछ प्रतिक्रियाएँ सामने आईं। कई तस्वीरों में दिख रही एक आकर्षक युवती की पहचान हर कोई जानना चाहता था। हेडली ने स्वीकार किया कि उसने दोबारा शादी कर ली है। लश्कर की चिंता सैद्धांतिक थी। 'साजिद ने कंप्यूटर में फ़ैज़ा का चेहरा काला कर दिया था।' सैन्य कमांडर, चाचा ज़की ने सभी तस्वीरों में दिख रही महिलाओं के चेहरों पर डिजिटल हिजाब लगाने पर ज़ोर दिया। मेजर इकबाल की चिंता जासूसी कौशल को लेकर थी। नई पत्नी ने हेडली की पहचान को कैसे प्रभावित किया? चीजों को सरल बनाने के लिए हेडली ने एक कोड तय किया। भविष्य के सभी संदेशों में, वह शाज़िया को M1 (विवाह 1) और फ़ैज़ा को M2 के रूप में संबोधित करेगा। अमेरिका में रह रही अपनी तीसरी पत्नी, पोर्टिया गिलानी का कोई ज़िक्र नहीं किया गया।

*

जुलाई 2007 में, अप्रत्याशित बाहरी घटनाओं के कारण चाचा ज़की को हेडली और ऑपरेशन बॉम्बे को उन्नत करना पड़ा। लाखों पाकिस्तानी देश के पहले महत्वपूर्ण लाइव प्रसारण कार्यक्रमों में से एक को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए, जिसमें मध्य इस्लामाबाद की लाल मस्जिद में पुलिस और जिहादियों के बीच हुई झड़प का फुटेज दिखाया गया था। मस्जिद के अनुभवी मौलवी (इस्लामी विद्वान) जनरल परवेज़ मुशर्रफ की सैन्य तानाशाही के मुखर आलोचक बन गए थे और अल-कायदा के खिलाफ पश्चिम के युद्ध में उनकी सहायता करने के लिए उनकी आलोचना करते थे। मौलवी के छात्रों ने भी सतर्कता दल बनाए थे जो वीडियो स्टोर और हेयरड्रेसर पर हमला करते थे और दोनों पर गैर-इस्लामी या वेश्यालय होने का आरोप लगाते थे।
3 जुलाई को हेडली और ज़की दोनों ने लाल मस्जिद के बाहर सरकारी बलों और जिहादियों के बीच गोलीबारी का सीधा फुटेज देखा, जिसके बाद एक भीषण गोलीबारी शुरू हो गई जिसमें बीस लोग मारे गए। पांच दिन बाद, मुशर्रफ के कमांडो ने छापा मारा, जिसमें मौलवी और दर्जनों धार्मिक छात्र मारे गए। इस खबर ने इस्लामी गणराज्य को घोर आक्रोशित कर दिया। शोक मनाने वालों और अल-कायदा ने पाकिस्तानी सत्ता के खिलाफ एक धार्मिक युद्ध की घोषणा कर दी।

आत्मघाती हमलावरों की लहरें, जिनमें से कई बच्चे थे, पुलिस और सेना के खिलाफ निर्देशित थीं। उस दिसंबर में, हिंसा में पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की जान चली गई, जो आगामी चुनावों के लिए प्रचार करने निर्वासन से लौटी थीं। हेडली, लश्कर के कट्टर समर्थक पाशा के साथ थे जब हमले की खबर आई और उन्होंने 'भुट्टो की जल्द मृत्यु के लिए प्रार्थना' की। वे तब भी साथ थे जब लश्कर पर हमला हुआ, राज्य समर्थित जिहादी संगठन को लाल मस्जिद समर्थक कट्टरपंथियों ने 'सेना का एक औजार' बताकर खारिज कर दिया। कुछ ही घंटों में, लाहौर की कादिसिया मस्जिद के बाहर सरकारी बलों को तैनात कर दिया गया, जबकि आईएसआई एजेंट अमीर हाफिज सईद के साथ सुरक्षा घेरे में थे। सरकारी बंदूकधारियों ने लश्कर के गुप्त मुरीदके प्रशिक्षण परिसर की भी सुरक्षा की, सादे कपड़ों में एजेंट, छोटे बालों के साथ, मशीनगन लिए हुए, आंदोलन के नेताओं के नकली ग्रीक विलाओं में गश्त कर रहे थे।
जिहादियों के दबाव में आकर, लश्कर के भीतर एक बड़े गुट ने, जिसमें पाशा भी शामिल थे, यह तर्क दिया कि संगठन को अपने आईएसआई के आकाओं को छोड़ देना चाहिए, अल-कायदा के साथ हाथ मिलाना चाहिए और कश्मीर में भारतीय सेनाओं से लड़ने के बजाय अफगानिस्तान में गठबंधन सेनाओं के खिलाफ हमले शुरू करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
चाचा ज़की ने हेडली को हाउस ऑफ द होली वॉरियर्स में बुलाया और स्वीकार किया कि उन्हें लश्कर को एकजुट रखने और कश्मीर के लिए लड़ने के लिए राजी करने में गंभीर समस्याएं आ रही थीं। उन्हें इस बात की भी चिंता थी कि अगर लश्कर ने सेना का साथ छोड़ दिया, तो वह आईएसआई का संरक्षण खो देगा और चारों ओर से हमलों का शिकार हो जाएगा।
मेजर इकबाल ने हेडली को लाहौर वापस बुलाया और स्वीकार किया कि लश्कर को बिखरने से रोकने के लिए आईएसआई पर 'अत्यधिक दबाव' था। संगठन को कुछ ऐसा करना था, एक ऐसा ऑपरेशन जो सबको एकजुट कर दे। उन्होंने हेडली को बताया कि ज़की अब 'भारत में एक बड़े आतंकवादी हमले पर विचार करने के लिए विवश' थे, जिससे इस्लाम के दुश्मनों - अमेरिकियों, इजरायलियों और यूरोपीय लोगों - के साथ-साथ भारत पर हमला करने की कुछ गुटों की इच्छा पूरी हो सके। उन्होंने तर्क दिया कि ऑपरेशन बॉम्बे एक आदर्श योजना थी, जो भारत और शहर में आए अंतरराष्ट्रीय मेहमानों को निशाना बना सकती थी।

सितंबर 2007 तक, हेडली मुंबई वापस आ गए थे और ताज होटल के 'प्रवेश और निकास बिंदुओं' और आभूषण की दुकान का सर्वेक्षण कर रहे थे। उन्हें बताया गया था कि यह डेटा अब हाउस ऑफ द होली वॉरियर्स के एक ऑपरेशन रूम में लगाया जा रहा है, जहां गूगल अर्थ का उपयोग करके होटल और उसके आसपास के क्षेत्र का एक विशाल खाका तैयार किया गया था।
हेडली अब इतना व्यस्त हो गया था कि उसे अपना जीवन सरल बनाना ज़रूरी हो गया था। किसी तरह उसने अगस्त 2007 में एम 2 (फ़ैज़ा) को लाहौर वापस बुला लिया, निस्संदेह उसके साथ भी उसने बाकी सभी की तरह कोई समझौता किया होगा। प्रसन्न होकर फ़ैज़ा ने अपनी डायरी में लिखा: 'मैं उसके सभी रूपों से परिचित हो चुकी हूँ, और सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह जानकर कि मेरे साथ रहते हुए उसे इतना दिखावा नहीं करना पड़ता था।' लेकिन जब हेडली अगली बार उससे मिलने आया, तो वह तलाक़ माँगने आया था। फ़ैज़ा ने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। इसके बाद हुई तीखी बहस में उसने फ़ैज़ा को घूंसा मारा और फिर शाज़िया के पास लौट गया, जिसे उसने बंदूक तान दी थी। फ़ैज़ा ने हताशा से लिखा, 'क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि उसने सोचा कि मैं जाकर उसके बच्चों के साथ उस औरत को मार डालूँगी? इन बातों ने मुझे रुला दिया, मुझे दुखी कर दिया।'
फ़ैज़ा बदला लेना चाहती थी। उसने अपनी ज़ुबान का इस्तेमाल करते हुए इस्लामाबाद के डिप्लोमैटिक ज़ोन में स्थित कड़ी सुरक्षा वाले अमेरिकी दूतावास परिसर में प्रवेश किया, जहाँ उसने हेडली पर जिहादी होने का आरोप लगाया। उसने अधिकारियों से कहा, 'मैंने उसके सारे रूप देखे हैं। डेविड, जेम्स, दाऊद या डेव।' वह जानती थी कि वह नशीले पदार्थों का धंधा करता था, फिर भी उसे उससे प्यार हो गया था। लेकिन फ़रवरी 2007 में हुई उनकी जल्दबाज़ी वाली शादी के बाद से, उसे शक था कि वह कुछ और भी खतरनाक कर रहा है।
दूतावास के अधिकारी ने उसे एक ‘क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी’ से मिलने के लिए कहा, जो उसके पति के बारे में एक मोटी फाइल लेकर आया था। जब उसने उन्हें हेडली की गतिविधियों के बारे में बताया, तो उन्होंने मानो पहले से ही सब कुछ जानते हुए सिर हिलाया। उसने बताया कि जब वह लश्कर के साथ होता था, तो वह दाऊद नाम से एक कट्टर मुसलमान होने का दिखावा करता था और इराक और अफगानिस्तान में अमेरिका के युद्धों की सार्वजनिक रूप से आलोचना करता था।

घर पर वह ‘डेव’ था जो सीनफेल्ड और जे लेनोन देखता था। उसका सबसे करीबी दोस्त पाशा था, जो अल-कायदा का सहयोगी था, फिर भी घर पर वह ‘द बॉस’ सुनता था और ‘बॉर्न टू रन’ के सारे बोल उसे याद थे। वह ‘डरी हुई और असमंजस में’ थी। उन्हें सबसे ज़्यादा चिंता उनके मुंबई के बार-बार आने-जाने को लेकर थी। उन्होंने बताया कि उनके पति मुंबई आते-जाते रहते थे, जबकि घर पर वे भारत और उसकी सरकार को कोसते रहते थे। उनके पास इसके सबूत के तौर पर तस्वीरें थीं, जिनमें अप्रैल और मई 2007 में ताज महल के अंदर खींची गई सभी तस्वीरों की प्रतियां भी शामिल थीं। उन्होंने वे तस्वीरें निकालीं। उन्होंने बताया कि वह कथित तौर पर 'हमारा हनीमून' था, लेकिन उन्हें उनके दोस्तों से 'व्यापारिक ग्राहक' के रूप में मिलवाया गया था। क्या वे वहां कुछ योजना बना रहे थे? कोई जवाब नहीं मिला।
अधिकारियों ने बैठक समाप्त कर दी, और देखते ही देखते वह बाहर निकल आई, तेज धूप में उसकी आंखें चौंधिया रही थीं। अमेरिकी दूतावास ने बाद में इस घटना को 'घरेलू झगड़ा' करार दिया। फ़ैज़ा ने अपनी डायरी में लिखा: 'मैंने उनसे कहा, या तो वह आतंकवादी है, या फिर वह आपके लिए काम कर रहा है। उन्होंने लगभग मुझे चले जाने को कह दिया।'
कुछ दिनों बाद, हेडली गुस्से में दरवाज़े पर आ पहुँचा। उसने पूछा, 'तुम दूतावास क्यों गई थीं?' उसने अपनी डायरी में लिखा, 'उसे कैसे पता चला?'

परिवार, पत्नियां और दोस्त ही लश्कर के बारे में आगाह नहीं कर रहे थे। 2007 में, राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश की व्हाइट हाउस स्थित राष्ट्रीय सुरक्षा टीम को एक दस्तावेज़ हाथ से सौंपा गया था। यूरोपीय जांचकर्ताओं ने एक चिंताजनक घटनाक्रम का पता चलने पर इसे वाशिंगटन डीसी लाया। दस्तावेज़ में चेतावनी दी गई थी कि एक नया आतंकी गठबंधन उभर रहा है, जिसमें पाकिस्तान के लश्कर को 'क्षेत्रीय जिहादी संगठन के रूप में अपनी पुरानी भूमिका से जूझते हुए' बताया गया था। फाइल में संकेत दिया गया था कि लश्कर के कुछ पुराने सदस्य भारत और उससे आगे भी अपनी गतिविधियों पर नज़र रख रहे थे, जिसके लिए उन्होंने ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया से जुटाए गए सबूतों का हवाला दिया। हेडली के हैंडलर साजिद मीर का यूरोप और खाड़ी देशों में पीछा किया गया था, जहां वह भर्ती सार्जेंट और फंडरेज़र के रूप में काम करता था, और अपने पीछे लश्कर के स्लीपर एजेंट छोड़ता था जिनसे वह

कोडवर्ड का इस्तेमाल करके संपर्क में रहता था। ब्रिटेन उसकी योजनाओं का केंद्र था, जिसमें इंग्लैंड को 'वेस्ट 1' के रूप में नामित किया गया था। वाशिंगटन में इस दस्तावेज़ को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया गया। ब्रिटिश जांचकर्ताओं को भेजा गया संदेश सीधा था: 'पाकिस्तान में राष्ट्रपति मुशर्रफ ही हमारे लिए सबसे अच्छा विकल्प हैं। लश्कर के बारे में निर्णय लेना उन्हीं का अधिकार है।' अमेरिकी अधिकारियों ने आगे कहा कि उनकी प्राथमिकताएं 'अल कायदा को कमजोर करना' और 'ओसामा बिन लादेन को पकड़ने में सहायक सभी खुफिया और मानव संसाधनों का विकास करना' थीं।

जनवरी 2008 में, सेरिल हेडली का फिलाडेल्फिया में 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। जीवन को भरपूर जीने के वर्षों और पाँच तूफानी शादियों का अंततः उन पर असर हुआ। डेविड हेडली, जो विदेश में रहते हुए भी अपनी माँ से पत्रों के माध्यम से संपर्क में रहते थे, इस घटना से बेहद दुखी थे। लेकिन शोक मनाने का समय नहीं था; ऑपरेशन बॉम्बे तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। फिलाडेल्फिया में उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के कुछ दिनों बाद, उनके चचेरे भाइयों ने बताया कि हेडली पाकिस्तान वापस चले गए। वहाँ उन्हें लश्कर की एक गुप्त बैठक में आमंत्रित किया गया, जो इस्लामाबाद के पूर्वी बाहरी इलाके में स्थित कुख्यात जिहादी गढ़ बरकाहू के एक सुरक्षित ठिकाने में हुई थी। साजिद मीर ने उनका स्वागत किया और उन्हें लश्कर के एक ऐसे व्यक्ति से मिलवाया जिसे वे 'हाउस ऑफ द होली वॉरियर्स' से थोड़ा-बहुत जानते थे, अबू क़हाफ़ा। उपदेशक जैसी दाढ़ी होने के बावजूद, चाचा ज़की के नंबर दो माने जाने वाले क़हाफ़ा को उनकी ताकत के कारण 'बैल' के नाम से जाना जाता था। बहावलपुर के मूल निवासी, वह एक दिग्गज फील्ड कमांडर थे। वह ऑपरेशन बॉम्बे के सैन्य घटकों को संभालेंगे। क़हाफ़ा के पास एक महत्वपूर्ण खबर थी। लश्कर ने 2006 से चली आ रही एक योजना को पुनर्जीवित करने का फैसला किया था: शहर पर समुद्री मार्ग से हमला।
दुःख और उत्तेजना से सिर चकराए हुए हेडली को तुरंत मुंबई लौटने और उतरने के लिए एक उपयुक्त स्थान खोजने का आदेश दिया गया। 'साजिद ने मुझे एक पुराना इस्तेमाल किया हुआ गार्मिन जीपीएस दिया।' क़हाफ़ा ने उसे इसका इस्तेमाल करना सिखाया और खर्च के लिए 40,000 पाकिस्तानी रुपये (300 पाउंड) दिए। रवाना होने से पहले, हेडली की मुलाकात मेजर इकबाल से हुई, जिन्होंने उसे

नकली भारतीय रुपयों का एक बंडल और एक सुझाव दिया। 'हनी बी', आईएसआई का वह दोहरा एजेंट जिसने गोपनीय भारतीय प्रशिक्षण नियमावली उपलब्ध कराई थी, ने दक्षिण मुंबई के एक मछली पालन केंद्र बडवार पार्क में उतरने के लिए एक संभावित स्थान बताया था। उसने बताया था कि वहां गश्त अनियमित है और सड़क से छिपा हुआ है। उसे वहां जाकर देखना चाहिए।
हेडली अप्रैल 2008 की शुरुआत में मुंबई पहुंचे और अपनी पहली रात ताज महल के सामने एक पर्यटक नाव पर सवार होकर बंदरगाह के दूसरी ओर स्थित एलिफेंटा गुफाओं की सैर पर निकल पड़े। बंदरगाह जगमगा रहा था और पर्यटकों, सुरक्षाकर्मियों और पुलिसकर्मियों से भरा हुआ था। जब वह तस्वीरें खींच रहे थे और जीपीएस रीडिंग ले रहे थे, तब किसी ने भी उन पर ध्यान नहीं दिया। अगले दिन उन्होंने एक और नाव ली, इस बार रात 8:30 बजे मरीन ड्राइव से रवाना हुए। उन्हें बुल क़हाफ़ा ने पहले ही चेतावनी दी थी कि हमलावर शायद इसी समय तट पर उतरेंगे। वहाँ बहुत अफरा-तफरी मची हुई थी। अगले दिन उन्होंने टैक्सी लेकर कफ़ परेड तक का सफर तय किया और तटरेखा के साथ-साथ चलते हुए बडवार पार्क पहुँचे। एक नाविक से बातचीत करते हुए हेडली ने उसे अगले दिन सुबह 3 बजे नाव में ले जाने के लिए मना लिया। वे लगभग तीन मील समुद्र में गए। लौटने से पहले, हेडली ने गौर किया कि उतरने का स्थान, जैसा कि वादा किया गया था, अंधेरा और अव्यवस्थित था, मुख्य सड़क से दूर। वह अगले दिन फिर लौटे और मछुआरे को यह कहकर बहलाया कि 'कॉलेज के छात्र जल्द ही नाव की सवारी के लिए उनसे संपर्क करेंगे'।
हेडली वापस पाकिस्तान लौट आए और रावलपिंडी के सैन्य छावनी तक पाँच घंटे गाड़ी चलाकर पहुँचे ताकि साजिद मीर को लैंडिंग साइट के जीपीएस निर्देशांक दे सकें। वहाँ पहुँचकर वे हैरान रह गए। लश्कर के विदेशी अभियानों के उप प्रमुख ने दुबई में प्लास्टिक सर्जरी करवाई थी, हालाँकि हेडली की नज़र में मीर अब भी मीर ही लग रहे थे, 'शायद थोड़े चीनी जैसे'। अगर मीर गायब होने की तैयारी कर रहे थे, तो ऑपरेशन बॉम्बे अब निश्चित रूप से होने वाला था।

1 जुलाई 2008 को मुंबई हवाई अड्डे पर आव्रजन कतार में डेविड हेडली की सीसीटीवी तस्वीर में एक थका हुआ यात्री दिखाई दे रहा था, उसकी हल्के नीले रंग की पोलो शर्ट खिंची हुई और फीकी पड़ गई थी, और एक फिरोजी रंग की बेसबॉल टोपी ने उसकी तैलीय चोटी को ढका हुआ था। उसका भारी बैग उसके बाएं कंधे पर

लटका हुआ था, जिसमें वे कैमरे थे जिनका उपयोग वह उस निगरानी मिशन में करने वाला था जिसे लश्कर ने उसे बताया था कि यह उसका आखिरी मिशन है।
ताज होटल, ट्राइडेंट-ओबेरॉय और सीएसटी की रेकी करने के साथ-साथ, हेडली ने लक्ष्य सूची में देर से शामिल किए गए एक अन्य स्थान, चाबाद हाउस, का दस्तावेजीकरण शुरू किया। घनी आबादी वाली कोलाबा की एक गली में स्थित इस यहूदी कल्याण केंद्र में एक अमेरिकी रब्बी कार्यरत थे और यह भारत में काम करने या छुट्टियां बिताने वाले इजरायलियों से संपर्क करता था, जिनमें से कई सैन्य सेवा से लौटे थे। इस पर हमले का सुझाव सोलह भारतीयों की एक टीम ने दिया था, जिन्हें लश्कर ने संभावित लक्ष्यों की सूची तैयार करने के लिए मुंबई में भर्ती किया था। मुरीदके में इस बेमेल दस्ते को 'चूहे' कहा जाता था।
यह लक्ष्य लश्कर को एकजुट रखने के लिए किए जा रहे गुप्त सौदों का एक उदाहरण था। पुराने नेता चाबाद हाउस को दरकिनार करना चाहते थे क्योंकि यह संगठन के मूल उद्देश्य से बहुत दूर जा रहा था और इस पर हमला करने से लश्कर वैश्विक स्तर पर बहिष्कृत हो जाता; कट्टरपंथी, अल-कायदा समर्थक गुट, जिसका दबदबा था और जो चाचा ज़की का भी करीबी था, अब यहूदी लक्ष्यों को लश्कर की 'नई दिशा' के रूप में आगे बढ़ा रहा था।
हेडली जब लाहौर लौटे, तो मीर ने उन्हें तुरंत पवित्र योद्धाओं के घर बुलाया। हेडली मुश्किल से सो पाए थे, और जब वे शिविर में पहुँचे, तो उनके हाथ में एक पसीने से भीगी पर्ची थी जिस पर जलते सूरज के ऊपर लश्कर की दोहरी तलवारों की मुहर लगी थी। उनकी माँ की मृत्यु का भावनात्मक आघात, साथ ही दोहरी जिंदगी जीने में खर्च की गई ऊर्जा, उन्हें पूरी तरह से थका रही थी। थके हुए स्वर में, उन्होंने नए लक्ष्यों के लिए जीपीएस वेपॉइंट, घंटों के वीडियो फुटेज और एनोटेटेड नक्शे सौंपे, ये सभी डेटा ताज महल और उसके आसपास के लगातार बढ़ते हुए नक्शे पर अंकित थे। उस रात हेडली बुखार से बीमार होकर गिर पड़े। अगले दिन जब वे उठे, तो उन्होंने मीर को अपने बिस्तर के पास पाया, जो उन्हें बता रहे थे कि ऑपरेशन बॉम्बे पर संगठन की सूरा, यानी उसकी शासी परिषद द्वारा आयोजित एक विशेष योजना सत्र में चर्चा होने वाली है। हेडली ने संगठन के मुख्य भाग में प्रवेश करने की तैयारी कर ली। लेकिन मीर का चेहरा गंभीर था। हालाँकि अमीर हाफ़िज़ सईद, चाचा ज़की, क़हाफ़ा द बुल और अन्य वरिष्ठ हस्तियाँ सूरा में उपस्थित होने वाली थीं, हेडली को आमंत्रित

नहीं किया गया था। मीर ने नए चेहरों के सामने उसे उजागर न करने का बहाना बनाया।
जो बात वो नहीं बता सका, वो ये थी कि पिछली बैठक में चाचा ज़की ने खुलासा किया था कि मेजर इकबाल ने चेतावनी भेजी थी कि आईएसआई का मानना है कि हेडली उन सबको बेवकूफ बना रहा है। ऑपरेशन बॉम्बे की सफलता के लिए उन्हें अभी भी हेडली की ज़रूरत थी और वे दुविधा में थे। ज़की ने सुझाव दिया था: 'उसे दूर रखो और ऑपरेशन चलने दो।' अगर हेडली सीआईए या किसी अन्य पश्चिमी एजेंसी को उनकी जानकारी लीक कर रहा था, तो भी वे उसका इस्तेमाल कर सकते थे। ज़की का मानना था कि पश्चिम में जो भी हेडली को संभाल रहा था, वो जानकारी का इतना लालची था कि वो उसे आखिरी समय तक खेल में शामिल रखेगा, जिससे लश्कर को हमला करने का मौका मिल जाएगा। ज़की ने कहा, 'बस उसे सूरा से दूर रखो। और हमें तारीख टालनी होगी।'
बैठक के बाद, मीर हेडली से मिलने आया और एक दिलचस्प बात बताकर उसे पहाड़ी से नीचे वापस जाने के लिए मना लिया। हमलावर दल की भर्ती पहले ही हो चुकी थी और ऑपरेशन बॉम्बे अब आधिकारिक तौर पर एक फिदायीन मिशन बन गया था। चुने गए मुजाहिदीन शहर में ठिकानों पर कब्ज़ा करेंगे, बंधक बनाएंगे और मीडिया में लाइव कवरेज हासिल करेंगे, फिर अपने बंधकों को मार डालेंगे। इसके बाद वे मुंबई के सबसे प्रसिद्ध स्थलों को आग लगा देंगे और एक शानदार अंतिम गोलीबारी में शहीद हो जाएंगे।

3

नमस्ते।

बुधवार, 26 नवंबर 2008, शाम 6 बजे।

सांवले रंग के एंड्रियास लिवेरस, जिनके चांदी जैसे बाल पीछे की ओर संवारे हुए थे और गले से खुली लिनेन की कमीज़ थी, अपनी सुपर-याट एलिसिया के सन डेक पर खड़े होकर समुद्र की लहरों से जगमगाते ताज होटल को निहार रहे थे। वे अभी-अभी मुंबई के मशहूर चोर बाज़ार में दोपहर भर खरीदारी करके लौटे थे। उनके साथ उनके मिलनसार भारतीय क्रूज़ डायरेक्टर रमेश चेरुवोथ भी थे, जो उनके बेड़े का प्रबंधन करते थे और नक्काशी और पेपर-माशे से भरे उनके बैग भी उठाते थे। एंड्रियास आखिरी बार अपनी पत्नी अन्ना के साथ ताज होटल के मसाला क्राफ्ट रेस्टोरेंट में 'एक यादगार करी' खाने गए थे। कुछ महीने पहले ही कैंसर से उनकी मृत्यु हो गई थी, और आज रात तिहत्तर वर्षीय एंड्रियास अन्ना की याद में होटल लौटकर 'एक और मशहूर करी' की तलाश में नाव से कुछ समय के लिए दूर जाना चाहते थे।
उनके ब्रिटिश मित्र और यॉट ब्रोकर निक एडमिस्टन एक नए भारतीय उद्यम के शुभारंभ के लिए एलिसिया को उधार ले रहे थे: उपमहाद्वीप में यॉट बिक्री और किराए पर देने के क्षेत्र में यह उनका पहला कदम था। एंड्रियास का सामाजिक मेलजोल का मूड नहीं था, जो उनके लिए असामान्य था। एक उत्साही ग्रीक साइप्रस निवासी, उन्हें आमतौर पर एलिसिया के आलीशान आकार के बारे में डींग मारना पसंद था: 280 फुट का विशाल ढांचा, अठारह आलीशान कमरे, अठारह सुइट, एक जकूज़ी, एक हेलीकॉप्टर लैंडिंग पैड और तापमान नियंत्रित वाइन सेलर। इसे चलाने के लिए वर्दीधारी क्रू की एक टीम की आवश्यकता होती थी। 'मैं यॉटिंग का बादशाह हूँ,' वे लोगों से कहते थे, और अपना सरल सूत्र समझाते थे: 'जितनी

बड़ी नाव, उतनी महंगी, उतना व्यस्त।' 2006 में 70 मिलियन पाउंड की लागत से निर्मित, एलिसिया को उस वर्ष फोर्ब्स पत्रिका द्वारा अब तक की सबसे महंगी नाव के रूप में सूचीबद्ध किया गया था और इसने एंड्रियास के व्यापारिक जीवन में एक मील का पत्थर स्थापित किया था।
साइप्रस के गरीब किसानों के नौ बच्चों में से एक, एंड्रियास साठ के दशक में लंदन चले गए, जहाँ उन्होंने पश्चिमी लंदन के पॉश इलाके केंसिंग्टन में एक बेकरी में डिलीवरी बॉय के रूप में काम शुरू किया और बाद में बेहद लाभदायक फ्लेउर डे लिस पेस्ट्री और कैटरिंग चेन की स्थापना की। कारोबार को 130 मिलियन पाउंड में बेचने के बाद, एंड्रियास, अपने गुलाबी सूट और मोटी सोने की चेन में, आलीशान जीवन शैली में रम गए और दुनिया भर में जेट और आलीशान घर खरीदे, जिनमें मोनाको भी शामिल था। मोनाको में उनकी दोस्ती प्रिंस अल्बर्ट से हुई और वे रॉयल यॉट क्लब के सदस्य बन गए, जिसके माध्यम से उनकी मुलाकात निक एडमिस्टन से हुई, जो लंदन से मोनाको में आकर बसे एक अन्य व्यक्ति थे।
एंड्रियास और निक की दोस्ती ग्रीस के मेटियोरा मठों में दस दिन की छुट्टी के दौरान हुई थी, जो जेम्स बॉन्ड की फिल्म 'फॉर योर आइज़ ओनली' की पृष्ठभूमि थी। दोनों को सुपर-याट का शौक था और वे निजी चार्टर से अच्छी कमाई करते थे। एलिसिया को किराए पर लेने का खर्च 500,000 पाउंड प्रति सप्ताह था; मैनचेस्टर यूनाइटेड के स्ट्राइकर वेन रूनी एंड्रियास के सबसे हालिया ग्राहकों में से एक थे, जिन्होंने जून में इटैलियन रिवेरा में लंगर डाले हुए एलिसिया पर अपनी पत्नी कोलीन के साथ शादी का जश्न मनाया था। लेकिन एंड्रियास अपनी साधारण शुरुआत को कभी नहीं भूले और एलिसिया पर काम करने वाले सभी लोग, खासकर रमेश, उन्हें एक ध्यान रखने वाले और उदार बॉस के रूप में देखते थे।
अपने भारतीय कारोबार को शुरू करने के लिए, निक ने मशहूर सोशलाइट और उद्यमी रतन कपूर को काम पर रखा था, जो कालीन व्यापारियों के एक समृद्ध परिवार से ताल्लुक रखते थे और दिल्ली के रहने वाले थे। उनकी प्रभावशाली पेशकश यह थी कि जब ज़मीन पर खून होता है, तो भारतीय खर्च करना शुरू कर देते हैं। कपूर ने उनसे साल की शुरुआत में मुलाकात के दौरान कहा था, 'दिखावा ही सब कुछ है,' जब निक और एंड्रियास के लंदन और मोनाको स्थित नौका कारोबार वैश्विक वित्तीय संकट से बुरी तरह प्रभावित हुए थे।

कपूर ने ब्रिटिश अरब के पतन से पहले ही आयरिश निवेशकों को उपमहाद्वीप में निवेश करने के लिए लुभाने में महारत हासिल कर ली थी, और उन्होंने निक को शहर के अभिजात वर्ग के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण हवेलियों की ओर उनका ध्यान दिलाया। कपूर ने वादा किया, 'अगर मुंबई के सबसे महत्वपूर्ण छह जोड़े दिलचस्पी दिखाते हैं, तो पूरा शहर उनका अनुसरण करेगा।' उन्हें एंड्रियास को मनाने में अधिक मेहनत करनी पड़ी, जिसे उनकी लगातार शेखी बघारना पसंद नहीं था और उसने अपने विशिष्ट अंदाज में सीधे-सादे ईमेल भेजे: 'मैं नाव पर आम लोगों को नहीं चाहता।' नाराज़ होकर कपूर ने तुरंत जवाब दिया: 'मैं किसी आम आदमी को नहीं जानता।' उन्होंने उन 'अमीरों' की सूची गिनाई, जिन्होंने पहले ही नौका विहार का जीवन अपना लिया था, जिसमें किंगफिशर बीयर और विमानन क्षेत्र के दिग्गज विजय माल्या भी शामिल थे, जिनके पास वह नाव थी जो रिचर्ड बर्टन ने 1967 में एलिजाबेथ टेलर को उपहार में दी थी, जब उन्होंने 'हूज़ अफ्रेड ऑफ वर्जीनिया वूल्फ' के लिए ऑस्कर जीता था।
कपूरी का विचार सीधा-सादा था: एलिसिया ताज होटल के पास लगा एक भव्य विज्ञापन होर्डिंग था। यह कई खास कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि का काम भी करेगा। पत्रिका संपादकों के लिए इंडियन वोग द्वारा आयोजित एक प्रेस लंच पहले ही हो चुका था, और आज रात रतन और निक मोएट एंड चैंडन द्वारा प्रायोजित एक शानदार डिनर का आयोजन करेंगे। बॉलीवुड के दिग्गज अमिताभ बच्चन की भाभी कल के 'लेडीज़ लंच' की मेजबानी करेंगी, जबकि शुक्रवार रात को सुपरस्टार शाहरुख खान के आने की सहमति मिली थी, जिससे सैकड़ों लोग आकर्षित होंगे। आखिरी समय में कुछ अड़चनें आ गई थीं। एलिसिया जहाज देर से पहुंचा और दोपहर के भोजन से ठीक दो घंटे पहले ताज होटल से 500 मीटर दूर लंगर डाला। लगभग तुरंत ही भारतीय अधिकारियों का एक दल जहाज पर सवार हो गया। सभी औपचारिकताएं पूरी करने, पुलिस, नौसेना और बंदरगाह अधिकारियों को रिश्वत देने के बावजूद कपूर चिंतित थे। 100 मेहमानों की लंगर सीमा का उल्लंघन हो जाएगा और चूंकि वे नौसेना के नियंत्रण वाले जलमार्ग में थे, इसलिए संगीत और शराब के सेवन पर लगे सख्त प्रतिबंधों की भी अनदेखी की जाएगी। जब शहर के पुलिस प्रमुख कमिश्नर गफूर ने आखिरकार निमंत्रण स्वीकार किया, तो सभी ने राहत की सांस ली।

अब, जैसे ही क्रू के सदस्यों ने एडमिस्टन लोगो वाली लाल टी-शर्ट पहनीं, एंड्रियास निक को एक तरफ ले गया। उसने अपने दोस्त से कहा, 'आज रात यह नाव तुम्हारी है। मैं ताज होटल में जल्दी से करी खाकर वापस आऊंगा।' शाम 7:30 बजे, वह रमेश और दो फिलिपिनो लड़कियों के साथ, जो जहाज पर स्पा चलाती थीं, एलिसिया की छोटी नाव में गेटवे ऑफ इंडिया के लिए रवाना हुआ। चमकीली मुंबई की 'अल्ट्रा' कारों की एक कतार विपरीत दिशा में एलिसिया की ओर जा रही थी, जहाँ मेनू में फोई ग्रास (एक प्रकार का स्वादिष्ट व्यंजन) था। निक ने अपने बेटे वुडी से कहा, 'यह एक शानदार पार्टी होने वाली है। नाव बहुत अच्छी लग रही है। जगह बहुत बढ़िया है।' अपनी अशांत प्रकृति के लिए बदनाम अरब सागर शांत था और ताज होटल सुनहरी रोशनी में नहाया हुआ था।

*

लाइन क्रिस्टिन वॉल्डबेक, जो नॉर्वे की एक मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव और अनुभवी यात्री हैं, ने अपनी घड़ी देखी। शाम के 7:45 बज रहे थे और वह और उनके प्रेमी आर्ने स्ट्रॉम, मरीन ड्राइव पर कोलाबा की ओर धीरे-धीरे बढ़ते हुए ट्रैफिक में फंसे हुए थे। उन्होंने शोरगुल से बचने के लिए समुद्र की ओर देखना शुरू किया। वे गुजरात से सिर्फ एक रात के लिए मुंबई की रहने वाली 26 वर्षीय मीतू असरानी, जो फेसबुक पर उनकी नई दोस्त बनी हैं, से मिलने आए थे। लाइन के लिए यह उनकी एक महीने लंबी आध्यात्मिक यात्रा का आखिरी पड़ाव था और मीतू उनसे मिलने के लिए खास तौर पर शहर के केंद्र में आई थीं। उनकी मुलाकात ताज होटल से कुछ ही दूरी पर स्थित लियोपोल्ड कैफे में होनी थी। लेकिन तीन लेन अब छह लेन में बदल गई थीं, गाड़ियाँ इतनी पास-पास थीं कि एक-दूसरे के दरवाजों का पेंट घिस रहा था। लाइन के फोन की घंटी बजी। मीतू का फोन था। 'सॉरी, हनी। मुझे 45 मिनट देर हो गई।' वह भी उत्तर-पश्चिमी उपनगरों से आते हुए उसी ट्रैफिक जाम में फंसी हुई थी। 'लियो के यहाँ मिलते हैं, म्वाह।' लाइन घबरा गई। सुबह उसे और आर्ने को दिल्ली के लिए फ्लाइट पकड़नी थी ताकि वे वापस घर जा सकें। अगर वे इस मुलाकात पर नहीं पहुँचे, तो वह मीतू से कभी नहीं मिल पाएगी।
जब वे आखिरकार रात 9 बजे से कुछ ही पहले कैफे पहुँचे, तो वहाँ काफी चहल-पहल थी। लाल शर्ट पहने वेटर इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे और लाइन ने मीतू को

रेंगता हुआ छुपने के लिए भागा और अपने कानों पर हाथ रख लिए। उसके कानों से खून बह रहा था और उसका चेहरा बुरी तरह ज़ख्मी था।
अंदर, लाइन हिल नहीं पा रही थी। 'हे भगवान!' मीतू ने उठते हुए, अचंभित होकर कहा। आर्ने भी लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ: 'यह क्या हो रहा है?' होश में आते ही, लाइन ने उन दोनों की कलाई पकड़ ली और उन्हें मेज के नीचे खींच लिया, तभी एक और धमाके ने मेजों और खाने वालों को उलट दिया। फिर से 'आक, आक, आक' की आवाजें उन पर छोटी-छोटी नियंत्रित बौछारों के रूप में आने लगीं। 'चुप रहो! हिलना मत!' लाइन ने फुसफुसाते हुए आर्ने और मीतू को गले लगा लिया, जो उसके दोनों ओर लेटे हुए थे।
‘यह सच नहीं हो सकता,’ वह मन ही मन कहती रही। लगातार गोलियों की गड़गड़ाहट से टाइल वाले फर्श पर दरारें पड़ गईं और सीमेंट के टुकड़े उड़ने लगे। चीखें सुनाई दीं और फिर गोलियों की छोटी-छोटी बौछारें हुईं। क्या वे खाना खा रहे लोगों को मार रहे थे? इस समय बंदूकधारी कमरे के दूसरी तरफ थे, लेकिन आगे बढ़ रहे थे। मीतू कांप रही थी। ‘मरने का नाटक करो,’ लाइन ने फुसफुसाया। ‘शांत लेटी रहो!’ एक बंदूकधारी अब उनके बगल में था। उसे गर्म गोलियों के खाली खोखे नीचे गिरने की आवाज सुनाई दी। वह आर्ने की ओर मुड़ी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। ‘मैं तुमसे प्यार करती हूँ,’ उसने धीरे से कहा, क्योंकि गोलियों की गड़गड़ाहट में सब कुछ दब गया था।
लाइन की नाक में एक मीठी, लोहे जैसी गंध चुभी: खून। यह स्पष्ट था। मीतू कांप उठी और लाइन ने उसे थामे रखा, उसके शरीर में छोटे-छोटे झटके लग रहे थे। लाइन को ऐसा लगा जैसे मीतू से शांति और ऊर्जा की एक लहर निकल रही हो। वह आर्ने की ओर लुढ़की और यह देखकर चौंक गई कि उसके चेहरे और हाथ में गोली लगी है। 'मीतू मर गई,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, अपने आँसू रोकते हुए और अपने दोस्त को गले लगाते हुए, उसका शरीर बेजान हो गया।

कोलाबा पुलिस स्टेशन के कैफे से 200 मीटर दूर, ड्यूटी पर तैनात इंस्पेक्टर ने गोलियों की गड़गड़ाहट और सनसनाहट सुनी, और उन्हें लगा कि कहीं ये एके-47 से तो नहीं चल रही हैं। जाँच करने के लिए दौड़ते हुए, उन्होंने टीवी और इंग्लैंड-भारत के बीच चल रहा एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच वहीं छोड़ दिया और रात 9.45 बजे स्टेशन के घटना रिकॉर्ड में दर्ज कर

दिया। उनका कमरा पुलिस स्टेशन की पहली मंजिल पर था और उन्हें पूरा यकीन था कि गोलीबारी लियोपोल्ड राइफल की दिशा से हुई थी।
थाने के गेट पर घबराए हुए कांस्टेबल एक जगह जमा हो गए, जबकि राहगीर चीखते- चिल्लाते भाग रहे थे। इंस्पेक्टर कुछ कदम आगे बढ़ा और उसे यकीन हो गया कि कोलाबा कॉज़वे में आगे लाशें पड़ी हैं। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बम फटा हो: इमारतों से विज्ञापन के होर्डिंग उखड़ गए थे, गाड़ियों के सायरन बज रहे थे और स्ट्रीटलाइटें फ्यूज हो गई थीं। उसने अपने एक अधीनस्थ का वॉकी-टॉकी उठाया और साउथ कंट्रोल को फोन किया। '21.48. पुलिस कोलाबा वॉकी-टॉकी: कोलाबा 1 को लियोपोल्ड होटल भेजो।'
इंस्पेक्टर ने दो कांस्टेबलों को रोका, जिनके पास.303 बोल्ट-एक्शन राइफलें थीं। ये राइफलें इतनी पुरानी थीं कि भारत में इनका उत्पादन बंद हो चुका था, जिससे इनकी मरम्मत मुश्किल थी और पुर्जे दुर्लभ थे। शहर के अधिकांश पुलिस थानों में यही राइफलें और बांस की लाठियां ही उपलब्ध थीं। उनके पीछे पांच जवानों की एक मोबाइल यूनिट, कोलाबा 1, थी, जिनके पास भी इसी तरह के हथियार थे। 'चलो चलें,' उन्होंने ताली बजाते हुए उन्हें प्रेरित किया, मानो मुर्गियों को हांक रहे हों। जो भी हो रहा था, वह अराजक और खूनी था। वह आगे बढ़े, कैफे की ओर बढ़े और घायलों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े। अब आ-आ-आ की आवाज धीमी हो गई थी, मानो हमलावर वहां से चले गए हों। कुछ मिनट बाद, उन्होंने एक जाना-पहचाना चेहरा देखा: राजवर्धन सिन्हा, एसबी2 के प्रमुख, तेज़ी से आते हुए। उन्हें राहत मिली। स्पेशल ब्रांच के डिप्टी कमिश्नर किसी टैंक की तरह थे, जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को रौंदते हुए आगे बढ़ रहे थे। कई झड़पों के अनुभवी, उन्हें पता था कि क्या करना है। राजवर्धन वीटी रोड स्थित पुलिस स्टेशन परिसर में अपने परिवार के साथ घर पर थे, जब उन्हें राज्य के उप खुफिया प्रमुख का फोन आया, जिन्हें संदेह था कि यह गोवा में ड्रग्स का धंधा करने वाले रूसी और इजरायली गिरोहों के बीच की झड़प है। इंस्पेक्टर ने कंधे उचका दिए। उन्हें बस इतना पता था कि उनके आदमियों ने बताया था कि दो बंदूकधारी, असॉल्ट राइफलों से लैस, लियोपोल्ड होटल में गोलीबारी कर ताज होटल की ओर भाग रहे थे। राजवर्धन अंदर दाखिल हुए। दरवाजे के पास तीन शव पड़े थे, जिनमें से दो पश्चिमी देशों के नागरिक थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि बुरी तरह घायल लोगों के ढेर में पंद्रह-सोलह और लोग मारे गए होंगे। एक कोने में, खून से

गोलीबारी की आवाज सुनी। 'ताज होटल के पास अभी भी गोलीबारी हो रही है।' साउथ कंट्रोल ने सूचना दी: 'स्ट्राइकिंग 1, तुरंत ताज होटल आएं।'
पहली घटना में एक बोलेरो जीप थी, जिसमें छह आदमी सवार थे। राजवर्धन ने आह भरी। इस तरह तो उनकी जीत नहीं होने वाली थी। पुलिस को कुछ करना होगा। वह नौराजी फरदोंजी रोड पर दौड़ पड़ा, अंदर से आ रही आवाजों का पीछा करते हुए, कैफे के अंदर जो कुछ उसने देखा था, उसे समझने की कोशिश कर रहा था। 'ये कमीने पाकिस्तानी हैं,' उसने धीमी आवाज में कहा। 'हमारे आंगन में पेशाब करने आए हैं।'

ताज होटल में कंप्यूटर ऑपरेटर मनीष जोशी, नौराजी फरदोंजी रोड स्थित ऑक्सफोर्ड हाउस में ताज होटल के कार्यालय में ड्यूटी खत्म करके लौटे थे, तभी रात 9:46 बजे उन्हें 'शादी के पटाखे' की आवाज सुनाई दी। बाहर जाकर उन्होंने देखा कि सड़क पर कुछ पड़ा है। वे पास गए और वहाँ एक विदेशी महिला को कांपते और खून बहते हुए पाया। उसने हकलाते हुए बताया कि उसे गोली लगी है और बंदूकधारी भाग गए हैं। उसने ताज होटल की ओर इशारा किया। भयभीत और कुछ समझ न पाने वाले मनीष ने उसे अंदर खींच लिया और सहारा देकर बिठाया, फिर अपना मोबाइल फोन निकालकर होटल के अंदर मौजूद सहकर्मियों को फोन किया: 'मुझे लगता है बंदूकधारी तुम्हारे पीछे आ रहे हैं। बाहर निकलो।' ऑक्सफ़ोर्ड हाउस की छत पर तैनात ताज होटल के एक सुरक्षा गार्ड ने दो लोगों को असॉल्ट राइफल लिए सड़क पर भागते देखा और उसने होटल के अंदर मौजूद अपने साथियों को चेतावनी देने के लिए फोन किया: 'होटल को बंद कर दो। बंदूकधारी आ रहे हैं।' यह संदेश पांचवीं मंजिल पर तैनात ताज होटल के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुडियादी तक पहुँचाया गया, जिन्हें पता था कि पांच प्रवेश द्वार खुले हैं: मुख्य टावर लॉबी, जहाँ से बॉब निकोल्स और कैप्टन रवि आए थे; समुद्र की ओर खुलने वाला पैलेस प्रवेश द्वार, जहाँ आलोचक सबीना ने चेक-इन किया था; दक्षिण की ओर स्थित नॉर्थकोट का दरवाजा, जिस रास्ते से विल और केली लियोपोल्ड से लौट रहे थे; टाइम ऑफिस के कर्मचारियों का प्रवेश द्वार; और ताज टावर के पीछे स्थित एक और कर्मचारियों का दरवाजा।
टावर की लॉबी में ड्यूटी पर तैनात युवा सुरक्षा अधिकारी पुरु पेटवाल, जो कुडियादी के तथाकथित 'ब्लैक सूट्स' में से एक थे और गंभीर, सुसंगठित जैकेट और पतलून पहने हुए थे, को दरवाजे बंद करने का संदेश मिला, ठीक उसी समय जब

मेहमानों, भोजन करने वालों और राहगीरों की एक सुनामी सुरक्षा बाधाओं और वॉक-थ्रू एक्स-रे मशीन से होकर अंदर घुस गई।
भीड़ में इंग्लैंड के ब्लैकबर्न से लेबर पार्टी के सांसद सज्जाद करीम भी थे, जो यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे। कुछ ही क्षण पहले, उन्होंने एक अन्य अतिथि को मुख्य द्वार से एक अधमरी, खून से लथपथ महिला को ले जाते हुए देखा था, जो चिल्ला रहा था कि वह लियोपोल्ड कैफे से आया है, जिस पर हमला हुआ था, और वहां से कई लोग पांच सितारा ताज होटल में भाग गए थे, यह सोचकर कि वह अधिक सुरक्षित होगा।
पेटवाल भीड़ में घुस गए, तभी राहगीरों की दूसरी भीड़ – जिसमें ड्राइवर, टैक्सी चालक और पुलिसकर्मी शामिल थे – अंदर घुसने की कोशिश करने लगी। घबराकर वे चिल्लाए, ‘धीमे चलो! लोग कुचले जा रहे हैं।’ एमईपी करीम ने खुद को लॉबी से होते हुए बाईं ओर हार्बर बार, फिर रिसेप्शन डेस्क और ऊपरी बाएँ कोने में स्थित शामियाना की ओर जाने दिया। उन्होंने मन ही मन कहा, ‘मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।’
मुख्य सीढ़ियों पर वापस आते ही, पेटवाल की नज़र से बचकर, पीठ पर बैग लिए दो युवक भीड़ में शामिल हो गए, जिन्हें केवल होटल के सीसीटीवी कैमरे में देखा जा सका। अंदर जाकर वे कुछ पल के लिए खड़े रहे, भव्यता को देखकर अचंभित रह गए। फिर एक, जिसने लाल टी-शर्ट और लाल बेसबॉल कैप पहनी थी, शांति से हार्बर बार की ओर बाईं ओर मुड़ गया, जबकि दूसरा, जिसने पीली टी-शर्ट पहनी थी, सीधे शामियाना की ओर चल पड़ा। उन्हें ठीक से पता था कि वे कहाँ जा रहे हैं। जैसे ही इशारा मिला, उन्होंने अपने बैग नीचे रख दिए और असॉल्ट राइफलें निकाल लीं।

महल की दूसरी मंजिल पर स्थित डेटा सेंटर में फ्लोरेंस मार्टिस काम कर रही थीं, तभी उन्हें लॉरी से माल उतारने जैसी आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ लॉबी की तरफ से आ रही थी। उन्होंने अपने कंप्यूटर पर नज़र डाली: रात के 9:48 बज रहे थे। मुंबई शोरगुल का शहर है, उन्होंने मन ही मन सोचा। लेकिन आज रात उन्हें बेचैनी महसूस हो रही थी। आज रात उनकी नाइट शिफ्ट थी और उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था। उन्होंने अपने पसंदीदा बॉलीवुड फिल्मी गाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आधे घंटे पहले, वह एक मंजिल नीचे पाम कोर्ट में अपने पिता फॉस्टीन को ढूंढने गई थीं, लेकिन वह कहीं नहीं मिले। उन्होंने

उनके फोन पर भी कॉल किया: कोई जवाब नहीं मिला। हालांकि, उन्हें इसकी ज़्यादा चिंता नहीं थी, क्योंकि परिवार ने उनके जन्मदिन पर उन्हें नया फोन दिलाया था और उन्हें अभी तक उसका इस्तेमाल करना नहीं आया था।
फ्लोरेंस ने अपना पतला कार्डिगन और कसकर पहन लिया। होटल के कंप्यूटर विभाग में काम करने वाले मनीष जोशी ने कुछ दिन पहले महल के गलियारों में भूत-प्रेत भगाने वाले लंबे समय पहले मर चुके मेहमानों की कहानियां सुनाकर उसे परेशान कर दिया था। अब उसे एक सुखद याद की ज़रूरत थी। तभी उसे कुछ याद आया। ताज होटल में अपनी नई नौकरी का जश्न मनाने के लिए परिवार पहली बार राजस्थान के पहाड़ी इलाके माउंट आबू घूमने गया था। उन्होंने स्थानीय पोशाकें किराए पर ली थीं और तस्वीरें खिंचवाई थीं। उसके पिता को एक 'जेंट्स पार्टी' में बुलाया गया था: कुछ बीयर और एक-दो पेग व्हिस्की। कल उनकी शादी की सालगिरह थी और उन्हें छुट्टी मिली थी। उसने सुबह उपहार में मिले अपने स्मार्ट सफेद जूतों को देखा और मुस्कुराई। तभी उसके डेस्क फोन की घंटी बजी। 'फ्लोरेंस, आतंकवादी आ गए हैं।' वह आवाज़ पहचान गई थी: मनीष, ऑफिस का शरारती लड़का। वह दोबारा उसके झांसे में नहीं आने वाली थी। 'बस करो,' उसने फुसफुसाते हुए फोन काट दिया।

पैलेस विंग में एक मंजिल ऊपर, कमरा नंबर 316 में, विल टीवी चैनल बदल रहा था और केली के तैयार होने का इंतज़ार कर रहा था, तभी उसे पटाखों या गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। वह खिड़की के पास गया, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। 'केली, क्या तुमने वो आवाज़ सुनी?' उसने बाथरूम के दरवाज़े से पुकारा। 'क्या?' वह तौलिए में लिपटी हुई बाहर आई और बोली। 'मैंने गोलियों की आवाज़ सुनी।' उसने मुँह बनाया। 'मज़ाक मत करो। ये पाँच सितारा होटल है। हम रात के खाने के लिए जा रहे हैं।'
आह, आह, आह। इस बार कालीन पर पानी टपकाती केली ने भी यह आवाज़ सुनी। यह कहना मुश्किल था कि आवाज़ कहाँ से आ रही थी, लेकिन यह पास ही थी। 'यह सब क्या हो रहा है?' उसने अपने बाल सुखाते हुए पूछा। आह, आह, आह। वह धमाका होटल के अंदर हुआ था। गोलियों की आवाज़ गूँज रही थी। क्या यह ग्रैंड स्टेयरकेस था? वे उससे पचास कदम बाईं ओर, और तीन मंज़िल ऊपर थे। 'चलो देखते हैं,' विल ने आग्रह किया। केली जाना नहीं चाहती थी, लेकिन वह अकेले भी नहीं रहना चाहती थी। दरवाज़ा खोलकर, वे नंगे पैर, चुपचाप गलियारे में दौड़ पड़े, अपना सिर नीचे

रखते हुए, 'जैसे फ़िल्मों में लोग करते हैं'। होटल में अब ताज़े कटे फूलों और महंगे इत्र की खुशबू नहीं थी, बल्कि पटाखों की गंध थी, और जब वे सीढ़ियों पर पहुँचे, तो उन्होंने सावधानी से रेलिंग के ऊपर से अपना सिर निकालकर देखा कि धुआँ उनकी ओर उठ रहा है। 'देखो यह क्या है,' विल ने कहा। केली को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या देख रही है। उसमें पार्क में पतझड़ की खुशबू थी।
सीढ़ियों के उस पार उन्हें एक गोरा पश्चिमी व्यक्ति दिखाई दिया, जिसके मन में भी वही विचार आया था जो उनके मन में आया था। उन्होंने एक-दूसरे को सिर हिलाकर अभिवादन किया, और उनकी निगाहें नीचे से दौड़ते हुए आए ताज होटल के दो युवा कर्मचारियों पर टिक गईं। विल ने उन्हें हाथ हिलाकर अभिवादन किया, लेकिन वे चौथी मंजिल तक जाते रहे और फिर गायब हो गए। 'क्या बचाव दल है!' उसने मन ही मन सोचा।
फिर से धमाके शुरू हो गए। इस बार कोई शक नहीं था कि ये गोलियों की आवाजें थीं। सामने खड़ा आदमी भाग गया और विल और केली भी जल्दी से वापस आ गए। क्या उन्हें छिपना चाहिए या बाहर निकलने की कोशिश करनी चाहिए? 'हमें तो ये भी नहीं पता कि आग से बचने के लिए सीढ़ियाँ कहाँ हैं,' विल घबराते हुए बोला और दरवाजे के पीछे लगे नक्शे को ढूंढने लगा। 'देखो, होटल हमारी रक्षा करेगा,' केली ने समझाया। ऐसा ही होता है, है ना? होटल की सुरक्षा टीम बंदूकधारियों को बाहर भगा देगी और फिर उन्हें पकड़ने आएगी। टावरिंग इन्फर्नो में भी यही हुआ था।
उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया, टीवी और लाइटें बंद कर दीं, खुद को बिस्तर और बाथरूम की दीवार के बीच फंसा लिया और एक-दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

ताज टावर की सबसे ऊपरी मंजिल से, कांच की दीवारों वाले चिकने बाज़ार में, शहर की सड़कों की नारंगी रोशनी नीचे रेशमी कालीन की तरह फैली हुई थी। अमेरिकी मरीन कैप्टन रवि धर्निधारका अब नज़ारे को नहीं देख रहे थे, बल्कि कमरे में लगातार आ रहे संदेशों और फोन कॉलों की बाढ़ से चिंतित थे। उनके एक चचेरे भाई को फोन आया: 'कोलाबा में, कुछ ही ब्लॉक दूर, गैंग फाइट हो रही है।' फिर उनकी एक चाची का फोन आया। 'एक पागल आदमी ताज के पीछे बंदूक लहरा रहा है।'

‘मैंने कहा था ना,’ रवि ने मन ही मन कहा, होटल के मुख्य द्वार पर सुरक्षा को लेकर पहले से ही उसके मन में उठ रही शंकाओं को याद करते हुए। आधे घंटे पहले जब वह सुरक्षा घेरा पार कर रहा था, तो मेटल डिटेक्टर से बीप की आवाज़ आई थी, लेकिन किसी ने उसे रोका नहीं था। इस बात ने उसे बहुत परेशान कर दिया था। आखिर लोग सिस्टम बनाकर भी उसका पालन क्यों नहीं करते? और कौन-कौन बिना जाँच के अंदर आ गया होगा? उसे उम्मीद थी कि उसकी ये घबराहट बस युद्ध की थकान का लंबे समय तक चलने वाला परिणाम है।
कमरे के दूसरी ओर, वीआईपी सुरक्षा प्रमुख बॉब निकोल्स अपने कमांडो के साथ मजाक कर रहे थे, तभी बगल की मेज पर बैठे लोगों ने झुककर पूछा, 'क्या आपको पता है कि नीचे क्या हो रहा है?' बॉब ने सिर हिलाया। 'हमारे दोस्त अंदर आने की कोशिश कर रहे हैं और वे कह रहे हैं कि वहां गोलीबारी हो रही है।'
होटल के भीतर से आती धमाकेदार गर्जना की आवाज़ पूरे होटल में गूंज उठी। एक कमांडो उठा, लेकिन एक वेटर ने उसे वापस अपनी सीट पर बैठने को कहा। उसने बताया, 'लॉबी में दो आदमी एक-दूसरे पर गोलियां चला रहे हैं, महोदय।' बॉब ने अपने साथियों को इकट्ठा किया। उसने हंसते हुए कहा, 'अगर मामला और गंभीर हुआ, तो मुझे 'डाई हार्ड' की तरह हम सबको होटल से बाहर निकालना पड़ेगा।' बॉब लोगों को शांत करने में माहिर था। मोटे शरीर और तांबे जैसे बालों वाला बॉब, विलिस का बिलकुल उल्टा था।

महल के पहले तल पर स्थित क्रिस्टल रूम में, दरवाजे के पास लगे नोटिस बोर्ड पर दूल्हा-दुल्हन अमित और वर्षा थडानी के नाम सुनहरे अक्षरों में लिखे हुए थे, लेकिन अभी तक उनका भव्य आगमन नहीं हुआ था। कुछ मेहमान नाराज़ थे क्योंकि रात के 10 बज चुके थे और रिसेप्शन 9:30 बजे शुरू होना था। लेकिन यह देर से आने वालों का शहर था। थकान भी हावी थी। शादी का चौथा दिन चल रहा था, जिसकी शुरुआत पिछले रविवार दोपहर को संगीत पार्टी से हुई थी और पिछली रात सिंधी मंदिर में रस्मों के साथ समाप्त हुई थी। आज रात का रिसेप्शन, 500 लोगों के लिए बुफे, दूल्हा-दुल्हन के लिए दोस्तों और परिवार के एक बड़े समूह का मनोरंजन करने का मौका था।
क्रिस्टल रूम धन-दौलत, गुलाबी और भूरे रंग की भव्य मेज सजावट और आकर्षक सेंटरपीस से जगमगा रहा था। तीस वर्षीय पत्रकार भीष्म मनसुखानी, जो काले रंग के कपड़े पहने हुए थे, सबसे पहले आने वालों में से एक थे। दूल्हे के

पुराने स्कूल मित्र, वह अनिच्छा से अपनी माँ को साथ लाए थे, इस उम्मीद में कि उन्हें पूरी रात उनकी देखभाल नहीं करनी पड़ेगी। उनकी माँ नीचे लॉबी में बैठकर लोगों को देखना चाहती थीं। लेकिन उन्होंने उन्हें ऊपर आने के लिए मना लिया, इस उम्मीद में कि मेजबान द्वारा मुफ्त बार की व्यवस्था किए जाने के बाद उन्हें एक बड़ी ब्लडी मैरी पीने को मिल जाएगी।
उसकी नजर परिवार की एक दोस्त पर पड़ी, जो बॉम्बे अस्पताल में कंसल्टेंट एनेस्थेटिस्ट थी। वह उसके पास गया और अपनी मां को उसके साथ बिठाने की कोशिश करने लगा। नीचे से पटाखों जैसी आवाज आने पर उसने कहा, 'ये तो बॉम्बे का आम रिवाज है, सब लोग देर से आते हैं।' मेहमानों ने एक-दूसरे को देखा। 'कितना भद्दा है। क्या दूल्हे ने ये सब करवाया है? अंदर ही अंदर दिखावा?' कुछ ही पलों में ताज होटल के एक दर्जन कर्मचारी अंदर आ गए और एनेस्थेटिस्ट ने अपनी बेटी की तरफ मुड़कर बड़ी-बड़ी आंखों से कहा, 'लगता है दूल्हा- दुल्हन ने शानदार एंट्री करने का फैसला कर लिया है।' लेकिन फिर उन्होंने दरवाजे बंद कर दिए। उसने पास से गुजर रहे एक वेटर को पकड़ा और पूछा, 'क्या हो रहा है?' वह घबराया हुआ लग रहा था: 'मैडम, कृपया शांत रहिए। हमें नहीं पता।'

रात 10:05 बजे, होटल के पूलसाइड कैफे के पास, एक्वेरियस के मैनेजर अमित पेशावे एक कनाडाई जोड़े को वाइन की बोतल परोस रहे थे और गोवा में उनकी छुट्टियों के बारे में बातचीत कर रहे थे, तभी उन्हें मुख्य लॉबी में एक धमाके की आवाज सुनाई दी जो शादी समारोह का हिस्सा नहीं हो सकती थी। उन्होंने अपने वेटरों को एक्वेरियस के मेहमानों को छोटे पैलेस लॉबी में ले जाने का निर्देश दिया, जहाँ से वे सड़क पर निकल सकते थे, और अमित पूल टेरेस के उस पार सौ मीटर दौड़कर शामियाना की ओर गए, जहाँ दर्जनों मेहमान रात के खाने के लिए बैठे थे। शामियाना मुख्य लॉबी के सामने थी और उन्हें उनकी सुरक्षा की चिंता सता रही थी।
एक्वेरियस होटल के प्रभारी आदिल ईरानी, पूल के पास लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि टावर से टैरेस को अलग करने वाले कांच के दरवाजे खुल गए और एक व्यक्ति असॉल्ट राइफल लिए बाहर निकला। यह उन दो बंदूकधारियों में से एक था जो सामने से अंदर आए थे। आगे जमा हुए मेहमानों को देखकर उसने निशाना साधा और बेरहमी से अंधाधुंध गोलियां

बरसाईं, जिससे एक-एक मेहमान घायल हो गया। फिर उसने दूसरे लक्ष्य को ढूंढकर उस पर निशाना साधा और दोबारा फायरिंग की।
आदिल का दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि उसे लगा जैसे फट जाएगा। मेहमान इधर-उधर भागने लगे, कुछ महल की लॉबी में आगे बढ़ गए, तो कुछ पूल के आसपास की झाड़ियों में छिप गए। उन्हें इकट्ठा करने की कोशिश करते हुए, उसने अपनी नज़र के कोने से देखा कि सफ़ेद बालों वाले कनाडाई दंपति अभी भी अपनी मेज़ पर बैठे हैं। उनका ध्यान खींचने के लिए, वह चिल्लाया: 'बाहर निकलो!' इससे पहले कि वह उन्हें पकड़ पाता, अंदर से एक और वेटर ने चिल्लाकर बताया कि सड़क के सभी निकास द्वार बंद कर दिए गए हैं, यानी वे फंस गए हैं। जैसे ही दोनों वेटर मेहमानों को भव्य सीढ़ियों से ऊपर ले जाने लगे, आदिल को एहसास हुआ कि उसके हाथ में अभी भी दो खाली गिलासों वाली ट्रे है। 'ऊपर चलते रहो,' उसने बाहर खड़े कनाडाई दंपति के लिए चिंतित होकर उनसे आग्रह किया।
जैसे ही मेहमान ऊपर चढ़े, स्वचालित बंदूकों की तेज़ आवाज़ गूंज उठी। आदिल ने पीछे मुड़कर देखा तो बंदूकधारी उसके ठीक पीछे था। घबराकर वह रेलिंग कूदकर भूतल के गलियारे से ला पैटिसरी और नॉर्थकोट की तरफ वाले निकास की ओर भागा, जिससे बंदूकधारी का ध्यान उससे हट गया। ऐक, ऐक, ऐक। दौड़ते हुए उसके जूते संगमरमर के फर्श पर ज़ोर से बज रहे थे, तभी उसे गोलियों की बौछार महसूस हुई, जो उसके कपड़ों को छूकर निकल गईं और प्लास्टर व संगमरमर को उड़ा ले गईं। जैसे ही बंदूकधारी सीढ़ियों पर खड़े मेहमानों की ओर मुड़ा, आदिल दरवाजे की ओर दौड़ा। 'दरवाजा खोलो!' आदिल ने अपने आगे खड़े काले सूट पहने कर्मचारियों को चिल्लाकर कहा, जो निकास द्वार बंद कर रहे थे। 'हमें बाहर निकलना है।' जैसे ही उन्होंने ऊपर देखा, एक कर्मचारी को अपनी ओर दौड़ते हुए देखकर वे भ्रमित हो गए, तभी दूसरी तरफ से दरवाजे में छेद हो गए। बेस्ट मार्ग पर और भी हमलावर बाहर थे, जो अंदर घुसने की कोशिश कर रहे थे। आदिल और दोनों काले सूट पहने लोग तुरंत मुड़े और महल की लॉबी की ओर वापस भागने लगे, तभी नॉर्थकोट का दरवाजा चकनाचूर हो गया और दो आदमी अंदर घुस आए, एक ने काला और दूसरे ने ग्रे रंग का सूट पहना हुआ था। ये वही दो बंदूकधारी थे जिन्होंने लियोपोल्ड कैफे में गोलीबारी की थी और उन्होंने उनका पीछा किया।
आदिल, दो काले सूट पहने लोगों के पीछे-पीछे, गलियारे के बीचोंबीच स्थित होटल के लुई वुइटन स्टोर में घुस गया। वेटर को याद आया कि इसके पीछे एक

सर्विस लिफ्ट है। जैसे ही उसने लिफ्ट के बटन दबाए, उसने देखा कि बंदूकधारी दुकान में घुस रहे हैं: 'बंद करो, बंद करो, बंद करो।' काले सूट पहने बंदूकधारी दरवाजों की ओर झपटा और उन्हें बंद होने से रोकने के लिए लात मारने की कोशिश की। आदिल ने उसे बंदूक उठाते हुए देखा, तभी दरवाजे ज़ोर से बंद हुए और लिफ्ट झटके से ऊपर की ओर चली गई। वह राहत की सांस लेकर नीचे बैठ गया, उसे उम्मीद थी कि वह दूसरी मंजिल से बाहर निकल जाएगा, जहाँ से उसे बाहर निकलने का रास्ता पता था। लेकिन जब दरवाजे खुले, तो उसने खुद को खास छठी मंजिल पर पाया, जहाँ करमबीर कांग और उसका परिवार रहता था। काले सूट पहने लोगों ने इशारा किया: किधर? आदिल को कुछ पता नहीं था और वे भाग गए, आदिल वहीं खड़ा रह गया, और ग्रैंड स्टेयरकेस से आती हुई गोलियों की आवाज़ सुनता रहा।

होटल के पीछे, डीसीपी राजवर्धन ने एक पुलिस वॉकी-टॉकी उठा ली और उस पर चिल्ला रहे थे। बैकअप कहां था? रात के 10:10 बज रहे थे, पहले हमले के लगभग पच्चीस मिनट बाद, और उन्हें ताज होटल के अंदर से गोलियों की आवाज सुनाई दे रही थी। उन्होंने होटल की पिछली दीवार से बगीचों और पूल टेरेस की ओर, जहां से एक्वेरियस दिखाई देता था, सावधानी से झांका। कुछ नहीं। कितने लोग मारे गए होंगे?, उन्होंने सोचा, दो असॉल्ट राइफलों की गोलियों की बौछार सुनकर। पिछले दस मिनट से उनके रेडियो पर अन्य घटनाओं की भी खबरें आ रही थीं। '21:56. मरीन ड्राइव 1: ओबेरॉय के पास गोलीबारी की आवाजें सुनाई दे रही हैं।' यह ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल था, जहां राजवर्धन के बैचमेट, जोन 1 के डीसीपी विश्वास पाटिल ने प्रधानमंत्री के आगामी दौरे पर चर्चा करते हुए पूरा दिन बिताया था। कितने बंदूकधारी बाहर थे? पुलिस शहर भर में चेकपॉइंट स्थापित करने की प्रक्रिया में थी। '21:58. दक्षिण क्षेत्र वॉकी-टॉकी: सभी सड़कें बंद करें।'
राजवर्धन दौड़कर बेस्ट मार्ग पर नॉर्थकोट की तरफ वाले प्रवेश द्वार पर गए तो देखा कि वह खुला हुआ था। उन्होंने सावधानी से प्रवेश किया और पाया कि संगमरमर के गलियारे में बनी सभी दुकानों पर गोलियों की बौछार हुई थी। जब वे ग्रैंड सीढ़ियों पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि लिफ्ट के पास एक सुरक्षा गार्ड मृत पड़ा है और उसके बगल में एक कुत्ता पड़ा है। ये होटल के खोजी कुत्तों की टीम थी और उन्हें बहुत करीब से गोली मारी गई थी। आगे एक

ऐसी तीव्र आवाज आ रही थी जिसे वे महसूस भी कर सकते थे। कोई एके राइफल से लॉबी पर अंधाधुंध फायरिंग कर रहा था। वे मुड़े और जिस रास्ते से आए थे उसी रास्ते से बाहर निकल गए। वे ताज होटल की सामने वाली दीवार के सहारे गेटवे और मुख्य टावर की लॉबी की ओर बढ़े, जहाँ अब बंद हो चुके मुख्य दरवाजों पर एक उत्तेजित भीड़ जमा थी। वे अभी भी होटल में घुसने की कोशिश कर रहे थे, कोलाबा में हुई गोलीबारी की खबरों से डरे हुए थे, उन्हें अभी तक यह समझ नहीं आया था कि होटल के अंदर भी गोलीबारी हो रही है। एक बेलबॉय सीढ़ियों पर पड़ा था, उसकी सफेद वर्दी खून से लथपथ थी, भयभीत भीड़ उसके शव को इधर-उधर धकेल रही थी, जबकि होटल के सुरक्षा गार्ड हाथ मिलाकर भीड़ को पीछे हटाने की कोशिश कर रहे थे। काले सूट में पुरु पेटवाल वहीं मौजूद थे, मोर्चा संभाले हुए चिल्ला रहे थे: 'अंदर भी गोलीबारी हो रही है। यह सुरक्षित नहीं है। पीछे हट जाओ।'
अगले दस मिनट तक, पेटवाल और उनके सहकर्मी बेबसी से शीशे के पार देखते रहे, जब दो बंदूकधारी धीरे-धीरे लॉबी खाली करते हुए हिलती-डुलती हर चीज़ पर गोलियां बरसा रहे थे। पेटवाल ने देखा कि एक प्रशिक्षु शेफ, जो उनका दोस्त था और जिसे हाल ही में ताज के प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम में चुना गया था, ज़ोडियाक ग्रिल से कुछ मेहमानों को सामने के दरवाज़ों के पास बने कंसीयज स्टेशन तक ले गया, और फिर दूसरी बार तलाशी लेने के लिए वापस आ गया। पेटवाल मन ही मन उसका हौसला बढ़ा रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि एक बंदूकधारी मुड़ गया। पेटवाल ने शीशे पर हाथ मारा और चीखकर शेफ का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश की, और फिर बड़ी पीड़ा से देखते रहे जब उसे सिर में गोली मार दी गई।
राजवर्धन अब पेटवाल के पास थे, अपना चेहरा शीशे से सटाए हुए, उनके रेडियो पर छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (सीएसटी) पर गोलीबारी की खबरें लगातार आ रही थीं। यह केंद्रीय रेलवे स्टेशन फ्लोरेंस और फॉस्टीन मार्टिस और लाखों अन्य यात्रियों द्वारा प्रतिदिन उपयोग किया जाता है। 'साउथ कंट्रोल: सीएसटी पर मदद भेजो।' दो बंदूकधारियों ने कॉनकोर्स में घुसकर यात्रियों की भीड़ पर अंधाधुंध गोलियां चलाईं, जिनमें कई लोग मारे गए। फिर, एक और संदेश आया: लियोपोल्ड होटल के पास स्थित छोटे यहूदी छात्रावास चाबाद हाउस पर गोलीबारी हो रही है। 'साउथ कंट्रोल: तुरंत आओ। गोलीबारी हो रही है। हमें तुरंत मदद चाहिए।'

राजवर्धन के अनुमान के अनुसार, कम से कम चार अलग-अलग घटनाओं की सूचना दी जा चुकी थी और हताहतों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही थी। जब वह सोच ही रहे थे कि क्या हालात और बिगड़ सकते हैं, तभी गेटवे टैक्सी स्टैंड से एक टैक्सी ड्राइवर घबराई आँखों से दौड़ता हुआ आया। उसने इशारा करते हुए कहा, 'मैंने दो बंदूकधारियों को वहाँ एक बैग रखते देखा।' एक अन्य अधिकारी उसके साथ गया और अंदर झाँका, जहाँ उसे तारों और टिफिन के डिब्बों का ढेर दिखाई दिया। राजवर्धन ने अपने रेडियो पर चिल्लाते हुए कहा, 'बम दस्ते को बुलाओ। हमें नाकाबंदी और अतिरिक्त बल चाहिए। अधिकतम बंदोबस्त भेजो।' बैग बम में टाइमर लगा हुआ था और वह फटने के लिए तैयार था।

*

हार्बर बार के अंदर, मुख्य प्रवेश द्वार के बाईं ओर, न्यूयॉर्क के फाइनेंसर माइक पोलैक अपनी पत्नी अंजली, अपने कॉलेज के दोस्त शिव दर्शित और उनकी पत्नी रेशमा के साथ एक कमजोर मेज के नीचे दुबके हुए थे। वे गोलीबारी शुरू होने से कुछ मिनट पहले ही वहाँ पहुँचे थे और हालाँकि वे सब कुछ सुन पा रहे थे, उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। सभी ने अपने सिर नीचे कर रखे थे, चीखों, कदमों की आहट और कान फाड़ देने वाली गोलियों की आवाज़ें सुन रहे थे और तबाही का अपना-अपना मंजर गढ़ रहे थे।
पोलैक परिवार का ताज होटल से एक विशेष लगाव था। मुंबई के एक धनी परिवार से ताल्लुक रखने वाली अंजली ने अपनी किशोरावस्था में यहाँ खूब मौज-मस्ती की थी। अंजली और माइक ने 2004 में क्रिस्टल रूम में शादी की, जो अंजली के परिवार की परंपरा थी। अमेरिकी हेज फंड व्यवसायी माइक से अंजली की मुलाकात न्यूयॉर्क की एक पार्टी में हुई थी, लेकिन जब उन्होंने छह फुट लंबे, आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्हार्टन बिजनेस स्कूल के स्नातक माइक को भारत लाया तो उन्होंने अपने परिवार को चौंका दिया। आजकल पोलैक परिवार न्यूयॉर्क में रहता है और उनका एक दो साल का बेटा और एक छह महीने का बच्चा है। ग्लेनहिल कैपिटल के सह-संस्थापक के रूप में, जो एक वैश्विक निवेश फंड है जिसे माइक ने 2.5 अरब डॉलर के कारोबार में बदलने में मदद की थी, माइक बहुत व्यस्त रहते थे, जबकि अंजली अपने परिवार को बहुत याद करती थीं। वे सिर्फ एक हफ्ते के लिए यहाँ आए थे और उन्होंने अपने परिवार और दोस्तों से मिलने का पूरा

प्रयास किया। आज रात उन्हें एक विशेष पास मिला था क्योंकि अंजली के माता- पिता बच्चे की देखभाल कर रहे थे। ताज के गोल्डन ड्रैगन चाइनीज रेस्टोरेंट में टेबल खाली होने का इंतजार करते हुए, उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि उन्हें आतंकवादी हमले से डरकर छिपना पड़ेगा।
माइक ने चारों ओर नज़र घुमाई और बार को ध्यान से देखा। यह खुला हुआ था और खस्ताहाल एल्युमिनियम की मेजों और चमड़े के सोफे से सजा हुआ था। अंदर कोई छत नहीं थी; यह बात साफ़ थी। 'हमें यहाँ से निकलना होगा,' उसने एक मेज उठाई और उसे खिड़की से बाहर फेंकने की कोशिश की। मेज वापस उछल गई। 2003 में गेटवे ऑफ इंडिया पर हुए बम विस्फोट के बाद सभी खिड़कियों पर मज़बूत कांच लगाया गया था।
बार के पीछे से एक होस्टेस निकली। उसने पहले उन्हें बर्फ़ जैसी ठंडी किंगफिशर बियर पिलाई थी और अब उसने उन्हें वहीं रुकने का इशारा किया, जबकि वह दरवाजे के पास पहरा दे रही थी और दबी आवाज़ में कुछ बातें बता रही थी। उसने कहा, 'एक आदमी मशीन गन लिए सब पर गोलियां चला रहा है। मुझे एक लाश दिख रही है।' होस्टेस को एक विचार आया। वह बार के पीछे की ओर भागी और उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया। वे एक मोटे कंक्रीट के खंभे के पीछे छिप गए, जिसके पीछे एक घुमावदार सीढ़ी थी। वह सीढ़ी पहली मंजिल तक जाती थी और वे वासाबी नाम के जापानी रेस्टोरेंट में पहुँच गए। होस्टेस ने कहा, 'मैं आपको रसोई में ले चलती हूँ। वहाँ हमें कोई नहीं ढूंढ पाएगा।'
उनके जाने के कुछ ही क्षण बाद, सीसीटीवी फुटेज में लाल कपड़े पहने बंदूकधारी हार्बर बार में झांकता हुआ दिखाई दिया। बार को खाली देखकर वह संगमरमर के गलियारे से आगे बढ़ गया और मसाला क्राफ्ट के बाहर रुक गया। उसका दरवाजा बंद था और रेस्तरां में अंधेरा छाया हुआ था। उसने फिर भी शीशा तोड़ दिया और कुछ गोलियां दाग दीं। रेस्तरां खचाखच भरा हुआ था, खाने वाले अपनी मेजों के नीचे दुबके हुए थे, स्तब्ध और रोते हुए, ऊपर की बेंचों पर गोलियों की आवाज सुन रहे थे। उनमें एलिसिया के मालिक एंड्रियास लिवेरस भी थे, जो हिम्मत दिखाने की कोशिश कर रहे थे। उनके क्रूज निदेशक रमेश उनके बगल में थे, याट से आई डरी हुई फिलिपिनो स्पा लड़कियों को दिलासा दे रहे थे। आह, आह, आह। धड़ाम। गोलियों की आवाज और एक ग्रेनेड। चारों ओर शीशे टूट गए। गोलियां रेस्तरां में इधर-उधर उछल रही थीं, जिससे धातु की सर्विंग ट्रॉलियों से चिंगारियां निकल रही थीं और कमरा जगमगा रहा था। एक पल का

सन्नाटा छा गया और रमेश उठ बैठा। उसने लाल टी-शर्ट पहने एक आदमी को 'कांच के दरवाजों के पास से बंदूक लेकर भागते हुए' देखा। उसने अपने बॉस से रसोई में छिपने का आग्रह किया। लेकिन एंड्रियास गुस्से से आग बबूला था। 'मैंने अभी तक खाना भी नहीं खाया है।'
बड़बड़ाते हुए वह उठा और वे सब एक छोटी सी दुकान में घुस गए, खाने वाले कंधे से कंधा मिलाकर खड़े थे। एक महिला ने फुसफुसाते हुए बताया कि दो साल पहले काबुल में उसे बंधक बनाया गया था। 'मेरे साथ ऐसा दो बार कैसे हो सकता है?' उसने स्तब्ध होकर कहा। 'खुद को संभालो,' एंड्रियास ने चिढ़कर कहा। तनाव ने उसे निर्दयी बना दिया था। फिर वह रेस्तरां के फायरिंग ज़ोन में वापस चला गया ताकि मेज पर छोड़े गए अपने दो मोबाइल फोन में से एक उठा सके। वह दुनिया की सबसे बड़ी 395 फुट लंबी नौका बनाने के सौदे के बीच में था, और गोलीबारी उसके रास्ते में नहीं आने वाली थी।

बांद्रा से दक्षिण की ओर जाने वाले ट्रैफिक में फंसे करमबीर कांग बेहद परेशान थे। रात के 10:15 बज रहे थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि ताज होटल पहुंचने में कितना समय लगेगा। उनका मोबाइल फोन लगातार बज रहा था। उनका परिवार अभी भी छठी मंजिल पर था, होटल के सीईओ टावर की दूसरी मंजिल पर फंसे हुए थे और शेफ ओबेरॉय ने सभी रेस्टोरेंट और बार बंद कर दिए थे, जिससे मेहमान अंदर ही फंसे रह गए थे। ताज होटल के सुरक्षा प्रमुख घर पर थे। मालिक रतन टाटा रास्ते में थे। होटल के सार्वजनिक चेहरे के रूप में, करमबीर को वापस लौटना जरूरी था।
नीति ने उससे बात कर ली। क्या उन्हें बाहर आना चाहिए? करम्बिर ने सलाह दी, "वहीं रहो, गोलीबारी नीचे हो रही है। यह बहुत बड़ा होटल है और तुम बहुत दूर हो।" उसे पूरा यकीन था कि सुरक्षा बल हमलावरों को ऊपर आने से पहले ही काबू कर लेंगे। "तुम अपने कमरे में ही सबसे सुरक्षित रहोगी।" होटल अपराधियों के लिए एक भूलभुलैया जैसा था, जिसमें वे रास्ता नहीं ढूंढ सकते थे। करम्बिर इतना आत्मविश्वास से भरा हुआ लग रहा था कि नीति को उस पर कोई शक नहीं हुआ। इसके बाद, उन्होंने स्थिति की जानकारी लेने के लिए अपने सुरक्षा प्रमुख कुडियादी को फोन किया। आंकड़े चौंकाने वाले थे। 500 से अधिक कर्मचारी ड्यूटी पर थे, और रिकॉर्ड के अनुसार 1,200 मेहमान और भोजन करने वाले अंदर फंसे हुए थे। कुडियादी ने संदेश भेजा, 'पुलिस की ओर से कोई प्रतिक्रिया

नहीं हुई।' पहली प्राथमिकता कुडियादी के सुरक्षाकर्मियों को संगठित करना था। उन्हें आगे बढ़कर लॉबी से शुरू करते हुए चुपके से निकासी अभियान चलाना होगा। उन्होंने सुरक्षा प्रमुख को संदेश भेजा, 'कॉलेज स्टाफ को वापस उनके डेस्क पर बुलाओ और सभी को फोन करो। मेहमानों को अपने कमरों में ही रहना होगा।' कुडियादी की प्रतिक्रिया घबराहट भरी लग रही थी। करमबीर ने उन्हें आश्वस्त किया: 'याद रखें, आप होटल को जानते हैं, वे नहीं।'

सनराइज सुइट

सबीना सैकिया दरवाजे के पास दुबकी हुई गोलियों की आवाज सुन रही थी और दिन में पहले अपनी दोस्त सावित्री से हुई बातचीत को याद कर रही थी, जो अपनी बेटियों को ताज होटल की पांच सितारा विलासिता का अनुभव कराने के लिए लाई थी। जब बेटियां लाउंज में चॉकलेट केक खा रही थीं और टीवी देख रही थीं, तब सबीना और सावित्री विशाल बिस्तर पर लेटी बातें कर रही थीं।
अस्सी के दशक के आखिरी वर्षों में, गंगा नदी के किनारे वाराणसी के एक साधारण से होटल में दोनों महिलाओं की मुलाकात हुई थी। सबीना को जब पता चला कि सावित्री भी उसके प्रेमी शांतनु की तरह असमिया है, तो दोनों के बीच गहरी दोस्ती हो गई।
हाथ से सिले सूती चादरों पर आराम से लेटे हुए, वे आज दोपहर असम में हुए हालिया बम धमाके के बारे में बातें कर रहे थे, जिसमें सत्तर से ज़्यादा लोग मारे गए थे। सावित्री ने कहा, 'बम धमाका मेरे एक दोस्त के ठीक सामने हुआ और वह बाल-बाल बच गया।' सबीना ने सिर हिलाते हुए कहा, 'असम की हालत बहुत खराब है।' फिर उसने खुद को संभाला। 'हम मुंबई की सबसे आलीशान जगह पर आराम से लेटे हुए हैं और इस बात पर इतना घमंड कर रहे हैं।'
अब, छह घंटे बाद, उसे पछतावा हो रहा था कि काश उसने आज रात सावित्री के घर रुकने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया होता।
सबीना का फोन बजा। ‘हे, मैं निखिल हूँ, क्या तुम ठीक हो?’ यह उसका छोटा भाई था, जो दिल्ली से फोन कर रहा था। वह और परिवार के बाकी सदस्य शादी से पहले के डिनर में थे और शाम भर क्रिकेट देखने के लिए टीवी लाउंज में आते-जाते रहे थे। मैच खत्म होने के आखिरी कुछ मिनटों में किसी ने चैनल बदलकर मुंबई हमलों की खबर देखी। निखिल को उम्मीद थी कि सबीना अभी भी पारसी शादी में

होगी। ‘नहीं, मैं बीमार थी, इसलिए जल्दी वापस आ गई,’ उसने धीरे से कहा। ‘मुझे गोलियों की आवाज सुनाई दे रही है, लेकिन अभी-अभी फोन आया और मुझे यहीं रुकने को कहा गया। मुझे क्या करना चाहिए?’

रात 10.20 बजे – शामियाना

भूतल पर, अमित पेशावे अपने रेस्तरां के बीचोंबीच जम कर खड़े थे, क्योंकि उन्होंने अभी-अभी बाहर एक बंदूकधारी को मंडराते हुए देखा था। वह आदमी उनसे उम्र में बड़ा नहीं लग रहा था और उसने एक काली पोलो टी-शर्ट के ऊपर एक ग्रे रंग की लंबी बाजू की टी-शर्ट पहनी हुई थी, और एक भारी-भरकम नीले रंग का क्रिकेट बैग कंधे पर लटका रखा था। अमित ने उस पर लिखा हुआ देखा: 'बदलती लहर'। प्रबंधक जानता था कि अगर वह भागा तो बंदूकधारी का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो जाएगा, लेकिन अगर वह वहीं रुका रहा तो उसकी मौत निश्चित थी। उसके पीछे, पचास से अधिक ग्राहक उसके इशारे का इंतज़ार कर रहे थे। वह झुककर उनकी ओर दौड़ा और उन्हें मेजों के नीचे छिपने के लिए कहा। कुछ लोग आग से बचने के लिए बने निकास द्वार से बाहर भाग गए, और जल्दी से गिनती करने पर पता चला कि इकत्तीस लोग अभी भी ज़मीन पर दुबके हुए थे। उसे एक विचार आया। शामियाना के पीछे एक पर्दे के पीछे दो निजी कमरे थे। वहाँ छिपने से उन्हें कुछ समय मिल सकता था, लेकिन कुछ मेहमान बहुत नशे में थे। क्या वह उन्हें एक साथ इकट्ठा कर सकता था?
‘जल्दी करो, जल्दी करो!’ वह फुफकारते हुए उन्हें अंदर ले गया। मुड़कर देखा तो हेड वेटर रहमतुल्लाह रसोई से बिरयानी की थाली लिए बाहर निकला। अमित ने जोर-जोर से हाथ हिलाए। ‘रहमतुल्लाह!’ बंदूकधारी ने उसे भी देख लिया था और गोलियों की बौछार कर दी, जो बूढ़े आदमी की छाती में लगी और वह पीठ के बल गिर पड़ा। थाली ज़मीन पर गिर गई और चावल कमरे में बिखर गए। फिर उसने बफे काउंटर की ओर एक ग्रेनेड फेंका, ठीक उसी समय अमित का असिस्टेंट मैनेजर शोर सुनकर बाहर आया। ‘भागो!’ अमित चिल्लाया, तभी ग्रेनेड फट गया, जिससे क्रिस्टल के झूमर टूट गए और कमरा घुप अंधेरे में डूब गया। उसका असिस्टेंट किनारे हट गया। धमाके की भीषण आवाज़ से स्तब्ध अमित कुछ पल के लिए बेसुध पड़ा रहा। उसके शेफ, ‘अथक रेगो’ का क्या हुआ? बाहर निकलने का रास्ता ढूंढते हुए अमित ने रेस्टोरेंट का जायजा लिया और उसकी नजर 'बंद दरवाजे' पर पड़ी। आमतौर पर

सामने एक लाइव बैंड बजता था, लेकिन उसे याद आया कि यह दरवाजा पूल टेरेस के बगल वाले बगीचे में खुलता था। झाड़ियों में होटल का ट्रांसफार्मर रूम छिपा हुआ था, जहाँ से एक और दरवाजा मैरी वेदर रोड की ओर खुलता था: सड़क की ओर एक गुप्त दरवाजा। यह एक मुश्किल कोशिश थी, लेकिन उनका एकमात्र मौका था। अमित दरवाजे की ओर दौड़ा, उसे खींचता और धक्का देता हुआ। वह लात मारता रहा और रात की हवा में बाहर गिर पड़ा। वह बाहर निकल गया था। कुछ पलों के लिए वह वहीं पड़ा रहा, तारों को देखता रहा। 'अमित, खुद को बचाओ। अपनी जान बचाकर भागो।' क्या वह इस फैसले के साथ जी पाएगा? उसने पुणे में अपने माता-पिता के बारे में सोचा, परोपकारी डॉक्टर जो अक्सर मुफ्त में काम करते थे। वह नहीं जी सकता था। अमित उठा और वापस अंदर चला गया। 'झाड़ियों में,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, शामियाना से बाहर निकलकर झाड़ियों में भागते हुए इकत्तीस लोगों को गिनते हुए, हँसते और गुर्राते हुए नशे में धुत लोगों को चुप कराया।
पूल टेरेस की ओर देखते हुए अमित ने बंदूकधारी को पूलसाइड कैफे एक्वेरियस की ओर जाते हुए देखा, जहाँ वह बूढ़ा कनाडाई जोड़ा, जिसे उसने पहले खाना परोसा था, अभी भी अपनी मेज पर बैठा था। 'यह क्या हो रहा है?' उसे विश्वास नहीं हो रहा था। क्या यह संयम था, हार मान लेना था या पागलपन? अमित चिल्लाना चाहता था: 'यहाँ से निकल जाओ।' लेकिन इससे उसकी स्थिति उजागर हो जाती। वे तो बस दो लोग थे।
बंदूकधारी अभी तक भोजन कर रहे लोगों को नहीं देख पा रहा था, न ही वे उसे। जब वह आखिरी खंभे को पार करेगा, तब वे उसकी नज़र में आ जाएँगे। अमित ने उनसे उठने की प्रार्थना की, लेकिन वे अपनी बातचीत जारी रखे रहे। अब बंदूकधारी खंभे के पास पहुँच गया था। एक ही छलांग में वह खंभे के चारों ओर घूम गया। उसने उन्हें देखा, खुद को संभाला और अपनी असॉल्ट राइफल उठाकर बुजुर्ग व्यक्ति की पीठ में गोली मार दी। जैसे ही घायल पर्यटक अचंभित होकर उठा, बंदूकधारी ने उसके सिर में दूसरी गोली मार दी। उसने बंदूक की नली महिला की ओर घुमाई, और जैसे ही उसने भय से अपने हाथ ऊपर उठाए, उसने उसकी छाती में गोली मार दी। अमित का पेट गुड़गुड़ाने लगा क्योंकि दोनों मेहमान ज़मीन पर गिरकर मर गए।

पूल के ऊपर बने बंद क्रिस्टल रूम में, शादी के रिसेप्शन के मेहमान खामोशी से बैठे थे, उनके पेय पदार्थ अभी तक छुए नहीं गए थे, मोमबत्तियाँ टिमटिमा रही थीं, और वे नीचे हो रही गोलियों की आवाज़ सुन रहे थे, जबकि बैकग्राउंड में संगीत बजता जा रहा था। पत्रकार भीष्म को लगा कि होटल में किसी जलते घाट जैसी गंध आ रही है, और वह सोच रहा था कि नवविवाहित अमित और वर्षा थडानी कहाँ चले गए हैं। 'ताज होटल में ऐसा कैसे हो सकता है?' उसने मन ही मन सोचा। उसे उम्मीद थी कि यह किसी तरह का ड्रग युद्ध होगा। 'वे एक-दूसरे को मार डालेंगे और बात खत्म।' लेकिन फिलहाल किसी को कुछ पता नहीं था। और वे कुछ देख भी नहीं पा रहे थे क्योंकि खिड़कीविहीन क्रिस्टल रूम से केवल दोनों सिरों पर बने सर्विस दरवाजों में बने कुछ छोटे-छोटे छेदों से ही दृश्य दिखाई देता था।
अचानक, एक चीखती हुई गोली विभाजन दीवार को भेदते हुए बार के ऊपर लगे एक विशाल कांच के पैनल को चकनाचूर कर गई। ‘हे भगवान!’ भीष्म ने अपने बगल में बैठे एक फाइनेंसर मित्र से कहा, और वे सब मेजों के नीचे छिप गए। ‘वे होटल के अंदर कैसे हो सकते हैं? लोग कह रहे हैं कि अंदर कोई गिरोह है?’ आह, आह, आह। और गोलियां दीवारों को चीरती हुई निकल गईं। ‘वे अंदर हैं!’ किसी ने मेज के नीचे से चिल्लाकर कहा। भीष्म ने इसे नजरअंदाज कर दिया। ‘यह बकवास है,’ उन्होंने कहा। उन्होंने प्रेस क्लब में अपने एक दोस्त को संदेश भेजा: ‘सिय्या, तुम खबर देखो, गोलियों की आवाज सुनी। बैंक्वेट हॉल में गोलियां चलीं।’ क्रिस्टल रूम में और गोलियां घुसीं, और झालरदार पर्दों को फाड़ दिया। एक महिला अपने पति का नाम पुकार रही थी। ‘चुप रहो!’ किसी ने फुसफुसाकर कहा।
भीष्म ने अपने दोस्त को फिर से संदेश भेजा: ‘मैं ताज होटल में हूँ, शादी है। लोग कह रहे हैं कि गैंगवार चल रही है।’ गोली कौन चला रहा था? मुस्लिम भीड़, हिंदू कट्टरपंथी, ड्रग गिरोह? ‘अल कायदा?’ सिया ने जवाब भेजा। सीएसटी और मेट्रो सिनेमा के बाहर भी गोलीबारी हो रही थी। ‘कई हमले हुए हैं,’ भीष्म ने अपने पड़ोसी से फुसफुसाकर कहा।
चटक, चटक। क्रिस्टल रूम के दरवाजे हिल गए। क्या कोई दूसरा मेहमान अंदर आने की कोशिश कर रहा था? क्या उन्हें दरवाजे खोलकर उसकी मदद करनी चाहिए? चटक, चटक। दरवाजे हिल गए। किसी ने बंदूक के बट से हैंडल पर वार किया था। भीष्म दरवाजों को घूर रहा था। उसे लात मारने और गुर्राने की आवाजें सुनाई दे रही

थीं। एक बंदूकधारी अंदर घुसने की कोशिश कर रहा था। दरवाजे खड़खड़ा रहे थे, लेकिन मजबूती से टिके हुए थे। उसने सर्विस कॉरिडोर में कदमों की आहट और कुछ विदेशी आवाजें सुनीं। क्या ये उर्दू थी? या पश्तो? क्या ये अफगानी थे? शहर कभी अफगानी सरगना, शहर के डॉन करीम लाला के डर में जीता था, हालांकि आजकल आरामपसंद मुंबईवासी तालिबान को आतंक से जोड़ते हैं।
सर्विस कॉरिडोर में उनके पीछे कदमों की आहट सुनाई दी। वे चक्कर लगा रहे थे, अंदर जाने का रास्ता ढूंढने की कोशिश कर रहे थे। तभी एक चेहरा गोल खिड़की से अचानक दिखाई दिया। एक मेहमान ने अपने फोन से उसकी तस्वीर खींचने की कोशिश की, और फ्लैश चमकते ही दीवारों पर तेज़ सफेद रोशनी फैल गई। किसी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम हम सबको मरवा दोगी।' चेहरा फिर से दिखाई दिया, गोल खिड़की के शीशे से सटा हुआ, अंधेरे हॉल में घूरता हुआ।

बुधवार, 26 नवंबर 2008, रात 9.45 बजे –
मालाबार हिल, मुंबई

मुंबई क्राइम ब्रांच के प्रमुख, संयुक्त आयुक्त राकेश मारिया, नेपियन सी रोड स्थित अपने आवास पर नहा रहे थे। आज रात उनके बेटे के जाने के कारण उन्हें विशेष छूट मिली थी और वे काम से जल्दी निकल गए थे। लेकिन संयुक्त आयुक्त का ध्यान कहीं भटक रहा था। एक सक्षम अधिकारी, शहर के सबसे प्रसिद्ध पुलिस अधिकारियों में से एक, अपनी छवि को संभालने में माहिर, मारिया को लग रहा था कि हालात उनके नियंत्रण से बाहर होते जा रहे हैं। कई महीनों से मुंबई पर आतंकवादी हमले की खुफिया जानकारी इकट्ठा हो रही थी, लेकिन पुलिस बल में किसी को भी इसकी ज्यादा चिंता नहीं थी। दो दिन बाद प्रधानमंत्री भी एक महत्वपूर्ण दौरे पर आने वाले थे, जिसका मतलब था सुरक्षा को लेकर अतिरिक्त चिंता।
बॉलीवुड निर्माता के बेटे मारिया के लिए यह जाना-पहचाना क्षेत्र था, जो अपने पिता की तरह ही एक अच्छी कहानी की मोहक शक्ति के प्रति जुनूनी थे। 1993 में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों में 257 लोगों की जान लेने वाली खूनी साजिश का पर्दाफाश करने के बाद उन्होंने पुलिस में शानदार तरक्की की, यातायात विभाग के प्रमुख से लेकर क्राइम ब्रांच के प्रमुख तक का सफर तय किया। उस समय मुंबई को बॉम्बे कहा जाता था और वहां डी-कंपनी का दबदबा था,

जो एक मुस्लिम गिरोह था जिसका मुखिया दाऊद इब्राहिम था, जिसे दुबई से नियंत्रित किया जाता था और जिसका एक हिंदू गुर्गा छोटा राजन था। मारिया ने तुरंत ही इन धमाकों के बीच संबंध पहचान लिया और इन्हें एक धार्मिक युद्ध शुरू करने की साजिश के रूप में परिभाषित किया।
हालात तब और भी पेचीदा हो गए जब हिंदू राजन, मुस्लिम दाऊद के अपराध से घृणा करते हुए, उससे अलग हो गया और शहर में गुटबाजी शुरू हो गई। गुंडे आपस में ही एक-दूसरे पर गोलियां चलाने लगे, यहां तक कि गवाहों के कटघरे में खड़े दुश्मनों को भी निशाना बनाया, साथ ही अधिकारियों को भी निशाना बनाया। इसके चलते मारिया को मुंबई को अरब सागर के किनारे बसे नेपल्स जैसा बनने से बचाने के लिए सख्त रणनीति अपनानी पड़ी। उसने कुछ अलग सोच वाले लोगों का एक दस्ता बनाया, जिन्होंने वांछित अपराधियों के परिवारों पर दबाव डालकर उन्हें पूछताछ के लिए पेश किया। नींद से वंचित रखने, लगभग डुबोने, नकली फांसी देने और गुप्त हिरासत कक्षों में बिजली के झटके देने के आरोप लगे। मारिया की टीम पर फर्जी मुठभेड़ों की एक श्रृंखला में शामिल होने का भी आरोप लगा, जिनमें कथित तौर पर 400 से 700 अपराधियों को घात लगाकर मार गिराया गया, जिन्हें पुलिस ने वैध गोलीबारी का रूप दिया।
डी-कंपनी को कमजोर कर दिया गया और मुंबई पुलिस का नया उदय हुआ। लेखक जीत थायिल ने उन्हें 'भूरे कौवे' कहकर संबोधित किया, जो उन पक्षियों की छवि प्रस्तुत करते हैं जो अपनी अनुकूलन क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं, सूचना के ऐसे उपभोक्ता जो अपने सामने आने वाली हर चीज को ग्रहण कर लेते हैं।
अब, एक साथ चार फोन बजने की आवाज़ से मारिया नहाते हुए बाहर आ गया, क्योंकि उसे कई हमलों की खबर मिली थी। कपड़े पहनते हुए, उसने महसूस किया कि शहर पर एक बार फिर से खतरे का साया मंडरा रहा है। उसने एक इंस्पेक्टर को फोन किया: 'लियोपोल्ड से शुरू करो। पता लगाओ कि क्या हो रहा है।' मारिया ने पुलिस मुख्यालय को भी फोन किया। क्या मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) लागू की गई थी, जिसमें यह स्पष्ट किया गया था कि आपात स्थिति में किसे कहाँ होना चाहिए? आतंकवाद विरोधी प्रमुख कहाँ थे? उसने कानून और व्यवस्था के संयुक्त आयुक्त को फोन किया, जिन्हें SOP के अनुसार, किसी भी तरह की घटना होने पर नियंत्रण कक्ष चलाना था। उन्हें मालाबार हिल स्थित अपने घर पर पाकर, मारिया ने उन्हें लेने की पेशकश की।

अपने बालों को पीछे की ओर संवारते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा, 'चिंता मत करो। हम पूरी ताकत से हमला करेंगे और वे भाग जाएंगे।'
मुंबई के नेपियन सी रोड से साढ़े तीन मील दक्षिण-पूर्व में स्थित नव-गॉथिक शैली के पुलिस मुख्यालय में अफरा-तफरी मची हुई थी। मारिया और उनके सहयोगी रात 10 बजे के कुछ देर बाद पहुंचे और पूर्व आयुक्तों की गैलरी से गुजरते हुए मुख्य लकड़ी की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए। वर्तमान आयुक्त, हसन गफूर, जो एक विशाल मुस्लिम आबादी वाले शहर में पुलिस बल का नेतृत्व करने वाले दूसरे मुस्लिम हैं, कहीं नजर नहीं आ रहे थे। दोनों संयुक्त आयुक्त पहली मंजिल पर स्थित नियंत्रण कक्ष में दाखिल हुए, जहां नागरिक कर्मचारी और चिंतित दिखने वाले पुलिस अधिकारी इधर-उधर घूम रहे थे और फोन लगातार बज रहे थे। ताज होटल, छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, चाबाद हाउस और ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल में तीस से अधिक पुलिस यूनिट, गश्ती दल, मोबाइल और स्ट्राइक फोर्स तैनात किए जा चुके थे, लेकिन सबसे सुसज्जित पुलिस बल – सात मील उत्तर में तैनात त्वरित प्रतिक्रिया दल – यातायात में फंसे हुए थे। मारिया ने पूछा, 'राज्य आरक्षित पुलिस बल का क्या?' वे इस 16,000 जवानों वाले बल पर बहुत अधिक निर्भर थे, लेकिन हाल के दिनों में कमिश्नर गफूर ने कई यूनिटों को महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में दंगा नियंत्रण ड्यूटी पर भेजा था। आज रात उपलब्ध बल बुरी तरह से कम हो गया था। मारिया ने अपनी भारी पलकों वाली आँखें छत की ओर उठाईं, अपने मन को सार्वजनिक करने की इच्छा को दबाते हुए। उन्होंने पूछा, 'आतंकवाद विरोधी प्रमुख का क्या?' 'सर, वह अभी भी रास्ते में हैं।'
मारिया के मोबाइल की घंटी बजी। यह कमिश्नर गफूर का फोन था, जिनका कॉल साइन 'किंग' था। बॉस ने गरजते हुए पूछा, 'तुम कहाँ हो?' मारिया ने चिढ़ते हुए जवाब दिया, 'सर, मैं हेड ऑफिस में हथियार इकट्ठा कर रही हूँ। हम ताज होटल जा रहे हैं।' मानक परिचालन (SOP) के अनुसार यही तय था। गफूर ने आदेश दिया, 'नहीं, कंट्रोल रूम में रहो।' मारिया ने कमिश्नर से पूछा कि क्या वे वाकई आश्वस्त हैं, और उन्हें याद दिलाया कि आपातकालीन नियमों के अनुसार कानून और व्यवस्था कमिश्नर को संकट प्रबंधन कमान संभालनी चाहिए। सभी जानते थे कि गफूर का इस अधिकारी से लंबे समय से विवाद चल रहा था और अब ऐसा लग रहा था कि यह महत्वपूर्ण परिचालन निर्णयों में बाधा बन रहा है। 'कानून और व्यवस्था कमिश्नर ताज होटल जाएंगे। मारिया पुलिस कमान संभालेगी।'

मारिया, जो कमान संभाले हुए थी, को रोक दिया गया था। गुस्से से भरी मारिया ने घोड़े की नाल के आकार की तीन पंक्तियों में लगी डेस्कों को घूरकर देखा, जिनके चारों ओर पुलिस रेडियो ऑपरेटर जमा थे। दोनों ओर बचावकर्मी जनता से आ रही आपातकालीन '100' कॉलों का जवाब दे रहे थे। आगे, टेलीविजन स्क्रीन पर लाइव प्रसारण चल रहा था, जिसमें उत्तेजित रिपोर्टर अलग-अलग लक्ष्यों के सामने खड़े होकर, मारिया के अनुसार, अधूरी खबरें और अटकलें लगाकर समाचार मशीन को जानकारी दे रहे थे। वह हवाई लड़ाई के लिए तैयार थी और अब बंकर में फंसी हुई थी। उसने कमांड डेस्क पर अपनी जगह ली, और जैसे ही कागजों का ढेर उसकी डेस्क पर गिरा, उसका दिल बैठ गया।
लियोपोल्ड से पहली कॉल रात 9:48 बजे आई: विदेशी मारे गए और घायल हुए। रात 9:54 बजे ताज होटल पर हमले की सूचना मिली और दो मिनट बाद ओबेरॉय होटल पर भी हमले की सूचना मिली। सीएसटी पर हमले की सूचना रात 9:59 बजे मिली और रात 10:02 बजे कोलाबा स्थित यहूदी केंद्र चाबाद हाउस पर छापे की खबर आई। इससे कुछ मिनट पहले, ताज होटल से तीन मील उत्तर में माज़गाँव में एक टैक्सी में विस्फोट हो गया, जिसमें उसके चालक और एक यात्री की मौत हो गई और उन्नीस राहगीर घायल हो गए।
मारिया ने हमलों की प्रकृति पर ध्यान केंद्रित किया, लियोपोल्ड से चश्मदीदों के बयानों की छानबीन की, जिनमें दो युवा, दाढ़ी-मूंछ साफ किए हुए पुरुषों का वर्णन था, जो स्वेटशर्ट और मिलिट्री पैंट पहने हुए थे और बड़े- बड़े बैग लिए हुए थे। ताज होटल और सीएसटी में भी यही कहानी थी, जहां लगभग साठ लोगों के मारे जाने का अनुमान था। भीड़भाड़ के ठीक बाद दो हमलावर स्टेशन में घुस आए और अपने बैग से एके-47 राइफलें निकालीं। उनमें से एक, जो छह फुट लंबा था, ने ग्रेनेड फेंका, जबकि दूसरा, जो मुश्किल से पांच फुट लंबा था, ने अंधाधुंध फायरिंग की। मारिया ने पूछा, भारत के सर्वश्रेष्ठ पुलिसकर्मियों ने कैसे जवाब दिया? सीसीटीवी फुटेज में कई पुलिसकर्मियों को भागते हुए देखा गया था, जबकि एक अन्य पुलिसकर्मी ने अपनी तीस साल पुरानी बोल्ट-एक्शन राइफल जाम होने के बाद प्लास्टिक की कुर्सी फेंक दी थी। इस समय स्टेशन के कुली सामान ढोने वाली गाड़ियों पर शवों को घसीट रहे थे, जिससे स्टेशन का गलियारा खून के धब्बों से भरा हुआ था।
दूसरे विस्फोट की खबरें आने लगीं, एक और टैक्सी, इस बार शहर के उत्तर-पश्चिम में स्थित विले पार्ले में पश्चिमी एक्सप्रेसवे पर। विस्फोट इतना

ज़ोरदार था कि एक यात्री का सिर धड़ से अलग होकर गोल्डन स्वान सिटी क्लब के तहखाने में जा गिरा। मारिया ने बुदबुदाते हुए कहा, "पुराना आपराधिक सिलसिला, यानी एक के बाद एक हमला, फिर गायब, अब खत्म हो गया है।"
फ़िदायीन नियम लागू थे, पुलिस लालफीताशाही में उलझी हुई थी, और राज्य एवं केंद्र सरकार अड़ियल नज़र आ रही थी। ‘वे सीखते हैं और बदलते हालात के अनुसार ढलते हैं। हम स्थिर रहते हैं, आपस में झगड़ते हैं और एक-दूसरे से चोरी करते हैं।’ मारिया सोच रही थी कि क्या 13 मिलियन आबादी वाले शहर की रक्षा करने वाली 40,000 सैनिकों की यह टुकड़ी – जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनुशंसित न्यूनतम संख्या से काफी कम है – इस संकट पर काबू पाने में सक्षम भी है या नहीं।
उन्होंने हाल ही में पुलिस को भेजी गई कॉलों का प्रिंटआउट देखा और पाया कि मुंबई की अग्रिम पंक्ति की सुरक्षा व्यवस्था पहले से ही अस्त-व्यस्त थी, कमिश्नर की अनुपस्थिति में पुलिस इकाइयों को इधर-उधर भेजा जा रहा था। सशस्त्र इकाइयाँ घायलों को लेने गई थीं, जबकि नियमित गश्त दल सबसे अधिक संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात थे। अब तक केवल एक ही बात स्पष्ट हुई थी: रात 10:27 बजे एक बीट मार्शल का फोन आया, जिसमें बडवार पार्क में एक असामान्य समुद्री लैंडिंग की सूचना दी गई थी। मारिया ने स्थानीय निवासियों से बात करने और लावारिस पीली नाव की तलाशी के लिए एक टीम भेजी। पानी। कितने बंदूकधारी अंदर आए थे? तरह-तरह के अंदाजे लगाए जा रहे थे, लेकिन सच तो यह था कि मारिया को क्या पता, हो सकता है कि पाकिस्तान से कोई सेना आ गई हो। तभी उसका फोन बजा। उसके क्राइम ब्रांच के इंस्पेक्टर का फोन था: 'सर, वे आपकी तरफ आ रहे हैं।' सीएसटी से आए फिदायीन पुलिस मुख्यालय की ओर बढ़ते दिख रहे थे। क्या वे पुलिस की संचार लाइनें भी ठप करने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे पूरा शहर अंधेरे में डूब जाए? मारिया चिंतित हो गया। उसने एक सशस्त्र स्ट्राइकिंग मोबाइल यूनिट को मुख्य द्वार के बाहर तैनात होने का आदेश दिया और अपने आदमियों की ओर मुड़कर कहा: 'वे हम पर हमला करने आ रहे हैं।' उसने बचे हुए हथियार निकाल लिए। उसे उन्हें डटकर लड़ने के लिए प्रेरित करना था। उसने सबको इकट्ठा किया। 'अब सब कुछ तुम पर निर्भर है।' उसने हथियारों से लैस आदमियों को घेराबंदी को मजबूत करने और सीढ़ियों को बंद करने के लिए भेजा। फिर वह गुस्से से भरा हुआ अपनी डेस्क पर लौट गया। रात 10:40 बजे उसने कंट्रोल रूम की डायरी में लिखा: 'मैंने मुख्य सचिव से

बात की है।' हमें इससे निपटने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड या सेना की मदद चाहिए।’ यह सरकार की ओर से आह्वान था और सरकार अभी भी इस पर कोई फैसला नहीं ले पा रही थी। तभी मारिया को 1993 की घटना याद आ गई। उसे ऐसा लगा जैसे कोई राष्ट्र मुंबई के खिलाफ युद्ध छेड़ रहा हो और मारिया की राय में पाकिस्तान ही सबसे बड़ा दावेदार था। लेकिन क्या इस्लामी गणराज्य इतना बड़ा जोखिम उठाएगा? उसके विदेश मंत्री इस समय दिल्ली में ताज होटल में ठहरे हुए थे, जो बहुप्रतीक्षित वार्ता में भाग लेने के लिए भारत आए थे। आज सुबह अखबारों में इसी खबर की खूब चर्चा थी।
मारिया की पत्नी ने फोन किया। उनके बेटे को अहमदनगर के लिए बस लेनी थी, जो पूर्व दिशा में पाँच घंटे की दूरी पर है। पत्नी ने पूछा, 'क्या उसे जाना चाहिए?' मारिया ने कहा, 'उसे जाने दो। भगवान न करे, अगर यह पूरा शहर तबाह हो जाए, हम सब खत्म हो जाएँ, तो परिवार में कोई तो सुरक्षित रहेगा।'

पुलिस मुख्यालय से दो मील दक्षिण में, ताज होटल के अंदर, अमित पेशावे पूल के किनारे झाड़ियों में छिपा हुआ था और सोच रहा था कि वह कब तक इकत्तीस मेहमानों को शांत रख पाएगा। कुछ मेहमान शांत थे और प्रार्थना कर रहे थे। कुछ डरे हुए थे, बेचैन थे और रो रहे थे। उसे सबसे ज़्यादा चिंता भारतीय सांसदों के एक नशे में धुत समूह की थी, जो अपनी धौंस जमा रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से फ़ोन पर बात कर रहे थे और लोगों को धमका रहे थे। उनकी एक भी अनुचित हरकत हत्यारों को आकर्षित कर सकती थी। उसने ट्रांसफ़ॉर्मर रूम का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, जिससे वह सड़क पर निकलना चाहता था, लेकिन पाया कि वह अंदर से बंद था। किसी भी तरह, उसे चाबी रखने वाले को ढूंढना ही होगा। झाड़ियों के बीच से झांकते हुए, उसे सीमेंट की टूटी दीवार से मैरी वेदर रोड की रोशनी दिखाई दे रही थी। वहाँ अजीब सी खामोशी थी। 'पुलिस कहाँ है?'
एक भारतीय दंपत्ति चुपचाप सिसक रहे थे। अमित उनके पास पहुंचा। ‘महोदय, महोदया, मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?’ घबराए हुए पति ने बताया: ‘हमारा छह साल का बेटा लापता है।’ वे शामियाना में खाना खा रहे थे और हमला शुरू होने से कुछ ही पल पहले उनका बेटा शौचालय गया था। अब वे अलग हो गए थे। अमित का दिल बैठ गया। शौचालय हार्बर बार के सामने था, जिसका मतलब था कि लड़का या तो अंदर फंसा हुआ था या मर चुका था। महिला उठने की कोशिश कर रही थी। ‘मैं जाती हूँ,’ उसने कहा। अमित ने उसे वापस खींच लिया। ‘तुम नहीं जाओगी। यहाँ

इकत्तीस जिंदगियाँ हैं।’ उसने अमित के चेहरे पर थप्पड़ मारने की कोशिश की और उसने उसके हाथ पकड़ लिए। वह अपने बेटे का नाम पुकारने लगी। ‘ठीक है,’ अमित फुफकारा। ‘मैं उसे ढूंढ लूंगा।’
सांस रोककर वह पूल टेरेस पर कदम रखा और सीधे एक बंदूकधारी के रास्ते में आ गया। काले कपड़े पहने और छोटे-छोटे बालों वाला वह बंदूकधारी शामियाना में अमित से मिले बंदूकधारी से बिल्कुल अलग था, और ताज के कर्मचारी को देखकर वह भी उतना ही हैरान लग रहा था, उसकी राइफल पल भर के लिए फिसल गई। उसी क्षण अमित शामियाना की ओर दौड़ा, लेकिन बंदूकधारी संभल गया और जैसे ही अमित का पैर ज़मीन पर पड़ा, उसने तीन गोलियां दाग दीं, गोलियां पास से गुज़रती हुई 'फुट-फुट' की आवाज़ करती हुई निकल गईं। जब वह वहीं पड़ा था, बंदूकधारी ने फिर निशाना साधा। चारों ओर कांच बिखर गया।
आँखें खोलते ही उसने देखा कि राइफल के झटके से गोलियों की बौछार हुई और गोलियाँ शीशे की खिड़कियों और दरवाजों से टकराकर टूट गईं। अमित उठने की कोशिश करने लगा। लेकिन बंदूकधारी ने अपने थैले से कुछ निकाला, उसे फेंका और अमित को उसके पीछे गिरने की आवाज़ सुनाई दी। वह लुढ़का और देखा कि घास में एक हल्के हरे रंग का ग्रेनेड गिरे हुए नारियल की तरह पड़ा है। उसने अपने कान पकड़ लिए और धमाके का इंतज़ार करते हुए घूरने लगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ।
अगले पैंतालीस मिनट तक अमित हिलता-डुलता नहीं रहा, उसे लगा शायद वह मर गया है। उसने एक नली के पास पड़े ग्रेनेड को देखा और आसमान की ओर निहारता रहा, तारों की चादर को निहारता रहा, लेकिन चाँद नहीं था। 'मैं अपने माता-पिता और पूरे परिवार के लिए प्रार्थना करता हूँ,' उसने धीरे से कहा। उसने उन मौकों के बारे में सोचा जो उसने खो दिए थे - पुरानी प्रेमिकाएँ और गलतियाँ। 'मैंने एक अच्छा जीवन जिया है।' जब उसे होश आया और उसने देखा कि बंदूकधारी जा चुका है, तो वह जल्दी से उठा और तबाह हो चुकी शामियाना में घुस गया, खुद को समझाते हुए कि वह दुनिया का सबसे खुशनसीब इंसान है। सबसे पहले उसने रहमतुल्लाह को मृत पड़ा देखा। वेटर की त्वचा ठंडी, दबी हुई मांस जैसी लग रही थी।
गले में पित्त उमड़ आया, लेकिन अमित गोलियों की गड़गड़ाहट के बीच हार्बर बार के शौचालयों की ओर बढ़ता रहा। गलियारे में दो राइफलों से गोलियां चलीं, दाएं-बाएं ग्रेनेड फेंके गए। शौचालय अभी भी बहुत दूर थे, खुली लॉबी

के दूसरी ओर। उसके पीछे इकत्तीस जिंदगियां उस पर टिकी थीं। वह यह नहीं कर सकता था। खुद को नाकामयाब महसूस करते हुए, वह मुड़ा और झाड़ियों की ओर वापस जाने लगा, यह सोचते हुए कि उसे क्या कहना है, इस बार रेंगते हुए, खंभों और फर्नीचर के पीछे छिपते हुए, जब तक कि वह शांत पूल के किनारे नहीं पहुंच गया। जैसे ही वह वापस झाड़ियों में घुसा, उसने देखा कि उसके मेहमानों में से एक, एक ब्रिटिश व्यक्ति, के हाथ में गहरे घाव से बहुत खून बह रहा था। उसकी भौंहें लाल हो रही थीं, त्वचा का रंग उड़ रहा था। उसे तुरंत चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी। अमित को ट्रांसफार्मर रूम की चाबी वाले आदमी को ढूंढना था।
सबसे पहले, उसने व्याकुल माता-पिता से संपर्क करने की कोशिश की। 'महोदय, महोदया, मैंने कोशिश की है। लेकिन मेरा उनसे संपर्क नहीं हो पा रहा है। आपने कहा था कि आप ईश्वर में विश्वास करते हैं। अब आपको प्रार्थना करनी होगी कि वे किसी निर्दोष बच्चे की हत्या न करें।'

जोन 1 के पुलिस उपायुक्त विश्वास पाटिल रात 9:10 बजे प्रधानमंत्री की सुरक्षा बैठक से चुपके से निकल गए थे, उनका इरादा दो घंटे बाद वापस आने का था, जब समूह अपना सत्र पूरा करने वाला था। वे ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल से तेजी से निकलकर उस तंग पुलिस अपार्टमेंट में पहुंचे, जहां वे अपनी पत्नी और दो छोटे बच्चों के साथ रहते थे। यह अपार्टमेंट ब्राबोर्न क्रिकेट स्टेडियम के सामने, कोलाबा से कुछ मिनट की दूरी पर उत्तर-पश्चिम में स्थित था। रात 9:25 बजे, वे दाल-चावल खा रहे थे जो उनकी पत्नी पास के एक रेस्तरां से लाई थीं, तभी उनका मोबाइल बजने लगा।
यह उनके बॉस, अतिरिक्त आयुक्त (दक्षिण) का फोन था। ‘विश्वास, लियोपोल्ड्स में गोलीबारी हो रही है।’ तीन दिन पहले, पाटिल जुलाई में मिली खुफिया जानकारी के आधार पर कैफे का दौरा कर रहे थे, जिसमें इसे लश्कर के हमले का संभावित निशाना बताया गया था। उन्होंने कैफे के मालिक को अतिरिक्त सुरक्षा रखने को कहा था और बाहर जमा हुए अवैध फुटपाथ विक्रेताओं के खिलाफ नब्बे से अधिक मामले दर्ज किए थे, जिससे उन्हें वहां से हटना पड़ा ताकि किसी भी बम से होने वाले संभावित नुकसान को सीमित किया जा सके। पाटिल ने अपनी ग्लॉक पिस्टल और चालीस गोलियों का एक बंद डिब्बा उठाते हुए मन ही मन सोचा, ‘भगवान ने मुझे कोई संकेत भेजा है।’ जब तक वह नीचे पहुंचे, राज्य के

सबसे वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) का फोन आ चुका था। उन्होंने पहले के फोन को दरकिनार करते हुए आदेश दिया, ‘विश्वास, ताज होटल जाओ।’ डीजीपी के एक रिश्तेदार और महाराष्ट्र के अतिरिक्त मुख्य सचिव होटल के अंदर फंसे हुए थे।
जब पाटिल की टाटा इंडिगो अपोलो बंदर की ओर, जो एक मील दक्षिण में था, चल रही थी, तो उन्होंने दो मैगज़ीन भरीं। उन्होंने छह महीने पहले ग्लॉक पिस्टल के लिए आवेदन किया था। अब उनके पास मैगज़ीन में सत्रह गोलियां थीं, एक अतिरिक्त, और जेब में कुछ गोलियां थीं। वे शुक्रगुजार थे। उनके पद के लिए सामान्य हथियार छह गोलियों वाला रिवॉल्वर या दस गोलियों वाली पिस्टल हुआ करती थी। उनके कांस्टेबलों की सुरक्षा तो और भी कमज़ोर थी। 2003 के बम धमाकों के बाद, मुंबई पुलिस ने विशेष त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) बनाए थे, जिन्हें सेना द्वारा कमांडो रणनीति में प्रशिक्षित किया गया था। हालांकि उन्हें कथित तौर पर एके-47 और 9 मिमी पिस्टल से लैस किया गया था, पाटिल को पता चला कि तीन साल से एके-47 की एक भी गोली नहीं खरीदी गई थी और क्यूआरटी ने सितंबर 2007 के बाद से कोई फायरिंग अभ्यास नहीं किया था। शहर की सुरक्षा का अगला स्तर था, आशावादी नाम वाले स्ट्राइकिंग मोबाइल्स, लगभग पांच लोगों की टीमें, जो जंग लगी कार्बाइन और सेल्फ-लोडिंग राइफलों से लैस थीं, अक्सर बिना गोला-बारूद के। यह सर्वविदित था कि उन्हें चलाई गई हर गोली का हिसाब देना होता था। मुठभेड़ के बाद वह अक्सर उन्हें घुटनों के बल बैठकर गोलियों के खाली खोखे ढूंढते हुए देखता था। जिन कुछ लोगों को बुलेटप्रूफ जैकेट दी गई थीं, उन्होंने पाया कि वे 'महत्वपूर्ण अंगों की रक्षा नहीं करतीं', एक गोपनीय रिपोर्ट में बताया गया कि प्लेट का डिज़ाइन 'दोषपूर्ण' था। आज रात से बहुत पहले ही उन्होंने अपने वरिष्ठों को चेतावनी दी थी: 'मुंबई की युद्ध की तैयारी संदेह में है।' और आज सुबह ओबेरॉय होटल में हुई बैठक में भी उन्होंने यही बात दोहराई थी।
जैसे ही उनकी गाड़ी जगमगाते ताज होटल के अग्रभाग के पास पहुँची, उन्हें याद आया कि कैसे एक युवा छात्र के रूप में वे यहाँ से गुज़रते थे और इस बात से चिंतित रहते थे कि वे कभी भी अंदर की दुनिया का हिस्सा नहीं बन पाएंगे। आजकल उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं थी। ऊपर देखते हुए उन्होंने खिड़कियों में मेहमानों की परछाइयाँ देखीं, जो या तो हाथ हिला रहे थे या अपने फोन पर बात कर रहे थे। उन्होंने तुरंत फैसला लिया और अपने ड्राइवर को एक साइड लेन

में जाने का निर्देश दिया और ताज होटल के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुड़ियादी को फोन किया, इस उम्मीद में कि होटल की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था कारगर साबित हुई होगी।
मेरी वेदर रोड पर उतरते ही पाटिल यह देखकर दंग रह गए कि टाइम ऑफिस का प्रवेश द्वार अभी भी खुला हुआ था। चिंतित होकर वे स्विमिंग पूल की छत की ओर बढ़े, यह सोचते हुए कि ताज होटल ने और किन-किन चीज़ों में कटौती की है, क्योंकि इस प्रवेश द्वार की सुरक्षा सुनिश्चित करना उन उपायों की लंबी सूची में शामिल था जो उन्होंने होटल को सौंपे थे। वे अंदर गए, अमित पेशावे और उनके मेहमानों के समूह से कुछ ही दूरी पर, जो अभी भी दुबके हुए थे, और उनमें से किसी के कुछ कहने से पहले ही पूल के दूसरी ओर भाग गए। पाटिल ने अपने 21 वर्षीय वायरलेस ऑपरेटर से फुसफुसाकर कहा, 'सभी को सतर्क करो,' जिसने कंट्रोल रूम में राकेश मारिया को रेडियो पर सूचना दी। पाटिल ने कुड़ियादी को पैलेस की लॉबी से निकलते देखा और उसे अपने पास बुलाया। जैसे ही वे पास आए, उसके मुंह से शब्द निकले। 'आतंकवादी... लोगों को मार रहे हैं।' उनके ब्लैक सूट्स के कर्मचारियों को पूरे होटल में तैनात किया गया था, लेकिन वे निहत्थे और डरे हुए थे। पाटिल ने गुस्से से पूछा, 'बंदूकधारी अंदर कैसे घुस आए?' ‘टॉवर लॉबी और नॉर्थकोट प्रवेश द्वार, महोदय।’ पिछली बार वे अक्टूबर में सुरक्षा बैठक में मिले थे।
कुडियादी ने बताया कि दो हफ्ते पहले टावर की लॉबी के बाहर तैनात सशस्त्र पुलिस को हटा दिया गया था। ‘उन्होंने ड्यूटी के दौरान खाना मांगा था और होटल को इस पर गुस्सा आ गया था।’ आश्वासन दिए जाने के बावजूद नॉर्थकोट के दरवाज़े पर कभी सुरक्षा नहीं लगाई गई थी। पाटिल के छुट्टी पर जाते ही सुरक्षा के कई तयशुदा उपाय हटा दिए गए थे, होटल का तर्क था कि युद्ध जैसी स्थिति बनाए रखना संभव नहीं है। गुस्से में पाटिल ने पूछा: ‘अब बंदूकधारी कहां हैं?’ कुडियादी ने कहा, ‘वे पैलेस की ऊपरी मंज़िलों पर कहीं हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें ठीक-ठीक पता है कि वे कहां जा रहे हैं।’
‘मुझे ले चलो,’ पाटिल ने कहा और कुडियादी उन्हें दक्षिणी विंग के निचले हिस्से में ले गए और एक सीढ़ी से पहली मंजिल पर चढ़ गए। उन्होंने सावधानी से एक दरवाजा खोला और विंग के अंदर देखा। सब कुछ शांत लग रहा था। नीचे झुककर, पिस्तौल ताने हुए, पाटिल ने रोने की आवाज सुनी। विंग में रेंगते हुए, ग्रैंड सीढ़ी की ओर बाईं ओर मुड़ते हुए, उन्होंने बॉलरूम के बाहर फर्श

पर दो घायल महिलाओं को तड़पते देखा, जिनके हाथ गोलियों से छलनी हो गए थे। भयभीत होकर, उन्होंने कुडियादी के दो ब्लैक सूट पहने पुलिसकर्मियों को उन्हें वापस लाने का इशारा किया, जबकि रेडियो ऑपरेटर ने चिकित्सा सहायता के लिए फोन किया। पाटिल और कुडियादी वापस लौटे और दूसरी मंजिल पर जाने के लिए उसी सीढ़ी का इस्तेमाल किया। जब उन्होंने बाहर झाँका, तो वह भी सुनसान लग रही थी।
भव्य सीढ़ियों के पास, वे एक खंभे के चारों ओर से आगे बढ़े और उन्होंने देखा कि असॉल्ट राइफलों से लैस कुछ लोग तीसरी मंजिल पर चढ़ रहे हैं। पाटिल ने तीन, शायद चार लोगों को गिना। उन्होंने सोचा कि कुछ सटीक निशाने लगाकर अब इस लड़ाई को खत्म किया जा सकता है, क्योंकि उनके बीच की दूरी लगभग तीस फीट थी। उन्होंने अपनी ग्लॉक पिस्टल से निशाना साधा और कुछ गोलियां चलाईं। बंदूकधारी झुके, फिर घूमकर उनकी ओर गोलियों की बौछार की, जिससे संगमरमर पर निशान पड़ गए। उनके पास पर्याप्त हथियार नहीं थे। ये कोई नौसिखिए नहीं थे।

कुछ मीटर आगे, कमरा नंबर 253 के अंदर, अमित और वर्षा थडानी पार्टी के कपड़ों में बिस्तर पर एक-दूसरे को पकड़े बैठे गोलियों की आवाज़ सुन रहे थे। उन्हें क्रिस्टल रूम में अपनी शादी का जश्न मनाना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय वे इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि बंकर बनाया जाए या भाग निकला जाए। कुछ मिनट पहले, अमित ने दरवाज़ा खोला था और 'उनसे मुकाबला करने' की धमकी दे रहा था, और उसकी नई, गुड़िया जैसी पत्नी वर्षा उसे वापस खींच लाई थी। उसने वर्षा से कहा, 'तेज़ गंध आ रही है।' वर्षा जानती थी कि यह बारूद की गंध है और रोने लगी। वह अपने दोस्तों और परिवार के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थी, जो शायद नीचे क्रिस्टल रूम और लॉबी में थे, जिनमें उसका भाई भी शामिल था। क्या वे घायल हो गए थे, फंस गए थे या इससे भी बुरा कुछ हुआ था? अमित की माँ कहाँ थी? उसे आधे घंटे पहले शादी के गहने लाने थे, लेकिन वह अपना मोबाइल नहीं उठा रही थी।
उसके नए पति को देखकर लगता था कि वह भारी-भरकम शरीर के साथ शहर में इधर-उधर घूमता है; लेकिन अमित ऐसा बिल्कुल नहीं था। दोस्त उसे योजनाबद्ध और चतुर मानते थे। वह शांत स्वभाव का भी था। वह उठा, लाइट बंद की और दोनों के फोन साइलेंट पर रख दिए। वर्षा बाथरूम में गई और चुपचाप रिश्तेदारों और

दोस्तों को फोन करने लगी, जबकि वह खिड़की के छेद से बाहर देखते हुए अपने विकल्पों पर विचार कर रहा था। 'देखो, इतना परेशान मत हो, ये तो बस एक छोटी सी बात है,' उसने धीरे से कहा। 'एक बार ये सब खत्म हो जाए, तो हमारी पार्टी जारी रहेगी।' तभी उसका फोन बज उठा। उसके भाई का फोन था, जो उन्हें जाने के लिए कह रहा था। 'अब बहुत देर हो चुकी है,' उसने कहा। अमित वापस खिड़की के छेद के पास गया और चौंक गया: 'मुझे लगता है मैंने अभी-अभी एक बंदूकधारी को गुजरते देखा।' वह दौड़कर खिड़की के पास गया और नीचे देखने लगा कि क्या पुलिस आ गई है। उसकी नज़र सिर्फ पानी में तैरती एक जगमगाती नौका पर पड़ी। 'नाव किराए पर ले लेनी चाहिए थी,' उसने कहा।

एलिसिया नाम की चमकदार सफेद नौका पर एडमिस्टन कंपनी के लाल रंग के बैनर लगे हुए थे। नौका दलाल निक और उनका बेटा रात 9:48 बजे मेहमानों का स्वागत कर रहे थे, तभी अचानक मोबाइल बजने लगे। एक मेहमान ने अपना फोन स्पीकर पर कर दिया था और सब लोग गोलियों की आवाज सुनने के लिए उसके चारों ओर जमा हो गए। 'मेरा ड्राइवर है, ताज होटल के बाहर गाड़ी खड़ी है।' ड्राइवर की आवाज सुनाई दी: 'सर, गोलीबारी हो रही है। क्या मैं गाड़ी हटा सकता हूँ?' निक ने सोचा कि ब्रिटेन में तो ड्राइवर भाग जाता, फोन नहीं करता। दिल्ली के मशहूर सोशलाइट रतन कपूर पास आए। उन्होंने कहा, 'देखिए, मुंबई में तो ऐसा ही होता है। यहाँ का माहौल बहुत तनावपूर्ण है।'
आश्वस्त होकर निक रात के खाने की व्यवस्था के बारे में कर्मचारियों से बात करने के लिए डेक के नीचे चला गया। मेहमानों ने शैंपेन का एक और गिलास लिया, तभी पानी पर एक धमाके की गूंज सुनाई दी और नौका पर उत्साह की लहर दौड़ गई। एक आदमी ने मज़ाक में कहा, 'हमें सबसे अच्छी सीटें मिली हैं,' क्योंकि वेटर कच्चे रेशम के नैपकिन, चांदी के कटलरी और बोहेमियन क्रिस्टल से सजी एक विशाल सागौन की डाइनिंग टेबल को अंतिम रूप दे रहे थे। निक एंड्रियास के बारे में चिंतित था, जिसे वह जोखिम लेने वाला जानता था, और उसने कप्तान से उसे फोन करने के लिए कहा: 'उसे बताओ कि हम टेंडर भेज रहे हैं' - तभी शहर भर में एक और धमाका हुआ और उसने धमाके की कंपन अपने सीने में महसूस की। मेहमान बिना विचलित हुए रात के खाने के लिए बैठ गए और फोन और मैसेज पर बात करने लगे। एक आदमी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'ताज होटल के अंदर लड़ाई हो रही है।' निक ने पूछा, 'क्या यह गंभीर बात है?' वह किनारे की ओर देखने लगा। उसे

यह चहल-पहल वाला शहर पसंद था, लेकिन सुरक्षा के प्रति इसकी लापरवाही भरी सोच से चिढ़ भी थी। कपूर ने कहा, 'चिंता मत करो। याट पर सभी लोग सुरक्षित और शानदार महसूस कर रहे हैं, खूब शैम्पेन और फ्रेंच खाना मिल रहा है। आप मेजबान हैं। यह एक महत्वपूर्ण पार्टी है।' कप्तान भौंहें चढ़ाते हुए पास आया। 'श्री लिवेरास का कहना है कि वह ठीक हैं और आपको बता दें, "रात के खाने का आनंद लें।" वह बाद में लौटेंगे।'
निक कपूर को एक तरफ ले गया। कपूर ने कमजोर आवाज में कहा, 'शायद हम बच जाएं,' तभी किसी ने फोन करके पूछा कि क्या शुक्रवार की पार्टी अभी भी होगी। 'हां, बिल्कुल। यह सब शांत हो जाएगा और फिर तुम यहां मेरे साथ नाच रहे होगे, एक-दूसरे से सटकर।' निक मुख्य हॉल में गया और स्काई न्यूज़ ढूंढने की कोशिश करने लगा। जब क्रू सेटिंग्स ठीक कर रहा था, उसने लंदन से आए संदेश पढ़े। 'यह एक आतंकी हमला है।' और एक और संदेश था: 'वे पानी के रास्ते शहर में घुस आए हैं।' उसने सोचा: हे भगवान! हम तो बिल्कुल आसान निशाना हैं।

रात 10:50 बजे तक, जोन 1 के डीसीपी टावर की लॉबी में वापस आ गए थे और उनका वायरलेस ऑपरेटर रेडियो पर संदेश दे रहा था: ‘जोन 1 साहब ताज होटल में हैं। उन्हें मदद चाहिए।’ ग्रैंड स्टेयरकेस पर गोलीबारी के बाद, वे बंदूकधारियों से बच निकले थे और पाटिल को विशाल, अपरिचित होटल की तलाशी के लिए अतिरिक्त बल की आवश्यकता थी। उन्होंने राज्य रिजर्व पुलिस बल की वैन के पास निष्क्रिय खड़े दो युवा कांस्टेबलों को पकड़ा। ‘कितनी गोलियां चलाईं?’ उन्होंने चिल्लाकर पूछा। उनके पास दस-दस गोलियां थीं। ‘काफी नहीं,’ उन्होंने सिर हिलाते हुए मन ही मन कहा।
गोलियों की बौछार से बरामदे की छत फट गई। बंदूक की नोक से निकली चिंगारी से पाटिल को यकीन हो गया कि हमलावर तीसरी मंजिल के किसी गेस्ट रूम से गोली चला रहे थे। पाटिल ने होटल के जनरल मैनेजर करमबीर कांग को देखा, जो अभी-अभी लैंड्स एंड से लौटे थे। ताज होटल की सुरक्षा संबंधी सलाह-मशविरे के दौरान दोनों एक-दूसरे को जानते थे और पाटिल का मन किया कि सड़क पर ही उनसे बहस कर दें, लेकिन अभी समय नहीं था। करमबीर का चेहरा पीला पड़ गया था। 'मेरी पत्नी और बेटे छठी मंजिल पर हैं,' उन्होंने पास आते हुए कहा, उनकी आंखें लाल थीं और उनका साफ-सुथरा सूट अस्त-व्यस्त था। पाटिल क्या कहते? 'सर, हमें होटल के प्लान चाहिए।' करमबीर ने कहा कि वह ढूंढेंगे। उन्होंने सीईओ को फोन किया,

जो अपने ऑफिस में फंसे हुए थे, और शेफ ओबेरॉय को भी फोन किया। फोन के बीच में वह छठी मंजिल के दक्षिणी कोने की ओर देखते रहे, जहां उनका परिवार उनका इंतजार कर रहा था। फिर वह पाटिल के पास लौटे और बोले: 'होटल के ब्लूप्रिंट किसी ऐसे व्यक्ति के पास हैं जो मिल नहीं रहा है।' हम अभी भी तलाश कर रहे हैं।’ डीसीपी चिढ़ गए और बोले, ‘हम तब तक खाली करने के बारे में नहीं सोच सकते जब तक हमें बंदूकधारी नहीं मिल जाते, और इसके लिए हमें यह जानना होगा कि हमें कहाँ जाना है।’ करमबीर ने कहा कि वह मालिक रतन टाटा से पूछेंगे। पानी की बोतल पकड़े करमबीर सोच रहे थे कि उनके परिवार को तो यहाँ होना ही नहीं चाहिए था। कुछ महीने पहले उन्होंने एक निजी अपार्टमेंट में शिफ्ट होने का फैसला किया था और नीति होटल से बाहर निकलने की खुशी में इंटीरियर डेकोरेशन की मैगज़ीनें जमा कर चुकी थीं। उन्हें महीने की शुरुआत में ही वहाँ पहुँच जाना चाहिए था, लेकिन ठेकेदार का काम अभी तक पूरा नहीं हुआ था। करमबीर देरी को कोस रहे थे, लेकिन उन्होंने अपने सबसे बुरे विचारों को दूर भगाने की कोशिश की। उन्होंने खुद से कहा: 'तुम होटल का चेहरा हो। तुम टाटा परिवार के प्रतिनिधि हो।' हर कोई उन्हें देख रहा था और उन्हें जो दिख रहा था, उससे उम्मीद की किरण जगनी चाहिए थी।
लॉबी की सीढ़ियों पर पाटिल की नज़र अपने बैचमेट राजवर्धन पर पड़ी। वह ठीक वैसा ही दृढ़ निश्चयी व्यक्ति था जिसकी पाटिल को ज़रूरत थी और राजवर्धन को क्षतिग्रस्त होटल में प्रवेश करने के लिए किसी भी प्रकार के प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं पड़ी। अब शांत हो चुकी लॉबी में, जहाँ शव बिखरे पड़े थे, चुपके से प्रवेश करते हुए, उसने अपना संक्षिप्त आकलन किया। 'अचानक चोटें, कई सिर में गोलियाँ, भारी मात्रा में गोला-बारूद।' उसे पूरा यकीन था कि उसका पहले का अनुमान सही था: पाकिस्तानी फिदायीन। उसने योजना के पहले चरण तैयार किए: जब बंदूकधारी कहीं और हों, तब भूतल को खाली कराओ, शामियाना के पास एक अस्थायी कमान चौकी स्थापित करो, भागने से रोकने के लिए सभी निकास द्वारों को बंद करके उनकी सुरक्षा करो और लिफ्टों को अवरुद्ध करो। उसने एक सर्विस रिवॉल्वर और नौ गोलियाँ अपने कब्जे में ले लीं। 'जब तुम तैयार हो जाओ तो मुझे फोन कर देना,' उसने पाटिल को चिल्लाकर कहा और दोनों हाथों में हथियार थामे गलियारे में गायब हो गया।

महल और टावर के बीच स्थित पहली मंजिल की रसोई में, शेफ हेमंत ओबेरॉय की एक योजना थी। उनके रेस्तरां अचानक से सबसे आगे आ गए थे, मेहमान और भोजन करने वाले इधर-उधर बिखर गए थे, और उनमें से कई लोग सेवा क्षेत्रों की समानांतर दुनिया में आ गए थे, या खुद ही वहाँ पहुँच गए थे। अमेरिकी हेज फंड व्यवसायी माइक पोलैक, उनकी पत्नी अंजली और उनके दोस्त महल की पहली मंजिल पर स्थित शेफ के वसाबी स्टोर में बंद हो गए थे, और एंड्रियास लिवेरास भूतल पर, मसाला क्राफ्ट के तैयारी कक्ष में एक उल्टी हांडी पर दाल, पालक और पनीर खा रहे थे, और चुटकुले सुनाकर सबका मनोबल बनाए रख रहे थे।
शेफ ओबेरॉय को एहसास हुआ कि उनकी किचन टीम, फ्रंट ऑफ हाउस के किसी भी कर्मचारी की नज़र में आए बिना, होटल की जटिल लिफ्टों, सीढ़ियों और गलियारों का इस्तेमाल करके मेहमानों को एक केंद्रीय और सुरक्षित स्थान पर ले जा सकती है। उन्होंने होटल के बाहर टहल रहे करमबीर कांग को फोन किया और उनसे इस बारे में जानकारी ली। उन्होंने तर्क दिया कि होटल का केवल आमंत्रण पर आधारित चैम्बर्स क्लब इसके लिए आदर्श है। कमरों के एक सुइट, एक बार और एक पुस्तकालय से युक्त यह क्लब पहली मंजिल पर क्रिस्टल रूम और रसोई के बीच एक बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है, जहाँ से गेटवे ऑफ इंडिया का नजारा दिखता है। होटल के ब्रोशर में इसका उल्लेख नहीं था और केवल ताज होटल के नियमित आगंतुकों ने ही शायद इसे देखा होगा, शायद टावर की लिफ्ट के बटनों के पास लगी छोटी सी पट्टिका पर एक नज़र डालते हुए जब वे सूक की ओर जा रहे थे, हालाँकि इस स्टॉप तक केवल कर्मचारी ही पहुँच सकते थे, या क्लब की चाबी का उपयोग करके। करमबीर सहमत हो गए। चैम्बर्स एक अदृश्य शरणस्थल था। उन्होंने शेफ ओबेरॉय को सुझाव दिया कि वे तुरंत शुरू करें, सबसे पहले उन लोगों से शुरुआत करें जो चैम्बर्स के सबसे करीब थे, यानी क्रिस्टल रूम में शादी के रिसेप्शन के मेहमान।
रात 10.30 बजे के कुछ ही देर बाद, शेफ और वेटर मेहमानों के एक समूह को सर्विस कॉरिडोर से होते हुए क्लब के लॉबी में ले गए, जिसे पत्रकार भीष्म ने तुरंत पहचान लिया। वह रतन टाटा द्वारा आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए पहले भी यहाँ आ चुके थे। हिम्मत जुटाकर उन्होंने स्टाफ से बार खोलने का अनुरोध किया। खाने-पीने के बारे में लिखने वाले भीष्म खुद को पारखी समझते थे। उन्होंने मज़ाक में कहा, 'देखो, तुम्हारे पास सबसे बढ़िया है, उसे बाहर निकालो।' लेकिन चैंबर्स के मैनेजर ने विनम्रता से मना कर दिया। भीष्म ने

उदास होकर अपने दोस्त को संदेश भेजा: 'देश में सिंगल माल्ट का सबसे बेहतरीन कलेक्शन है, लेकिन पीने के लिए एक बूँद भी नहीं।'
मेहमानों का एक और समूह अंदर आया, जिनमें गुस्से में भरे एंड्रियास लिवेरास भी थे, उनके साथ रमेश और स्पा की लड़कियां थीं। उन्होंने देखा कि एक छोटे कमरे में एक समूह व्यापारिक बैठक कर रहा था। रमेश ने अपने बॉस से फुसफुसाते हुए कहा, 'देखो, सब ऐसे व्यवहार कर रहे हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं है।' यह ध्यान में रखते हुए कि कई मेहमानों ने खाना नहीं खाया था, रसोई से पुदीने की चटनी वाले सैंडविच की ट्रे निकाली गईं। एंड्रियास ने रमेश से कुछ अतिरिक्त सैंडविच लाने को कहा। उन्होंने एक बड़े सोफे पर बैठते हुए कहा, 'इन्हें छुपा लो, कहीं खाना खत्म न हो जाए।' वे लंदन में अपने कार्यालय और परिवार के साथ-साथ एलिसिया से आ रही फोन कॉल का जवाब दे रहे थे। उन्होंने निक को आश्वस्त करते हुए कहा, 'सब ठीक है। सेना के आने तक हम यहीं बैठे रहेंगे।' उन्होंने अपने बेटे डियोन को फोन किया और कहा: 'सब ठीक हो जाएगा, चिंता मत करो।'
माहौल तब और भी गंभीर हो गया जब किसी ने टीवी चालू किया और तथ्यों के साथ-साथ षड्यंत्र सिद्धांतों को भी ज़ोर-ज़ोर से दिखाया जाने लगा: साठ से ज़्यादा आतंकवादी मुंबई की सड़कों पर घूम रहे थे, पुलिस बेबस थी और सैकड़ों लोग मारे जा चुके थे। सीएसटी स्टेशन के खून से लथपथ कॉनकोर्स के फुटेज ने सारी बातचीत रोक दी। भीष्म अपनी भयभीत माँ के पास गया और उसका फोन छीन लिया। एक भी असंवेदनशील संदेश उसे और भी ज़्यादा परेशान कर सकता था। माइक और अंजली पोलैक समेत और भी मेहमान आ गए। अंजली बहुत घबराई हुई थी। आमतौर पर शांत रहने वाला फाइनेंसर भी परेशान दिख रहा था। कुछ मिनट पहले ही, बंदूकधारियों में से एक ने वासाबी में उनके छिपने की जगह में घुसने की कोशिश की थी और बंद सर्विस गेट के बाहर मंडरा रहा था। एक शेफ ने हिम्मत दिखाते हुए बंदूकधारियों को यह कहकर दूसरी तरफ मोड़ दिया कि कमरा खाली है और बाल-बाल अपनी जान बचाई। अब अंजली के मन में सिर्फ अपने दो छोटे बेटों का ख्याल था, जो शहर के दूसरे हिस्से में उसके माता-पिता के साथ रह रहे थे। 'हम मर सकते थे,' वह रो पड़ी।
जैसे ही चैम्बर्स भर गया, भीष्म और उनकी माँ गलियारे से होते हुए छोटे वीआईपी सुइट्स में से एक, लैवेंडर रूम की ओर बढ़े, तभी एक धमाके से पूरा इलाका हिल गया। क्या उन्हें पहले ही खोज लिया गया था? बत्तियाँ और टीवी

बंद हो गए। अंधेरे में बैठे भीष्म ने एक दोस्त को संदेश भेजा: 'धमाका सुना। क्या हो रहा है?' दोस्त ने जवाब दिया कि पैलेस की सबसे ऊपरी मंजिल आग की लपटों में घिरी हुई है। भीष्म घबरा गए: 'क्या यह गंभीर है? क्या सेना होटल के अंदर है?' उन्होंने अपनी माँ की ओर देखा, जो प्रार्थना कर रही थीं। 'कितनी शानदार शादी थी!' अब चैम्बर्स में 250 लोग बंद थे, और होटल के अंदर केवल छह पुलिसकर्मी थे।

पूल के बाहर टैरेस पर अमित पेशावे की बेचैनी पल-पल बढ़ती जा रही थी। रात के 11:30 बज चुके थे और दर्जनों बार फोन करने के बावजूद किसी को भी ट्रांसफार्मर रूम की चाबियों का पता नहीं चल पा रहा था। खून से लथपथ ब्रिटिश मेहमान की हालत बिगड़ती जा रही थी और उसकी कमीज़ खून से भीगी हुई थी।
अमित के फोन की घंटी बजी। यह उसके पुराने रूममेट हेमंत तालीम का फोन था, जो गोल्डन ड्रैगन में प्रशिक्षु शेफ था। ‘अमित, क्या हालचाल है?’ उसने शांत स्वर में पूछा, अपने दोस्त के बारे में सतर्क होते हुए। ‘देखो, हम सब अभी चैंबर्स में हैं। हमें तुम्हारी सही लोकेशन जाननी है।’ अमित ने अपनी परेशानी बताई। उसके दोस्त ने सुझाव दिया, ‘शेफ ओबेरॉय को फोन करो।’ अमित ने तीसरी कोशिश में ओबेरॉय से बात की: ‘शेफ, मेरे पास एक ब्रिटिश आदमी है जो मरने वाला है, नशे में धुत सांसद हैं और एक लड़का लापता है।’ ओबेरॉय ने उसे शांत करने की कोशिश की और कहा कि वह मेंटेनेंस वालों से चाबी मंगवा लेंगे। तभी अमित की नजर कोने में पड़ी कि एक सांसद लड़खड़ाते हुए बाहर आया और एक शेर की मूर्ति पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। ‘मुझे जाना होगा,’ वह धीमी आवाज में बोला।
तीस मिनट बाद, उसे खोखली सी दस्तक सुनाई दी। ट्रांसफॉर्मर रूम के दरवाजे के दूसरी तरफ कोई था। मेहमान घबराकर इधर-उधर भागने लगे। फिर दरवाजे ज़ोर से खुल गए और सब आगे बढ़ गए। अमित ने देखा कि एक आदमी ट्रांसफॉर्मर रूम की छत से नीचे कूद रहा है, एक यूरोपीय मेहमान, जिसने लाल बो टाई और डिनर सूट पहना हुआ था। वह शायद इतने समय से वहीं छिपा हुआ था और उसने एक शब्द भी नहीं कहा था। 'जेम्स बॉन्ड!' अमित ने हैरानी से खुद से कहा, उस आदमी को भागते हुए देखकर। अब उसे घायल ब्रिटिश मेहमान को अस्पताल ले जाना था। उसने

उस आदमी का भार अपने कंधों पर उठाया और लड़खड़ाते हुए मैरी वेदर रोड पर आ गया।

सौक में, टावर की सबसे ऊपरी मंजिल पर, बॉब निकोल्स और उनके दक्षिण अफ्रीकी कमांडो सुरक्षा व्यवस्था में जुटे हुए थे। रेस्टोरेंट में पचास से अधिक लोग मौजूद थे, जिनमें ताज ग्रुप के सीईओ की पत्नी भी शामिल थीं, जो अपने पति से मिल रही जानकारी साझा कर रही थीं, जो अठारहवीं मंजिल नीचे अपने कार्यालय में फंसे हुए थे। उन्होंने सबको आश्वस्त करते हुए कहा, 'वह कह रहे हैं कि हम सबसे सुरक्षित जगह पर हैं।' बॉब को मुंबई में जन्मे एक कारोबारी सहयोगी से भी जानकारी मिल रही थी, जो जोहान्सबर्ग में टीवी पर घटनाक्रम देख रहे थे, बॉब की पत्नी मेलानी उनके बगल में बैठी थीं। पहले संदेश में कहा गया, 'पैलेस के चारों ओर गोलीबारी हो रही है, लेकिन टावर अछूता लग रहा है। पूरा शहर हमले की चपेट में है। यहीं रहें।'
कमरे के दूसरी ओर, अमेरिकी मरीन कैप्टन रवि और उसका भाई अपने बटुए खंगाल रहे थे, जिनमें से वे अमेरिकी डॉलर और ड्राइविंग लाइसेंस निकाल रहे थे। उन्हें हर वो चीज़ मिटानी थी जिससे उनकी पहचान अमेरिकी के तौर पर होती थी या जो रवि को अमेरिकी सेना से जोड़ती थी। उसने अपना अमेरिकी क्रेडिट कार्ड समेत कुछ ज़रूरी सामान एक मोज़े में रख लिया। उसने सैन डिएगो में अपनी प्रेमिका को फ़ोन करने के बारे में सोचा, लेकिन फिर मना कर दिया। जब उसकी बहन ने फ़ोन किया, तो उसने बताया कि वह घटनास्थल के आस-पास कहीं नहीं है। भला वो क्या कर सकती थी? अब से वह अपने भारतीय परिवार से भी दूर रहेगा, इस डर से कि अगर पकड़ा गया तो उन्हें भी संक्रमित कर देगा।
सैन डिएगो से आए रवि और उसके भाई ने योजना बनाई थी कि अगर उन्हें अलग कर दिया गया तो वे नकली स्पैनिश लहजे में बात करेंगे। उसने धीरे से कहा, 'मैं दुआ करता हूँ कि हम कभी उस स्थिति तक न पहुँचें।' लेकिन कुछ चीजें ऐसी थीं जिन्हें रवि बदल नहीं सकता था, खासकर यह तथ्य कि अमेरिकी मरीन में बिताए इतने साल किसी व्यक्ति पर असर डालते हैं। अब उसकी गर्दन उसके सिर जितनी चौड़ी हो गई थी, जिसे छोटे-छोटे बालों में मुंडवाकर एक खास तरह से ट्रिम किया गया था। उसके चलने-फिरने का हर तरीका, और खासकर उसके झुके हुए कंधे और दुबला-पतला शरीर, एक सैनिक की याद दिलाता था।

रवि दक्षिण अफ़्रीकी लोगों की मेज़ की ओर बढ़ा। उसने अंदाज़ा लगाया कि चौड़े जबड़े और छोटे बालों वाले ये लोग एक ही कबीले के हैं। उसने बॉब से कहा, अपने बारे में कुछ भी बताए बिना, “देखो, अगर मैं मदद कर सकता हूँ तो मैं मदद करना चाहूँगा। मुझे इस तरह की स्थिति का कुछ अनुभव है।” उसने और कोई जानकारी नहीं दी और दक्षिण अफ़्रीकी लोगों ने भी नहीं पूछा। बॉब ने उसे काम पर लगा दिया और एक पूर्व कमांडो के साथ रेकी पर भेज दिया। उन्हें सूक से ज़्यादा सुरक्षित जगह ढूंढनी थी, जहाँ चारों ओर खिड़कियाँ थीं। अगर लिफ़्ट लॉबी में बम फट जाता, तो उड़ते हुए शीशे से सभी के टुकड़े-टुकड़े हो जाते। रसोई से गुज़रते हुए, रवि को सबसे ऊपरी मंज़िल के पिछले हिस्से में एक सम्मेलन कक्ष मिला, जिसे मिलन कक्ष कहा जाता था। उसने दरवाज़ा खोला और उसे आश्चर्य हुआ कि वहाँ सौ कोरियाई लोग चुपचाप बैठे थे। उसने उनसे पूछताछ करने की कोशिश की और समझाया कि उन सभी को एक साथ रहने की ज़रूरत है, लेकिन वे बहुत कम अंग्रेज़ी बोलते थे। वे बुरी तरह डरे हुए थे और उन्हें अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था। रवि बुरी खबर लेकर बॉब के पास वापस भागा। कोरियाई प्रतिनिधिमंडल में सदस्यों की संख्या बढ़कर 150 से अधिक हो गई थी।
रवि को अब सौक में रुकने का कोई मतलब नहीं दिख रहा था। 'चलो कहीं और चलते हैं।' मिलने की जगह तय करना कहीं ज़्यादा आसान था। जैसे ही सब लोग अंदर आ गए, बॉब ने कॉन्फ्रेंस पोडियम से माइक उठाया और भीड़ को संबोधित करना शुरू कर दिया। यहाँ मौजूद हर किसी की संकट को लेकर अलग-अलग राय थी। शहर के लोग इसे उन तरीकों से देख रहे थे जिनकी बॉब कल्पना भी नहीं कर सकता था। उन्होंने सांप्रदायिक दंगे और सिलसिलेवार बम धमाके देखे थे, कोयला व्यापारियों को मुस्लिम सरगना बनते देखा था, जिन्होंने अपराध गिरोहों का एक ऐसा जाल बुन दिया था जो शहर को बंधक बनाए हुए था और मारिया जैसे खाकी वर्दीधारी बंदूकधारियों को युद्ध में भेज रहा था। केवल मुंबई में ही आपराधिक दुनिया में असमानता एक गंभीर राजनीतिक मुद्दा बन सकती थी, जहाँ हिंदू कट्टरपंथी मुस्लिम सरगनाओं की शक्ति को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहे थे, अपने ही भगवा रंग के सरगना, एक हिंदू डॉन, का साथ देकर, जो मिल मज़दूरों की झुग्गी बस्ती में अपने अड्डे से काम करता था। अगर गला काटे जाने वाला था, तो सात द्वीपों के इस शहर में हर धर्म के सभी अपराधियों के लिए समान अवसर होने चाहिए थे।

मरीन कप्तान को लगा कि बॉब बहुत ही सधे हुए कदमों वाला है। उसके सरल स्वभाव में कुछ ऐसा था जो सबको आकर्षित करता था, भले ही उसे मोर्चे पर लड़ने का कोई अनुभव न हो। उसने कहा, 'फोन पर ज़ोर से बात मत करो। बाहर के लोगों को यह मत बताओ कि हम कहाँ हैं। ज़मीन के पास रहो। इधर-उधर मत घूमो। झूमर के नीचे मत बैठो। प्रेस से बात मत करो।' उसने एक कागज़ बाँटा और सबको नाम और पते लिखने को कहा। उसने यह नहीं कहा कि यह 'मृतकों की सूची' है।
अब उन्हें एक किला बनाने की ज़रूरत थी। बॉब के कमांडो में से एक लिफ्ट के ऊपर बनी नकली छत के अंदर चढ़ गया, ताकि जो भी अंदर आए उस पर हमला कर सके। रवि ने दरवाजों के बीच कुर्सियाँ फंसाकर लिफ्टों को निष्क्रिय कर दिया और फिर तार से रेस्तरां का प्रवेश द्वार बंद कर दिया। अंदर, उन्होंने बाहर की ओर खुलने वाले दो आग बुझाने वाले निकास द्वारों को अवरुद्ध करने के लिए बैरिकेड बनाना शुरू कर दिया, मेजों और पोडियम के हिस्सों को ढेर कर दिया और दोनों ओर कुर्सियाँ रख दीं, जिनसे वे सुरंग बनाकर अंदर आने वाले किसी भी बंदूकधारी को पीटने की योजना बना रहे थे। रवि ने चुपके से कुछ वेटरों को भी इन निकास द्वारों के पास बैठने के लिए भर्ती कर लिया, ताकि वे 'कैनी' की तरह काम करें। जहाँ तक उसकी बात थी, यह मामला इतनी जल्दी खत्म होने वाला नहीं था। वे एक लंबे इंतजार के लिए तैयार थे।
होटल में गूंजते धमाके की आवाज उन सभी ने सुनी। रवि जानता था कि यह धमाके की आवाज ग्रेनेड की आवाज से कहीं ज्यादा तेज थी। बॉब ने पहली बार चिंता जताते हुए कहा, "मुझे धुआं दिख रहा है," और टावर के नीचे साफ दिखाई दे रही पैलेस की छठी मंजिल पर नीचे की ओर देखा। उसे छत से आग की लपटें निकलती दिख रही थीं। उसने मन ही मन चिंता जताई, "अगर आग टावर को नरक में बदल दे तो हम कैसे बचेंगे?"

महल की सबसे ऊपरी मंजिल पर, टावर के ठीक विपरीत छोर पर, सबीना सैकिया ने भी धमाके की आवाज सुनी। भयभीत होकर उसने अपनी सहेली अंबरीन खान को फोन किया और पूछा, 'मुझे क्या करना चाहिए?' अंबरीन ने उसे दिलासा देते हुए कहा, 'देखो, मैं आ रही हूँ। अभी ड्यूटी मैनेजर को फोन करो।'
सबीना ने सुझाव दिया, 'मैं करमबीर कांग को फोन करती हूँ।' अंबरीन ने मना कर दिया। उसने खबरों में देखा था कि उसका परिवार भी फंसा हुआ है। 'वह व्यस्त होगा। ड्यूटी मैनेजर को फोन करो।'

सबीना ने कुछ मिनट बाद दोबारा फोन किया। 'अंबरीन, मैं डरी हुई हूँ। मेरे दरवाजे के बाहर चीखने-चिल्लाने और कदमों की आहट सुनाई दे रही है।' ‘बाहर झांक कर देखो। ध्यान रखो कि वे तुम्हें देख न लें।’
‘ये बंदूकधारी आदमी हैं।’ उसकी आवाज कांप रही थी।
‘कितने?’ अंबरीन ने उसका ध्यान विवरण पर केंद्रित किया।
‘तीन। वे युवा हैं और उनके पास बैग भी हैं।’
अंबरीन भयभीत हो गई। 'तुम्हें छिपना होगा।'
कुछ मिनट बाद सबीना ने दिल्ली में अपने भाई निखिल को फोन किया। ‘एक आदमी दरवाजा खटखटा रहा है और “हाउसकीपिंग” कह रहा है। क्या मुझे दरवाजा खोलना चाहिए?’ ‘नहीं!’ उसने फोन काट दिया और फिर वापस फोन किया: ‘वह फिर से दरवाजा खटखटा रहा है, इस बार “सिक्योरिटी” कह रहा है।’ ‘दरवाजा मत खोलो!’
दस मिनट बाद उसने फिर फोन किया। ‘मैं बेडरूम में हूँ और अंदर धुआँ भर रहा है। मुझे क्या करना चाहिए?’
'दरवाजे के चारों ओर गीले तौलिए रख दो,' निखिल ने आग्रह किया।
सबीना बड़बड़ाने लगी: 'मुझे शांतनु से बात करनी है। मुझे बच्चों से बात करनी है।' वहाँ उसकी बड़ी बहनें थीं। और वहाँ उसकी माँ थी। 'मुझे उनसे बात करनी है!' वे सब दिल्ली में अपनी भतीजी की शादी से पहले की पार्टी में एक साथ थीं, टीवी पर ताज महल देख रही थीं, जो हवाई जहाज से तीन घंटे से भी ज़्यादा दूर था।
उसने फिर से अंबरीन को फोन किया। ‘बाहर कोई पंजाबी में बात कर रहा है। वो किसी धातु की चीज से दरवाजे पर दस्तक दे रहा है।’ कई धीमी-धीमी आवाजें आईं। ‘अंबरीन!’

संकटग्रस्त होटल से एक मील दूर, कफ परेड, कोलाबा और नरिमन प्वाइंट की संकरी गलियों में, जहां पुलिस चाबाद हाउस और ट्राइडेंट-ओबेरॉय में बंदूकधारियों के साथ गतिरोध का सामना कर रही थी, और सहायता के लिए गुहार लगा रहे लोगों के शोरगुल के बीच, एक पश्चिमी खुफिया एजेंसी ने एक मोबाइल फोन नंबर चुरा लिया।
स्थानीय कॉलों से लंबी दूरी की कॉलों को अलग करने और उन्हें मुख्य शब्दों के आधार पर छांटने से कई संभावित कॉलों का पता चला। उर्दू और पंजाबी बोलने वालों की तलाश के लिए भाषाई खोज उपकरणों का उपयोग करने से यह संख्या और भी

कम हो गई। आधिकारिक तौर पर अस्तित्व में न होने वाले उपकरणों का उपयोग करके मुख्य वाक्यांशों की पहचान करने से अंततः सूची एक संभावित कॉल तक सीमित हो गई, जो भारती एयरटेल के एक स्थानीय सिम से संबंधित थी: +91 9910 719 424।
भारतीय विदेश और घरेलू खुफिया एजेंसियों, अनुसंधान एवं विश्लेषण शाखा (आरएडब्ल्यू) और खुफिया शाखा (आईबी) को यह खबर मिली कि फोन करने वाला व्यक्ति आतंकवादी अभियान में भागीदार या यहां तक कि सरगना भी हो सकता है। आईबी ने राज्य खुफिया प्रमुख से संपर्क किया, जिन्होंने नियंत्रण कक्ष में अपराध शाखा के प्रमुख राकेश मारिया और आतंकवाद विरोधी दस्ते (एटीएस) मुख्यालय से संपर्क किया। वहां, तकनीकी अनुभाग में, डिजिटल दुनिया में माहिर एटीएस के एक अनुभवी जासूस ने फोन के विशिष्ट पहचानकर्ता को अलग किया और बातचीत सुनने के लिए वारंट के लिए आवेदन किया।
मारिया ने क्राइम ब्रांच के अपने दूसरे नंबर के अधिकारी, पग्गी जैसे चेहरे वाले अतिरिक्त पुलिस आयुक्त देवेन भारती को फोन किया: 'फोन करने वाले का पता लगाओ,' उन्होंने भारती से कहा। अगर इस फोन से आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने वालों का पता चल गया, तो मुंबई पर हुए हमले को नाकाम किया जा सकता है।
भारती, जो गिरोह से संबंधित एक ऑपरेशन के सिलसिले में हवाई अड्डे पर थे, दक्षिण मुंबई लौट आए। पुलिस मुख्यालय में उनकी मुलाकात एटीएस के उपायुक्त से हुई और दोनों ने पोर्टेबल दिशा-निर्देश उपकरण लिए, जिनकी मदद से वे फोन के सिग्नल का पता लगा सकते थे। भारती और एटीएस उपायुक्त अपने लैपटॉप खोलकर अपनी कारों में निकल पड़े, किसी के फोन आने या उस नंबर पर कॉल आने का इंतजार करते हुए।
सटीक स्थिति जानने के लिए, उन्हें कम से कम तीन फ़ोन टावरों के बीच त्रिभुजाकार रेखा खींचनी थी। वहाँ से, मानचित्र ग्रिड के भीतर नंबर को अलग किया जा सकता था, और फिर एक इमारत का पता लगाया जा सकता था, जहाँ मानवीय प्रयास काम आते: घर-घर जाकर और कमरे-कमरे जाकर जानकारी जुटाना। भारती, जिन्होंने यह काम पहले भी किया था, जानते थे कि इसके लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। मानचित्र पर कोलाबा और नरीमन पॉइंट को एक रेखा में विभाजित करके, वह आराम से बैठ गए, कान में इयरफ़ोन लगाए, लैपटॉप घुटनों पर रखा, और

इंतज़ार करने लगे। वह जानते थे कि उनके पास कॉल की अवधि के बराबर ही समय है, चाहे वह कितना भी कम क्यों न हो, ताकि वे उस नंबर को मैप पर लॉक कर सकें। रात 11:30 बजे, +91 9910 719 424 नंबर चालू किया गया। 'सलाम अलैकुम।'

4

एक बकरी, एक चाकू और एक माचिस की डिब्बी

मई 2008 – पाकिस्तान

लश्कर के प्रशिक्षु लड़ाकों का एक दल हाथ से रंगी हुई एक बस में सवार होकर पाकिस्तान-प्रशासित कश्मीर के जंगली पहाड़ों की ओर लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहा था। मुजाहिद प्रशिक्षक क़हाफ़ा द बुल और संगठन के सैन्य कमांडर चाचा ज़की ने उन्हें रंगरूटों के एक बहुत बड़े समूह में से चुना था, और इसी समूह से वे ऑपरेशन बॉम्बे के लिए अंतिम दस सदस्यीय दल का चयन करने वाले थे। मुज़फ़्फ़राबाद के ऊपर स्थित कटोरेनुमा मैदानों में पवित्र योद्धाओं के घर पहुँचने पर, सिगरेट, अफ़ीम और तंबाकू के लिए सैनिकों की तलाशी ली गई, फिर उनकी तस्वीरें खींची गईं और उंगलियों के निशान लिए गए। किसी को भी प्रशिक्षक के बिना जाने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि इससे संगठन में संक्रमण फैलने का खतरा था, हालाँकि उनमें से किसी को भी यह पता नहीं था कि उन्हें कहाँ भेजा जा रहा है। 350 मील की थका देने वाली यात्रा से चिंतित और थके हुए प्रशिक्षुओं को उनके तंबू वाले बैरकों में ले जाया गया, प्रत्येक तंबू में सोलह लोग थे, और प्रत्येक को उसके असली नाम के स्थान पर एक क्रमांक दिया गया था।
उन्हें सप्ताह में केवल एक निगरानीयुक्त फोन कॉल करने की अनुमति थी। क़हाफ़ा द बुल और उसके प्रशिक्षकों ने सोने, खाने, नहाने और नमाज़ पढ़ने के नियमों का पालन किया। घर-परिवार के बारे में बातचीत करने से मना किया गया था। फिर भी वे सभी ऐसा करते थे।
उन बत्तीस लोगों में से एक अजमल कसाब था, जिसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह मुंबई जा रहा है।

सितंबर 1987 में पंजाब के सुदूर पूर्वी छोर पर राजमार्ग के किनारे बसे एक छोटे से गाँव फरीदकोट में जन्मे अजमल के पड़ोसी सिंधु घाटी सभ्यता के मंदिरों और सदियों पुराने खंडहरों से भरे इलाके में मुश्किल से अपना जीवन यापन करते थे। यह ऐतिहासिक रूप से सैनिकों की भर्ती का केंद्र रहा है, जहाँ से अंग्रेजों ने बड़ी संख्या में सैनिकों को भर्ती किया था, और उनसे पहले सदियों तक युद्धरत राजकुमारों ने भी। लेकिन विभाजन के कारण हिंदू और सिख निवासी भारत भाग गए, जबकि उनके घरों पर मुस्लिम शरणार्थियों ने कब्जा कर लिया, जिन्होंने ईंटों से बने घरों में खुद को बंद कर लिया और पाकिस्तान के विभाजन के शुरुआती दौर को सहा। पंजाब के किसी भी बड़े शहर की तुलना में भारत के अधिक निकट होने के कारण, ग्रामीणों को बचपन से ही नुकसान की कहानियाँ सुनाई जाती थीं और वे अपने पड़ोसी से घृणा करने लगे थे। मस्जिद ही उनके लिए एकमात्र सामुदायिक मिलन स्थल था।
चाचा ज़की, जो फरीदकोट से बीस मील दूर स्थित निकटतम शहर ओकारा से आए थे, 1980 के दशक के गुप्त अफ़गान युद्ध में लड़ने के लिए ज़िला छोड़कर चले गए थे, जैसा कि पंजाब के लाखों अन्य लोगों ने किया था। बाद में, वे लाहौर के इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय के एक व्याख्याता हाफ़िज़ सईद से जुड़ गए, जो विभाजन के नरसंहार में अपने परिवार के छत्तीस रिश्तेदारों को खोने की मार्मिक कहानियाँ सुनाते थे। 1990 में, उस लड़ाके और व्याख्याता (जो एक मौलवी भी थे) ने लश्कर-ए-तैबा का गठन किया ताकि यह संदेश फैलाया जा सके कि जो लोग भाग गए थे और उनकी आने वाली पीढ़ियाँ भारत को टुकड़ों-टुकड़ों में नष्ट करके बदला ले सकती हैं। उन्होंने हर घर में व्याप्त क्रोध, अभाव और विस्थापन की भावना का फायदा उठाया।
फरीदकोट में अजमल और उसके चार भाई-बहन एक नीले रंग के टिन के दरवाजे वाले घर में रहते थे। मुख्य सड़क पर पेट्रोल पंप और मरम्मत की दुकानें थीं, जहाँ से आने-जाने वाले लोगों की ज़रूरतों का ध्यान रखा जाता था। कभी यह परिवार बकरी चराता था और बाद में मांस का व्यापार करता था, जिससे उन्हें कसाई का उपनाम मिला। लेकिन कसाब परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी और अजमल के पिता लाहौर में निर्माण स्थलों पर 150 मील दूर काम करते थे, जहाँ से उन्हें प्रति सप्ताह 400 रुपये (2.50 पाउंड) मिलते थे। उनके घर में शौचालय या बिजली नहीं थी। वे सार्वजनिक नल से पानी लेते थे, कूड़ा दीवार के ऊपर से

फेंकते थे और खाने के कमरे में एक-दूसरे से सटकर सोते थे, जहाँ सिर्फ एक मिट्टी के तेल का दीपक जलता था।
घर का सारा कामकाज अजमल की मां नूर इलाही के हाथ में था, जो अपने पति के कभी-कभार आने पर गर्भवती हो गई थीं, लेकिन इसके अलावा वे परिवार के घर में ही एकांत जीवन जीती थीं। पिता की अनुपस्थिति में, अजमल, जो दूसरा बेटा था और जिसका अरबी में नाम 'सुंदर' होता था, विद्रोही स्वभाव का था। कद में छोटा और गठीला होने के कारण, उसने अपने बाल लंबे कर लिए थे, वह तंबाकू चबाता था और फरीदकोट के बस स्टैंड पर समय बिताता था। लेकिन जिले में बदलाव आ रहा था, माहौल सुधर रहा था, मुख्य रूप से लश्कर की सफलता के कारण, जिसने भारतीय प्रशासित कश्मीर में दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा प्रतिष्ठानों में से एक को चुनौती देकर अपनी प्रतिष्ठा बनाई थी, और वहां 1989 में भड़के विद्रोह का समर्थन किया था।
उपेक्षित ओकारा ने जिहाद के लिए इतने सैनिक भेजे कि उसे 'पवित्र शहर' के रूप में सम्मानित किया जाने लगा और लश्कर ने यह सुनिश्चित किया कि हर कोई इस संदेश को सुने: शुक्रवार की नमाज़ के बाद मुफ्त साहित्य बांटा जाता था, लश्कर द्वारा प्रायोजित डॉक्टरों द्वारा स्वास्थ्य जांच की जाती थी, और हर शहीद के लिए भव्य समारोह आयोजित किए जाते थे। लश्कर के स्वयंसेवक समुदाय को मिठाइयाँ और मृतक के परिवार को मुआवज़ा देते थे, इससे पहले कि मृतक की वसीयत को युद्ध प्रशस्ति पत्र की तरह जोर से पढ़ा जाए। कश्मीर में जिहाद के लिए मरना उस कठोर वातावरण में सर्वोच्च सम्मान था, जहाँ विकल्प व्यर्थ जीना था, और इसने उन परिवारों को सम्मान और गरिमा दिलाई जिनके पास पहले कुछ भी नहीं था। आने वाले कमांडर पॉप सितारों की तरह घूमते थे। ओकारा में शहीदों के पोस्टर दरवाजों पर लगाए जाते थे, जहाँ अन्य शहरों में बॉलीवुड फिल्मों के पोस्टर दिखाई देते थे। किराने की दुकानों में चंदा इकट्ठा करने वाले बक्से भर जाते थे। हर गाँव की दीवार पर भित्तिचित्र छाए रहते थे: 'जिहाद के लिए जाओ।' जिहाद के लिए जाओ।’ अन्य लोगों ने नई विश्व व्यवस्था की पुष्टि करते हुए कहा: ‘न तो क्रिकेट सितारे और न ही फिल्म सितारे, बल्कि इस्लामी मुजाहिदीन।’
अजमल जैसे किशोर लश्कर के मीडिया विंग द्वारा प्रकाशित उत्तेजक युवा प्रकाशन पढ़ते थे, जिनमें नए रंगरूटों को भर्ती करने के लिए शहीद लड़ाकों की गवाही का खुलकर इस्तेमाल किया जाता था, यहाँ तक कि एक प्रकाशन में

कार्टून भी बनाया जाता था, जिसे बच्चों ने 'शहीद जो' नाम दिया था। संगठन को पता था कि वह क्या कर रहा है। लश्कर के एक प्रांतीय प्रमुख ने कहा, 'बच्चे साफ ब्लैकबोर्ड की तरह होते हैं। आप जो कुछ भी लिखेंगे, वह उन पर हमेशा के लिए छाप छोड़ देगा।'
अजमल की ज़िंदगी में अहम मोड़ 1999 में आया, जब पाकिस्तान और भारत के बीच कारगिल की कश्मीरी पहाड़ियों पर युद्ध छिड़ा और उसके पिता आमिर लाहौर से टीबी से बीमार होकर घर लौटे। अब से आमिर फरीदकोट के धूल भरे चौक पर तले हुए स्नैक्स से लदी हाथगाड़ी घुमाकर अपनी निर्माण मजदूरी का लगभग आधा, यानी लगभग 250 रुपये (1.50 पाउंड) प्रति सप्ताह कमाते थे। उनका अपने बेटे से झगड़ा होता था, जिससे उन्हें अपनी कमी पूरी करने की उम्मीद थी, और आखिरकार उन्होंने तेरह साल के अजमल को लाहौर में मज़दूर के रूप में काम करने भेज दिया। सुबह 4 बजे उठकर सार्वजनिक शौचालयों में नहाते-धोते अजमल कड़वाहट और थकावट से भर गया, उसकी महत्वाकांक्षाएं धूमिल हो गईं, और रात में डर और अकेलापन उसे सताता था। उसे अपनी माँ की याद आती थी और अपने क्रूर पिता से उसे घृणा होती थी।
निर्माण कार्य में छह साल की कड़ी मेहनत के बाद, अजमल की मुलाकात वेलकम टेंट सर्विस में काम करने वाले एक घमंडी युवक से हुई, जो इस्लामाबाद जाने वाले रास्ते पर स्थित झेलम शहर में खानपान व्यवसाय करता था। वह रसोइयों की भर्ती कर रहा था और उन्हें गर्म खाना, सुरक्षा और अधिक वेतन का वादा कर रहा था। भूखा अजमल झेलम चला गया और वहाँ उसकी एक नई दोस्त मुजफ्फर से दोस्ती हो गई, जिसका नाम 'विजयी' का प्रतीक था। उसके जीने के अपने ही तरीके थे। दिन में रोटियाँ बेलने के बाद, वह रात में अजमल को अपने साथ गश्त पर ले जाता और उस छोटे किशोर को बाथरूम की खिड़कियों से घुसने, घरों और दफ्तरों में सेंध लगाने के लिए प्रोत्साहित करता।
जेब में पैसे लेकर अजमल और मुजफ्फर सिनेमा गए और उन्होंने कई बार 'शोले' देखी। यह एक रोमांचक बॉलीवुड थ्रिलर फिल्म थी जिसमें एक अनुभवी पुलिसवाला अपने ही एक साथी को पकड़ने के लिए दो चोरों को भर्ती करता है, जिनमें से एक का किरदार अमिताभ बच्चन ने निभाया था। नवंबर 2007 में, वे पूरी तरह से शातिर अपराधी बनने की उम्मीद में बंदूक खरीदने के लिए पाकिस्तान के छावनी शहर रावलपिंडी के लिए रवाना हुए।

शहर में उत्सव जैसा माहौल था। चुनाव नजदीक थे, बेनजीर भुट्टो लगभग एक दशक बाद शहर लौटी थीं और ईद की तैयारियों में सड़कें शामियानों और झूलों से सजी थीं। तंबुओं के बीच घूमते हुए अजमल और मुजफ्फर एक बुजुर्ग व्यक्ति से मिले, जिन्होंने उन्हें चाय पिलाई और स्थानीय लश्कर भर्ती कार्यालय जाने के लिए राजी किया। चावल और मटन की थालियों से उनका स्वागत ऐसे किया गया जैसे वे बिछड़े हुए रिश्तेदार हों। 'उन्होंने हमसे हमारे नाम पूछे और अगले दिन अपने कपड़े और सामान लेकर आने को कहा।' जब कार्यालय में मौजूद एक व्यक्ति ने एक पर्ची पर 'दौरा-ए-सुफा' लिखकर उन्हें लाहौर के बाहर मुरीदके के एक पते पर जाने को कहा, तो वे तुरंत मान गए। अजमल मुश्किल से पढ़ पाता था, लेकिन कलम की उन कुछ पंक्तियों से ही, अनजाने में, उन्होंने दो सप्ताह के लश्कर धर्मांतरण पाठ्यक्रम में अपना नाम दर्ज करा लिया था।
चौबीस घंटे के भीतर, अजमल और मुजफ्फर लाहौर से तीस मिनट की दूरी पर स्थित मुरीदके में लश्कर के वैश्विक मुख्यालय पहुँच गए, जिसे मरकज़-ए-तैबा - यानी पवित्रता का केंद्र कहा जाता है। कई चौकियों से गुजरते हुए उनकी तलाशी ली गई और उनके मोबाइल फोन जब्त कर लिए गए।
अंदर जाकर वे तीस और नए लोगों से मिले, जो पंजाब भर की लंबी यात्राओं से घबराए और थके हुए थे, और उनका सारा सामान टिन के बक्सों में ठूंसकर रखा हुआ था। विशाल परिसर में स्थित, यह पवित्र केंद्र किसी महंगे निजी विश्वविद्यालय जैसा दिखता था। यहाँ चौड़ी सड़कें और फूलों से सजे रास्ते, खेल के मैदान, बगीचे, कक्षाएँ और पिछले द्वार के पास एक विशाल कंक्रीट का स्विमिंग पूल था। सबसे भव्य इमारत अबू हरारा मस्जिद थी, जिसमें 5,000 लोग आ सकते थे और जिसके बाहर के जुलूस मैदान में नमाज पढ़ने वालों को ठंडक पहुँचाने के लिए बिजली के पंखे लगे हुए थे। यहाँ तक कि एक लड़कियों का स्कूल भी था, यह देखकर गाँव के लड़के हैरान रह गए, जिनकी बहनें शादी होने तक घर से बाहर नहीं निकली थीं।
दूसरे दिन उन्हें सुबह 4 बजे जगाया गया और कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थनाओं से हुई, जो धार्मिक प्रशिक्षण के पहले शब्द थे। अन्य समूहों के विपरीत, जो बिना किसी धार्मिक प्रशिक्षण के भाड़े के सैनिकों को युद्ध में भेजते थे और मुस्लिम समुदाय के दुश्मन घोषित किए गए किसी भी व्यक्ति से लड़ते थे, लश्कर अपने रंगरूटों को अपने अनुरूप ढालकर सख्त धार्मिक, राजनीतिक और वैचारिक दिशा-निर्देशों के तहत काम करने के लिए प्रशिक्षित

करता था। अजमल ने याद करते हुए कहा, 'हमें पहले सुन्नी से अहले हदीस में परिवर्तित किया गया और हमें हदीसियों के तरीके सिखाए गए।'
शुरू में उन्हें काफी दिक्कत हुई। उन्होंने बताया, “नमाज़ से लेकर दोपहर के खाने और रात के खाने तक सब कुछ एकदम समय पर होता था। प्रशिक्षक बहुत सख्त थे।” उन्हें दोपहर का समय ज़्यादा पसंद था, जब वे क्रिकेट खेलते थे। यह खेल बचपन से ही अजमल को भारत के प्रति अपनी नफरत और गुस्से को निकालने का ज़रिया रहा था। मुरीदके के मैदानों पर धूल भरे इन मैचों में पाकिस्तान हमेशा जीतता था।
एक सप्ताह बीतने पर, उनकी मुलाकात चाचा ज़की के नंबर दो, क़हाफ़ा द बुल से हुई, और शुरू से ही लड़के उनकी युद्ध क्षमता से चकित रह गए। शाम की नमाज़ के बाद, क़हाफ़ा लड़कों को मुख्य मस्जिद में इकट्ठा करते और उन्हें बलिदान और विजय की कहानियाँ सुनाते, साथ ही कश्मीर में भारतीय ठिकानों पर सफल फ़िदायीन हमलों की फ़िल्में दिखाते। क़हाफ़ा और उनके प्रशिक्षक लगातार फ़िदायीन और आत्मघाती अभियानों के बीच अंतर बताते रहे। आत्मघाती अभियान तो अकल्पनीय थे। अजमल को बताया गया, 'आत्महत्या वह है जब कोई अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल होने के बाद हताशा में खुद को मार डालता है।' फ़िदायीन दस्ते 'नेक उद्देश्य को प्राप्त करने के प्रयास में शहीद होते हैं'। वे जीतने के लिए लड़ते हैं, और अगर वे मर भी जाते हैं तो वह भी एक जीत है।
आखिरकार चाचा ज़की सशस्त्र गार्डों से भरी टोयोटा पिकअप में परिसर में पहुंचे। उन्होंने अपनी खास अफगानी पकुल टोपी और ऊनी शॉल ओढ़ी हुई थी। लखवी को सोवियत संघ से लड़े हुए कई साल बीत चुके थे। उनका उभरा हुआ पेट और माथे पर नमाज़ का निशान इस बात का संकेत था कि आजकल वे मस्जिद में ज़्यादा समय बिताते हैं। लखवी ने नए रंगरूटों का स्वागत किया और उन्हें अल-क़मा के नेतृत्व में प्रशिक्षकों से मिलवाया। मूल रूप से दक्षिणी पंजाब के बहावलपुर के रहने वाले अल-क़मा का असली नाम मज़हर इक़बाल था और हाल ही तक वे लश्कर के कश्मीर अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। अब से क़हाफ़ा और अल-क़मा जैसे प्रशिक्षक लड़कों के लिए पिता समान बन गए, क्योंकि वे धीरे-धीरे अपने असली परिवारों से संबंध तोड़ रहे थे।
अल-क़मा के पास खबर थी। उसने खुलासा किया कि वह एक गुप्त अभियान के लिए एक विशेष टीम बनाने की तैयारी कर रहा है: 'हम भारत के बड़े शहरों पर हमला करने

की तैयारी कर रहे हैं। हम भीतर से ही युद्ध शुरू करेंगे ताकि भारत खोखला हो जाए।'
नए रंगरूट रोमांचित और भयभीत थे। कुछ ही देर बाद, संगठन के अमीर हाफ़िज़ सईद, सशस्त्र घुड़सवारों से सुरक्षित, आलीशान कारों के काफिले में पहुंचे। छात्रों ने उनका संदेश सुना। अपनी लाल दाढ़ी को संवारते हुए और प्रार्थना करने की मुद्रा में सीने पर हाथ रखते हुए, अमीर ने कर्तव्य और वीरता के बारे में एक भावपूर्ण भाषण दिया।
उन्होंने एक ऐसी प्रतिज्ञा के साथ अपना भाषण समाप्त किया जिसे अजमल कभी नहीं भूलेंगे। रंगरूटों का निरीक्षण करते हुए अमीर ने कहा, “अगर तुम जिहाद करते हुए शहीद हो जाओगे, तो तुम्हारे चेहरे चाँद की तरह चमकेंगे। तुम्हारे शरीर से सुगंध निकलेगी। और तुम सीधे जन्नत जाओगे।” चाचा ज़की ने आगे बढ़कर इस बात को और पुख्ता किया: “तुम मुसलमान हो। भारत मानवता नहीं है। उन्होंने तुम्हें गरीबी में छोड़ दिया है और वे तुमसे आगे निकल चुके हैं।” उन्होंने उनसे कहा, “तैयार रहो। तुम्हारा समय आ रहा है।” गुमनाम से अचानक रंगरूट ‘खास’ बन गए।

फरवरी 2008 तक, समूह में अजमल और मुजफ्फर समेत केवल चौबीस लड़के रह गए थे। उन्हें आठ घंटे की यात्रा करके उत्तर-पश्चिम की ओर, तत्कालीन पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत की बर्फीली पहाड़ियों में स्थित मनसेहरा कस्बे में ले जाया गया। यहाँ लश्कर का एक और प्रशिक्षण केंद्र छिपा हुआ था, जो पाकिस्तान सैन्य अकादमी और एबटाबाद कस्बे के ठीक उत्तर में स्थित था, जहाँ चार साल बाद ओसामा बिन लादेन मारा गया था। मनसेहरा बस स्टैंड से वे अपने साथ जूते और कंबल लेकर पहाड़ियों पर चढ़ाई करने लगे और एक पगडंडी पर पहुँचे जो अंततः बट्टल नामक एक पत्थर और लकड़ी से बने गाँव तक जाती थी। अगर मुरीदके का प्रशिक्षण विद्वतापूर्ण था, तो बट्टल का प्रशिक्षण बेहद कठिन था। पेड़ों पर लगे लाउडस्पीकरों से प्रेरणादायक गीत गूंजते थे और इक्कीस दिनों के दौरा-ए-आमा (आम सत्र) के दौरान रंगरूटों को पहली बार एके- 47 राइफल, या 'कलाशन', चलाने का मौका मिला। उन्होंने बर्फीले गड्ढों से रेंगते हुए एक बेहद चुनौतीपूर्ण बाधा दौड़ भी पार की। प्रशिक्षकों ने गौर किया कि अजमल कद में भले ही छोटा था, केवल 5 फीट 3 इंच का, लेकिन उसने अपने दृढ़ संकल्प से इसकी भरपाई कर दी।

बुनियादी प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, जवानों को आराम करने का आदेश दिया गया। आगे दाउरा-ए-खासा (विशेष सत्र) था, जो ढाई महीने तक चला और पाकिस्तानी प्रशासित कश्मीर में स्थित पवित्र योद्धाओं के घर में आयोजित हुआ। लश्कर को प्रत्येक जवान को प्रशिक्षित करने में 1,000 पाउंड का खर्च आता था, इसलिए संगठन को अपने द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक उम्मीदवार के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त होना आवश्यक था। अंत में, अल-क़ामा गुप्त मिशन के लिए अपने उम्मीदवार का चयन करेगा।
मुजफ्फर का परिवार उसे लेने आया। फरीदकोट से अजमल के लिए कोई नहीं आया, जबकि उसे घर की बहुत याद आ रही थी। उसने अपनी माँ को फोन किया, लेकिन लाइन खराब थी। उसे लश्कर के दफ्तरों में ही रुकना पड़ा और नए रंगरूटों को प्रशिक्षण देना पड़ा, जब तक कि विशेष सत्र शुरू करने के लिए चुने गए लड़कों की सूची जारी नहीं हो गई। उस सूची में अजमल का नाम था, लेकिन मुजफ्फर का नहीं।

मई 2008। गरीब और लगभग अनाथ लड़के, जिन्हें लश्कर ने स्पेशल फोर्सेस का सदस्य होने का एहसास दिलाया था, मुज़फ़्फ़राबाद के ऊपर चेलाबंदी पहाड़ियों में अपने तंबू गाड़ रहे थे, जहाँ लश्कर के विदेशी अभियानों के उप प्रमुख साजिद मीर का आइस बॉक्स था। अजमल का ध्यान एक अन्य रंगरूट, हाफ़िज़ अरशद की ओर आकर्षित हुआ। छह फुट लंबा, गठीला अरशद मूल रूप से दक्षिणी पंजाब के मुल्तान का रहने वाला था। उसके परिवार ने उसे एक इस्लामी मदरसे में सौंप दिया था क्योंकि उनके पास पहले से ही गन्ने के खेतों में काम करने वाले कई बच्चे थे। अरशद में केवल एक ही हुनर था, जिससे उसके पहले नाम का अर्थ स्पष्ट होता था: वह एक हाफ़िज़ था, कुरान का रट्टा मारकर अध्ययन करने वाला। लेकिन जब वह किशोर हुआ, तब तक उसे पाकिस्तान या उसके बाहर की दुनिया के बारे में कुछ भी पता नहीं था। वह रेलवे में मज़दूर बन गया, जब तक कि उसे अमीर हाफ़िज़ सईद द्वारा आयोजित एक जनसभा का विज्ञापन वाला पर्चा नहीं मिला।
अगला नंबर शोएब का था, जो सबसे युवा रंगरूट था। उसका जन्म पंजाब के सुदूर उत्तर-पूर्वी कोने में, सियालकोट जिले के बरपिंड गाँव में हुआ था, जिस पर 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों के दौरान बमबारी हुई थी, और वह अपने घर से विवादित कश्मीर के पहाड़ों को देख सकता था। उसके पिता लंबी

दाढ़ी वाले एक धर्म प्रचारक थे, जो अहले हदीस के प्रचारक के रूप में प्रसिद्ध थे। शोएब ने अजमल से भी कम उम्र में स्कूल छोड़ दिया था और किशोरावस्था में ही मुरीदके में प्रशिक्षण के लिए भर्ती हो गया था, इस उम्मीद के साथ कि 'वह भारत को खून से लथपथ कर देगा'।
पहली शाम के अंत तक, उनके समूह में एक चौथा सदस्य भी शामिल हो गया था, नसीर अहमद, जो खुद को 'फैसलाबाद का दुबला-पतला लड़का' बताता था। पंजाब के दूसरे सबसे बड़े शहर से आने वाला वह बाकी लोगों से कहीं अधिक आत्मविश्वासी था। नसीर शहर के केंद्र के उत्तर-पूर्व में स्थित, लश्कर समर्थक मस्जिद मुबारक अहले हदीस के पास एक गली में रहता था। मस्जिद के आसपास की दुकानों में लश्कर की दान शाखा के लिए खुलेआम चंदा इकट्ठा करने वाले बक्से रखे रहते थे और इसके पदाधिकारी स्थानीय हस्तियां थीं। नसीर भी लश्कर के साथ जुड़ गया था और छोटी उम्र से ही उसके लिए काम करता था, दूरदराज के गांवों से गरीब लड़कों को भर्ती करता था। अपने दुबले-पतले शरीर और पतली आवाज के बावजूद, वह बहादुर और निडर था।
अजमल, हाफ़िज़, शोएब और नसीर ने जी-जान से मेहनत की। जब कठिन प्रशिक्षण का दौर समाप्त होने वाला था, तो उन्हें परेड ग्राउंड में इकट्ठा होने के लिए कहा गया। वहाँ एक लंबा, दुबला-पतला, दाढ़ी-मूंछ साफ़ किए हुए सेना अधिकारी उनका इंतज़ार कर रहा था। दाढ़ी और पायजामे पहने सैनिकों के बीच वह कुछ अलग सा लग रहा था, लेकिन अमीर सईद और चाचा ज़की ने उसे गले लगाया और अल-क़मा ने उसका परिचय देते हुए कहा: 'ये मेजर जनरल साहब हैं और हम सब उन्हीं के सिपाही हैं।'
किसी ने आपत्ति नहीं जताई। सबको पता था कि लश्कर में कई पाकिस्तानी सेना अधिकारी शामिल थे। एक कर्नल, जिसने 2005 में सेना छोड़ने का दावा किया था, खुलेआम संगठन के सूचना विभाग का संचालन कर रहा था। कुछ असंतुष्ट सैनिक थे जो मानते थे कि सेना अब कश्मीर को आज़ाद कराने के उद्देश्य से काम नहीं कर रही है। कुछ अन्य मानते थे कि सेना इस्लाम के दुश्मनों को खुश कर रही है। इनमें से अधिकांश सैन्य अधिकारी खुद को सेवानिवृत्त बताते थे। वे वास्तव में सेवानिवृत्त थे या नहीं, यह केवल वे ही जानते थे। लश्कर एक उलझा हुआ जाल था, जो गुप्त तंत्र की साजिशों को छुपाने का काम करता था।
मेजर जनरल साहब ने एड़ी चटकाई और बैरकों का निरीक्षण करने के लिए निकल पड़े, फिर उतनी ही सावधानी से चले गए जितनी सावधानी से वे आए थे। इसके बाद

प्रशिक्षण और भी कठिन हो गया। शिविर के ऊपर घने जंगलों में चढ़ते हुए, रंगरूट सबसे दूरस्थ ठिकानों तक पहुँचे: मस्कर-ए-उम्मलकुरा और अल-अक्सा (इस्लाम के तीसरे सबसे पवित्र स्थल, यरूशलेम की मस्जिद के नाम पर)। उन्होंने वास्तविक गोलीबारी के अभ्यास में ग्रेनेड फेंके। उन्होंने तब तक गोलियां चलाईं जब तक उनके हाथ सुन्न नहीं हो गए। वे बर्फीली रात में बोझ ढोते हुए चढ़े, तभी कहफा द बुल और अल-क़ामा ने उन पर घात लगाकर हमला किया और उनके सिर के ऊपर और पैरों के बीच से गोलियां चलाईं।
अंततः, जुलाई के अंत में, उन्हें 'दो लोगों' के समूह में बाँटा गया और दो- सदस्यीय कमांडो अभियानों का प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने हाथ के इशारों से संवाद करना सीखा। सुनसान इमारतों में, उन्हें कमरे में प्रवेश करने और उसे सुरक्षित करने का तरीका सिखाया गया, जिसमें वे दरवाजे पर एक-दूसरे को पार करते थे। उन्होंने देखा कि अल-क़मा विस्फोटों से दरवाजों को बचाने के लिए उन पर गद्दा लगाकर उनकी रक्षा कैसे करते हैं। उन्होंने बंधक बनाने का अभिनय किया और उन्हें बंधकों से पूछताछ करना सिखाया गया। सब कुछ अंतिम परीक्षा पर निर्भर था: तीन दिन बिना भोजन, पानी या नक्शे के जंगल में, प्रशिक्षकों द्वारा पीछा किए जाने के बीच। दस रंगरूट भाग गए। लेकिन जब अजमल, हाफ़िज़, शोएब और नसीर दुबले-पतले और ठंड से कांपते हुए बाहर निकले, तो अल-क़मा ने उनका स्वागत किया।
उन्हें एक बकरी, एक चाकू और एक माचिस की डिब्बी दी गई और उन्हें अपना स्नातक समारोह का भोजन स्वयं तैयार करने के लिए कहा गया।

अगस्त 2008 के मध्य में, डेविड हेडली को अब पूरा यकीन हो गया था कि लश्कर और आईएसआई के मेजर इकबाल, जो पाकिस्तान में थे, उनसे दूरी बनाए हुए थे। मेजर इकबाल ने न्यूयॉर्क शहर के कोड वाले मोबाइल नंबर से उनसे संपर्क करना शुरू कर दिया था। मेजर, जो आमने-सामने की मुलाकातों से बचते थे, ने बताया कि अंतर-सेवा खुफिया एजेंसी (आईएसआई) ने इंटरनेट टेलीफोनी का इस्तेमाल शुरू कर दिया था और दुनिया भर में फोन और नंबर किराए पर लेकर प्रतिद्वंद्वी जासूसी एजेंसियों को गुमराह कर रही थी।
हेडली के निजी जीवन ने उनके तनाव को और बढ़ा दिया था। एम 2 (फैजा) उन्हें और एम 1 (शाज़िया) को धमकियाँ दे रही थी, लेकिन वह उसे पूरी तरह से अलग-थलग नहीं कर पा रहे थे। उन्हें माहौल में बदलाव की ज़रूरत थी। वह शाज़िया और

अपने चार बच्चों को लेकर इस्लामाबाद से तीन घंटे की ड्राइव पर उत्तर में स्थित लोकप्रिय हिल स्टेशन मुर्री गए और 19 अगस्त को वापस लौटे। उसी दिन जनरल परवेज़ मुशर्रफ को अंततः पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा और उन्होंने सत्ता एक नागरिक नेता, बेनज़ीर भुट्टो के पति आसिफ अली ज़रदारी और प्रधानमंत्री यूसुफ रज़ा गिलानी को सौंप दी, जिनके लिए हेडली के भाई दान्याल प्रेस अधिकारी के रूप में काम करते थे।
लश्कर के साजिद मीर का एक संदेश उसका इंतज़ार कर रहा था। प्रसन्न होकर हेडली आइस बॉक्स के लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँचकर मीर के हाव-भाव से लगा कि ऑपरेशन बॉम्बे जल्द ही शुरू होने वाला है। लेकिन कुछ भी बताने के बजाय, मीर ने उसकी गुमनामी का फायदा उठाते हुए उसे कई छोटे-मोटे काम सौंप दिए। हेडली को एक सामान की सूची के साथ पहाड़ी से नीचे भेजा गया: दस चीनी बैकपैक, हर हमलावर के लिए एक। उसने ऐसे बैकपैक चुने जिन पर अंग्रेज़ी में 'चेंजिंग द टाइड' लिखा था - समुद्री हमले के लिए यह एक उपयुक्त टैगलाइन लग रही थी। उसे लश्कर के 'माइस' द्वारा खरीदे गए भारतीय सिम कार्डों का परीक्षण करने के लिए भारतीय सीमा पर भेजा गया। पाँच एक जैसे नोकिया 1200 हैंडसेट खरीदे गए थे, काले और चांदी के रंग के, हर दो सदस्यीय टीम के लिए एक।
हेडली को शायद पता था कि उसका इस्तेमाल किया जा रहा है। लश्कर और आईएसआई के उसके प्रति ठंडे पड़ते रवैये से चिंतित होकर, वह अपने परिवार की सुरक्षा को लेकर भी चिंतित था। 8 सितंबर को उसने शाज़िया और अपने बच्चों को शिकागो में अपने स्कूली मित्र डॉ. राणा के विस्तारित परिवार के साथ रहने के लिए भेज दिया। उसने एक वसीयत भी तैयार की। वसीयत का निष्पादक राणा था, जिसके आव्रजन व्यवसाय पर हेडली ने मुंबई में अपना भेस बनाने के लिए कब्ज़ा कर लिया था। हेडली ने राणा को 'प्रिय डॉक्टर' लिखकर ईमेल लिखा। सबसे पहले उसने फ़ैज़ा के साथ अपने उतार-चढ़ाव भरे वैवाहिक जीवन के पेचीदा मुद्दे पर ध्यान दिया। उसकी मृत्यु की स्थिति में, फ़ैज़ा को पाकिस्तान छोड़कर कनाडा जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना था, जहाँ वह सबकी नज़रों से दूर रहेगी। 'पाशा के ज़रिए उसे हर महीने 350 डॉलर भेजो।' उसके लिए फ़ैज़ा की यही कीमत थी। 'उससे पाशा के ज़रिए बात करो और उसे अपना नंबर मत देना, चाहे तुम उसे फ़ोन ही क्यों न करो। जब उसे वीज़ा मिल जाए, तो उसे 6,000 डॉलर, टिकट और निर्देश दे देना।'

उन्होंने शाज़िया की ओर रुख किया। उसे लाहौर में उसके परिवार के पास वापस भेजा जाना था और उन्होंने राणा से अपने बेटों को पाकिस्तान के सबसे प्रतिष्ठित निजी स्कूल, एचिसन कॉलेज में दाखिला दिलाने की कोशिश करने को कहा, जिसके पूर्व छात्रों में क्रिकेटर से राजनेता बने इमरान खान भी शामिल थे। हेडली ने फिर अपनी मां सेरिल से हाल ही में विरासत में मिली संपत्तियों की सूची दी। ये संपत्तियां शाज़िया और उनके बच्चों को दी जानी थीं। उनके पिता सलीम गिलानी का कोई जिक्र नहीं था, जिन्होंने अपने बिगड़ैल बेटे को त्याग दिया था। 'बस यही सब है मेरे पुराने दोस्त।'
वसीयत के बारे में सुनकर फ़ैज़ा बेहद क्रोधित हो गईं। उन्होंने हेडली के अमेरिकी वकील जॉन थीस को पत्र लिखकर उनकी 'कानूनी रूप से विवाहित पत्नी' के रूप में अपने अधिकारों की मांग की। फिर वह बेखौफ होकर लाहौर में लश्कर की क़दीसिया मस्जिद में घुस गईं। उन्होंने लिखा, 'मुझे सुबह 11 बजे से शाम 7 बजे तक इंतज़ार करना पड़ा,' उन्होंने लश्कर के इलाके में एक बिन बुलाई महिला के रूप में प्रवेश करने के अपने डर को छुपाते हुए आगे लिखा, 'मेरी सिर से पैर तक तलाशी ली गई। मैंने उनसे पूछा, "आप लोग आखिर कर क्या रहे हैं?" मैंने कहा, "मुझे अपने पति को लेकर एक समस्या है और मुझे यह समझने की ज़रूरत है कि क्या हो रहा है।"' जब मस्जिद के अधिकारियों ने टालमटोल किया, तो वह अपने पति का नाम चिल्लाने लगीं, जब तक कि अमीर हाफ़िज़ सईद बाहर नहीं आ गए। उन्होंने शिकायत की कि हेडली नियमित रूप से उन पर हमला करता था। उन्होंने जासूसी और जिहाद के बारे में हुई तकिया-वार की बातों का भी ज़िक्र किया। यह सोचकर कि उन्होंने हेडली की समस्या को पहले ही सुलझा लिया है, हाफिज सईद भयभीत हो गए, लेकिन उन्होंने फ़ैज़ा के पति से बात करने का वादा किया।
हेडली को टेक्स्ट मैसेज से पता चला। उसे बेहद शर्मिंदगी और बेइज्जती महसूस हुई। उसने अपना ईमेल पता (impervious2pain@yahoo.com) बदल दिया और फ़ैज़ा से तलाक को अंतिम रूप देने के लिए एक वकील नियुक्त किया। जब फ़ैज़ा को पत्र मिला, तो वह हेडली के घर गई। उसने चिल्लाते हुए कहा, 'एक हफ़्ते पहले तुम मुझसे प्यार करते थे और मुझे याद करते थे। क्या हुआ?' हेडली ने अपने अंगरक्षक को उसे घर से बाहर निकालने का आदेश दिया। गेट पर बहस के दौरान, फ़ैज़ा ने उसे घूंसे मारे और लात मारी, जिसके बाद वह रोते हुए पांच

सितारा पर्ल कॉन्टिनेंटल होटल के पीछे स्थित रेस कोर्स पुलिस स्टेशन के महिला विभाग में भाग गई और मारपीट का मामला दर्ज कराया।
कुछ ही घंटों में डेविड हेडली को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें हिरासत में रखा गया और उनकी पत्नी की हत्या के प्रयास के बारे में पूछताछ की गई। आखिरकार, आठ दिनों के बाद एक वरिष्ठ अधिकारी आए और कोठरी का दरवाजा खोलकर हेडली को 'किसी उच्च अधिकारी' के आदेश पर बाहर ले गए, संभवतः प्रधानमंत्री कार्यालय में। हेडली को टैक्सी में बिठाते हुए, उन्होंने झुककर फुसफुसाते हुए कहा: 'हम सभी की भलाई के लिए सुर्खियों से दूर रहो।' हेडली शाज़िया स्थित अपने घर गए, लेकिन उन्हें क़दीसिया मस्जिद बुलाया गया, जहाँ अमीर हाफ़िज़ सईद उनका इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने फ़ैज़ा का जिक्र करते हुए कहा, 'या तो उसे चुप करा दो या उससे छुटकारा पा लो। फिर, घर जाओ और क्षमा के लिए प्रार्थना करो।'

मुज़फ़्फ़राबाद

पवित्र योद्धाओं के प्रशिक्षण परिसर के ऊपर, ऊपरी शिविर की पतली हवा में तंबुओं का एक घेरा बनाया गया था। अजमल कसाब और उनके साथी सात महीने तक प्रार्थना, दौड़ और निशानेबाजी के बाद दुबले-पतले होकर अंदर लेटे हुए थे। उनकी नसों में खून तेजी से दौड़ रहा था और वे आपस में अपने 'बाज जैसे साहस' की बात कर रहे थे, जो अपने शिकार पर झपटने के लिए तैयार था। वे अपने प्रशिक्षकों, क़हाफ़ा द बुल और अल-क़मा को अपने पिताओं से भी बेहतर जानते थे और अब उन्होंने उन्हें अपने परिवारों को अलविदा कहने के लिए घर जाने को कहा था। अजमल को यात्रा के लिए 1,300 रुपये (£10) दिए गए थे और उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे अपनी माँ को यह समझाएँ कि अपने बेटे को एक उच्च उद्देश्य के लिए समर्पित करने से उन्हें कितनी इज्जत (सम्मान) मिलेगी। फरीदकोट में, उनकी माँ उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुईं और उनके लिए बिरयानी ऐसे बना रही थीं जैसे वह दूल्हा हों और उनकी माँ उन्हें विदा कर रही हों। जब उनके आगमन की खबर फैली, तो पड़ोसी भी उनसे मिलने आए और उन्होंने देखा कि अजमल कुछ उदास लग रहे थे। उन्होंने कहा कि वे घर पर ही रहना चाहते हैं, और बस स्टॉप के लिए निकलते समय उनकी आँखों में आँसू आ गए।

सात दिन बाद जब वे पवित्र योद्धाओं के घर लौटे तो उन्होंने पाया कि उनके समूह के सदस्यों की संख्या एक बार फिर कम हो गई थी।
बचे हुए लोगों को कुन्याह या युद्ध उपनाम रखने के लिए कहा गया, जो इस बात का संकेत था कि उनका एक नए पवित्र परिवार में पुनर्जन्म हुआ है। अजमल को कोई नया नाम सूझा नहीं। अंत में उसने सबसे स्पष्ट नाम अबू मुजाहिद चुना, जबकि हाफ़िज़ अरशद अब्दुल रहमान 'बदा' (बड़ा) बन गया और शोएब अबू सोहेब बन गया। दुबला-पतला नसीर अहमद अबू उमर बन गया। उन सभी ने पहले से लिखी वसीयतों पर हस्ताक्षर किए, जिनमें लिखा था कि उनकी छाती पवित्रता से चमक रही है और वे युद्ध के मैदान में अपना क्रोध शांत करना चाहते हैं, फिर अल-क़मा के चारों ओर घेरा बनाकर भारतीय प्रशासित कश्मीर में फ़िदायीन हमलों को देखते हुए फ़िल्म शो के साथ जश्न मनाएंगे। जब किसी ने पूछा कि क्या वे भी नियंत्रण रेखा पार करेंगे, तो अल-क़मा ने गोलमोल जवाब दिया।
वह शहीदी सैनिकों को तैयार करने में माहिर था, और अक्सर इस बात पर गर्व करता था कि इस काम में उसे भावी कमांडो सैनिकों को बच्चों जैसा व्यवहार करना पड़ता था, उनमें बच्चों जैसी श्रद्धा पैदा करनी पड़ती थी, ताकि जब उन्हें अपनी मृत्यु या दूसरों की हत्या के बारे में सोचना पड़े, तो वे उन आदेशों का पालन करें जिन्हें एक स्वतंत्र विचारक वयस्क मानने से हिचकिचाएगा। वह मनोविज्ञान में विशेष रूप से निपुण था और उसने प्रत्येक रंगरूट की शारीरिक संरचना का विश्लेषण करने में काफी समय बिताया था ताकि समय आने पर वह सबसे मजबूत को सबसे कमजोर के साथ मिला सके।
अगली सुबह तक, समूह और भी छोटा हो गया था। अल-क़मा ने खुलासा किया कि एक टीम को पहले ही नियुक्त कर दिया गया था और वह भारतीय प्रशासित कश्मीर के लिए रवाना हो चुकी थी। मूल रूप से बत्तीस प्रशिक्षुओं में से केवल पंद्रह ही बचे थे, और अगस्त में वे लाहौर के बाहर मुरीदके के गर्म परिसर में लौट आए। शिविर के सुदूर छोर पर स्थित लश्कर के रुके हुए स्विमिंग पूल में, वे घंटों तक पानी में तैरने का अभ्यास करते रहे और गाढ़े पानी में फेंकी गई वस्तुओं को वापस निकालते रहे।
दो रंगरूटों के भाग जाने से समूह फिर से छोटा हो गया। हर कोई शहीद नहीं बनना चाहता था। अल-क़मा ने चाचा से कहा कि उसे ऑपरेशन बॉम्बे के लिए एक तारीख चाहिए। ऑपरेशन शुरू होने में जितना ज़्यादा समय लगता, लड़कों को सोचने-विचारने का उतना ही ज़्यादा समय मिल जाता।

अजमल ने बाकी लोगों के सामने माना कि वह बहुत डरा हुआ था और चाहता था कि वह अपनी माँ के साथ घर पर ही रहता। अब्दुल रहमान 'छोटा' (नन्हा) उन सभी से ज़्यादा परेशान था। मोहम्मद अल्ताफ के नाम से मशहूर वह एक ऐसे गरीब गाँव की ईंट भट्टों में काम करने वाले मज़दूरों में रहता था, जिसका सिर्फ़ एक नंबर (511) था और जो पंजाब के कपास शहर वेहारी से तीस मील दूर स्थित था। नियमों को तोड़ते हुए, छोटा ने घर पर एक दर्जन बार फ़ोन किया और उसे परिवार के एक सदस्य से लश्कर को रिश्वत देकर उसे रिहा करवाने की गुहार लगाते हुए सुना गया।
संगठन एक और नए सदस्य को खोना नहीं चाहता था, इसलिए अबू शोएब को हताश छोटा का मार्गदर्शन करने का आदेश दिया गया। अठारह वर्ष की आयु में सबसे कम उम्र का होने के बावजूद, शोएब अपने घुंघराले काले बालों, घनी भौहों और छोटे जबड़े के साथ एक जुझारू योद्धा के रूप में उभरा था। शहादत पर एक व्याख्यान के बाद, अल-क़मा ने पूछा कि क्या कोई डरा हुआ है। शोएब ने अपना हाथ उठाया। उसने कक्षा से कहा, 'डरने की क्या बात है जब इस जीवन में आगे देखने के लिए केवल मृत्यु ही है?'
अल-क़मा ने उन सभी को इकट्ठा किया, शांति की प्रतीक्षा की और उनसे आंखें बंद करने को कहा। उन्होंने उनसे कहा, 'एक भाई जिहाद के लिए अपने प्राणों से बढ़कर कुछ नहीं दे सकता। और उसका प्रतिफल अनंत होगा।'

सितंबर 2008 – कराची

महीने की शुरुआत में, आशंकित अजमल कसाब और बारह अन्य लोगों को कराची जाने वाली ट्रेन में बिठाया गया, उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उन्हें कहाँ तैनात किया जाएगा। इस समूह में अजमल के साथी उमर, अब्दुल रहमान और शोएब भी शामिल थे, और उन्हें 'अज़ीज़ाबाद' नामक एक गुप्त स्थान पर रखा गया था। यह कराची के मध्य में स्थित एक पॉश इलाके का नाम था, और लश्कर ने इसका इस्तेमाल जासूसों को गुमराह करने के लिए किया, क्योंकि उनका 'अज़ीज़ाबाद' वास्तव में यूसुफ गोठ में एक गुप्त परिसर में था, जो पाकिस्तान के अशांत तटीय महानगर कराची के सुदूर उत्तर में स्थित एक जिला है। यदि संख्या में सुरक्षा होती है, तो रोशनी के शहर कराची में, 21 मिलियन वैध निवासियों के बीच, कुछ भी छिपाया जा सकता है।

अजीजाबाद किसी आम पारिवारिक घर जैसा दिखता था। लेकिन इसके घुमावदार लोहे के दरवाजों और हमेशा बंद रहने वाले पर्दों के पीछे छात्रावास और एक कक्षा थी, जिसमें नेविगेशन प्रशिक्षण पुस्तिकाओं का भंडार था, जिन्हें आईएसआई के डबल एजेंट 'हनी बी' ने हासिल किया था। दीवार पर भारतीय तटरेखा का एक नक्शा लगा हुआ था। आराम के लिए, जिहादी पत्रिकाओं और पर्चों की एक छोटी सी लाइब्रेरी थी, जिसमें लश्कर की शुरुआती किताब, 'हम जिहाद क्यों कर रहे हैं?' भी शामिल थी। लेकिन सैन्य प्रशिक्षण शिविरों के बाद लड़कों के लिए खाली बैठना मुश्किल हो गया था। चूंकि रमज़ान का पवित्र महीना भी शुरू हो चुका था, इसलिए टीम रोज़ा रख रही थी, जिससे सबकी चिड़चिड़ाहट और बढ़ गई थी। जब वे प्रशिक्षण सत्रों में भाग नहीं ले रहे होते थे, तो वे ज्यादातर सोते रहते थे, सूर्यास्त तक समय बिताते थे - जब वे खाना खा सकते थे।
मुरीदके से एक प्रशिक्षक, अबू हमज़ा, उनके साथ शामिल हो गया। हालाँकि वह संगठन में एक मामूली सिपाही था, लेकिन ऑपरेशन बॉम्बे के लिए वह एकदम सही था। उसका असली नाम सैयद ज़बीउद्दीन अंसारी था और वह जन्म से 28 वर्षीय भारतीय था, जिसका पालन-पोषण मध्य महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में हुआ था। वह मुंबई को अच्छी तरह जानता था। मराठी, हिंदी और उर्दू में धाराप्रवाह बोलने वाला वह किशोरावस्था में ही पाकिस्तान चला गया था और दक्षिणी पंजाब में बस गया था। 2002 में गुजरात में हुए विनाशकारी मुस्लिम विरोधी दंगों के टीवी फुटेज देखकर वह कट्टरपंथी बन गया और लश्कर में शामिल हो गया। 2006 में उसे हथियारों का जखीरा इकट्ठा करने और कई बम धमाकों में मदद करने के लिए वापस भारत भेजा गया। उसकी कार्यकुशलता कमजोर थी, एक साल के भीतर ही उसकी पहचान उजागर हो गई, उसके कई साथी मुजाहिदीन मारे गए और जेल में डाल दिए गए, जिससे लश्कर के पास उसे बांग्लादेश के रास्ते पाकिस्तान वापस भेजने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। यह एक खर्चीला ऑपरेशन था, जिसके कारण संगठन की सूरा उसे निष्कासित करने के लिए उत्सुक थी।
लेकिन अब, हमज़ा नाम का इस्तेमाल करते हुए, उसे एक ऐसा काम करने का दूसरा मौका मिला जिसे यह दुर्घटना-ग्रस्त भारतीय मुजाहिद भी नहीं बिगाड़ सकता था। हमज़ा ने अजमल और उसकी टीम को कामचलाऊ मराठी और हिंदी सिखाना शुरू किया ताकि वे टैक्सी ड्राइवर से बात कर सकें और रास्ता पूछ सकें। भारत लड़कों के लिए एक डरावना और अनजान विषय था, इसलिए हमज़ा ने उन्हें हिंदू जाति व्यवस्था, खान-पान और प्रार्थना करने का तरीका भी समझाया। उसने

उन्हें भारत की संस्कृति से परिचित कराया, जबकि अजीजाबाद के बाहर लश्कर का खरीद अभियान तेज हो गया था।
अप्रैल 2008 से, लश्कर ने ऑपरेशन बॉम्बे के लिए 2,168,000 रुपये (14,000 पाउंड) की धनराशि जमा कर ली थी। यह संगठन आईएसआई द्वारा संरक्षित होने का इतना आदी हो चुका था कि इसके मुख्य सूत्रधार ने छद्म नाम का उपयोग करने की भी जहमत नहीं उठाई और कराची के ड्रिघ कॉलोनी स्थित एलाइड बैंक में अपने निजी खाते में धनराशि जमा रखी।
उस धनदाता ने लश्कर प्रशिक्षकों के लिए सुरक्षित ठिकाने किराए पर लिए, जिनमें से दस ऑपरेशन बॉम्बे को चलाने में सहायता करेंगे। उसने कराची स्थित एआरजेड वाटर स्पोर्ट्स से आउटबोर्ड इंजन खरीदने के लिए लश्कर के एक लेफ्टिनेंट और पंजीकृत नाव संचालक को 1,80,000 रुपये (1,175 पाउंड) दिए। उसने सोलह लाइफ जैकेट, एक एयर पंप, इन्फ्लेटेबल डिंघी और अल-हुसैनी नामक एक नाव खरीदी, जो एक कानूनी वाहक थी और जिसके पास पाकिस्तान सीमा शुल्क द्वारा जारी पोर्ट क्लीयरेंस सर्टिफिकेट (पीसीसी) बीएफडी-5846 था। बैकअप के तौर पर, उसने 80,000 रुपये (522 पाउंड) नकद देकर एक दूसरी छोटी नाव, अल-फौज खरीदी और तीसरी नाव, अल-अत्ता, किराए पर ली। इसके बाद उसने चौदह नाविकों की भर्ती की और लश्कर के एक हमदर्द को तिंदल (नाव चालक) के रूप में नियुक्त किया, जिसे हकीम-साहब का कोडनेम दिया गया था। वे हकीम पर भरोसा कर सकते थे क्योंकि उसने पिछले वर्ष तस्करी अभियानों में उनकी मदद की थी। नाव संचालक के पिता, जिन्हें ‘हाजी’ के नाम से जाना जाता था, को भी नाव उतारने के लिए उपयुक्त स्थान खोजने का काम सौंपा गया। उन्होंने गोठ अली नवाज़ शाह गाँव में, जो विशाल शहर के दक्षिण-पूर्वी छोर से कुछ दूर स्थित था, 48 एकड़ ज़मीन पर पाँच फूस की झोपड़ियाँ और एक तीन कमरों वाला ईंट का मकान चुना। अरब सागर में गिरने वाली एक छोटी नदी से एक मील से भी कम दूरी पर स्थित यह स्थान नौकायन और नावों में चढ़ने-उतरने की बुनियादी बातें सीखने के लिए आदर्श था। यहाँ रंगरूट डूबने या नज़रअंदाज़ होने के डर के बिना अप्रत्याशित खुले पानी के लिए तैयारी कर सकते थे। तटरक्षक बल असामान्य रूप से ऊंची लहरों की सूचना दे रहा था, जिनमें विशाल लहरें तटों से टकरा रही थीं। अखबार मृत्यु सूचनाओं से भरे हुए थे।
कराची पहुँचने के दो दिन बाद अजमल और बाकी लोग घूमने निकले। बाहर आकर उन्हें बहुत खुशी हुई और उन्होंने बड़ी खुशी से छोटी नावों में हवा भरने

और निकालने, उन्हें पलटने और सीधा करने, और पानी में डूबने के बाद अपने हथियारों को साफ करने, सुखाने और तेल लगाने का अभ्यास किया। उन्होंने गुलाबी फोम से भरे बड़े-बड़े जस्ता के बक्से खोले। उनमें डेटोनेटर, चिपचिपे आरडीएक्स विस्फोटक के डिब्बे, ग्रेनेड और कारतूस थे। बम बनाने की पहली कक्षा तुरंत शुरू हुई और उसके बाद वे पहली बार खुले पानी में उतरे। सूखे, बंजर इलाकों में रहने वाले और ज़मीन से घिरे लड़कों के लिए यह अनुभव बहुत डरावना रहा होगा।
तट से एक घंटे की दूरी पर, उन्हें अल-हुसैनी जहाज दिखाई दिया। नाविक हकीम साहब ने उनका जहाज पर स्वागत किया और उन्हें समुद्री मानचित्रों से परिचित कराया, साथ ही नौवहन की बुनियादी बातें समझाईं। अगले दो दिनों में, उन्होंने नाव के जीपीएस सिस्टम का उपयोग करना सीखा और मछली पकड़ने के अभियान के रूप में अपनी पहचान को और बेहतर बनाया। वे जाल फेंकते और खींचते थे, रात में पकड़ी गई मछलियों को अंगीठी पर भूनते थे, और सभी यह जानने के लिए बेताब थे कि वे कब और कहाँ जा रहे हैं।

तीन दिन बाद अल-क़मा आ पहुँचा। पहला चरण पूरा हो चुका था। उसने घोषणा की कि वह टीम को पहाड़ों की शुष्क और ठंडी जगहों पर वापस ले जा रहा है। पवित्र योद्धाओं के घर पहुँचने में चौबीस घंटे लगे, जहाँ अमीर हाफ़िज़ सईद और चाचा ज़की ने उनका स्वागत किया और उन्हें एक परेशान करने वाली खबर सुनाई। कई महीनों से साथ रह रहे और प्रशिक्षण ले रहे इस समूह को अब अलग किया जाना था। उनमें से छह को कश्मीर में एक मिशन सौंपा गया था, जिसे प्राथमिकता से पहले ही चुन लिया गया था। वे सभी बेसब्री से अपने नाम पुकारे जाने का इंतज़ार कर रहे थे। अजमल कसाब का नाम सूची में नहीं था। उसके लिए उनके मन में क्या योजना थी? लश्कर एक ऐसी मशीन की तरह था जो आत्मसंदेह को पनपने का समय ही नहीं देती थी।
अपने साथियों के चले जाने के बाद, चाचा ने तीन नए लोगों का परिचय कराया। उन्होंने समझाया, ‘ये भी तुम्हारी तरह फिदायीन हैं,’ क्योंकि वे समझ रहे थे कि नए चेहरों को समाज में ढालना कितना मुश्किल होगा। अजमल को पता चला कि नए लड़कों में से दो, फहदुल्लाह और जावेद, उसके गृह जिले ओकारा के गांवों से थे। खाना खाते समय, चौबीस वर्षीय फहदुल्लाह ने बताया कि वह कहफा बैल का भतीजा है। उसके बाएं हाथ की दो उंगलियां गायब थीं, जिसे लड़कों ने युद्ध

में लगी चोट समझा और इन तनावपूर्ण दिनों में यह बात उन्हें अजीब तरह से तसल्ली देने वाली लगी। दरअसल, यह जन्मजात दोष था, लेकिन उसके चाचा ने उसे किसी को न बताने के लिए कहा था, कहीं लोग उसे बदकिस्मत न समझ लें।
जावेद ओकारा के उत्तर में स्थित गुगेरा गांव का रहने वाला था, सात भाई-बहनों में सबसे छोटा था और उसने अपना बचपन मदरसे में बिताया था। सोलह वर्ष की आयु में उसने अपने माता-पिता को बताया कि वह लश्कर में शामिल होना चाहता है। उसके पिता, जो अनाज व्यापारी थे, बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने उसकी शादी चौदह वर्षीय पड़ोसी लड़की से कराने की कोशिश की। जावेद भाग गया और ओकारा स्थित लश्कर के जिला मुख्यालय में शरण ली। वहां से उसे चुपके से मुरीदके परिसर ले जाया गया, जहां वह प्रशिक्षण कार्यक्रम में घुलमिल गया, अपने असली परिवार से नाता तोड़ लिया और एक दूसरे परिवार में शामिल हो गया, जहां उसने अबू अली का नाम अपना लिया।
उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के इसी नाम के एक कस्बे से आए तीसरे नए सदस्य, इस्माइल खान, समूह में एकमात्र गैर-पंजाबी थे। वे रोज़े के तेरहवें दिन (रमज़ान के उपवास के दिनों के रूप में जाना जाता है) यानी 13 सितंबर तक एकांत में रहे, जब अमीर हाफ़िज़ सईद मेजर जनरल के साथ वापस लौटे।
‘जिहाद का समय आ गया है,’ अमीर ने अपने परिचित अंदाज़ में, सीने पर हाथ रखकर, गंभीर स्वर में घोषणा की। अजमल को उसके बाद की खामोशी याद आई, मानो सबने गहरी साँस ली हो। ‘तुम्हें भारत की मुख्य भूमि पर हमला करना है।’ अजमल, जिसने हमेशा यही माना था कि वह भारतीय प्रशासित कश्मीर की ओर बढ़ रहा है, स्तब्ध रह गया। इससे पहले कि वह जानकारी को समझ पाता, चाचा ज़की बोलने के लिए आगे बढ़े। ‘भारत की आर्थिक शक्ति बॉम्बे के गढ़ में निहित है। तुम्हें समुद्री मार्ग से हमला करना है।’ अजमल ने चारों ओर देखा और पाया कि बाकी लोग भी उतने ही हैरान थे। लश्कर के अभियान शायद ही कभी भारत के बड़े शहरों में जाते थे। उसके पीछे, मेजर जनरल ने चौड़ी मुस्कान बिखेरी। लश्कर के कमांडर के आगे बोलने से पहले उन्होंने ज़की के कान में फुसफुसाया: ‘क्या तुम सब तैयार हो?’ कमरा सन्नाटे में डूबा रहा। ज़की ने फिर कोशिश की: ‘मेजर जनरल साहब देखना चाहते हैं कि तुम कितने तैयार हो।’
वह कांपते हुए लड़कों को बाहर ले गया और उन्हें एके-47 राइफलें और गोलियां दीं। ज़ाकी ने आदेश दिया, 'बंदूकें भरो और निशाने पर गोलियां बरसाओ। जितनी

चाहो उतनी गोलियां चलाओ।' दसों लड़कों ने अंधाधुंध गोलियां बरसाईं, जब तक कि उनकी आंखों से आंसू बहने लगे।
फिर उन्हें शिविर के एक ऐसे हिस्से में ले जाया गया जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। वे एक ऐसे कमरे में पहुँचे जो टीवी और दुनिया भर की राजधानियों के नक्शों से भरा हुआ था। यह लश्कर का डेटा सेंटर था और वहाँ उनकी मुलाकात संगठन के मीडिया प्रमुख अबू ज़रार शाह से कराई गई। उन्होंने पिछले कुछ महीनों में एक पोर्टेबल संचार नेटवर्क तैयार किया था, जिसे दुबई, कराची और खाड़ी देशों से लश्कर द्वारा भर्ती किए गए युवा, बेरोजगार आईटी स्नातकों की एक टीम ने डिज़ाइन किया था और जिसका कोडनेम 'द आउल्स' था। इंटरनेट टेलीफोनी का प्रयोग करते हुए, 'आउल्स' ने मुंबई में उतरने के बाद हमलावरों को दूर से नियंत्रित करने के लिए एक अदृश्यता का जाल तैयार किया था, ताकि लश्कर की संलिप्तता को छिपाया जा सके। ज़ारर के आदमियों ने न्यू जर्सी की कंपनी कॉल-फोनेक्स से इंटरनेट फोन लाइनें और फोन नंबर किराए पर लिए थे। यह वैध सेवा प्रवासी ग्राहकों के बीच लोकप्रिय थी, जिन्हें स्काइप जैसी वीओआईपी प्रणाली का उपयोग करके हजारों मील दूर परिवार और दोस्तों को सस्ते कॉल करने की आवश्यकता होती थी। मुंबई में हमलावर स्थानीय, प्रीपेड भारतीय सिम कार्ड का उपयोग करके ऑस्ट्रिया में किराए पर लिए गए अंतरराष्ट्रीय नंबरों पर डायल कर सकते थे, जो कॉल को कॉलफोनेक्स के माध्यम से पाकिस्तान भेज देते थे। भारतीय जांचकर्ताओं के लिए इसका पता लगाना मुश्किल होगा, क्योंकि अमेरिकी केंद्र के बाहर सब कुछ अदृश्य था। कॉलफोनेक्स के साथ लेन-देन ऑनलाइन हुआ था। ज़ारर ने खुद को भारत में स्थित एक पुनर्विक्रेता के रूप में पेश किया था। पैसा वायर ट्रांसफर के ज़रिए भेजा गया था, जिससे इस्लामाबाद से होने के कारण संदेह पैदा हो सकता था। लेकिन तब तक ऑपरेशन शुरू हो चुका था। अजमल ने याद करते हुए कहा, 'ज़ारर शाह को कंप्यूटर का बहुत अच्छा ज्ञान था।' वह उन उपकरणों को देखकर अचंभित था, जिन्हें देखकर उसे चिंता हो रही थी कि वे सभी के लिए समझना बहुत मुश्किल होगा। ज़ारर ने उसे आश्वस्त किया कि उसे अपने नोकिया फोन पर हरे कॉल बटन को दो बार दबाने के अलावा कुछ नहीं करना होगा, और वह पाकिस्तान में अपने लश्कर के हैंडलर्स से जुड़ जाएगा।
उल्लुओं के पास एक और सरल विचार था। ज़ारर ने अजमल को दिखाया कि वह गूगल अर्थ का उपयोग करके एक ऐसे शहर में ज़ूम करके घूम रहा है जहाँ उनमें से कोई

भी पहले कभी नहीं गया था, और गलियों के स्तर पर शहर का भ्रमण कर रहा था। एक बार जब उनके व्यक्तिगत मिशन आवंटित हो जाएंगे, तो गूगल अर्थ उनका मार्गदर्शक, साथी और टूर ऑपरेटर होगा।
बाहर ले जाकर, क़हाफ़ा (बुल) और अल-क़मा ने उन्हें दो-दो की पाँच टीमों में बाँट दिया, जो फ़िदायीन की एक पारंपरिक रणनीति थी। क़हाफ़ा और अल-क़मा ने पुरुषों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया था और ऐसे लोगों की पहचान करने के लिए कड़ी मेहनत की थी जो एक-दूसरे के पूरक हों। पहली टीम अजमल कसाब और इस्माइल की थी, जिसमें इस्माइल एक दृढ़ निश्चयी नेता था, जो अजमल को संभाल सकता था, क्योंकि लश्कर को डर था कि अजमल पलट सकता है या भाग सकता है। दूसरी टीम उमर और आकाश की थी, जो इसी तरह संतुलित थे। तीसरी टीम: शोएब और उमर। चौथी टीम: अब्दुल रहमान 'बड़ा' और अली। और पाँचवीं टीम: अब्दुल रहमान 'छोटा' और फ़हदुल्लाह, जो क़हाफ़ा का भतीजा था।
हमले की योजना रोज़े के सत्ताईसवें दिन, 27 सितंबर 2008 को बनाई गई थी, जिसका मतलब था कि उनके पास सिर्फ़ दो हफ़्ते का समय था। 'तुम एक भारतीय नाव को अगवा करके मुंबई पहुँचोगे।' लड़के घबरा गए, अजमल को समझ नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे होगा या उसकी क्या भूमिका होगी। अरब सागर से वे सब डरते थे। समुद्री अपहरण का विचार ही भयानक था। लंगर उठाना, लहरों वाले पानी में अकेले नाव चलाना, किसी अनजान तट पर उतरना, रात में किसी अनजान शहर में घुसना, ये सब बातें उसे परेशान कर रही थीं। इससे भी बुरा यह था कि हमले की प्रस्तावित तारीख उसका इक्कीसवाँ जन्मदिन भी था।
अंत में, ज़ाकी ने लक्ष्यों के नाम बताए, जिनमें से अधिकांश के बारे में उन्होंने कभी सुना भी नहीं था: छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, मालाबार हिल, लियोपोल्ड कैफे, ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल, चाबाद हाउस और ताज होटल। दो-दो सदस्यों की दो टीमें अंतिम, सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करेंगी।
उनका मकसद अमेरिका, ब्रिटेन और इज़राइल के ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को घायल करना और जान से मारना था, 'क्योंकि इन देशों ने मुसलमानों पर बहुत अत्याचार किया है'। उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना था कि 'इस हमले में किसी भी मुसलमान की जान न जाए'। ज़्यादा से ज़्यादा अफरा-तफरी मचाने के लिए, हर हमलावर अपने साथ एक RDX बम भी रखता और उसे किसी भीड़भाड़ वाली जगह पर लगाता, जिससे ऐसा लगे कि शहर में दस से कहीं ज़्यादा फ़िदायीन फैले हुए

हैं। हमला शाम 7:30 बजे शुरू होना था, जो दिन का सबसे व्यस्त समय होता है। अल-क़मा ने बताया कि यह मिशन देखने में भले ही मुश्किल लग रहा था, लेकिन इसकी बुनियादी योजनाएँ सरल थीं। उन्होंने बारी-बारी से हर टीम को फ़ोन करके उनके खास लक्ष्य के बारे में चुपचाप जानकारी दी।
अजमल और इस्माइल सीएसटी पर यात्रियों को कुचलते हुए मलाबार हिल की ओर बढ़ते, जहाँ वे अमीरों को अपना शिकार बनाते। शोएब और उमर लियोपोल्ड कैफे में असॉल्ट राइफलों और ग्रेनेडों से पर्यटकों की हत्या करते, फिर अब्दुल रहमान 'बदा' और अली के साथ मिलकर ताज होटल पर हमला करते, जिसे वे आग लगाकर बंधक बना लेते।
उमर (असली नाम नासिर) और अकाशा चाबाद हाउस को घेर लेंगे, यहूदियों को बंदी बना लेंगे और आदेश मिलने पर उन्हें मार डालेंगे। फहदुल्लाह और अब्दुल रहमान 'छोटा' ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल पर धावा बोलेंगे, मेहमानों और कर्मचारियों को मार डालेंगे और फिर लोगों को बंदी बना लेंगे।
प्रत्येक टीम को उनके लक्ष्य के वीडियो दिखाए गए, जिन्हें डेविड हेडली ने महीनों पहले फिल्माया था। उन्होंने उस जटिल मानचित्र का अध्ययन किया जिसे बनाने में हेडली ने मदद की थी, जिसमें जीपीएस वेपॉइंट्स अंकित थे, जो दिखाते थे कि समुद्र मार्ग से, टैक्सियों से और पैदल चलकर लक्ष्यों तक कैसे पहुंचा जा सकता है। ताज होटल में प्रवेश करने वालों को एक 3 डी एनिमेशन दिखाया गया जिसे ज़ारर ने गूगल अर्थ पर खोजा था और होटल ने मार्केटिंग टूल के रूप में इसके लिए भुगतान किया था। इसकी मदद से वे महल के दक्षिणी और उत्तरी भागों में घूम सके, टावर के चारों ओर चक्कर लगा सके, साथ ही प्रवेश और निकास द्वारों के पास से होते हुए मेरी वेदर रोड पर लियोपोल्ड कैफे की ओर जा सके।
क़हाफ़ा ने बोलना शुरू किया। घुलमिल जाने के लिए, प्रत्येक फ़िदायीन को हिंदू नामों वाले नकली पहचान पत्र दिए जाते थे, जिनमें उन्हें हैदराबाद के अरुणोदय डिग्री कॉलेज का छात्र दिखाया जाता था। उन्हें अपने नए पहचान पत्रों को याद करने के लिए कहा जाता था। 'कोई आप पर शक नहीं करेगा। यहां तक कि पुलिस भी गुमराह हो जाएगी।'
सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि प्रशिक्षक – क़हाफ़ा बैल, अल-क़मा और हमज़ा, साथ ही ज़रार शाह – पूरी यात्रा के दौरान टीम के साथ रहेंगे। लश्कर एक नियंत्रण कक्ष तैयार कर रहा था जिसमें फ़ोन, कंप्यूटर, टीवी स्क्रीन और

मुंबई के विस्तृत नक्शे मौजूद थे ताकि प्रशिक्षक पल-पल सलाह दे सकें, प्रेरित कर सकें और ऑपरेशन का मार्गदर्शन कर सकें। यह नियंत्रण कक्ष कराची के एक पॉश सैन्य छावनी क्षेत्र मलिर टाउन में स्थित होगा, जो शहर के सबसे आलीशान आवासीय इलाकों में से एक है और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास है। इस क्षेत्र में सुरक्षा सेवाओं द्वारा चौबीसों घंटे गश्त की जाती थी – इसलिए राज्य के प्रतिनिधि के रूप में काम करने वालों के लिए यह सबसे सुरक्षित स्थान था।

रोज़े के पंद्रहवें दिन, क़हाफ़ा (बुल) और भारतीय मुजाहिद हमज़ा अपने साथियों को पवित्र योद्धाओं के घर के ऊपर पहाड़ियों में ले गए ताकि वे अपना तनाव कम कर सकें। उन्हें दौड़ने और गोली चलाने, लुढ़कने और गोता लगाने का आदेश दिया गया था। गोला-बारूद की कोई कमी नहीं थी। 'जैसा चाहो वैसा करो।' उन्होंने दोपहर का समय लंच बॉक्स बम बनाने की विधि सीखने में बिताया, जिसमें चिपचिपी सफेद आरडीएक्स को गुलाबी फोम से ढकी टिफिन टिन में भरना, और एक फ्यूज और टाइमर लगाना शामिल था, जिसके बारे में अल-क़मा ने शेखी बघारी थी कि तालिबान और अल-कायदा ने अफगानिस्तान और पाकिस्तान में 2,800 हमलों में इसका इस्तेमाल किया था। फ़िदायीन ने शाम को गोलीबारी का अभ्यास किया। अल-क़मा ने फटे हुए निशानों के बीच चिल्लाते हुए कहा, 'तब तक गोली चलाओ जब तक तुम और गोली न चला सको।'

रोज़े के सोलहवें दिन नाई आया। उसने छात्र पहचान पत्र के लिए उनकी तस्वीरें खींचने से पहले उनकी हदीथी दाढ़ी और बिखरे बालों को तेज धार वाले रेज़र से काट दिया।

सत्रहवें रोज़े के दिन, टीम कराची और अज़ीज़ाबाद के सुरक्षित ठिकाने पर लौट आई। वहाँ एक उर्दू पत्रिका, 'तैयबत', पड़ी हुई थी। अजमल की नज़र उसमें छपी एक छोटी सी खबर पर पड़ी, जिसमें भारतीय प्रशासित कश्मीर में शहीद हुए छह फ़िदायीनों के बारे में बताया गया था। उसने नाम पहचान लिए और उसका दिल बैठ गया। वे उसके हाल ही में शहीद हुए साथी थे। वह इस खबर से स्तब्ध रह गया, और इस भावना को दबाने की कोशिश कर रहा था कि कहीं उनका भी यही हश्र न हो।

उसने पत्रिका को टीम से छुपा दिया। यह जानना ही काफी था। उन्हें और डराना क्यों?

रोज़े के उन्नीसवें दिन, क़हाफ़ा ने दस टाइमर बाँटे और उन्हें तैयार करने का तरीका समझाया। उन्होंने हर टीम सदस्य से एक टाइमर पर अपना नाम लिखने को कहा, मानो स्कूली बच्चों को अपने कोट पर लेबल लगाने को कहा जा रहा हो, ताकि वे उन्हें क्लोकरूम में टांग सकें। उन्होंने सीधे-सादे शब्दों में कहा, 'ये बड़े धमाकों के लिए हैं।' उन्हें वापस खाड़ी में ले जाया गया। वे अल-हुसैनी जहाज़ पर हाकिम साहब से मिलने के लिए रवाना हुए। पानी पर उनका आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा था। कप्तान ने उन्हें एक पीली inflatable स्पीडबोट चलाना सिखाया, जो मुंबई जाने के लिए उनकी लैंडिंग क्राफ्ट थी। उन्होंने उन्हें नाव का 'वाल्व निकालकर' डुबाना सिखाया और देशांतर और अक्षांश रेखाओं, यानी तुल और चौराही के बारे में बताया। रात में वे अपने कोड याद करने में जुट गए: नाम, पते, कॉलेज। वे डेक पर लेटकर तारों को निहारते रहे।
रोज़े के छब्बीसवें दिन, प्रत्येक दल के सदस्य को अच्छी तरह से पैक किया हुआ एक बैग दिया गया जिसमें लगातार आतंकवादी हमला करने के लिए पर्याप्त गोला-बारूद और चौबीस घंटे से अधिक समय तक चलने के लिए पर्याप्त भोजन और पानी था। बैग में एक कलाश्निकोव, आठ मैगज़ीन (240 राउंड), आठ हथगोले, एक संगीन, एक पिस्तौल, तीन पिस्तौल मैगज़ीन, एक पानी की बोतल, एक किलो किशमिश और बादाम का पैकेट, हेडफ़ोन, तीन नौ-वोल्ट बैटरी, एक बैटरी चार्जर और आठ किलो आरडीएक्स से भरा एक टिफिन बॉक्स था। यात्रा के लिए आपूर्ति बैग भी दिए गए जिनमें कंबल, चावल, आटा, तेल, अचार, दूध पाउडर, माचिस, डिटर्जेंट, टिशू पेपर, माउंटेन ड्यू की बोतलें, टूथपेस्ट, टूथब्रश, रेज़र और तौलिए थे। उन्हें नए पश्चिमी कपड़े दिए गए और लेबल काटने के लिए कहा गया। उन सभी को भारतीय समय के अनुसार तीस मिनट आगे सेट की हुई घड़ियाँ दी गईं। अबू हमज़ा ने प्रत्येक साथी जोड़ी को 10,800 भारतीय रुपये (£130) की आपातकालीन धनराशि, एक जीपीएस हैंडसेट और एक काले और चांदी के रंग का पहले से प्रोग्राम किया हुआ नोकिया 1200 वितरित किया। अंत में, उन लोगों ने अपनी एके-47 पिस्तौल की मैगज़ीन को टेप से बांधकर युद्ध की स्थिति में तैयार कर

लिया, जिससे वे तुरंत पलटी मार सकें। "अच्छी नींद लेना," हमज़ा ने लाइट बंद करते हुए धीरे से कहा।

27 सितंबर को वे दो छोटी नावों में सवार होकर निकले। समुद्री धाराएँ उनके चारों ओर घूम रही थीं, हवाएँ तेज़ चल रही थीं, जो उन्हें चट्टानों की ओर खींच रही थीं, नावों को डुबो रही थीं और अनुभवहीन नाविक घंटों तक अपनी लाइफ जैकेट पहने पानी में संघर्ष करते रहे, उन्हें लग रहा था कि वे मर जाएँगे, जब तक कि अंततः उन्हें बचा लिया गया, तब तक वे दिशाहीन और भयभीत थे।
कुछ रातों बाद, उन्होंने एक और नाव खरीदकर दोबारा कोशिश की। अचानक कहीं से आए भयंकर तूफान ने उन्हें घेर लिया। वे उससे पार नहीं पा सके। सैकड़ों गैलन डीजल बर्बाद हो गया और हकीम साहब ने अल-हुसैनी पर से नियंत्रण खो दिया, क्योंकि वे एक भारतीय ट्रॉलर के बहुत करीब चले गए थे, जिसने समुद्री लुटेरों के डर से उन पर गोलियां चला दीं। समुद्री बीमारी से पीड़ित पंजाबी दल पीछे हट गया। वापस ज़मीन पर आते ही, उनके युद्ध के सामान और नए कपड़े छीन लिए गए और निराश दल को अजीजाबाद वापस ले जाया गया। वे 1 अक्टूबर को ईद आने तक कुछ नहीं करते हुए बैठे रहे। अब प्रशिक्षकों ने उनका आत्मविश्वास फिर से जगाने की कोशिश की, एक भव्य दावत दी, जिसमें पूरी बकरी से बिरयानी बनाई गई। इसके बाद, दो रंगरूटों ने दिखाया कि चलती टैक्सी की सीट के नीचे बम कैसे लगाए जाते हैं, बिना किसी को शक हुए ड्राइवर को दिखाई दिए - जबकि बाकी सभी लोग देखते रहे और मीठी जलेबी खाते रहे।
फिर कुछ नहीं हुआ। छह सप्ताह तक वे निष्क्रिय बैठे रहे। अजमल दिन गिनता रहा और हताश होता चला गया। सब खाते-पीते और सोते रहे, उनकी हताशा और भय बढ़ता ही गया – घर का माहौल संदेह से भर गया। आखिरकार, 21 नवंबर को, टीम को जगाया गया और काली खिड़कियों वाली एक जीप में बिठाकर खाड़ी किनारे स्थित बेस पर ले जाया गया। उतरते ही उन्होंने देखा कि उनके योजनाकार – चाचा ज़की, हमज़ा, ज़रार, क़हाफ़ा और अल-क़मा – एक कतार में इंतज़ार कर रहे थे। युद्ध सामग्री, नकदी, मोबाइल, सैटेलाइट फ़ोन और जीपीएस मशीनें फिर से बाँटी गईं, जिसके बाद चाचा ज़की ने सभी को संबोधित किया। मौसम सुहावना था और चाँद रहित रात आने वाली थी। यही उनका अवसर था। भाई इस्माइल को समग्र नेता बनाया जाना था, जबकि उमर ताज में दो टीमों का नेतृत्व संभालेंगे। अंत में, ज़की

ने उन्हें बताया कि वह हज पर जा रहे हैं, जहाँ से वे सफलता के लिए प्रार्थना करेंगे।
‘अमीर हाफ़िज़ और हम सबने इस मिशन के लिए बहुत मेहनत की है। अब आपके प्रशिक्षण का फल मिलना चाहिए। हमने आपको सक्षम और कुशल योद्धा बनाया है।
अपना कर्तव्य निभाएं और अपने ऊपर शर्मिंदगी न लाएं।’ ज़की ने दस लोगों के उदास चेहरों को देखा। उन्होंने गंभीरता से अपने हाथ ऊपर उठाए और एक सच्चे हदीस की तरह प्रार्थना की।
अल्लाह आपकी देखभाल करे और आपकी रक्षा करे।

22 नवंबर को सुबह 5 बजे, टीमों को नमाज़ के लिए जगाया गया। सुबह 6 बजे तक, वे अपने सामान के साथ चलना शुरू कर खाड़ी तक पहुँच गए। इस्माइल को सैटेलाइट फोन दिया गया। सुबह 7 बजे, एक छोटी नाव आई और वे उसमें सवार हो गए। समुद्र की लहरें उन्हें नब्बे मिनट तक धीरे-धीरे खींचती रहीं, जब तक कि वे एक बड़े जहाज तक नहीं पहुँच गए। वे उस पर सवार हुए और कई घंटों तक यात्रा की।
उस रात 9 बजे तक उन्हें अल-हुसैनी जहाज की जानी-पहचानी आकृति दिखाई दी। जहाज पर हकीम साहब इंतज़ार कर रहे थे और उन्होंने अपने दल को किटबैग और आदमियों को डेक पर उतारने का आदेश दिया, जिसके बाद वे और तीन अन्य लोग कराची के लिए रवाना हो गए। दस हमलावर और सात दल के सदस्य अरब सागर में दक्षिण-पूर्व की ओर चल पड़े, ईंधन और मछली की गंध से उनका पेट खराब हो गया। अगली सुबह, 23 नवंबर को, वे भारतीय जलक्षेत्र में प्रवेश कर गए। अब से, अगर उनका सामना भारतीय नौसेना के गश्ती दल से होता, तो उनकी झूठी कहानी भी उन्हें नहीं बचा पाती। गुजरात की जेलें घुसपैठ करने वाले पाकिस्तानी नाविकों से भरी पड़ी थीं, जिनमें से कुछ मछुआरे भी हो सकते थे, लेकिन अदालतों ने उन्हें बख्शा नहीं और उन्हें गंदी जेलों में भेज दिया, जहाँ वे सड़ते रहे।
अंततः, उन्हें एक भारतीय मछली पकड़ने वाली नाव दिखाई दी, जिसका लकड़ी का ऊंचा अगला हिस्सा वाइकिंग युद्धपोत की तरह ऊपर उठा हुआ था, और उसके पहिए वाले हिस्से पर काले, नीले और पीले अक्षरों में उसका नाम, एमवी कुबेर, लिखा हुआ था। अब उनकी पहली परीक्षा शुरू हो गई थी। जैसे ही नाव पास आई, लश्कर के एक सदस्य ने एक टूटा हुआ पंखे का बेल्ट निकाला और उसे हवा में लहराया, मानो

वे बह रहे हों। दोनों नावें आपस में टकराईं, और फ़िदायीन भारतीय जहाज़ पर कूद पड़े, चालक दल को काबू में कर लिया, और भोले-भाले मछुआरों को अल-हुसैनी पर खींच लिया, एमवी कुबेर पर केवल भारतीय नखवा (कप्तान), अमरचंद सोलंकी को ही छोड़ दिया। अपना सामान नए जहाज़ पर स्थानांतरित करने के बाद, सोलंकी को इंजन कक्ष में घसीटकर ले जाया गया और बांध दिया गया।
अल-हुसैनी दल ने भारतीय मछुआरों के बाकी बचे सदस्यों का कत्ल कर दिया और उनके शवों को समुद्र में फेंक दिया, फिर कराची की ओर वापस मुड़ गए।
एमवी कुबेर जहाज पर, फिदायीन आखिरकार अकेले रह गए थे। सभी डेक पर गंभीर चेहरों के साथ बैठे थे, क्योंकि पहली बार भारी लहरें उठकर डेक से टकरा रही थीं। भाई इस्माइल जानते थे कि क्या करना है। उन्होंने अपना सैटेलाइट फोन चालू किया और उसमें आ रही गड़बड़ी को सुना। 'सलाम अलैकुम?' उन्होंने कोशिश की, उनकी आवाज कांप रही थी क्योंकि वे बहुत घबराए हुए थे। वे सभी फोन से डरते हुए इंतजार कर रहे थे। क्या उन्हें छोड़ दिया गया था?
फिर एक आवाज आई: 'वालेकुम अस्सलाम।'
वे खुशी से झूम उठे। कराची के मलिर टाउन स्थित नियंत्रण कक्ष से भारतीय मुजाहिद अबू हमजा की जानी-पहचानी आवाज थी। भले ही नाव डगमगा रही थी, लेकिन उन्हें छोड़ा नहीं गया था। अगले बत्तीस घंटों तक वे अधिक आशावादी होकर दक्षिण-दक्षिण-पूर्व दिशा में 309 समुद्री मील की दूरी तय करते रहे, जिससे सोलंकी को बार-बार अपनी नाव का मार्ग बदलना पड़ा और नियंत्रण कक्ष को उनकी प्रगति की जानकारी देते रहना पड़ा। टीम बारी-बारी से पहरा देती, खाना बनाती और सोती रही, और अपने ड्यूटी के समय को एक लाइन वाली स्कूल की नोटबुक में लिखती रही।
26 नवंबर को शाम 4 बजे, भारत की तटरेखा को देखकर उनका आत्मविश्वास डगमगा उठा। अजमल ने याद करते हुए बताया, 'कुछ ही देर बाद हमें बंबई की ऊंची-ऊंची इमारतें दिखने लगीं।' स्तब्ध होकर वे डेक पर खड़े रहे और देखते रह गए। शाम 6 बजे तक, उन्हें अपने सामने वो सारे सबूत नज़र आने लगे जो पाकिस्तान से कभी बाहर न निकले किसी व्यक्ति को लगभग स्थिरता और आंशिक धर्मनिरपेक्षता से प्राप्त समृद्धि के लिए चाहिए थे - ताड़ के पेड़ों, मीनारों और रोशनी से जगमगाते विलाओं का नज़ारा, नियॉन लाइटों से चमकते होटल और दफ्तर।
‘इसे जला दो। मेरे भाइयों, सब कुछ आग लगा दो,’ कराची की खाड़ी से जब छोटी नावें निकलीं तो अल-क़मा ने कहा था। क्या उसे इस बात की चिंता थी कि वे

पहुँचने पर अपना इरादा बदल सकते हैं और भागकर सफल, व्यापारिक मुंबई में गायब हो सकते हैं? ‘हमें भारतीय कप्तान का क्या करना चाहिए?’ अजमल ने सबको उनकी सोच से बाहर निकालते हुए पूछा, क्योंकि वह खुद फैसला नहीं करना चाहता था।
इस्माइल ने कराची नियंत्रण केंद्र में अबू हमजा को फोन किया। भारतीय मुजाहिद ने उनसे फैसला लेने का आग्रह करते हुए कहा, 'जो चाहो करो।' अजमल ने इस्माइल की ओर देखा और कांपते हुए फुसफुसाया, 'उसे मार डालूँ?' इस्माइल ने सिर हिलाया। शोएब और उमर ने सोलंकी के पैर पकड़े हुए थे, जबकि अजमल ने अपनी आँखें बंद कर लीं, अपना चेहरा सिकोड़ लिया, उस आदमी के बाल पकड़ लिए, और फिर अपने अंदर उमड़ रहे खौफ को छुपाते हुए उसका गला काट दिया।
उन्होंने एक सीमा पार कर ली थी। वे सभी खून से लथपथ थे।
डेक के ऊपर, पीले रंग की हवा भरी नाव तैयार थी। उसे समुद्र में उतारने से पहले, उन्होंने प्रार्थना की और नए कपड़े पहने। इस्माइल ने हेडली को पहचान पत्र और लाल हिंदू धागा दिया, जो उन्होंने मुंबई के श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर से खरीदा था। यह एक बहुमंजिला क्रीम रंग का गणेश मंदिर है, जो बॉलीवुड सितारों के बीच लोकप्रिय है।
पाकिस्तान को उनकी मातृभूमि बताने वाले कुछ ही निशान मिट चुके थे और उन्हें जानबूझकर कमजोर करने की प्रक्रिया में गुमनाम शहीदों में बदल दिया गया था, जिसमें उनकी इच्छाशक्ति और आत्मसम्मान धीरे-धीरे खत्म होते गए, यहाँ तक कि वे अपनी मौत के लिए शुक्रगुजार महसूस करने लगे। बादाम के तेल से चिकने किए हुए बालों वाले अन्य लोगों को देखकर अजमल को याद आया कि कुछ पल के लिए वह उन्हें पहचान नहीं पा रहा था। उसने सोचा, वे एक अरब लोगों में से कोई भी हो सकते थे। लेकिन वे कोई नहीं थे।
यामाहा इंजन की गर्जना के बीच, भाई इस्माइल ने एक जीपीएस को ऊपर उठाए रखा, मानो वह नाव का अग्रभाग हो, जो उन्हें बधवार पार्क की अंधेरी झोपड़ियों और मछुआरों की बस्ती की ओर मार्गदर्शन कर रहा था, जिसे डेविड हेडली ने आदर्श लैंडिंग स्पॉट के रूप में चिह्नित किया था।
इंजन बंद होने से पहले इस्माइल चिल्लाया, 'चलो हम सब पर कलंक न लगाएं,' और नाव मछली पकड़ने वाली नावों के बीच से सरकती हुई किनारे की ओर बढ़ने लगी। आगे अजमल को दबी हुई आवाज़ें सुनाई दे रही थीं और तली हुई मछली और मेथी की महक से उनके पेट में गुड़गुड़ाहट होने लगी। उन्होंने अपनी आँखों को

धुंधलके में अभ्यस्त होने दिया और अपने कानों को विदेशी लहजों को समझने का समय दिया। एक टीवी ज़ोर से बज रहा था, जिस पर भारत-इंग्लैंड क्रिकेट मैच चल रहा था। आगे की झोपड़ियों में शराबियों की एक शोरगुल भरी भीड़ जमा थी, जिनकी परछाइयाँ इधर-उधर हिल रही थीं।
जैसे ही वह किनारे पर कूदा, अजमल को चाचा ज़की का विदाई आशीर्वाद याद आया: 'अल्लाह तुम्हारे दिल की हर दुआ पूरी करे।' धड़कता दिल और आँखों में आँसू लिए वह तेजी से स्लिप पर चढ़कर शहर की ओर भागा।

एक घंटे बाद, डेविड हेडली को एक एसएमएस मिला। एम 1 (शाज़िया) शिकागो में थीं और वह एम 2 (फ़ैज़ा) के साथ लाहौर के एक किराए के अपार्टमेंट में थे।
संदेश में लिखा था, 'अपना टीवी चालू करो।' संदेश भेजने वाला साजिद मीर था।
कुछ ही देर बाद एम 1 का एक और संदेश आया। शाज़िया भी टीवी देख रही थीं और उन्होंने अपने पति को 'ग्रेजुएशन' की बधाई दी।

5

मेमने और मुर्गियाँ

बुधवार, 26 नवंबर 2008, रात 11.30 बजे – ताज होटल

उपमहाद्वीप के कोने-कोने से आए कैमरा क्रू ताज महल के चारों ओर मंडरा रहे थे, रिपोर्टर, एंकर और उनके प्रोड्यूसर इसके चारों ओर की गलियों में जमा थे, उनके किटबैग बिखरे पड़े थे और केबलें उलझी हुई थीं। सीएनएन-आईबीएन के एक रिपोर्टर ने डैशियल हैमेट के अंदाज़ में गरजते हुए कहा, 'बुधवार रात अभूतपूर्व आतंकी हमले ने उस शहर को घुटनों पर ला दिया है जो कभी सोता नहीं, और महानगर के दक्षिण से उत्तर तक के इलाकों को अपनी चपेट में ले लिया है।' हर कोई अपनी बात सुनाने के लिए चिल्ला रहा था, अपनी फ्लडलाइट्स से रात के आसमान को रोशन कर रहा था, और एक-दूसरे की नज़रों में घुस रहा था।
टावर के सबसे ऊपरी हिस्से में स्थित मिलन कक्ष में अपने ऊंचे स्थान से, मरीन कप्तान रवि धरणीधरका ने हताशा से नीचे के दृश्य को देखा। किसी ने भी घेराबंदी क्यों नहीं की थी? सब कुछ बेकाबू लग रहा था। बस एक ही चीज़ गायब थी, और वो थी सबसे ज़रूरी चीज़: बचाव वाहनों की बत्तियाँ कहाँ थीं? मुंबई में सुरक्षा एजेंसियों से कई बार संपर्क कर चुके अनुभवी बॉब निकोल्स को आशंका थी कि जब भी मदद आएगी, बहुत कम और बहुत देर से आएगी। उन्होंने चेतावनी दी, 'हमें खुद ही अपना बचाव करना होगा।'
नीचे, महल की तीसरी मंजिल पर, विल और केली एक-दूसरे को पकड़े बैठे थे, और कमांडो के आने और उन्हें बचाने की आवाज़ सुनने का इंतज़ार कर रहे थे। 'ऐसा ही होता है, है ना?' विल ने पूछा।
डेढ़ मील दूर, कमिश्नर गफूर ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल के बाहर अपनी स्टाफ कार में बैठे थे, नियमों का पालन करते हुए, जिसके अनुसार उन्हें मैदान में एक

सुरक्षित स्थान से नेतृत्व करना था। लेकिन वे और उनकी अग्रिम पंक्ति की सेनाएँ भयभीत शहर के घिरे हुए नागरिकों और उसके मेहमानों के लिए अदृश्य बनी रहीं। विशेषज्ञ त्वरित प्रतिक्रिया दल अंततः शहर के केंद्र तक पहुँच गए थे, लेकिन उन्हें प्रेस को नियंत्रित करने का काम सौंपा गया, हालाँकि उनकी संख्या इतनी कम थी कि वे पीछे हट गए, उदासीन और हतोत्साहित। पुलिस और सैनिकों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ होटल के चारों ओर बेतरतीब ढंग से चक्कर लगा रही थीं, जैसे पार्क में साइकिलें, गफूर के निर्देश का पालन करते हुए कि घिरे हुए भवनों के अंदर मौजूद बंदूकधारियों से मुकाबला न करें। उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी), भारत के विशिष्ट आतंकवाद-विरोधी बल के आने तक पीछे हटना था - राकेश मारिया ने लगभग तुरंत ही इसकी मांग की थी। 'इसे सही एजेंसी को संभालने दें,' कमिश्नर ने तर्क दिया, जिससे पूरा आपातकालीन प्रतिक्रिया नेटवर्क ठप्प हो गया।
मुंबई में किसी को इस बात का एहसास नहीं था कि एनएसजी अभी भी दिल्ली के पास स्थित अपनी बैरक में ही थी, जो कि तीन घंटे की हवाई यात्रा की दूरी पर थी, और उसे तभी जुटाया जा सकता था जब महाराष्ट्र सरकार मदद का अनुरोध करती। फिर भी, राज्य के अधिकारी यह मानने को तैयार नहीं थे कि वे स्थिति से निपटने में असमर्थ हैं। मार्कोस, जो ब्रिटेन की स्पेशल बोट सर्विस या अमेरिकी नौसेना सील्स के समकक्ष भारतीय बल है, अधिक सुलभ थे, जिनके कुछ जवान कोलाबा में पास ही तैनात थे। वे सचमुच दौड़ते हुए ताज होटल तक पहुँच सकते थे। लेकिन इसके लिए महाराष्ट्र सरकार को पश्चिमी नौसेना कमान से औपचारिक रूप से संपर्क करना आवश्यक था। वहाँ, अधिकारियों को पहले से ही कुछ आशंकाएँ थीं, और उन्होंने उच्च स्तरीय गुप्त चर्चाओं में स्पष्ट कर दिया था कि मार्कोस इस लड़ाई के लिए उपयुक्त नहीं हैं। समुद्री डाकुओं के खिलाफ कार्रवाई में प्रशिक्षित ये मरीन सैनिक 30 किलो के भारी किट में बंधे हुए, उफनते समुद्र में हेलो ड्रॉप करने में सहज थे, प्रत्येक सैनिक की पीठ पर एक धनुष होता था जिससे वे चुपचाप जहाज के डेक पर तैनात संतरियों को मार गिरा सकते थे। लेकिन एक पांच सितारा होटल उनके लिए अनजान इलाका था। बंदूकधारियों को ताज होटल में प्रवेश किए दो घंटे से अधिक समय हो चुका था, और अब तक केवल छह पुलिसकर्मी ही उनके पीछे अंदर गए थे, जिनका नेतृत्व जोन 1 के पुलिस उपायुक्त विश्वास पाटिल कर रहे थे।

अंदर, पाटिल, राजवर्धन (एसबी2 के प्रमुख) और उनकी छोटी टीम होटल के जटिल लेआउट को लेकर अभी भी असमंजस में थे, जबकि बंदूकधारियों को इसकी कहीं बेहतर समझ थी और वे इसका फायदा उठाते हुए 567 कमरों में अंधाधुंध गोलीबारी कर भाग रहे थे। हाल ही में ब्लैक सूट्स ने स्थिति को और जटिल बनाने का एक उपाय सुझाया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि पैलेस की दूसरी मंजिल पर स्थित होटल के सीसीटीवी कमरे से ऊपर से पूरा दृश्य देखा जा सकता है।
पाटिल ने राजवर्धन से सलाह ली, जिन्होंने पिछले आधे घंटे में होटल के सभी निकास द्वार बंद कर दिए थे, लिफ्टों को निष्क्रिय कर दिया था और भूतल की दुकानों और रेस्तरां में छिपे सैकड़ों मेहमानों को सुरक्षित निकाल लिया था। वह तलाशी के लिए तैयार थे, लेकिन उन्होंने चेतावनी दी कि ऊपर जाने के लिए उन्हें एक गाइड की आवश्यकता होगी। टावर की लॉबी को खाली कराने में मदद करने वाले ब्लैक सूट पहने पुरु पेटवाल ने स्वेच्छा से मदद की पेशकश की। पेटवाल और पुलिस दल सावधानी से महल की लॉबी में दाखिल हुए, और लगभग तुरंत ही एक कान फाड़ देने वाले धमाके ने उन्हें ज़मीन पर गिरा दिया। बंदूकधारी ग्रैंड स्टेयरकेस के ऊपर थे और नीचे ग्रेनेड फेंक रहे थे। लुढ़कते हुए पेटवाल ने एक वैकल्पिक रास्ता सुझाया और घबराए हुए दल को आग से बचने वाले निकास द्वार से ऊपर ले गए। राजवर्धन गालियां दे रहा था। पेटवाल के पास सिर्फ उनका मोबाइल फोन था। किसी के पास बॉडी आर्मर या हेलमेट नहीं था। कांस्टेबलों और इंस्पेक्टरों की पुलिस टीम के पास लगभग पचास गोलियां थीं। दोनों डीसीपी के पास सिर्फ साइड आर्म्स थे, जो आमने-सामने की लड़ाई के अलावा लगभग बेकार थे। उनका सामना पूरी तरह से हथियारों से लैस लोगों से हुआ।
'हाई-पावर 9mm पिस्टल से आप भरोसेमंद तरीके से सिर्फ खुद को ही मार सकते हैं,' राजवर्धन ने अपने बैचमेट से फुसफुसाते हुए कहा, पिस्टल निकालने के पुराने प्रशिक्षण मंत्र को याद करते हुए, जब वे ताज डेटा सेंटर के पास से गुजरते हुए दक्षिणी विंग की दूसरी मंजिल पर दौड़ रहे थे।

अंदर, फ्लोरेंस मार्टिस घबराई हुई थी। फॉस्टीन ने आखिरकार रात 10 बजे उससे बात करने की कोशिश की और उसे धीरे से समझाने का प्रयास किया। उसने कहा, 'डरो मत, लेकिन इमारत के अंदर बंदूकधारी हैं। तुम्हें छिप जाना

चाहिए।' फॉस्टीन ने अपनी बेटी को शांत करने की कोशिश की: 'डेटा सेंटर होटल के नक्शे पर नहीं है। किसी बाहरी व्यक्ति को पता नहीं चल सकता कि वह वहां है। मैं तुम्हारे लिए आऊंगा। क्या तुम सुन रही हो?'
लेकिन फ्लोरेंस डरी हुई थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोला की बोतल को हिलाकर रख दिया गया हो। उसने घबराकर चारों ओर देखा: तीन दीवारों के साथ डेस्क, आधा दर्जन कुर्सियाँ, कुछ टर्मिनल और एक प्रिंटर, दो पुराने सीधे पंखे। एक छोटा सा स्टेशनरी कमरा था, जहाँ वे अपनी जैकेट टांगते थे, और एक सर्वर रूम था। वह सर्वर रूम में दाखिल हुई, तभी उसका फोन बज उठा। 'हैलो?' यह उसकी माँ, प्रिसिला थी। 'तुम कहाँ हो?' उसने पूछा। 'माँ, मैं अपने ऑफिस में फँस गई हूँ।' फ्लोरेंस की आँखों में आँसू आ गए, यह सोचकर कि वह सोफे पर अपनी माँ की बाहों में सिमटी हुई है। लेकिन इस समय उसे प्रेरणा की ज़रूरत थी, सांत्वना की नहीं।
फ्लोरेंस ने मन को शांत करने के लिए एक विचार खोजने की कोशिश की, और अंत में उसे रविवार के दिन फॉस्टीन की याद आई, यही एक समय था जब वे सब एक साथ होते थे। वह इडली (स्वादिष्ट चावल के केक) पका रहा था, और पीछे वाले कोने में मटन का स्टू पक रहा था। बाद में, वे सेंट लॉरेंस चर्च में प्रार्थना के लिए जाते, जहाँ वे हमेशा एक ही बेंच पर बैठते थे। उसने कल्पना की कि वह अपने पिता के साथ चर्च में प्रवेश कर रही है और उपस्थित लोगों का अभिवादन कर रही है।
उसने बत्तियाँ बंद कर दीं, दरवाज़ा बंद कर दिया और अँधेरे में बैठकर अपने पिता के आने की प्रार्थना करने लगी। अचानक सारे फ़ोन बजने लगे। क्या ये बंदूकधारी थे जो बंधकों की तलाश में थे? वह सर्वर रूम से निकलकर स्टोररूम में चली गई और कोटों के पीछे छिप गई। लेकिन वहाँ उसे घुटन महसूस हो रही थी। चारों ओर तोड़फोड़ और टूटने-फूटने की आवाज़ें आ रही थीं। उसने अपने कान ढँक लिए। पास ही कोई दरवाज़ा तोड़ रहा था। क्या वह यह सब कल्पना कर रही थी या यह सचमुच हो रहा था? नीचे से गोलियों की आवाज़ें सुनाई दीं, शायद पूल के पास से। तोड़फोड़ बंद हुई और उसे बातचीत की आवाज़ें सुनाई दीं। आवाज़ें किसी अपरिचित भाषा में थीं। फिर चीख-पुकार, गोलियों की आवाज़ें और कदमों की आहट सुनाई दी।
‘हे प्रभु,’ उसने प्रार्थना की, ‘कृपया मुझे बचा लीजिए। हमने हमेशा आपसे प्रार्थना की है।’

डेटा सेंटर से एक मंजिल ऊपर, भव्य सीढ़ी के बाईं ओर, कमरा नंबर 316 में, विल और केली ने चीख-पुकार और फिर गोलियों की आवाज सुनी। ऐसा लगा जैसे गोलियां दीवारों को भेद रही हों। विल घुटनों के बल बैठकर अपना मोबाइल फोन ढूंढने लगा। उसने बिस्तर के बगल में कपड़ों के ढेर से फोन बरामद किया। कांपते हाथों से उसने अपने पिता का नंबर डायल किया। इंग्लैंड में शाम का समय था और निगेल पाइक घर पर थे। पांच साल पहले विल की मां की कैंसर से मृत्यु हो जाने के बाद, विल और उसके भाई-बहन अपने पिता के साथ खड़े रहे, जिससे उनके बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गए।
‘पापा, हम एक मुश्किल में फंस गए हैं,’ विल ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘होटल पर हमला हो रहा है। हो सकता है आतंकवादी हों। हमें मदद चाहिए।’ नाइजल अपने बेटे की बात ठीक से सुन नहीं पा रहे थे, लेकिन बात समझ गए। ‘शांत रहो और अपने फोन चालू रखो,’ उन्होंने अपनी आवाज में डर छिपाने की कोशिश करते हुए कहा। एक पिता को समस्याओं का समाधान करना चाहिए, फिर भी वह इस समस्या में पूरी तरह से उलझे हुए थे। ‘मैं कुछ फोन करता हूँ।’ उन्होंने फोन नीचे रखा और सिगरेट जलाई। विल और केली लगभग 4,500 मील दूर थे। वह उनकी मदद के लिए क्या कर सकते थे?
ताज होटल में वापस आते ही, पास के एक दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। विल और केली अंधेरे में चुपचाप लेटे रहे, उनके सिर में खून दौड़ रहा था। 'जवाब दो? जवाब मत दो?' गलियारे में कदमों की आहट सुनाई दी। उन्हें दूसरे दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। केली कालीन पर लेट गई, अपने कान ढँक लिए, उसका दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि उसे यकीन था कि विल उसे सुन सकता है। विल उठा और चुपके से दरवाजे के पास जाकर छेद से झाँका। 'रिसेप्शन पर कॉल करते हैं,' केली ने फुसफुसाते हुए कहा। 'उन्हें पता होगा कि क्या करना है।' कॉल होटल के स्वचालित उत्तर देने वाले सिस्टम से कनेक्ट हो गई। 'धत् तेरे की।' दोनों को अचानक एहसास हुआ। नीचे कोई नहीं था। 'संदेश छोड़ दो,' केली ने आखिरी उम्मीद के तौर पर कहा। 'उन्हें बता दो कि हम फंस गए हैं।' प्यारे होटल, हम तीसरी मंजिल पर कैदी हैं। यह बेतुका लग रहा था और वैसे भी, विल को मेनू के विकल्प समझ नहीं आ रहे थे। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह अभी भी नशे में है या डर से कांप रहा है।

‘हमें व्यस्त रहना होगा,’ उसने कहा और कमरे को तहस-नहस करते हुए छिपने की जगहों की तलाश करने लगा। केली भी उसके साथ छत में वेंटिलेशन या दीवारों में खाली जगहें ढूंढने लगी, दोनों सोच रहे थे कि फिल्मों में ये सब कैसे होता है। कौन सी तरकीबें उनसे छूट रही थीं? यह बेवकूफी भरा लग रहा था, लेकिन मैकगाइवर क्या करता? उसे वह प्रतिभाशाली टीवी जासूस बहुत पसंद था जिसका शो वह बचपन में बार-बार देखता था, मैकगाइवर जिस तरह से अपने वैज्ञानिक ज्ञान और अपने स्विस आर्मी पेननाइफ का इस्तेमाल करके किसी भी मुश्किल से निकलता था, उसे देखकर वह मंत्रमुग्ध हो जाता था। ‘सफाई वाले कमरे का क्या?’ उसने सुझाव दिया, सीढ़ियों से भागते हुए आते समय उसे एक बिना निशान वाला दरवाजा दिखाई दिया था। ‘बहुत खुला है,’ केली ने उसे मना करते हुए कहा। कम से कम इस कमरे में वे खिड़कियाँ खोलने की कोशिश कर सकते हैं – अगर ऐसी नौबत आई तो।
विल को पसीना आ रहा था, हर चरमराहट और दूर से आती कदमों की आहट उसके सिर में गूंज रही थी। छत में कुछ खरोंचने की आवाज आ रही थी। वे ध्यान से सुनने लगे। ऊपर किसी तरह की हाथापाई हो रही थी, पैरों की थपथपाहट, फर्नीचर के घिसने की आवाज और ऊंची आवाजें। क्या उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी?
चौथी मंजिल पर, भारतीय व्यापारी राजीव सरस्वती ने पुलिस के आने की आशंका में अपना दरवाजा थोड़ा सा खोल दिया था। एक बंदूकधारी को देखकर सरस्वती ने दरवाजा बंद करने की कोशिश की, लेकिन हमलावर ने गोलियों की बौछार कर दी, जिससे सरस्वती के हाथ और शरीर में चोट आई। चीखते हुए, उन्होंने अपने कंधे से दरवाजे को धक्का दिया और आंतरिक शक्ति से दरवाजा बंद कर दिया, फिर फर्श पर गिरकर उनकी मृत्यु हो गई।

डीसीपी पाटिल और राजवर्धन महल की दूसरी मंजिल पर स्थित सीसीटीवी कक्ष में पहुँच गए थे, लेकिन सिस्टम को समझने में उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी: एक मॉनिटर पर आधा दर्जन छोटी स्क्रीन थीं, जो हर कुछ सेकंड में अलग-अलग मंजिलों पर लगे अलग-अलग कैमरों के बीच बदलती रहती थीं, और उनमें से किसी पर भी स्पष्ट निशान नहीं था। पाटिल ने गुस्से में कहा, 'यह तो पूरी तरह गड़बड़ है।' काले सूट वाले पेटवाल ने कमान संभाली और कुशलतापूर्वक आगे-पीछे स्क्रॉल करने लगे, जबकि पाटिल के रेडियो ऑपरेटर ने क्राइम ब्रांच के प्रमुख राकेश मारिया को रेडियो पर संदेश भेजा: 'क्षेत्र प्रमुख को बता

दीजिए कि हमने कुछ जगहों को सील कर दिया है, अंदर ऑपरेशन जारी है।' कोई जवाब नहीं आया। पाटिल ने फोन उठाया और कहा: 'मदद भेजिए। हथियारों, हेलमेट और बॉडी जैकेट के साथ।' कंट्रोल ने ग्रिड के माध्यम से सूचना दी: 'जोन 1 प्रमुख ताज महल में हैं।'
शाम की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग को रिवाइंड करते हुए पेटवाल को कुछ मिला। पाटिल और राजवर्धन रात 9:44 बजे टावर की लॉबी में प्रवेश करते दो बंदूकधारियों का फुटेज देखने के लिए जमा हो गए। एक बंदूकधारी ने लाल और दूसरे ने जैतून पीले रंग की वर्दी पहनी थी। वे रिसेप्शन के दोनों ओर खड़े हो गए और राइफलें निकाल लीं। जैसे ही मेहमान इधर-उधर भागने लगे, कई लोग गिर पड़े, तभी एक बंदूकधारी ने ग्रेनेड फेंका और स्क्रीन पर तेज रोशनी चमकी और धमाका हुआ। पेटवाल ने और फुटेज खोजकर निकाला: जिसमें वही दोनों नॉर्थकोट के प्रवेश द्वार की ओर जाते हुए दिखाई दिए, उनकी AK-47 राइफलें तैयार थीं, लाल रंग वाले ने अपनी बेसबॉल टोपी उल्टी पहन रखी थी, जैसे गोली चलाने के लिए तैयार हो।
राजवर्धन ने फटाफट जायजा लिया। दो सक्रिय बंदूकधारियों का मतलब था कि वे जोड़ियों में काम कर रहे थे, जिससे उन्हें अंदाजा हो गया कि कम से कम चार और संभवतः छह या आठ बंदूकधारी होंगे। अगर एक टीम गश्त पर थी, तो दूसरी टीमें कवर के तौर पर काम कर रही थीं, और निस्संदेह ग्रैंड स्टेयरकेस के शीर्ष पर तैनात थीं, ऊँची जगह पर कब्जा जमाए हुए थीं, ताकि ऊपरी मंजिलों के मुख्य प्रवेश और निकास द्वार को बंद कर सकें। राजवर्धन ने सोचा, उनमें से एक इतना कमजोर दिखता है कि अगर मैं उसे एक थप्पड़ मारूँ तो वह टूट जाएगा। लेकिन उन्होंने गौर किया कि वह अपनी AK-47 कैसे पकड़े हुए था। एक हाथ से सेमी-ऑटोमैटिक हथियार चलाना बेहद मुश्किल होता है - जब तक कि आप बॉलीवुड के एक्शन हीरो न हों। फिर भी, इस बंदूकधारी ने हथियार की पट्टी को अपनी बांह के चारों ओर कसकर लपेटा हुआ था, उसके लकड़ी के बट को अपनी कोहनी के मोड़ में और फिर अपनी बाइसेप्स पर खींच रखा था, ठीक उसी तरह जैसे स्पेशल फोर्सेज को प्रशिक्षित किया जाता है।
ब्लैक सूट वालों ने उन्हें फिर से ढूंढ लिया। रात 9:55 बजे महल की लॉबी में: लाल और पीले रंग के सूट पहने बंदूकधारियों के साथ एक तीसरा बंदूकधारी भी शामिल हो गया, जो पूरी तरह से काले रंग के सूट में था, और चौथा ग्रे रंग की लंबी बाजू की टी-शर्ट पहने हुए था। काले और ग्रे सूट वाले वही दो लोग थे

जिन्होंने लियोपोल्ड होटल में गोलीबारी की थी और नॉर्थकोट के प्रवेश द्वार से ताज होटल में घुसकर एक्वेरियस के वेटर आदिल ईरानी को चौंका दिया था। पेटवाल ने आगे बढ़ते हुए चारों बंदूकधारियों को पहली मंजिल पर ग्रैंड स्टेयरकेस से चढ़ते हुए पाया। एक ने घूमकर फॉस्टीन मार्टिस के सी लाउंज में गोलीबारी की, जबकि बाकी क्रिस्टल रूम की ओर बढ़ गए, जहां नवविवाहित अमित और वर्षा थडानी को भव्य प्रवेश करना था।
पाटिल और बंदूकधारियों के बीच सीढ़ियों पर हुई झड़प का दृश्य कैमरे में कैद हो गया। डीसीपी ने मुंह बनाया। काश उनके पास राइफल होती तो वो वहीं पर काम तमाम कर देते। पेटवाल का वीडियो रात 10:27 बजे तक चलता रहा, जब कैमरों ने पीले रंग के सूट पहने बंदूकधारी को एक बार फिर पकड़ लिया। अब वो महल की पांचवीं मंजिल पर था और कमरा नंबर 551 की घंटी बजा रहा था। उन्होंने देखा कि अनजान मेहमान ने दरवाजा खोला और उसे गोली मार दी गई, उसका हत्यारा शांति से शव के ऊपर से निकलकर अपने कमरे में घुस गया। काले सूट वाले अधिकारी ने सुरक्षा प्रमुख कुडियादी को फोन करके मेहमानों की सूची देखी। यह मॉरीशस स्टेट बैंक के सीईओ चैतलाल गननेस थे। किसी को तो उनके परिवार को सूचित करना ही होगा। तेरह मिनट बाद, पीले रंग का सूट पहने बंदूकधारी बाहर आया, उसके पीछे लाल रंग का सूट पहने बंदूकधारी था, जो आस-पास के दरवाजों पर दस्तक देने लगा। उन्होंने एक और मेहमान को पकड़ लिया और उसे घसीटकर कमरा नंबर 551 में वापस ले गए।
पुलिस के पास वहां रुकने का कोई चारा नहीं था। अगर बंदूकधारियों को नहीं रोका गया, तो वे मेहमानों को निशाना बनाना जारी रखेंगे, जिससे यह हमला एक लंबे अपहरण संकट में बदल जाएगा, जो शायद हाल के इतिहास में अपनी तरह का सबसे बुरा मामला होगा।
अगले फुटेज में चारों बंदूकधारियों को रात 10:48 बजे कमरा नंबर 551 में प्रवेश करते हुए दिखाया गया। टेप को तेजी से आगे बढ़ाते हुए, पेटवाल ने बाकी लोगों की ओर रुख किया। उन्होंने जोर देकर कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि सिर्फ चार आतंकवादी हैं, और वे सब एक साथ उसी कमरे में हैं। हमें अब उन पर कार्रवाई करनी होगी।' पाटिल हिचकिचाए। कमिश्नर गफूर ने सभी को एनएसजी या मार्कोस के आने का इंतजार करने को कहा था। बिना अनुमति के पीछा करके वे पहले ही हद पार कर चुके थे।

पाटिल ने रेडियो पर संपर्क किया। अगर उन्हें कमरे पर धावा बोलना था, तो उन्हें बैकअप की ज़रूरत थी। कंट्रोल रूम सहमत हो गया, लेकिन भेजी गई टीम ताज होटल के अंदरूनी लेआउट को लेकर परेशान थी। 'असाल्ट टीम 3, साउथ कंट्रोल को: हमें ज़ोन 1 का पता चाहिए सर।' पाटिल के रेडियो ऑपरेटर ने मदद करने की कोशिश की: 'ज़ोन 1 सर, ताज की दूसरी मंज़िल पर है।' होटल की भूलभुलैया जैसी संरचना सभी को उलझन में डाल रही थी। 'असाल्ट टीम 3, कंट्रोल को: नया ताज या पुराना ताज?'
दस मिनट तक उलझे हुए संदेशों की झड़ी लग गई, फिर असॉल्ट टीम 3 गायब हो गई। पाटिल परेशान हो रहे थे, और कंट्रोल ने दूसरी यूनिट, असॉल्ट टीम 6 को भेजा: 'अगर आपके पास बुलेटप्रूफ जैकेट हैं, तो दूसरी मंजिल पर जोन 1 सर से मिलें।' सीसीटीवी कक्ष में लगे कैमरों ने दिखाया कि चारों बंदूकधारी अभी भी 551 के अंदर थे। लेकिन हर गुजरते मिनट के साथ पुलिस मौका गंवाती जा रही थी। हताश होकर पाटिल ने फोन उठाया और बोला, 'ताज होटल के अंदर तीन-चार आतंकवादी हैं... हमें अभी मदद चाहिए।' नियंत्रण विभाग ने पुष्टि की कि उसने दो टीमें और हथियार भेजे हैं: 'हमारे पास असॉल्ट टीम 3 और 6 हथियार और बुलेटप्रूफ जैकेट के साथ मौजूद हैं।' लेकिन कोई नहीं पहुंचा था। क्या यह कायरता थी या कोई चूक? पाटिल ने फिर रेडियो पर संदेश भेजा, 'हमें अभी तक कोई मदद नहीं मिली है।' तभी असॉल्ट टीम 6 ने नेटवर्क पर आकर बताया कि वे अभी भी रास्ता भटक गए हैं: 'नया ताज होटल है या पुराना?'
पेटवाल ने सबको बुलाया। स्क्रीन की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, ‘काम हो गया।’ चारों बंदूकधारी अभी-अभी कमरा नंबर 551 से निकले थे और कैमरे की नज़र से ओझल हो गए थे। अगले चालीस मिनट तक पुलिस ने कैमरों की छानबीन की। रात 11:23 बजे पेटवाल ने उन्हें फिर से ढूंढ लिया। उन्होंने चिल्लाकर कहा, ‘पैलेस की छठी मंज़िल!’ बंदूकधारी दक्षिणी विंग के पूल वाले छोर पर स्थित फायर एस्केप से पहले वाले आखिरी कमरे, कमरा नंबर 632 के दरवाजे पर दस्तक दे रहे थे। पाटिल ने पूछा, ‘उस कमरे में कौन है?’ उन्हें याद आया कि करमबीर कांग ने उन्हें बताया था कि उनकी पत्नी और बच्चे छठी मंज़िल पर फंसे हुए हैं। डीसीपी ने अपने रेडियो ऑपरेटर को आदेश दिया, ‘जनरल मैनेजर को फोन दो।’ मतभेदों के बावजूद, पाटिल को करमबीर के लिए सहानुभूति थी।
जनरल मैनेजर, ताज होटल के ग्रुप सिक्योरिटी चीफ और होटल के सहमे हुए मालिक रतन टाटा के साथ, गेटवे के बाहर खड़े थे, जिसे उन्होंने होटल स्टाफ के लिए

एक अस्थायी नियंत्रण केंद्र बना दिया था। पाटिल द्वारा खबर सुनाए जाने पर उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन शांत भाव से अपने अपार्टमेंट की छठी मंजिल पर स्थित सटीक जगह, सामने समुद्र की ओर मुख वाला दक्षिणी कोना और 632 नंबर के गलियारे का विवरण दिया। फोन रखने के बाद वे बहुत परेशान थे। उन्होंने नीति को वहीं रुकने और सुरक्षा बलों के आने का इंतजार करने के लिए कहा था, उन्हें पूरा विश्वास था कि वे आएंगे। अब बंदूकधारी ऊपर थे और अभी तक कोई बचाव दल नहीं आया था। करमबीर की दुनिया बिखर रही थी। लगभग दो दशकों से उनका नजरिया निजी क्षेत्र, विशेष रूप से व्यावहारिक टाटा समूह द्वारा समस्याओं को हल करने के उत्साह से प्रभावित था। वे पुराने भारत और उसके सुस्त, ढिलाई बरतने वाले सार्वजनिक क्षेत्र को भूल चुके थे, जिसके हाथों में अब उनकी पत्नी और दो छोटे बेटों का जीवन टिका था।
ताज होटल के ग्रुप सिक्योरिटी चीफ ने पेटवाल से बात करने की गुजारिश की। अगर पुलिस अभी कार्रवाई करती, तो वे छठे फ्लोर पर बंदूकधारियों को घेर सकते थे। उन्होंने निर्देश दिया, ‘डीसीपी [पाटिल] को दो टीमें बनाने को कहो: एक उत्तर से और दूसरी दक्षिण से। हमारे जवान इन टीमों के साथ जाएंगे।’ भले ही होटल के अंदर मौजूद पुलिस के पास आतंकवादियों को मारने के लिए पर्याप्त हथियार न हों, फिर भी वे उन्हें उस कमरे में घेर सकते थे।
पाटिल मान गए। पाँचवें दिन हमलावरों को खोने के बाद, वह उन्हें दोबारा भागने नहीं देने वाले थे। लेकिन उन्हें अभी भी बैकअप की ज़रूरत थी और उन्हें अनुमति लेनी पड़ी। पाटिल ने रेडियो पर दोबारा संपर्क किया और असॉल्ट टीम 6 को अंदर जाने के लिए कहा: 'आतंकवादी पुरानी इमारत की छठी मंज़िल के कमरा नंबर 631 में हैं। मैं सीसीटीवी के पास हूँ। मेरे साथ तीन-चार पुलिसकर्मी हैं। कृपया, आपको छठी मंज़िल को कवर करना होगा। आपको दोनों तरफ की लिफ्टों को कवर करना होगा। सीढ़ियों को नियंत्रित करें। आप उन्हें अपने आप पकड़ लेंगे।'
अंततः, कमिश्नर गफूर ने फोन किया और पाटिल ने एक यथास्थिति प्रस्तुत की: 'सर, कमरा नंबर 632 में तीन आतंकवादी हैं और लॉबी में दो। कुल मिलाकर पांच आतंकवादी हैं। मेरे साथ लोग हैं। मुझे तत्काल सहायता चाहिए।'
कमिश्नर गफूर ने कहा: 'समझ गया।' लेकिन कई हमलों और बम धमाकों के बीच मची अफरा-तफरी में उन्होंने पाटिल की बात नहीं सुनी या शायद सुनना ही नहीं चाहा, क्योंकि पाटिल ने कोई नया आदेश दिए बिना ही फोन काट दिया। पाटिल को

विश्वास नहीं हुआ और राजवर्धन के उकसाने पर उन्होंने कंट्रोल रूम को रेडियो पर संदेश भेजा। बैकअप तुरंत आना चाहिए: 'मैं सीसीटीवी कैमरे देख रहा हूं। लॉबी सुरक्षित है।' पांच मिनट बाद उन्होंने फिर रेडियो पर संदेश भेजा: 'आतंकवादी अभी भी कमरा नंबर 630 या 632 में हैं। मैं जो कह रहा हूं, उसे हमलावर टीम को पहुंचा दो।' हताशा में उन्होंने निजी अधिकारियों के नेटवर्क पर राकेश मारिया से भी संपर्क करने की कोशिश की: 'आतंकवादी कमरा नंबर 631 में हैं। मेरे साथ तीन-चार लोग हैं। डीसीपी राजवर्धन भी यहीं हैं।' क्या अब उन्हें हरी झंडी मिल गई थी? मारिया हैरान थे, लेकिन उन्होंने हौसला बढ़ाया: 'शाबाश [पाटिल]। मैं हमलावर टीमें भेज रहा हूं। सेना की टुकड़ियां भी आ रही हैं। वे होटल को घेर लेंगे।'
पाटिल और राजवर्धन इंतज़ार करते रहे। कोई नहीं आया। पाँच मिनट बाद, बंदूकधारियों में से एक कमरा नंबर 632 से निकला, सीसीटीवी कैमरे के पास गया और कुर्सी से उसे तोड़ने की कोशिश की। टूटे हुए लेंस से पाटिल को मुश्किल से दो अन्य बंदूकधारी गलियारे में कालीन और चादरें जमा करते हुए दिखाई दिए, जिन्हें उन्होंने आग लगा दी, जिससे छठी मंज़िल धुएँ के गुबार से भर गई। होटल जल रहा था, लपटों से कैमरे चमक रहे थे, धुआँ उन्हें ढक रहा था। सीसीटीवी कमरा लगभग अंधा हो गया था।

कमरा नंबर 632 में, दो बार ज़ोर से दस्तक हुई जिससे के. आर. राममूर्ति नींद से जाग गए। तमिलनाडु के इस बैंकिंग अधिकारी, जिन्हें उनके दोस्त राम कहकर बुलाते थे, प्यास से बेहाल होकर उठ बैठे। वे खिड़की के पास गए। चारों ओर घना अंधेरा था, रात के 11.15 बजे के आसपास घटता हुआ चाँद गायब हो चुका था। नीचे कुछ भी हलचल नहीं थी। आधे घंटे पहले ही 69 वर्षीय राममूर्ति बुरी खबर आने का इंतज़ार करते हुए सो गए थे।
साधारण बैंकों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफल बनाने के अपने करियर से सेवानिवृत्त हुए राम कल एक वित्तीय कंपनी की बोर्ड बैठक में अपने गैर-कार्यकारी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आए थे। उनके कुछ पारिवारिक दायित्व भी थे और वे भारतीय रिज़र्व बैंक के एक पुराने सहकर्मी से मिलना चाहते थे। इससे पहले, उन्होंने मसाला क्राफ्ट में भोजन किया और अपनी आदत के अनुसार गेटवे होटल में टहलते हुए हनीमून मनाने वाले जोड़ों को नावों में घूमते देखा। होटल की पांचवीं मंजिल पर कुछ लोगों के भागते-दौड़ते

देखकर वे विचलित हो गए, जिसके बाद ताज होटल के संचालक ने उन्हें अपने कमरे में जाने की सलाह दी क्योंकि किसी तरह का संकट उत्पन्न हो रहा था।
जिस बोर्ड में वे सदस्य थे, उसमें काम करने वाली एक महिला ने रात करीब 10:30 बजे फोन किया: ‘सर, क्या आप सुरक्षित हैं?’ पहली बार उन्हें लगा कि शायद वे सुरक्षित नहीं हैं। फोन रखने के तुरंत बाद उन्हें गोलियों की आवाज सुनाई दी। वे बेचैनी से सोते हुए बिस्तर पर लेट गए थे। और अब, कोई उनके दरवाजे पर दस्तक दे रहा था।
अंग्रेजी में एक तेज आवाज आई: 'रूम सर्विस।' एक पल के लिए राम ने पानी मांगने के बारे में सोचा। उसने खुद को रोका और आंखें बंद कर लीं। उसे कमरे को खाली दिखाना था, कहीं बंदूकधारी आसपास न हों। लेकिन वह छल-कपट में माहिर नहीं था। एक विनम्र व्यक्ति, वह एक बैंकर था जिसका लक्ष्य संस्था को यादगार बनाना था, न कि खुद को। 'मैंने पूरी जिंदगी लोगों की नजरों से दूर रहने का संघर्ष किया,' उसने अपने सहयोगियों से कहा, यह समझाते हुए कि वह दिखावटी खर्च से नफरत करता था, ताज होटल शायद उसका एकमात्र सुख था। 'बैंकिंग अफीम है: दूसरों का पैसा। यह आपको मदहोश कर देता है,' उसने चेतावनी दी। 'मैं कभी कर्ज के लालच या क्रेडिट के वादे से मूर्ख नहीं बना।' उसे रुतबे का दिखावा पसंद नहीं था और जब टैक्सी से काम चल सकता था तो वह कभी भी कार से एयरपोर्ट से नहीं आता था। 'हम किसी से ऊपर नहीं होना चाहते या ऐसा दिखना नहीं चाहते,' उसने अपनी एक टीम से कहा था, विनम्रता के गुणों की प्रशंसा करते हुए।
पंद्रह मिनट बाद फिर दस्तक हुई। ‘जूते की पॉलिश?’ आवाज आई। राम समझ गया कि कोई उसके कमरे को निशाना बना रहा है। ‘नहीं चाहिए’, वह झट से बोला। मैंने ऐसा क्यों किया?, उसने गुस्से में कहा। एक गोली दरवाजे को छेद गई। वह बाथरूम में भागा और फर्श पर बैठ गया। और गोलियों की आवाज सुनाई दी और दो बंदूकधारी अंदर घुस आए, उन्होंने देखते ही जान लिया कि वह बाथरूम में है। वे बोले, ‘वह कमजोर है’, और दरवाजा पीछे की ओर जोर से बंद हो गया, जिससे वह सिंक के नीचे गिर पड़ा।
दो युवकों ने एक एके-47 राइफल उसकी ठुड्डी के ठीक नीचे इतनी करीब कर दी कि उसे उनके पसीने की गंध आने लगी। उसे चक्कर आने लगा। वे दोनों लगभग चौबीस या पच्चीस साल के थे, उसके बेटे से भी छोटे। लंबे वाले ने लाल टोपी पहन रखी थी जिस पर कुछ लिखा था, लाल टी-शर्ट पहनी थी और वह किसी जिम ट्रेनर जैसा लग रहा

था, चुस्त-दुरुस्त और मांसपेशियों से भरा हुआ। दूसरा युवक छोटा और दुबला- पतला था। राम को पता नहीं क्यों, लेकिन उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने कहा, 'कृपया मुझे मत मारो।' वे दोनों चुप रहे। जब उसने उनसे नज़रें मिलाने की कोशिश की, तो उन्होंने इशारा किया: 'अपनी कमीज़ उतारो।'
भयभीत होकर राम जम गया और उन्होंने बंदूक के बट से उसके सिर पर वार किया, फिर उसकी कॉलरबोन पर भी। वह अवाक होकर उन्हें देखता रहा। दर्द असहनीय था। 'मुझे रक्तचाप है,' वह चिल्लाया, और कहते हुए भी उसे लगा कि यह बैंकर का श्राप है। 'कपड़े उतारो,' उनमें से एक चिल्लाया, राम का कुर्ता फाड़ते हुए उसे बेडरूम में घसीट ले गया और उसके हाथों को प्लास्टिक की थैली से बांध दिया। उन्होंने उसकी पतलून नीचे खींच दी और उसके पैरों को बांधने के लिए इस्तेमाल की गई उसकी पवित्र ब्राह्मणी डोरी फाड़ दी। वह नंगा और लंगड़ा रहा था। अपमानित होकर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। लंबा आदमी आया और उसने बैंकर की पीठ पर बंदूक से वार किया। राम को लगा जैसे उसकी हड्डियाँ टूट रही हों। वे क्या चाहते थे? क्या वे बस कुछ मांग नहीं सकते थे? उसका शरीर चीख रहा था, उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। क्या वे मुझे मेरे बेडरूम में पीट-पीटकर मार डालेंगे, सब कुछ का कितना व्यर्थ और दयनीय अंत होगा?, उसने सोचा, अब वह जोर-जोर से चिल्ला रहा था, खांस रहा था और हांफ रहा था, जिससे बंदूक का बट और जोर से पड़ा। उसने अपनी जान बचाने की गुहार लगाई। लंबे वाले ने उसे लात मारी और उसके कान में फुसफुसाया: 'चुप रहो।'
राम को बिस्तर पर कुछ गिरने की आवाज़ सुनाई दी, एक ज़िप की आवाज़ और फिर धातु की खड़खड़ाहट और एक क्लिक की आवाज़। एक मोबाइल फोन की घंटी बजी और बंदूकधारियों में से एक ने उर्दू में बात करते हुए जवाब दिया। राम को बात समझ आ गई। वे वसी भाई (भाई वसी) नाम के किसी व्यक्ति से बात कर रहे थे। एक बंदूकधारी ने घमंडी लहजे में कहा, 'हमारे पास एक मेमना है।' राम ने खुद को शांत करने की कोशिश की। 'हिम्मत रखो, राम,' उसने अपनी प्यारी माँ का चेहरा याद करते हुए कहा, जो हमेशा उसके लिए प्रार्थना करती थीं। क्या उनकी प्रार्थनाएँ अब मेरी मदद करेंगी?, उसने सोचा। अगर यही अंत था, तो वह 'बिना दर्द के जल्द से जल्द मौत' चाहता था। लेकिन दरवाजा खुला और तीखे धुएं के बीच दो और बंदूकधारी अंदर आ गए।

रात 11.45 बजे – कोलाबा

दस मिनट की ड्राइव पर, क्राइम ब्रांच के डिप्टी देवेन भारती एक सादी पुलिस कार में, आँखें आधी बंद किए, अपने लैपटॉप को घुटनों पर रखे इंतज़ार कर रहे थे। अपने पतले कंधों और नज़ाकत भरे स्वभाव के कारण भारती को समझना मुश्किल था। अक्सर ऐसा लगता था कि वह आधी-अधूरी बात सुन रहे हैं, जबकि असल में वह चेहरों को याद कर रहे होते थे और मन ही मन घटनाक्रम बना रहे होते थे। एक ऐसे पुलिस बल में जहाँ ताकत ही सब कुछ थी, भारती एक चतुर खोजी थे, एक ऐसे जानकार जो किसी मामले को पूरी तरह सुलझा लेने पर बेबाकी से बोलते थे। और बेहद महत्वाकांक्षी भी। इस समय वह उस फ़ोन नंबर – +91 9910 719 424 – को ट्रैक कर रहे थे, जो खुफिया एजेंसियों ने उन्हें बताया था, क्योंकि उनका मानना था कि आतंकवादी या उनके हैंडलर इसका इस्तेमाल कर रहे थे।
कुछ ही ब्लॉक दूर एक अन्य वाहन में, आतंकवाद-विरोधी दस्ते के उप प्रमुख भी +91 9910 719 424 नंबर की घंटी बजने का इंतजार कर रहे थे। वे मिलकर फोन को ट्रैक करके उस नियंत्रण कक्ष का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे जहाँ से हमले निर्देशित किए जा रहे थे, या कम से कम हमलावर को ढूंढने की कोशिश कर रहे थे। पिछली कॉल इतनी संक्षिप्त थी कि कोई भी उसे पकड़ नहीं पाया था, और अब वे फिर से इंतजार में जुट गए थे।
आधी रात से कुछ ही पहले, +91 9910 719 424 नंबर फिर से चालू हो गया। एटीएस की टीम कोलाबा कॉज़वे स्थित रीजेंट होटल से शहीद भगत सिंह मार्ग की ओर बढ़ी, जबकि क्राइम ब्रांच की टीम कफ परेड स्थित प्रेसिडेंट होटल से होटल सुप्रीम की ओर रवाना हुई। सिग्नल रुक-रुक कर आ रहा था। वोडहाउस रोड पर बाईं ओर मुड़ते हुए, गश्ती दल होटल ब्लू बर्ड और सेलेस्टे की ओर बढ़े, जहाँ उनका सिग्नल चला गया। भारती के आदमी वापस मैदान में गए और होटलों में घुसकर मेहमानों के रजिस्टर मांगे, ड्यूटी मैनेजरों से पूछताछ की, वेटरों का जायजा लिया और चौकीदारों से जिरह की, मेहमानों के जीवन के बारे में व्यापक जानकारी जुटाई: पाकिस्तान, मध्य एशिया, बांग्लादेश और खाड़ी देशों से आए आगंतुकों की सूचियाँ।
कुछ मिनट बाद, भारती पेट्रोल पंप के पास से उत्तर की ओर गाड़ी चलाते हुए, घिरे हुए चाबाद हाउस यहूदी केंद्र के चारों ओर घूमते हुए, फिर अर्धचंद्राकार मोड़ से होते हुए होटल एंटीक की ओर मुड़ गए। +91 9910 719 424 नंबर फिर से सक्रिय हो गया। एटीएस का डिप्टी स्ट्रैंड रोड से कुछ दूर,

दो ब्लॉक उत्तर में स्थित शबनम होटल में था। हमलावरों का नियंत्रण कक्ष यहीं होना तर्कसंगत प्रतीत होता था, क्योंकि यह हमलों का केंद्र था। पुलिस टीमें एक बार फिर लॉबी में गईं और डेस्क क्लर्कों से पूछताछ की। लेकिन सिग्नल चला गया और भारती ने गाड़ी रोक दी।
जब तीसरी बार फोन चालू हुआ, तो दिशा बताने वाले यंत्रों ने भारती को न्यू मार्टिन और फरियास होटलों की ओर, और फिर बेहतर होटल एस्कॉट की ओर इशारा किया। अंत में सभी कारों को एक संदेश भेजा गया: 'लॉक ऑन'। उन्हें सफलता मिल गई थी। नंबर को तीन टावरों द्वारा कैप्चर कर लिया गया था और कोलाबा में ताज होटल और राज्य पुलिस मुख्यालय के पास एक ही ग्रिड में सीमित कर दिया गया था। लेकिन वे अभी भी अपने लक्ष्य तक पहुंचने से बहुत दूर थे। ग्रिड में एक हजार वर्ग मीटर का क्षेत्र था जिसमें घनी आबादी वाले अपार्टमेंट और चालीस होटल थे, यानी सैकड़ों कमरे। वे कॉलर की पहुंच में थे, लेकिन अगर उन्हें और सुराग नहीं मिलते तो उसे ढूंढने में पूरी रात लग जाती। फोन की भौतिक खोज के साथ-साथ, एटीएस को लाइन टैप करने की भी आवश्यकता थी, इस उम्मीद में कि सुनी गई बातचीत उन्हें सुराग दे सके।
दक्षिण मुंबई के औद्योगिक क्षेत्र नागपाड़ा में, राजमार्ग से पांच मील उत्तर में, खजूर के पेड़ों के बगीचे में राजमार्ग से कुछ दूरी पर स्थित औपनिवेशिक काल के एक विला में, यूएसबी केबलों के जाल से घिरे हुए एटीएस की तकनीकी टीम प्रतीक्षा कर रही थी। उनके बॉस, एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे ने उन्हें पहले ही बुला लिया था और उन्हें +91 9910 719 424 नंबर पर आने वाली कॉलों को सुनने के लिए कहा था। इसके लिए उन्हें भारतीय डिज़ाइन किए गए शोगी जीएसएम मॉनिटरिंग सिस्टम नामक एक इंटरसेप्शन पैकेज का उपयोग करना था, जिससे वे कॉलों को पुलिस लैंडलाइन के माध्यम से डायवर्ट कर सकें और अपने डेस्क से ही उन्हें रिकॉर्ड और विश्लेषण कर सकें।
लेकिन एक समस्या थी। फ़ोन कंपनी, भारती एयरटेल को एटीएस प्रमुख और राज्य सरकार से लिखित अनुमति चाहिए थी। करकरे को आखिरी बार आधे घंटे पहले टीवी पर देखा गया था, जब कैमरों ने उन्हें बुलेटप्रूफ जैकेट और हेलमेट पहनते हुए छत्रपति शिवाजी टर्मिनस में प्रवेश करने की तैयारी करते हुए फिल्माया था। हस्ताक्षर करने के लिए अधिकृत राज्य अधिकारी ताज होटल के अंदर फंसा हुआ था। एटीएस की तकनीकी टीम को धैर्य रखना पड़ा।

रात 11.50 बजे - रंग भवन लेन

संयुक्त आयुक्त (एटीएस) हेमंत करकरे, अपनी तीखी नाक और किपलिंग जैसी मूंछों के साथ, सीएसटी से पैदल ही निकल चुके थे, अपने ड्राइवर को स्टेशन पर ही छोड़कर। उन्हें खबर मिली थी कि दर्जनों यात्रियों को कुचलने वाले दो बंदूकधारी मुंबई के कामा अस्पताल की ओर भागे हैं, जहां 370 मरीज खतरे में थे। इसलिए वे अकेले ही उनका पीछा करते हुए रंग भवन लेन पहुंचे, जो अस्पताल के पीछे जाने वाला एक छोटा सा रास्ता था। करकरे के रेडियो संदेश से पता चला कि बंदूकधारियों ने यहां पहले ही तीन निवासियों को मार डाला था और अस्पताल में घुसने के लिए एक दीवार फांद ली थी, जहां उन्होंने दो कर्मचारियों को गोली मारकर हत्या कर दी थी।
सांस लेने के बाद करकरे ने बैकअप के लिए फोन किया। कंट्रोल ने पूर्वी क्षेत्र के अतिरिक्त आयुक्त अशोक कामते को बुलाया। गोलीबारी के बीच भी शांत रहने वाले कामते, जो एक कुशल निशानेबाज और हथियार विशेषज्ञ थे, ताज होटल में पाटिल की सहायता के लिए जा रहे थे। कंट्रोल ने फिर से छानबीन की और राकेश मारिया की क्राइम ब्रांच के वरिष्ठ अधिकारी, बाहुबली इंस्पेक्टर विजय सालस्कर का पता लगाया। सालस्कर एक दृढ़ निश्चयी पुलिसकर्मी थे, जो 1983 में पुलिस बल में शामिल हुए थे। नाकाबंदी के पक्ष और विपक्ष के आधार पर उन्हें कुछ लोग पसंद करते थे और कुछ नापसंद। उन्होंने साठ से अधिक अपराधियों को मार गिराया था, जिनमें से कई संदिग्ध परिस्थितियों में मारे गए थे, और पुलिस अधिकारी के रूप में अपने पहले ही साल में उन्होंने अपने पहले गैंगस्टर को गिरफ्तार किया था। इस साल की शुरुआत में, सत्रह वर्षीय मुस्लिम लड़के की गोलीबारी की न्यायिक जांच में उनका नाम आया था, जिसे पुलिस ने अपराधी बताया था, हालांकि किशोर का आपराधिक रिकॉर्ड नहीं मिल सका था।
जब पुलिसकर्मी कामा अस्पताल के पिछले गेट पर जमा हुए, तभी खून से लथपथ एक कांस्टेबल इमारत से बाहर निकला। उसने हकलाते हुए कहा, 'आतंकवादी छठी मंजिल की छत पर हैं।' उसने बताया कि उसके बॉस छह अधिकारियों को ऊपर ले गए थे, जिनमें से दो की मौत हो चुकी थी, जबकि वह अधिकारी बुरी तरह घायल होकर अंदर फंसा हुआ था। पुलिस को बंदूकधारियों को भागने से रोकने के लिए सामने से घेराबंदी करनी पड़ी, जबकि करकरे और उनके साथियों ने पिछले गेट पर पहरा

दिया। एटीएस प्रमुख ने कंट्रोल रूम को फोन किया। रेडियो संदेशों से पता चला कि इलाके में साठ राज्य रिजर्व पुलिस बल के अधिकारी, साथ ही एक त्वरित प्रतिक्रिया दल और एक हमलावर दस्ता मौजूद थे, लेकिन किसी को भी नहीं भेजा गया। हताश होकर उन्होंने इंतजार करना छोड़ दिया। उन्हें सामने के गेट से खुद निपटना था। करकरे, कामते और इंस्पेक्टर सालस्कर, तीन कांस्टेबलों के साथ, रंग भवन लेन की ओर जा रही एक पुलिस जीप में सवार हो गए। तभी बंदूकधारी अस्पताल के सामने से निकल गए और उन्हें चुनौती देने वाले एक पुलिस इंस्पेक्टर को गोली मारकर हत्या कर दी, फिर वे घूमकर अस्पताल के पिछले हिस्से में चले गए।
इंस्पेक्टर सालस्कर गाड़ी चला रहे थे, उनके बगल में कामते बैठे थे, जबकि करकरे बीच वाली सीट पर बैठे थे। पीछे की सीट पर एक पुलिस ड्राइवर और तीन कांस्टेबल थे, जिनमें सालस्कर के डिप्टी अरुण जाधव भी शामिल थे, जो सादे कपड़ों में क्राइम ब्रांच के अधिकारी थे। ग्यारहवीं मंजिल पर रहने वाले लोगों ने कंट्रोल रूम के 100 नंबर पर फोन करके चेतावनी दी कि बंदूकधारी और पुलिस जीप आपस में टकराने वाले हैं।
अफरा-तफरी में, नियंत्रण विभाग में किसी ने भी करकरे को संदेश नहीं भेजे, जिसकी गाड़ी बिना देखे ही आगे बढ़ती चली गई। जैसे ही गाड़ी एक बाएं मोड़ पर घूमी, कुशल निशानेबाज कामते ने हथियारबंद लोगों को देखा और झाड़ियों पर अंधाधुंध गोलियां बरसा दीं। कांस्टेबल जाधव ने देखा कि एक लंबा-चौड़ा आदमी और एक छोटा-सा आदमी असॉल्ट राइफलों के साथ बाहर निकले और शांति से नियंत्रित तरीके से जीप पर गोलियां बरसाने लगे, मानो यह कोई प्रशिक्षण अभ्यास हो। गोलियां दरवाजों को भेदते हुए गाड़ी को हिला रही थीं और चीख रही थीं।
एक कांस्टेबल, जो घायल था लेकिन अभी भी सांस ले रहा था, जाधव के ऊपर गिर पड़ा। जाधव की दाहिनी कोहनी और बाएँ कंधे पर गोली लगी थी, जिससे उसकी कार्बाइन छूट गई। दूसरा कांस्टेबल, जिसकी छाती और गर्दन पर गोली लगी थी, उन दोनों के ऊपर लुढ़क गया। गोलीबारी रुक गई और जाधव, जो खून से लथपथ पड़ा था, ध्यान से सुनने की कोशिश कर रहा था। उसका बॉस, अजेय सालस्कर, पंक्चर टायर की तरह कर्कश आवाज में बोल रहा था। कामते और करकरे खामोश थे। क्या हमने सबको खो दिया?, कांस्टेबल ने भयभीत होकर खुद से पूछा, उसकी आँखों में आँसू भर आए थे।

बत्ती जलाती हुई एक पुलिस गाड़ी तेज़ी से गली में आ गई। जाधव ने मन ही मन कहा, 'भगवान का शुक्र है।' लेकिन गाड़ी आगे बढ़ती रही, हालांकि उसने रेडियो पर ड्राइवर को बताया कि उसने क्या देखा: एक पुलिस जीप पर गोलियां चलाई गईं और 'तीन लोग गली में पड़े हुए हैं'। जाधव ने कार के रेडियो पर यह सुना। क्या पुलिस अधिकारियों के मारे जाने से ज़्यादा ज़रूरी कुछ और है?, जाधव ने खुद से पूछा। चश्मदीदों ने 100 पर कॉल करके बताया कि बंदूकधारी स्पेशल ब्रांच के दफ्तर की ओर बढ़ रहे थे, कामते की खड़ी कार और ड्राइवर पर गोलियां चला रहे थे, फिर वापस आकर उस पुलिस जीप का मुआयना करने लगे जिस पर उन्होंने घात लगाकर हमला किया था। लेकिन जांच के लिए किसी को नहीं भेजा गया।
जीप के अंदर, कांस्टेबल जाधव, जो अभी भी होश में थे, ने दरवाजे खुलने और शवों को बाहर निकाले जाने की आवाज सुनी। सस्पेंशन बुरी तरह हिल गया। क्या वे पिछली सीट पर बैठे मृत और मरणासन्न कांस्टेबलों को भी बाहर निकाल लेंगे और उन्हें शवों के ढेर के नीचे जिंदा पाएंगे? इसके बजाय, एक बंदूकधारी गाड़ी में चढ़ा और इंजन को तेज किया, जबकि दूसरा बंदूकधारी आगे की यात्री सीट पर बैठ गया। यात्री ने ड्राइवर को भाई इस्माइल कहकर पुकारा और ड्राइवर ने यात्री को भाई अजमल कहा। जाधव ने देखा कि यात्री 'छोटा कद-काठी का था, लगभग पांच फुट तीन इंच', ऊंट चालक जैसी कद-काठी और गोरा रंग। यह फरीदकोट का लड़का अजमल कसाब था।
इस्माइल ने एक्सीलरी का एक्सीलरेटर दबाया और गाड़ी इधर-उधर फिसलने लगी। घायल व्यक्ति के कराहते ही जाधव अपने साथियों की वर्दी को कसकर पकड़े रहा, ताकि उनके शरीर उसे ढक सकें। अचानक उनमें से एक का फोन बजा और अजमल ने अपनी एके-47 राइफल सीट के पीछे रखी और बिना देखे गोलियों की बौछार कर दी। जाधव को लगा जैसे गोलियां उसके साथियों को लग रही हों और घायल लोग शांत हो गए। अब सिर्फ जाधव ही बचा था।
दाहिनी ओर मुड़कर, जीप रंग भवन लेन से मेट्रो जंक्शन की ओर तेज़ी से निकल गई। पुलिस को देखते ही इस्माइल ने गाड़ी को घुमाकर सीएसटी की ओर मोड़ दिया और स्टेशन से घायलों को निकालने के लिए चल रहे अभियान में शामिल हो गया। इस्माइल ने एक और यू-टर्न लिया और जीप वापस मेट्रो जंक्शन की ओर मुड़ गई, जहाँ उसने पत्रकारों और पुलिसकर्मियों की भीड़ पर गोलियों की बौछार कर दी। खून की कमी से कमज़ोर हो चुके जाधव प्रार्थना कर रहे थे कि गोलीबारी में उन्हें गोली न लग जाए।

‘हम कहाँ जा रहे हैं?’ इस्माइल ने अपने साथी से रास्ता पूछते हुए चिल्लाकर पूछा। अजमल ने माना कि वह नक्शों वाला अपना बैग अस्पताल में ही छोड़ आया है। इस्माइल ने स्टीयरिंग व्हील पर ज़ोर से हाथ मारा और कांस्टेबल जाधव को गाड़ी के दक्षिण की ओर मुड़ने का झटका महसूस हुआ। ‘एक टायर पंचर हो गया है,’ उसने दर्द को सहते हुए और होश में रहने की कोशिश करते हुए मन ही मन कहा। मंत्रालय सरकारी परिसर के पास कहीं, टायर घिसने की आवाज़ से उसे पता चला कि गाड़ी रिम पर चल रही है। आखिरकार, जीप मैसूर स्टेट बैंक के सामने कंक्रीट के डिवाइडर से टकरा गई। इस्माइल और अजमल ने पास से गुजर रही एक स्कोडा कार को रोका, ड्राइवर और दो यात्रियों को बाहर निकाला और तुरंत निकल पड़े। जाधव अकेला था। वह लाशों के ढेर के नीचे से निकला और एक रेडियो उठाया: ‘दो आतंकवादियों ने रंग भवन लेन से पुलिस की क्वालिस कार को अगवा कर लिया है।’ उसने फिर रेडियो पर संदेश भेजा। ‘पीआई सालस्कर, एटीएस सर और दक्षिण क्षेत्र के सर पर गोलियां चलाई गई हैं।’ तीनों लोग अभी भी रंग भवन लेन में पड़े थे, जबकि कामते के ड्राइवर ने, जिसे उसके बॉस पर हमले के बाद गोली लगी थी, तीन बार मदद के लिए फोन किया, उसका आखिरी संदेश रात 12:37 बजे आया। लेकिन तब तक, सभी की निगाहें ताज होटल की ओर वापस चली गईं, जहां एक जोरदार, गर्जनापूर्ण विस्फोट ने होटल के पैलेस विंग को चीर डाला, जिससे खिड़कियां हिल गईं, दीवारें कांपने लगीं, दरवाजे टूट गए और अंदर मौजूद सभी लोगों पर टूटे हुए कांच और प्लास्टर के बादल छा गए।
कराम्बिर कांग होटल के बाहर अपनी कमीज की आस्तीनों में थे और सामान ढोने वाली ट्रॉलियों पर मृत और घायल मेहमानों को निकालने में मदद कर रहे थे, तभी उन्हें एक ज़ोरदार धमाका महसूस हुआ। उनकी नज़रें छठी मंज़िल की ओर उठीं और धमाके की लहर शांत होने से पहले ही उनका फोन बजने लगा। होटल के चारों ओर से घबराए हुए कर्मचारी फोन कर रहे थे। "सीढ़ियों से लेकर छत तक आग की एक दीवार सींक बनी हुई है," होटल के जनसंपर्क निदेशक चिल्लाए, जो वीआईपी मेहमानों के एक छोटे समूह के साथ सी लाउंज में फंसे हुए थे। "हमें क्या करना चाहिए? भाग जाएं या घेराबंदी कर लें?"
'बैरिकेड लगाओ,' करम्बिर चिल्लाया, लेकिन उसके विचार कहीं और थे।
पुनीत वत्सयान, जो मेरे पुराने स्कूल के दोस्त थे, ने फ्रांस से फोन किया: ‘क्या सब ठीक है?’ शांत स्वभाव वाले करमबीर ने पुनीत से फोन कटवाया, तभी टाटा के एक वरिष्ठ अधिकारी पार्थ चटर्जी का फोन आया, जो उनके बॉस और पूरे

उपमहाद्वीप में उनके साथ यात्रा करने वाले साथी रहे थे। ‘कृपया सब कुछ भूल जाइए। बस मेरे परिवार के लिए प्रार्थना कीजिए,’ महाप्रबंधक ने आग्रह किया। उन्हें आभास हो गया था कि नीति और लड़कों के पास समय कम होता जा रहा है। कुछ देर बाद जब पाटिल ने करमबीर को ऊपर आने के लिए बुलाया, तो उसने मना कर दिया। डीसीपी बहुत क्रोधित हुए क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि बाहर मौजूद पुलिस होटल मैनेजर को बता रही थी कि अंदर जाना बहुत खतरनाक है। करमबीर भी कर्तव्य की भावना से बोझिल थे। उनके दिमाग में बस यही चल रहा था कि कैसे कर्मचारियों को इकट्ठा किया जाए और इस पंगु होटल के एक प्रत्यक्ष और सहायक मुखिया के रूप में अपनी भूमिका निभाई जाए। साहसी बचाव प्रयासों से उनके अपने परिवार के लिए उनकी चिंताएं कुछ हद तक कम हो सकती थीं, लेकिन इससे ताज होटल बिना नेतृत्व के रह जाता और सैकड़ों मेहमानों और कर्मचारियों की जान खतरे में पड़ जाती। उन्होंने अपने एक सहकर्मी से कहा, 'मेरा यहां होना बहुत जरूरी है।'
एक और फोन कॉल लेते हुए, उनका ध्यान इतना भटक गया कि उन्हें यह समझने में कुछ शब्द लग गए कि यह नीति है। उसने अपने दोनों ओर कसकर पकड़े हुए लड़कों के लिए शांत रहने की कोशिश की। 'वह धमाका क्या था?' उसने पूछा। उनके अपार्टमेंट में धुआं भर रहा था और बिजली शॉर्ट सर्किट हो रही थी। कमरे के स्प्रिंकलर भी चालू हो गए थे, जिससे वे सब भीग गए थे। 'शायद कोई छोटा बम फट गया है,' उन्होंने बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए जवाब दिया। उन्हें पाटिल की बताई बात याद आ गई। बंदूकधारी छठी मंजिल पर घात लगाए बैठे थे। उन्होंने नीति को बाहर न भागने की चेतावनी दी।
नीति ने रोते हुए पूछा, ‘हमें क्या करना चाहिए?’ करमबीर ने नरमी से कहा, ‘तुम्हारे लिए वहीं रहना सबसे सुरक्षित होगा।’ उसने नीति और उदय को धुएं को रोकने के लिए गीले तौलिये लाने का सुझाव दिया। उसने कहा, ‘उन्हें दरवाजे के सामने एक घेरा बनाकर बाथरूम में चले जाना चाहिए, जो अपार्टमेंट का सबसे सुरक्षित कमरा है। और फिर?’ उसने नीति को भरोसा दिलाया कि सुरक्षा बल जल्द ही बंदूकधारियों को पकड़ लेंगे। लेकिन अब उसे खुद इस बात पर यकीन नहीं रहा।

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, रात 12.40 बजे – समुद्री गाड़ी चलाना

शहर में आमतौर पर गाड़ियों की भीड़ का शोरगुल छाया रहता था, जिसकी वजह से अपोलो बंदर से अंधेरी (और हवाई अड्डे) तक तेरह मील की दूरी तय करने में दो घंटे का लंबा और थका देने वाला सफर तय करना पड़ता था। लेकिन मानसून के बाद की इस ठंडी, शुष्क शाम को पुलिस और सेना ने सभी मुख्य सड़कों को बंद कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी गहरी शांति छा गई थी जो पचास साल से नहीं देखी गई थी।
ताज होटल के पीछे, बैक बे में, सुनसान मरीन ड्राइव पर हेलोजन की रोशनी में एक अकेली चांदी की स्कोडा कार तेज़ी से दौड़ रही थी। वह ट्राइडेंट-ओबेरॉय रेलवे स्टेशन को पार करते हुए, जो घेराबंदी में था, क्वीन नेकलेस नामक जगमगाते फुटपाथ के पीछे-पीछे उत्तर की ओर बढ़ रही थी। एक अधिकारी ने रेडियो पर सूचना दी, 'स्कोडा कार, स्कोडा कार MH-02 JP1276, चांदी के रंग की, आतंकवादियों द्वारा अगवा की गई।' यह सूचना चौपाटी में आइडियल कैफे के सामने स्थित नाके पर पहुंची, जो मालाबार हिल की ओर जाने वाली सड़क का आखिरी मुख्य जंक्शन था। जैसे ही कार दिखाई दी, पुलिस ने अपनी बंदूकें तान लीं और अचानक उनके सामने रुक गई। एक सब-इंस्पेक्टर आगे बढ़ा और चकाचौंध कर देने वाली हेडलाइट्स का सामना करते हुए सीटी बजाई। ड्राइवर ने वाइपर चालू कर दिए, जिससे विंडस्क्रीन पर पानी की बौछार होने लगी और दृश्य धुंधला हो गया।
‘लाइट बंद करो, हाथ ऊपर उठाओ और बाहर निकलो।’ गाड़ी का इंजन तेज़ आवाज़ करने लगा और गाड़ी उसकी तरफ तेज़ी से बढ़ने लगी। आखिरी क्षण में गाड़ी घूम गई और सड़क के डिवाइडर पर अटक गई। दो पुलिस अधिकारी अजमल की तरफ दौड़े, तभी किसी ने पीछे की खिड़की तोड़ दी। इस्माइल ने अजमल को हाथ ऊपर उठाने को कहा और फिर पिस्तौल निकालकर आगे बढ़ती पुलिस पर गोली चला दी। पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की और अजमल के लिए यह एक भयानक दृश्य था जब इस्माइल गर्दन में गोली लगने से गिर पड़ा।
अजमल ने संभलकर अपना दरवाजा खोला। लड़खड़ाने के बाद उसने अपने पैरों के बीच से एक असॉल्ट राइफल निकाली। एक पुलिसकर्मी ने राइफल की नली पकड़ ली और उसे खींचने लगा। अजमल ने ट्रिगर पर उंगली रखी और पुलिसकर्मी के पेट में गोलियों की बौछार कर दी। पुलिसकर्मी पीछे की ओर लड़खड़ाया लेकिन मरते हुए भी टिका रहा, उसके हाथों की त्वचा जलती हुई एकेडमिक राइफल से चिपक गई थी।

खाकी वर्दी पहने लोगों की भीड़ खून से लथपथ अजमल पर टूट पड़ी, उसे लात-घूंसे मारने लगी, उसके कपड़े उतारने लगी, थप्पड़ मारने लगी और पीटने लगी। आसपास खड़े लोग भी इसमें शामिल हो गए, तभी किसी ने चिल्लाकर कहा: 'रुको, रुको, हमें उसे जिंदा चाहिए।' उसे जबरदस्ती एम्बुलेंस में धकेल दिया गया, जहां वह धातु के फर्श पर लेटा हुआ था, उसके हाथ रुमाल से बंधे हुए थे, उसके बगल में इस्माइल का शव पड़ा था। अजमल के एकदम नए टेनिस के जूते सड़क पर ही छूट गए।

रंग भवन लेन में तीन दिग्गज पुलिस अधिकारियों की गोलीबारी के बारे में फोन लगातार आ रहे थे, लेकिन घटनास्थल पर पहुंचने वाला एकमात्र व्यक्ति करकरे का वायरलेस ऑपरेटर था, जिसने रात 00:47 बजे इस त्रासदी की सूचना रेडियो पर दी: 'करकरे सर, पूर्वी क्षेत्र के सर [कामते] और पीआई सालस्कर सर घायल हैं। हम उन्हें अस्पताल ले जा रहे हैं।'
नियंत्रण कक्ष में, इस त्रासदी की खबर तुरंत ही दूसरी खबरों से दब गई। चौपाटी में दो बंदूकधारियों को मार गिराया गया था। 'लाशें कहाँ हैं?' मारिया ने चौपाटी के सहायक आयुक्त को फोन करके पूछा। 'एक मारा गया है, लेकिन एक ज़िंदा है,' अधिकारी ने बताया। मारिया स्तब्ध रह गया। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। क्या हालात बदल रहे थे? उसने अपने स्टाफ की गाड़ी मंगवाई और कैदी से पूछताछ के लिए तैयार हो गया। लेकिन इससे पहले कि वह दरवाजे से बाहर निकलता, आयुक्त गफूर का फोन आया और उसे वहीं रुकने को कहा गया। यह चौपाटी का अधिकार क्षेत्र था और इसके अतिरिक्त आयुक्त प्रभारी होंगे। मारिया गुस्से से आग बबूला था। शहर जल रहा था और ताज महल घिरा हुआ था। पुलिस बल को पकड़े गए बंदूकधारियों से जानकारी निकालने के लिए एक सटीक उपकरण की आवश्यकता थी। अतिरिक्त आयुक्त, जो पच्चीस वर्षों में धीरे-धीरे पदोन्नति पाकर इस पद तक पहुंचे थे, सम्मान के साथ कहें तो, धीमी गति से काम कर रहे थे। लेकिन गफूर, जो अत्यधिक दबाव में थे, दृढ़ और अडिग थे। यह चौपाटी का खेल था।
मारिया ने होंठ दबाए और चुपचाप क्राइम ब्रांच के एक भरोसेमंद इंस्पेक्टर को एडिशनल कमिश्नर पर नज़र रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए भेजा कि वह कोई गड़बड़ न कर दें। इस नाजुक मोड़ पर उन्हें पाँच सवालों के जवाब चाहिए थे: कितने आतंकवादी थे, उन्हें किसने भेजा था, वे शहर में कैसे दाखिल हुए

थे, उनका मकसद क्या था और उनका नियंत्रण केंद्र कहाँ था? 'कैदी का मुंह खोलो और साइनाइड की जांच करो,' उसने अपने आदमी को आवाज़ दी।
रात 12:56 बजे गफूर ने फोन पर दोबारा संपर्क किया। कामते और करकरे कहाँ थे? मारिया का गला भर आया। ‘...सर, अशोक [कामते] एसबी कार्यालय के पास हैं, सर। वह एसबी कार्यालय की सुरक्षा कर रहे हैं, सर।’ लेकिन कामते वहाँ नहीं थे। वह सड़क के नीचे, रंग भवन लेन में थे, जहाँ आधी रात के कुछ ही समय बाद कई चश्मदीदों और पुलिस गश्ती दल द्वारा सूचना दिए जाने के बाद उन पर जानलेवा गोलीबारी हुई थी।
एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे का क्या हुआ? ‘सर...सर, वो...वो...वो...हेमंत...सर, सीएसटी रेलवे स्टेशन पर थे। मैं उनका पता लगाकर उन्हें तुरंत आपसे संपर्क करने के लिए कह दूंगा, सर।’ कंट्रोल रूम के लॉग से पता चला कि एटीएस प्रमुख ने सीएसटी से कामा अस्पताल जाने का अपना फैसला डेढ़ घंटे से भी ज्यादा पहले, रात 11:24 बजे फोन पर बता दिया था।
कमिश्नर ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए पूछा, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उन्हें क्या बताया जा रहा है: ‘मैं सिर्फ़ यह जानना चाहता हूँ कि श्री करकरे और कामते घायल हैं या सुरक्षित हैं?’ आम तौर पर शांत रहने वाली मारिया ने जवाब दिया: ‘सर, यही करने की कोशिश कर रही हूँ। सर, जहाँ तक उस रिपोर्ट की बात है... कि पूर्वी क्षेत्र [कामते] के वाहन पर गोलीबारी हुई थी, कोई घायल नहीं हुआ है। जैसे ही मेरी बात पूरी हो जाएगी, मैं आपको बता दूँगी।’ उस गोलियों से छलनी क्वालिस का कोई ज़िक्र नहीं था जिसमें तीनों अधिकारियों को मार गिराया गया था। ‘आप एक दल भेजेंगी...?’ कमिश्नर ने पूछा। ‘पहले ही भेज दिया है सर... पहले ही भेज दिया है सर। अतिरिक्त मुख्य पुलिस अधिकारी और अपराध शाखा की तीन इकाइयाँ काम पर लगी हुई हैं सर,’ मारिया ने यह कहकर बात खत्म की।
नौ मिनट पहले, करकरे के रेडियो ऑपरेटर ने कंट्रोल सेंटर को फोन करके पुष्टि की थी कि शहीद अधिकारियों को जीटी अस्पताल ले जाया जा रहा है, जहां उन सभी को मृत घोषित कर दिया गया था।

रात 1 बजे – नायर अस्पताल

मुंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन और शहर के महालक्ष्मी रेसट्रैक (भाग्य और समृद्धि की देवी के नाम पर) के बीच स्थित नायर अस्पताल, ताज महल से चार मील उत्तर में था। चौपाटी के अतिरिक्त आयुक्त तानाजी घड़गे पहले से ही पान चबाते हुए, अपने बढ़े हुए पेट पर पुलिस बेल्ट बांधे, इंतजार कर रहे थे, तभी अजमल कसाब को स्ट्रेचर पर लाया गया।
आपातकालीन वार्ड के एक निजी कमरे में, अजमल के कपड़े उतार दिए गए, उसे साफ किया गया और हरे रंग की प्लास्टिक शीट के ऊपर एक धातु के बिस्तर पर लिटा दिया गया। उसका धड़ नंगा था और पेट पर एक मोटा ऊनी कंबल डाला गया था। वह ड्रिप से जुड़ा हुआ था, उसके दाहिने और बाएं हाथ पर पट्टियाँ बंधी थीं और दोनों हाथ बारूद से काले पड़ गए थे।
घड़गे ने कैमरा चालू किया और कांपते हुए कैदी पर फोकस किया। छत की ओर देखते हुए, आँखें बंद किए अजमल रोते हुए बोला, 'मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है।' वह बेहद डरा हुआ था। घड़गे झुककर चबाते हुए बोले, 'किसके आदेश पर?' एक देहाती लड़के की सादगी से अजमल ने सूखे होंठों से जवाब दिया, 'चाचा के आदेश पर। लश्कर वाले चाचा के आदेश पर।' बिना किसी दबाव के, अजमल ने वह बात बता दी जो किसी को पता नहीं चलनी चाहिए थी - हमले के पीछे का मास्टरमाइंड।
लेकिन ग़ादगे ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। वह 'अंकल' और 'लश्कर' शब्दों पर अटक गया। 'लश्कर क्या? वह किस गाँव से है?' उसने पूछा, संगठन के नाम को 'ग्राम रक्षा समिति' शब्द से भ्रमित करते हुए। उसने अजमल को भी उलझन में डाल दिया। जल्द ही दोनों की बातें एक-दूसरे से अलग होने लगीं। 'मुझे उसके गाँव के बारे में नहीं पता,' अजमल ने कहा, 'लेकिन उसका एक कार्यालय है।' वह मुज़फ़्फ़राबाद के ऊपर स्थित हाउस ऑफ़ द होली वॉरियर्स में ज़की के मुख्यालय का जिक्र कर रहा था, एक और तथ्य जो ग़ादगे के सिर के ऊपर से निकल गया।
‘तुम्हें वहाँ जाने के लिए किसने राजी किया?’ ग़ादगे ने पूछा, और लड़का थोड़ा सहम गया। ‘मेरे पिता ने मुझसे कहा, “हम बहुत गरीब हैं। तुम भी दूसरों की तरह पैसे कमाओगे।”’
‘तुम्हारा असली पिता?’ घड़गे पहले से ही यह साबित करने की कोशिश कर रहा था कि पूरा परिवार साजिश में शामिल था।
‘असली पिता... असली पिता,’ लड़के ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, मानो वह फरीदकोट से भागने के लिए मजबूर करने वाली डांट-फटकार और मार-पिटाई की

यादों में खो गया हो। ‘उन्होंने कहा था कि हम भी दूसरों की तरह पैसे कमाएँगे।’
कैमरे की नज़र से ओझल, कमरे में पुलिसकर्मियों की भीड़ थी, जो आपस में फुसफुसा रहे थे। खबर सुनते ही एक दर्जन पुलिसकर्मी नायर अस्पताल पहुँच गए थे। इसी बीच, ग़ादगे ने फिर से शुरुआत की। 'ठीक है, आपका नाम क्या है?'
यह तो आसान था: 'अजमल।'
'तुम्हारी उम्र क्या है?'
' इक्कीस।'
‘तुम्हारा गाँव कहाँ है?’
‘फरीदकोट, तहसील [प्रशासनिक जिला] देपालपुर, जिला ओकारा।’ कमरे में मौजूद कुछ लोगों ने फोन करना शुरू कर दिया। यह पहला सबूत था कि हमला पाकिस्तान से हुआ था, यह तथ्य कि लश्कर ने इसे छिपाने के लिए इंटरनेट टेलीफोनी का इस्तेमाल किया था, कपड़ों के सभी लेबल काट दिए थे, हमलावरों के बाल मुंडवा दिए थे, उन्हें पश्चिमी पोशाक पहनाई थी, उनकी कलाई पर हिंदू मंदिर में अभिमंत्रित कंगन बांधे थे और उनकी पतलून की जेबों में भारतीय छात्र पहचान पत्र रखे थे।
लेकिन घड़गे संदिग्ध के विस्तृत बायोडेटा को दर्ज करने में ही उलझ गए। अजमल के मामा के घर का पता – पुलिसकर्मी को इसकी ज़रूरत थी। उनके बड़े भाई की पत्नी के बारे में सवाल – नाम और पता? घरेलू खर्चों को लेकर पति से झगड़े के बाद वह घर क्यों लौट आई थी – और उनके घर जाते समय रास्ते में पड़ने वाले बैंक का नाम क्या था? वह अजमल कसाब के परिवार के तांडवों में पूरी तरह से खो गए थे। जबकि शहर में बाहर, जलते हुए ताज, ट्राइडेंट-ओबेरॉय और चबाड हाउस में चल रहे नरसंहार में मेहमान और कर्मचारी मारे जा रहे थे, घड़गे अनजान सड़कों के नाम, गांवों के पते और पंजाबी उपनामों में उलझे रहे। दोहराओ। फिर से कहो। मुझे एक बार फिर बताओ। कैदी भी निराश हो गया, और उसे मजबूर होकर अपने दूर के रिश्तेदारों के प्रतीकात्मक चित्र बनाने पड़े, जो अनपढ़ किसान और स्कूली बच्चे थे, जिनके बारे में उसने कई वर्षों से सोचा भी नहीं था।
उसने जैसे-तैसे सच उगलने की कोशिश की। ‘देखो, मेरे पिता ने मुझे बताया कि हम बहुत गरीब हैं और फिर उन्होंने मुझे लश्कर के लोगों से मिलवाया।’ वह कहानी को थोड़ा घुमा-फिराकर कह रहा था, अपने नफरत भरे पिता को ही इसका दोषी

ठहरा रहा था, जबकि असल में वह और उसका दोस्त, रावलपिंडी के मेले के नशे में चूर होकर, लश्कर के चंगुल में फंस गए थे। और चाहे यह नगरपालिका के बिस्तर और फरीदकोट में उसके पलंग के बीच की दूरी हो, या अपने अत्याचारी पिता और उस माँ का ख्याल, जिसकी हंसी इतनी कड़वी थी कि वह उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएगा, अजमल रोने लगा।
घड़गे ने आगे पूछा, 'क्या आपके पिता का लश्कर से कोई संबंध है?'
‘नहीं, नहीं, नहीं,’ अजमल ने नाक सिकोड़ते हुए और अपनी बात सुधारते हुए कहा। ‘वे लोगों को बताते रहते हैं कि यह जिहाद है। यह बहुत ही सम्मानजनक और साहसी काम है। आप खूब पैसा कमाएंगे और आपकी गरीबी दूर हो जाएगी।’
घड़गे अचानक मुद्दे पर आ गए। ‘तुम्हारा प्रशिक्षण कब शुरू हुआ?’ उनके आसपास मौजूद अधिकारियों ने राहत की सांस ली। पृष्ठभूमि में एक टीवी पर करकरे, सालस्कर और कामते की मौत की खबर चल रही थी – लेकिन सबकी निगाहें कैदी पर टिकी थीं। अजमल ने कहा, ‘उस समय बर्फ गिर रही थी। मैं बट्टल गांव में प्रशिक्षण ले रहा था।’ उनके मुंह से एक और अहम जानकारी निकल गई: मनसेहरा प्रशिक्षण शिविर। क्या वह खुद को बचाने की उम्मीद कर रहे थे, या उन्हें सिर्फ मरने का ही प्रशिक्षण दिया गया था?
‘हमारे बॉस हमसे कहते थे कि तुम जन्नत जाओगे। मैंने कहा, “मुझे यह पसंद नहीं है… और मैं यहाँ नहीं रहना चाहता।”’ उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। उसे उम्मीद थी कि कोई संगठन के शिविर में आकर उसे ले जाएगा। लेकिन इसके बजाय वह एक फ़िदायीन संगठन का हिस्सा बन गया था। उसने कहा, ‘हमें कहा गया था, “मरने तक गोली चलाते रहो।”’
घड़गे को समझ आ गया: 'तुम जिहाद के लिए यहाँ आए हो?'
‘कौन सा जिहाद, साहब?’ अजमल ने रोते हुए पूछा। मुज़फ़्फ़राबाद के पहाड़ों में गाया जाने वाला यह नारा अस्पताल के वार्ड में अर्थहीन लग रहा था। ‘तुमने अपने जैसे लोगों को मार डाला है।’
'हां, भगवान मुझे माफ नहीं करेंगे,' अजमल ने निराश होकर जवाब दिया। 'उन्होंने मेरे परिवार को बड़ी रकम देने का वादा किया था।'
‘कौन देगा?’
अजमल ने कहा, 'चाचा दे देंगे।'
‘चाचा कौन है?’ अजमल ने इस सवाल का जवाब देने से इनकार नहीं किया। ‘उनका नाम चाचा ज़की है। उनकी लंबी दाढ़ी है, उनकी उम्र लगभग चालीस से पैंतालीस साल

है।’ लड़के ने ग़ादगे को घूरकर देखा। ‘वह एक जिहादी हैं और रूस के साथ युद्धों में लड़े थे।’ फ़ोन उठाए गए। एटीएस या खुफिया एजेंसियां पता लगा सकती थीं कि यह चाचा ज़की कौन है। उपमहाद्वीप में व्यापक डीएनए डेटाबेस या पहचान पत्रों की कमी थी, जहां जटिल पारिवारिक नामों की कई वर्तनी होती थीं, और जहां कट्टरपंथी अपने जन्म के नामों को छद्म नामों से बदल लेते थे, वहां ज्ञात उपनामों की लंबी सूचियां रखी जाती थीं।
अजमल ने चाचा के शब्द दोहराए: ‘हम मुसलमान हैं। यह मानवता नहीं है। इन्होंने तुम्हें गरीबी में छोड़ दिया है और तुमसे आगे निकल गए हैं।’ उसने छत की ओर देखा और अपने साथ प्रशिक्षण लेने वाले सभी पिछड़े इलाकों के लड़कों को याद किया। ‘वे गरीबी को लेकर हमारा मज़ाक उड़ाते हैं। ये जगहें गरीबों से भरी पड़ी हैं, वहाँ और कौन जाएगा?’
‘क्या उन्होंने तुम्हें पैसे दिए हैं?’
नहीं। उन्होंने मेरे पिता को तीन लाख रुपये (2,300 पाउंड) दिए होंगे। बेटे के लिए यह छोटी सी कीमत है।
घड़गे ने संक्षेप में कहा: 'इसका मतलब है कि तुम्हारे पिता ने तुम्हारा इस्तेमाल किया।'
'जी सर,' अजमल ने कांपते होंठों से जवाब दिया, क्योंकि उदासी ने उसे घेर लिया था।
एक विराम।
इस्माइल की भूमिका क्या थी?
क्यों अड़े रहना? अजमल ने सब कुछ बता दिया। 'इस्माइल ही सब कुछ संभाल रहा था।' कमरे में कहीं और, मोबाइल फोन फिर से बजने लगे, यह खबर फैल गई कि पुलिस ने सरगना को मार गिराया है।
उन्होंने स्वेच्छा से दो और नाम बताए। अली और अब्दुल रहमान 'बदा' (बड़े), पच्चीस वर्ष के, लाल कमीज और लाल टोपी पहने हुए, जिस पर 'यीशु' लिखा हुआ था। 'येशु?' घाडगे ने पूछा। 'आपका मतलब ईसा मसीह से है?'
'हाँ'
लेकिन आप सब मुसलमान हैं?
'हां, लेकिन देखिए, हमें उन्हीं की तरह दिखना था।' उसने अधिकारी को स्पष्ट-स्पष्ट रूप से बताया।

लाल शर्ट। फोन आया। ताज के सीसीटीवी कमरे में मौजूद राजवर्धन ने फोन उठाया। लाल शर्ट उर्फ अब्दुल रहमान 'बड़ा' ताज पर हमला करने वालों में से एक था।
कैदी लगातार जानकारी दे रहा था। ‘वहाँ उमर, आकाश, फहदुल्लाह, एक और अब्दुल रहमान, ये छोटा सा। फिर शोएब और उमर थे।’ एक महीने पहले टीम कराची के एक सुरक्षित ठिकाने पर चली गई थी, जहाँ उन्हें ‘दोस्तों’ के रूप में बाँटा गया और मुंबई में उनके लक्ष्यों की फ़िल्में दिखाई गईं। हर जोड़ी के पास एक मोबाइल था, जिसमें पहले से ही कॉल करने के लिए नंबर सेव थे। अजमल और इस्माइल के अलावा शहर में आठ और लोग थे।
अब फोन टैपिंग पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई थी।
एटीएस प्रमुख करकरे के निधन पर शोक मनाने का समय ही नहीं था। उनके डिप्टी परमबीर सिंह को तुरंत आगे आकर एटीएस के इंटरसेप्ट अनुरोध पर हस्ताक्षर करने पड़े। तब तक खुफिया एजेंसियों ने तकनीकी अनुभाग को निगरानी के लिए दो और मोबाइल फोन नंबर सौंप दिए थे। रात 1 बजे के कुछ ही समय बाद, तीनों में से पहला नंबर +91 9910 719 424 बजा, और नागपाड़ा स्थित अपने कार्यालय में बैठे एटीएस तकनीकी अनुभाग के प्रमुख इंस्पेक्टर निवृत्ति कदम ने फोन की घंटी सुनी।
‘हैलो।’ फोन करने वाले ने अपना नाम ‘भाई वसी’ बताया। कदम ने इसे नोट कर लिया। वसी किसी छद्म नाम जैसा लग रहा था। वे इसकी जाँच करेंगे।
वासी: ‘यार, मीडिया तुम्हारे कमरे का नंबर बता रहा है...’ कदम अब समझ गया था कि वासी कोई बंदूकधारी नहीं था। वासी उनका हैंडलर था। वह बंदूकधारियों को नियंत्रित कर रहा था, फुसला रहा था और सलाह दे रहा था, और टीवी पर हमले को देख रहा था। मुंबई में हत्यारों को दूर से निर्देश दिए जा रहे थे। कदम ने नियंत्रणकर्ता के ठिकाने और बंदूकधारी के बारे में सुराग ढूंढने के लिए बातचीत को खंगाला, जो किसी होटल के कमरे में होना चाहिए था, जिससे पता चलता है कि वे ट्राइडेंट-ओबेरॉय या ताज होटल में थे।
एटीएस को कॉल को मैप करने के लिए एक संक्षिप्त विधि की आवश्यकता थी। टी का मतलब आतंकवादी और सी का मतलब नियंत्रण या वसी था।
टी: 'हां, यहां कैमरे लगे हुए हैं।' बंदूकधारियों ने सीसीटीवी कैमरे देख लिए थे।

सी: 'जहां भी कैमरे दिखें, उन पर गोली चलाएं। इन बातों को ध्यान में रखें।
ये बातें आपकी पहचान उजागर कर सकती हैं। आप कहां हैं? वहां कितने लोग हैं? आप सब किस हालत में हैं?'
क्या यह उनका पहला स्टेटस अपडेट है?, इंस्पेक्टर कदम ने सोचा।
वासी के पास एक सुझाव था।
सी: ‘तुम आग क्यों नहीं जलाते?’
टी: 'हमने अभी-अभी आग जलाना शुरू किया है।'
सी: ‘तब हम यहाँ आग की लपटें उठती हुई देखेंगे।’
हर क्रिया की एक प्रतिक्रिया होती है। आतंकवाद और आतंकवाद-विरोधी गतिविधियों की इस डिजिटल रूप से उन्नत दुनिया में, एटीएस अधिकारी अपने डेस्क पर बैठकर हत्यारों की बातें सुन रहे थे, जबकि एक अज्ञात स्थान पर बैठा उनका नियंत्रक उन्हें निर्देश दे रहा था और लगातार चल रहे सैटेलाइट समाचार चैनलों पर उनकी कार्रवाइयों के सबूतों पर नज़र रख रहा था।
वासी ने बंदूकधारियों का उत्साहवर्धन किया।
सी: 'जी हां, मीडिया में खबर आ रही है कि ताज होटल में एक बड़ा ऑपरेशन चल रहा है। आपके आदमियों में से एक को सीढ़ियों पर नजर रखनी चाहिए। जहां भी प्रवेश द्वार हों, वहां व्यवस्थित रूप से छिपकर बैठ जाओ।'
एटीएस को इसकी जानकारी मिल गई थी। यह बंदूकधारी ताज होटल के अंदर था। इंस्पेक्टर कदम ने अपने कार्यवाहक प्रमुख को संदेश भेजा।
वासी के पास और भी सलाह थी।
सी: 'शराब लाओ, कमरों से तकिए हटाओ, सारे कपड़े इकट्ठा करो, उन्हें एक-एक करके आग लगा दो। दो से तीन मंजिलों पर आग लगाओ। फिर बैठ जाओ और इंतजार करो।' वासी ने अनुशासन की आवश्यकता पर भी जोर दिया।
सी: 'जब भी फोन आए, मेरे दोस्त, तुम्हें उसे जरूर उठाना चाहिए।'
टी: ‘ठीक है।’
वासी ने समझाया कि चीजें कैसे काम करेंगी।
सी: ‘मीडिया जो भी रिपोर्ट कर रहा होगा, हम आपको बता देंगे। इससे आप उसी के अनुसार काम कर सकेंगे।’
टी: ‘ठीक है।’
लेकिन वासी फिर भी संतुष्ट नहीं थे।

सी: ‘मेरे भाई, तुमने अभी तक ग्रेनेड नहीं फेंका है। समुद्र की ओर ग्रेनेड फेंको। वहाँ बहुत सारे लोग खड़े हैं।’ बाकी सब लोगों की तरह, वह भी ताजमहल के बाहर उमड़ी भीड़ का फुटेज देख रहा था।
टी ने समझाया: 'मैं उन दोनों को बार-बार भेज रहा हूँ और उनसे कह रहा हूँ कि इसे समुद्र की ओर फेंक दें। वे कहते हैं, "हाँ, हम इसे फेंक देंगे।" लेकिन वे बिना फेंके ही वापस आ जाते हैं।'
उस दृश्य में एक अजीब सी पारिवारिक भावना थी, मानो कोई पिता किसी अनसुने बच्चे से बात कर रहा हो। बंदूकधारी ऐसे झगड़ रहे थे जैसे अपने कर्तव्यों से ऊब चुके बच्चे हों।
बंदूकधारी ने अपने बगल में बैठे किसी व्यक्ति से फुसफुसाते हुए कहा: 'भाई, वे कह रहे हैं कि आग लगा दो। आग लगा दो।'
फोन कट गया।
कुछ मिनट बाद, 01.15 बजे, वासी ने फिर से फोन किया, और इंस्पेक्टर कदम हमारी बात सुन रहे थे।
सी: 'क्या तुम आग लगा रहे हो या नहीं?' वासी को अभी भी टीवी पर कोई सबूत नहीं दिख रहा था।
टी: ‘हम आग से निपटने की तैयारी कर रहे हैं। हम कपड़े इकट्ठा कर रहे हैं।’ यह एक बचकाना बहाना लग रहा था।
सी: 'मेरे दोस्त, इसे जल्दी से जलाओ। मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता था कि तुमने लॉन्च के साथ क्या किया?'
इंस्पेक्टर कदम ने लिखना बंद कर दिया। एक नाव? तो इस तरह वे मुंबई आए थे। बाद में इस सबूत का मिलान मछुआरा बस्ती के प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों से किया जाएगा।
टी: 'हमने इसे वहीं छोड़ दिया।'
सी: ‘आपने पानी अंदर आने देने के लिए ताला नहीं खोला?’
टी: 'नहीं। हम जल्दी में थे और गलती कर बैठे। हमने उसे वहीं छोड़ दिया और भाग गए।'
वासी, जिसे अभी तक यह पता नहीं था कि अजमल कसाब पकड़ा जा चुका है, इस बात से चिंतित था कि लॉन्च से साजिश की जड़ें उजागर हो सकती हैं।

टी: ‘लहरें तेज़ी से टकरा रही थीं। हमने एक नाव देखी। सब लोग घबरा गए और चिल्लाने लगे, “नौसेना। नौसेना।” हम भाग गए। भाई इस्माइल का उपग्रह भी वहीं छूट गया।’
मौन।
कदम ने अजमल के मृत साथी का नाम 'इस्माइल' लिख लिया और अपने बॉस को फोन किया। उन्हें लॉन्च और उस सैटेलाइट फोन को तुरंत ढूंढना था।

हर दस मिनट में फोन बजता था। वसी ताज टीम के पीछे पड़ा हुआ था।
01.25 बजे एक और कॉल आई।
सी: 'क्या आग जलाई गई है या नहीं?' उसकी आवाज के लहजे से लग रहा था कि उसने अभी तक प्रक्षेपण और सैटेलाइट फोन की गड़बड़ी को माफ नहीं किया था।
टी: 'दो आदमी गए हैं, वे अभी तक वापस नहीं आए हैं।'
सी: 'क्या तुमने पर्दे, तकिए इकट्ठा कर लिए हैं?' वासी की आवाज़ में झुंझलाहट थी, मानो वह अपनी जीभ काट रहा हो।
टी: 'हमने सब कुछ इकट्ठा कर लिया है। हमें शराब की एक बोतल मिली है। हमारे साथ बंधक भी हैं।'
कदम ने अपने बॉस को संदेश भेजा। यह ठीक वैसा ही था जैसा पाटिल और राजवर्धन ने चेतावनी दी थी। बंदूकधारियों ने बंधकों को पकड़ लिया था। कदम ने यह महत्वपूर्ण जानकारी और एक और बात बताई: ताज होटल की एक टीम ने भूतल पर एक मोबाइल फोन गिरा दिया था। होटल में मौजूद पुलिसकर्मियों को उस पर नज़र रखनी चाहिए।
वासी आग के बारे में और अधिक जानकारी चाहता था।
सी: ‘इसे करने कौन गया है?’
टी: ‘अली और उमर चले गए हैं।’
इंस्पेक्टर कदम ने अली और उमर के नामों पर ज़ोर दिया। दो और नाम, दोनों वही थे जो अजमल ने बताए थे। कदम ने गौर किया कि अली ही पीले रंग की वर्दी वाला आतंकवादी होना चाहिए, उन दो लोगों में से एक जो टावर की लॉबी में भीड़ के साथ मुख्य द्वार की ओर बढ़ा था। उमर काले रंग की वर्दी वाला था, उन लोगों में से एक जिसने लियोपोल्ड पर हमला किया था।
सी: ‘आपने कितने लोगों को बंधक बना रखा है?’
टी: 'वहाँ सिर्फ एक ही आदमी है, हम अभी भी उसके साथ बैठे हैं।'

कदम को पाटिल से पता चला था कि यह 632 में बैंकर के. आर. राममूर्ति थे। वे उनके लिए क्या योजना बना रहे थे?
लेकिन वासी आगे बढ़ गए और अफवाहों और साजिशों सहित टीवी समाचार रिपोर्टों का सारांश प्रस्तुत करते हुए, यह देखकर अचंभित प्रतीत हुए कि चीजें कितनी अच्छी तरह से चल रही थीं।
सी: ‘पूरा मुंबई दहशत में है। 260 से अधिक लोग घायल हुए हैं और कुछ पुलिस अधिकारी भी शहीद हुए हैं। पचास फिदायीन घुसपैठिए हैं। तेरह-चौदह जगहों पर गोलीबारी हो रही है। अल्लाह की कृपा से माहौल बिगड़ रहा है।’ पूरे शहर और उसके आसपास दहशत फैल रही थी।
कदम, जिसे फिदायीन की संख्या के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, ने अपने बॉस को संदेश भेजा: 'क्या शहर में सचमुच 50 बंदूकधारी हैं?'
सी: ‘मीडिया यह भी कह रहा है कि कोई मंत्री होटल में फंसा हुआ है। कमरों में आग लगा दो, ताकि मंत्री जलकर मर जाए।’ टीवी कवरेज इस हमले के लिए निर्णायक साबित हो रहा था।
टी: ‘यहाँ पाँच हज़ार कमरे हैं। पता नहीं वो कहाँ है।’ बंदूकधारी की आवाज़ में नाराज़गी झलक रही थी।
वासी के पास एक व्यावहारिक समाधान था।
सी: 'यह कोई समस्या नहीं है। अल्लाह की कृपा से अगर आप पूरे होटल में आग लगा दें, तो भी वह जल ही जाएगा।'
इंस्पेक्टर कदम को गोलियों की आवाज सुनाई दी। वासी ने भी सुनी। सी: 'क्या हो रहा है? क्या वे गोली चला रहे हैं?'
टी: ‘जी हाँ। नीचे काम शुरू हो गया है।’ उमर और अली किसी चीज़ पर गोली चला रहे थे या कोई उन पर गोली चला रहा था। कदम को लगा कि कहीं ये एसबी2 प्रमुख राजवर्धन तो नहीं, जो दूसरी मंज़िल पर सीसीटीवी कमरे से गोली चला रहा था। वो तो हमेशा झगड़े के लिए तैयार रहता था।
सी: 'ठीक है, मेरे दोस्त, क्या तुमने सीढ़ियों को ढक दिया है?' वासी रणनीतिक रूप से सोच रहा था।
टी: 'नहीं, हम ऐसा नहीं करते। हम यहां बैठे हुए हैं।'
एटीएस को आश्चर्य हुआ कि कमिश्नर गफूर ने जवानों को वापस क्यों बुला लिया था जबकि वे अब 632 पर आगे बढ़ सकते थे।

कमरा नंबर 632 में राम कालीन पर नाक टिकाए लेटे हुए थे और चेन्नई के रामकृष्ण मिशन में एक बुज़ुर्ग महिला द्वारा कही गई बात को याद कर रहे थे – कि त्याग का सबसे अच्छा पहलू उसे स्वीकार करना है। उस समय वे समझ नहीं पाए थे। लेकिन अब, भयभीत और पीड़ा में डूबे हुए, उन्होंने उस महिला के संदेश को समझा। ‘ईश्वर ने तुम्हारे लिए जो भी तय किया है, उससे लड़ने के बजाय उसे स्वीकार करो। उसे स्वीकार करना ही ईश्वर को स्वीकार करना है।’
उसे गलियारे में शोरगुल और दरवाज़े के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। किसी ने खुशी से चिल्लाते हुए बताया कि वे गलियारे में स्थित कमरा नंबर 639 में जबरदस्ती घुस गए हैं। थोड़ी देर बाद राम ने ताज होटल की वर्दी पहने दो लोगों को कमरे में आते देखा। दोनों को बिस्तर पर औंधे मुंह लेटने को कहा गया। एक बंदूकधारी ने चिल्लाकर पूछा, 'नाम बताओ।' कैदियों में से एक ने कहा, 'आदिल ईरानी।' यह एक्वेरियस होटल का वेटर था, जो भूतल पर हुए नरसंहार से भागकर तीन घंटे से कमरा नंबर 639 में छिपा हुआ था।
‘क्या तुम मुसलमान हो?’ एक बंदूकधारी ने आदिल से पूछा। जब उसने सिर हिलाकर हाँ कहा, तो बंदूकधारी ने उस पर चिल्लाना शुरू कर दिया। ‘तुम मुसलमान नहीं हो, तुम जिहाद पर कलंक हो। तुम एक गद्दार मुसलमान हो।’ आदिल, जो वास्तव में एक पारसी था, ने अपनी आँखें बंद कर लीं और प्रार्थना करने लगा, जबकि वे उस पर बंदूकें तान रहे थे। वे रुके। ‘तुम क्या करते हो?’ आदिल ने सच बताया: ‘मैं तो बस एक वेटर हूँ।’ उन्होंने उसके पैरों और पीठ पर वार किए। ‘चलो, अब अल्लाह के लिए अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाओ।’ उसने अपने बेटे और बेटी के चेहरे, और अपनी पत्नी और माँ के चेहरे अपने सामने प्रकट किए। बंदूकधारी बाकी कैदियों की ओर बढ़े। ‘और तुम?’ उन्होंने दूसरे आदमी को थप्पड़ मारा। ‘स्वप्निल शेजवाल,’ एक आवाज लड़खड़ाते हुए बोली। ‘मैं एक बटलर हूँ, महोदय।’

एटीएस मुख्यालय में फोन की घंटी फिर बजी और इंस्पेक्टर कदम ने दूसरी तरफ से एक नई आवाज सुनी, जिसने अपना परिचय अब्दुल रहमान 'बदा' के रूप में दिया। इंस्पेक्टर कदम समझ गए कि यह वही लाल टी-शर्ट वाला व्यक्ति था, जो भीड़ का सहारा लेकर ताज होटल के टावर लॉबी से अंदर घुसा था। 'अल्लाह की कृपा से हम दो [बंधकों] को अपने साथ ले आए हैं।'
वासी ने बिना रुके कहा: 'पता लगाओ कि वे कहाँ से हैं।'

अब्दुल रहमान ने बंधकों पर चिल्लाते हुए पूछा, 'तुम कहाँ से हो?' फिर उसने नियंत्रण कक्ष में बैठे वसी से कहा, 'पता नहीं ये कमीना क्या कह रहा है। ये परेल कह रहा है। परेल क्या है?'
यह मुंबई का एक जिला था।
अब्दुल रहमान ने वसी से कहा, “ये कमीने बंबई में ही रहते हैं। दोनों ही।” फिर वह किसी और पर चिल्लाने के लिए मुड़ा और बोला, “तुम भी यहीं के हो?” फोन पर वापस आकर बोला, “बूढ़ा आदमी बात नहीं कर रहा।” उसका इशारा ज़मीन पर नग्न पड़े बैंकर राम की ओर था।
एटीएस कार्यालय में उन्हें हाथापाई की आवाजें सुनाई दे रही थीं। बंदूकधारियों में से एक बंधकों को लात-घूंसे मार रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कालीन हवा में लहरा रहा हो। अब्दुल रहमान ने इसे रोकने की कोशिश की: 'उमर, मेरी बात सुनो। एक मिनट के लिए मेरी बात सुनो।' काले कपड़े पहने और छोटे बालों वाला उमर, वही बंदूकधारी जिसने लियोपोल्ड के यहाँ गोलीबारी की थी, राम और बाकी लोगों को पीट रहा था। उसे रोकना नामुमकिन था। वे कराह रहे थे और रो रहे थे।
अब्दुल रहमान उमर पर चिल्लाया: ‘अरे बेवकूफ, मेरी बात सुन। इधर आओ। सुनो। अरे यार, मेरी बात सुनो। तुम मेरी बात नहीं सुनते।’ उमर गुस्से से आग बबूला हो गया था और कैदियों को लात-घूंसे मार रहा था। नियंत्रण कक्ष में मौजूद वसी ने बीच-बचाव करने की कोशिश की: ‘उमर?’ उमर थोड़ी देर के लिए फोन पर आया: ‘हेलो, हेलो, हेलो?’ उसकी सांस फूल रही थी। वसी: ‘सलाम अलैकुम।’
लेकिन गुस्सा शांत नहीं हुआ था। उमर ने फोन अब्दुल रहमान को वापस देते हुए कहा: 'वह कहता है कि कैदी महाराष्ट्र से हैं।' अब्दुल रहमान फिर से उमर पर चिल्लाने लगा, जबकि वसी टीम को संभालने की कोशिश कर रहा था। वे आपस में बुरी तरह झगड़ रहे थे और उसे बंधकों या एक-दूसरे को मारने से पहले उनमें से कुछ को कमरे से बाहर निकालना था। उसे एक विचार आया। 'तुरंत आग लगा दो।' उमर को यह करना चाहिए।
उमर आदेश नहीं मान रहा था। अब्दुल रहमान उमर पर चिल्लाया, 'इधर आओ!' उसने वासी से शिकायत की, जो बहुत परेशान हो चुका था, 'हमारे लोग बात नहीं सुनते।' उसने गुस्से से कहा, 'उमर को मुझसे बात करवाओ!' वासी ने उन्हें उमर को दूसरा मोबाइल देने का आदेश दिया, ताकि वह सीधे उसे कॉल कर सके। उन्होंने आदिल का फोन लिया और अब्दुल रहमान उमर पर चिल्लाते हुए बोला, 'यह मोबाइल पकड़ो।'

अब्दुल रहमान ने ईरानी के फोन में वसी का नंबर डालने की कोशिश की, लेकिन वसी घबरा गया और बोला, 'तुम्हारा नंबर क्या है? तुम बताओ।' जब वसी ने नंबर बताया, तो इंस्पेक्टर कदम ने भी उसे लिख लिया। वह भी हैरान रह गया। उस नंबर का डायलिंग कोड ऑस्ट्रियाई था। उसने अपने बॉस को मैसेज किया। इसका क्या मतलब था? क्या उन्हें किसी यूरोपीय समर्थित आतंकी संगठन का पता चला था? आखिरकार उमर का फोन आया और वसी अपना आपा खो बैठा। उसने फोन कंट्रोल रूम में किसी और को दे दिया। उसे आराम की ज़रूरत थी। एक नई आवाज़ ने उमर को शांत करने की कोशिश की।
इंस्पेक्टर कदम ने आवाज के लिए एक सिफर बनाया: हैंडलर 2।
हैंडलर 2: 'हैलो, उमर?'
उमर: 'जी हां, मैं उमर बोल रहा हूं।' उसकी आवाज में तीखापन और आत्मसमर्पण करने की अनिच्छा झलक रही थी। वह उस कुत्ते की तरह था जिसने किसी भेड़ पर हमला किया हो और पहली बार गर्म खून का स्वाद चखा हो।
हैंडलर ने एक फ़ोन नंबर पढ़कर सुनाया। उमर ने हैरानी से पूछा, 'ठीक है, ये किसका नंबर है?' हैंडलर 2 ने धैर्यपूर्वक जवाब दिया, 'ये मैं हूँ। मुझे कॉल करो, यार। फ़ोन मेरे हाथ में है।' हैंडलर ऐसे बोल रहा था जैसे किसी ऊँची चट्टान से कूदने वाले को समझा रहा हो।
उमर फिर आपा खो बैठा और चिल्लाने लगा। उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे कोई रेत के टीले पर चढ़ रहा हो और बार-बार फिसल रहा हो। नियंत्रण संभाल रहे वसी ने फोन छीन लिया और लाल कमीज़ पहने अब्दुल रहमान से कहा: ‘भाई, हमें उमर से बात करनी है। उसे बता दो कि चिंता की कोई बात नहीं है।’ वसी ने एक और रणनीति अपनाई। उसने कहा कि उनके पास एक अच्छी खबर है। दूसरी टीम ने एटीएस प्रमुख को मार गिराया था। ताज टीम ने क्या हासिल किया था?
सन्नाटा छा गया। उमर ने अब फोन उठाया। 'जी?' उसने कहा। 'मैं यहीं हूँ।' उसकी आवाज़ कांप रही थी, लेकिन उसकी जिज्ञासा बढ़ गई थी। 'किसकी हत्या हुई?' वासी ने कहा, 'पूरे बॉम्बे के एटीएस प्रमुख की हत्या कर दी गई है।'
उमर ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा: 'अल्लाह की कृपा से।'
वसी ने आगे कहा: ‘बहुत से लोग घायल हैं। कई लोग मारे गए हैं। जगह-जगह गोलीबारी हो रही है। हर जगह लोग मर रहे हैं। सब कुछ जल रहा है। इस समय आपका निशाना सबसे अहम है। ताज होटल को सबसे ज़्यादा मीडिया कवरेज मिल रही है। भाई क़हाफ़ा आपसे मिलना चाहते हैं।’ यह क़हाफ़ा द बुल था, लश्कर का

प्रशिक्षक, जिसका भतीजा फ़हदुल्लाह भी हमले में शामिल था और इस समय ट्राइडेंट-ओबेरॉय में छिपा हुआ है। इंस्पेक्टर कदम ने क़हाफ़ा/हैंडलर 2 लिख लिया।
क़हाफ़ा ने अपने क्षेत्र के अनुभव का परिचय देते हुए शांत और सौम्य स्वर में बात की। उन्होंने कहा, ‘भाई, अल्लाह आपकी सेवा को स्वीकार करे। बहुत से लोगों के ज़ख्म भर गए हैं। आपको जो नमाज़ सिखाई गई है, उसे मत भूलिए। आप जहाँ भी बैठे हों, तीन बार नमाज़ पढ़िए। तीन बार, पूरे विश्वास के साथ, आधे मन से नहीं।’
‘ठीक है।’ शेर को काबू करने वाले ने उमर को शांत कर दिया था। ‘तुम समुद्र की ओर मुंह करके खड़े हो?’ क़हाफ़ा ने पूछा। वह मलिर टाउन के नियंत्रण कक्ष में गूगल अर्थ पर खेल रहा था और टीवी पर दिख रही तस्वीरों से मिलान करते हुए उसने कुछ देखा। ‘चौराहे पर सड़क के किनारे एक इमारत है। वहाँ दो जगहें हैं जहाँ पुलिस खड़ी है। जाओ और उन पर गोली चलाओ। और बाकी भाइयों को मेरा सलाम कहना। हिम्मत बनाए रखना। तुमने दुनिया को छू लिया है। अल्लाह की कृपा से जन्नत इस दुनिया से कहीं बेहतर है।’

कमरा नंबर 632 के अंदर, बैंकर राम ने गलियारे में आवाज़ें सुनीं: ‘तुमने किसे पकड़ा है?’ और फिर जवाब आया: ‘मैं गाँव से हूँ, कृपया मुझे छोड़ दो।’ यह एक और बंधक, सुनील जाधव था, जो ताज होटल में बेलबॉय का काम करता था। उसे ज़मीन पर पटक दिया गया और वह चिल्लाया: ‘मैं अमीर आदमी नहीं हूँ, महोदय।’ तभी राम ने एक चौथे आदमी को गिड़गिड़ाते हुए सुना। उसने अपना परिचय राजू बागले के रूप में दिया, जो हाउसकीपिंग में काम करता था। अपहरणकर्ताओं ने चादर की पट्टियाँ फाड़ीं और दोनों आदमियों के हाथ-पैर बाँध दिए।
नए कैदियों के खांसने और रोने की आवाज़ सुनकर राम ने मन ही मन कहा, 'मेरा कमरा अब भर गया है।'
रात 1:47 बजे फिर फोन की घंटी बजी। इंस्पेक्टर कदम ने समय नोट कर लिया। क़हाफ़ा (बुल) ने अपना परिचय दिया और लाल वर्दी पहने बंदूकधारी अब्दुल रहमान ने उनका अभिवादन किया। अब्दुल रहमान पहले से ही पूरी तरह से तैयार लग रहा था। उसके पास एक अच्छी खबर थी: 'मुजाहिदीन दो मेमनों को वापस ले आए हैं। अल्लाह की कृपा से।'

इंस्पेक्टर कदम ने अपने बॉस को संदेश भेजा: 'पांच बंधक।' पुलिस कब कार्रवाई करेगी?
क़हाफ़ा को एक विचार आया: 'बंधकों में से किसी एक को उनके घर पर फ़ोन करने के लिए कहो।' फिर वह खुशी से चिल्लाया, 'गुंबद में आग लग गई है!' आखिरकार आग की लपटों का फुटेज सामने आया।
होटल के कमरे में एक और फोन की घंटी बजी। अब्दुल रहमान ने क़हाफ़ा को बताया: “इन कमीनों में से किसी को फोन आया है। मैं फोन उठाऊं?” उसने फोन उठाया। यह वेटर की पत्नी एनी ईरानी का फोन था, जो बार-बार आदिल के नंबर पर कॉल कर रही थी और अब अपने पति के अपहरणकर्ता से बात कर रही थी। अब्दुल रहमान ने गुस्से से कहा, “आदिल हमारे साथ है। नहीं, वह ठीक नहीं है। उसकी हालत बहुत खराब है।” दूसरी तरफ़ क़हाफ़ा ने अब्दुल रहमान को निर्देश दिया: “पत्नी से कहो, अगर तुम उसे बचाना चाहते हो, तो पुलिस को ऑपरेशन रोकने के लिए कहो।” अब्दुल रहमान ने उससे कहा और आगे कहा: “नहीं तो हम सबको मार डालेंगे।”
कमरे में एक नया व्यक्ति दाखिल हुआ। अब्दुल रहमान ने अपने हैंडलर से कहा, 'अली से बात करो,' और फोन उसे थमा दिया।
इंस्पेक्टर कदम ने नाम नोट कर लिया। अली नाम अजमल कसाब ने बताया था। वह पीले रंग के कपड़े पहने बंदूकधारी था। अली उमर के साथ बंधकों की तलाश में निकला था।
क़हाफ़ा ने उनका अभिवादन किया और अली ने जवाब दिया: ‘अल्लाह की कृपा से हमने आग जलाने के लिए अपने पैरों से दरवाजे तोड़ दिए। और हमें पाँच मुर्गियाँ मिलीं। हम घर पर इतनी आज़ादी से नहीं घूमते।’ जवाबी हमले की अनुपस्थिति देखकर बंदूकधारी भी हैरान रह गए। ‘हम तीसरी, चौथी, पाँचवीं मंज़िल पर घूम रहे हैं, उनका इंतज़ार कर रहे हैं। कोई ऊपर नहीं आ रहा। उन कमीनों से कहो कि ऊपर आएँ। कोई हमसे बात करे, इसमें कोई मज़ा नहीं आ रहा।’ इंस्पेक्टर कदम ने अपने बॉस को मैसेज भेजा। पुलिस किस बात का इंतजार कर रही थी?
अली को एक ही शिकायत थी। महल की लॉबी के पास खोजी कुत्ते और उसके प्रवर्तक पर गोली चलाते समय एक गोली छिटककर उसके पैर में लगी थी और उसके घाव से बहुत खून बह रहा था। क़हाफ़ा ने फ़ोन वसी को देते हुए पूछा, 'मेरे बहादुर, तुम्हारा पैर कैसा है?' वसी ने प्यार से कहा। उसने अली को कोमल शब्दों से

सांत्वना दी। अली ने शिकायत की, 'खून बह रहा है और दर्द हो रहा है।' वसी के पास एक उपाय था: 'तुम्हें थोड़ी राख गर्म करके लगानी होगी।'
फिर क़हाफ़ा अपने काम पर लौट आया। वह नंगा बूढ़ा आदमी कौन था? टीम को उससे बस इतना ही पता चला था कि वह बैंगलोर से है। क़हाफ़ा ने पुकार कर कहा, 'बूढ़े आदमी से पूछो कि वह कौन है।'
उमर राम पर चिल्लाते हुए सुनाई दिया: ‘नाम, घर, धर्म और जाति।’ उमर ने फोन छीन लिया: ‘वह कहता है कि उसे हाई ब्लड प्रेशर है।’ उमर राम पर चिल्लाया: ‘तुम क्या करते हो?’ कमरे के अंदर, मुंह नीचे करके, राम तेजी से सोच रहा था। एक हिंदू बैंकर एक अनमोल संपत्ति था, तो उसे क्या कहना चाहिए? उसके दिमाग में बस यही आया कि वह बिजनेस के छात्रों को भी पढ़ाता है। उमर चिल्लाया: ‘वह कहता है कि वह पढ़ाता है।’
क़हाफ़ा जानता था कि एक शिक्षक ताज होटल में नहीं रह सकता, इसलिए उसने उमर से कहा, जिसने राम का सामना किया: “एक शिक्षक का वेतन बीस हज़ार रुपये (250 पाउंड) होता है, यहाँ आप लाखों रुपये देते हैं। क्या आप कोई तस्कर हैं? मैं आपसे निपटूंगा।” उमर फिर से गुस्से से लाल हो गया। राम को लगा जैसे किसी ने उसके कंधे, सिर और बांह पर बंदूक मारी हो। उसने मन ही मन कहा, “मैं मरने वाला हूँ।”
क़हाफ़ा को चीखती हुई आवाज़ सुनाई दी: ‘रुको, वो मर जाएगा।’ फिर उमर की आवाज़ आई: ‘तैयार हो? कहाँ पढ़ाते हो? कौन सी यूनिवर्सिटी? कितने गद्दारों को पढ़ाया है? मुसलमानों को मारना। मोहल्लों को जलाना। मैं तुमसे निपटूंगा।’ क़हाफ़ा को फिर चीख सुनाई दी। इस बार उसने उमर को नहीं रोका, जो गुर्राते हुए बोला: ‘पिता का नाम?’
उमर ने फिर से फोन पर बात की, एक बार फिर शांत होकर बोला: 'के. आर. राममूर्ति।'
क़हाफ़ा रुक गया। इंस्पेक्टर कदम को कुछ खटखट की आवाज़ सुनाई दी। क़हाफ़ा ने कहा: 'एक मिनट, एक मिनट। डॉ. के. राममूर्ति? के. आर.? डिज़ाइनर? प्रोफ़ेसर?'
खटखट।
क़हाफ़ा गूगल पर नाम खोज रहा था और उसे इमेज सर्च में भी डाल रहा था।
‘ठीक है, सुनो, क्या उसने चश्मा पहना है?’ हाँ, उसने पहना था। ‘क्या उसके सिर के आगे के बाल झड़ रहे हैं?’ उमर ने राम पर चिल्लाते हुए कहा: ‘अपना सिर सीधा

रखो।’ उमर ने जवाब दिया: ‘हाँ, हाँ, उसके बाल झड़ रहे हैं। उसका चेहरा कुत्ते जैसा है।’ क़हाफ़ा को राम का ऑनलाइन बायोडाटा मिल गया था। एक उच्च कोटि का बंधक। वह खुश था।
अब उसने टीम को चेतावनी दी कि उन्हें आगे बढ़ने पर विचार करना होगा, क्योंकि आग भयंकर रूप से फैल रही थी। क़हाफ़ा ने कहा, 'जल्दी नीचे जाओ। बैंकर को मार गिराओ। उसे खुद मार डालो।' बाकी चार का क्या? उमर ने सुझाव दिया, 'चलो उन्हें एक साथ खड़ा करके उन पर गोली चलाते हैं।' वह आदिल की ओर मुड़ा और हँसा। 'एक वेटर! तुम तो बस अपनी मौत का इंतज़ार कर रहे हो।' इंस्पेक्टर कदम ने लॉलीपॉप चूसने जैसी एक अजीब सी आवाज़ सुनी। उन्हें एहसास हुआ कि यह क़हाफ़ा की हँसी थी।
राम अपनी यादों में खो जाने की कोशिश कर रहा था, चेन्नई के सातवीं शताब्दी के मायलापुर स्थित कपलेश्वर मंदिर की यादों में खोया हुआ था, जहाँ वह कभी मनोकामना पूरी करने वाले वृक्ष की देवी की प्रतिदिन पूजा करता था। वह कदम-दर-कदम मंदिर के केंद्रीय भाग की ओर वापस जाने लगा। लेकिन कुछ परेशान करने वाली आवाज़ें उसे बार-बार कमरा नंबर 632 की ओर खींच ला रही थीं: फ्रिज का दरवाजा खुलना और किसी का चॉकलेट बार चबाना; कैन के खुलने की आवाज़ और उसके खाली होने की गड़गड़ाहट; और आराम करने के लिए बिस्तर पर अगल-बगल लेटे चार बंदूकधारियों की भारी, धीमी साँसें।

6

आग की सुरंग

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, सुबह 1:50 बजे – मालाबार
पहाड़ी

सावित्री चौधरी मालाबार हिल स्थित अपने घर में टेलीविजन पर ताज महल देख रही थीं और 2001 में ट्विन टावर्स के गिरने का दृश्य देखने के बाद हुए उनके सदमे भरे पलों को याद कर रही थीं। अब उनका शहर आग की लपटों में घिरा था, शहर का सबसे प्रसिद्ध स्मारक जलकर खाक हो रहा था और उनकी सबसे अच्छी दोस्त अंदर फंसी हुई थी। उन्हें काम पर जाना था। दुनिया भर के प्रसारकों को उनसे उम्मीद थी कि वे शहर में फैल रही अफवाहों के बीच उनका मार्गदर्शन करेंगी। लेकिन वे ठीक से सोच नहीं पा रही थीं।
होटल की निचली मंजिलें अभी भी रोशन थीं और मेहमानों की परछाइयाँ बाहर की ओर देख रही थीं, जबकि सबसे ऊपरी मंजिल पर अंधेरा छाया हुआ था, बस कहीं-कहीं आग की छोटी-छोटी लपटें दिखाई दे रही थीं। छत से धुएँ के गुबार उठ रहे थे। सावित्री तस्वीरों को देखकर सबीना का कमरा ढूंढने की कोशिश कर रही थी। समुद्र की ओर वाली मंजिल पर उसने छठी मंजिल तक गिनती की, और उसे याद आया कि उस दोपहर वह सबीना के बिस्तर पर लेटी थी। 'वह कहाँ है?' सावित्री ने अपने बगल में बैठे पति से पूछा।
उन्हें 1990 के दशक की शुरुआत में दिल्ली के मध्य में स्थित कनॉट प्लेस के चीनी रेस्तरां ज़ेन में अपनी तीन सहेलियों के साथ किए गए दोपहर के भोजन की याद आई। कनॉट प्लेस रेस्तरां, किताबों की दुकानों और आइसक्रीम पार्लरों का एक समृद्ध इलाका है, जो साम्राज्य काल का है। सबीना गंभीर काले रंग के कपड़ों में आई थीं। पनीर टेन पाल स्टाइल का आनंद लेते हुए सभी मेहमानों ने

अपने अनुपस्थित साथियों से खूब पूछताछ की। सबीना को इकोनॉमिक टाइम्स के एक चर्चित (और लोकप्रिय) उभरते सितारे शांतनु सैकिया के साथ उनके कभी-कभी चलने वाले रिश्ते को लेकर खूब मज़ाक का सामना करना पड़ा। शांतनु सैकिया की पहले एक बार शादी हो चुकी थी, जो दिल्ली के रूढ़िवादी माहौल में उन्हें खतरनाक बना देता था; उनकी पूर्व पत्नी के आत्महत्या करने की भी अफवाह थी। शहद से सजे सेब खाते हुए सबीना ने बताया था कि शांतनु उसे धोखा दे रहा है। उसे सलाह दी गई थी, 'उसे छोड़ दो। वो तो दोनों तरफ से मजे ले रहा है।' उसी रात एक दोस्त ने फोन करके बताया कि सबीना की शादी हो गई है। 'ये क्या बकवास है? हमने तो शाम 4 बजे लंच खत्म किया था और तब तो उसकी शादी नहीं हुई थी।' सावृति ने अपने एक साथी से संपर्क किया, जिसने बाकी के पांच घंटे पूरे किए। सावित्री ने सबीना को खादी स्टोर पर छोड़ा था और शांतनु उसका इंतज़ार कर रहा था। उसे वापस पाने के लिए उसने उससे शादी का प्रस्ताव रखा। दोपहर के भोजन से तरोताज़ा होकर शांतनु ने पलटवार किया: 'ज़रूर। लेकिन अभी करते हैं।' वे उसकी कार में तेज़ी से निकल गए, लेकिन उन्हें अदालत से बाहर निकाल दिया गया, जिसके लिए और योजना बनानी पड़ी। आखिरकार उन्हें एक कम सिद्धांतवादी पुजारी के पास भेजा गया जो बिना किसी तामझाम के उनके विवाह को आशीर्वाद देने के लिए तैयार था। और बाद में, जब वह अपने माता-पिता को फोन करने की तैयारी कर रही थी और 'मेरे पास कुछ खुशखबरी है' वाली बात दोहरा रही थी, तो सबीना ने अपनी नज़रें नीचे कर लीं, यह महसूस करते हुए कि उसने अभी भी काले कपड़े पहने हुए हैं।
सावित्री उस याद को याद करके मुस्कुराई, उसकी आँखें अब भी टीवी पर टिकी हुई थीं। आखिर रिपोर्टर होटल के चारों ओर क्यों मंडरा रहे थे, लेकिन कोई बचाव दल क्यों नहीं भेजा जा सका? नाराज़ और चिंतित होकर उसने अपने डेस्क पर फोन किया और संपादकों से एक समझौता किया। वह एबीसी रेडियो के लिए रिपोर्टिंग करेगी, लेकिन टीवी के लिए नहीं। उसके चेहरे से सब कुछ पता चल जाता।

नागपाड़ा स्थित पुलिस आतंकवाद-रोधी दस्ते (एटीएस) के मुख्यालय में, शोगी टेलीफोन इंटरसेप्ट सिस्टम कुशलता से काम कर रहा था और फिदायीन और उनके संचालकों के बीच की बातचीत को वास्तविक समय में रिकॉर्ड कर रहा था। तीन मोबाइल फोन इस्तेमाल में थे। एक ताज होटल में मौजूद चार बंदूकधारियों के पास था, दूसरा ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल में मौजूद दो बंदूकधारियों के पास,

जहां भूतल पर स्थित टिफिन नामक रेस्तरां में और उसके आसपास दर्जनों लोगों की हत्या कर दी गई थी, और तीसरा चाबाद हाउस में मौजूद दो बंदूकधारियों के पास, जहां एक अमेरिकी रब्बी, उनकी पत्नी, उनके दो वर्षीय बेटे और कई अन्य लोगों को बंधक बनाया गया था। एटीएस का तकनीकी अनुभाग नियमित रूप से कार्यवाहक एटीएस प्रमुख, खुफिया एजेंसियों, राज्य के अधिकारियों और पुलिस कमान को महत्वपूर्ण जानकारी भेजता था, जिसमें क्रॉफर्ड मार्केट के पास स्थित नियंत्रण कक्ष में तैनात राकेश मारिया भी शामिल थे।
आतंकवादियों की पहचान और उनके नियंत्रण कक्ष का पता रहस्य बना रहा। सभी लोग ठोस आंकड़ों को समझने के लिए संघर्ष कर रहे थे। मुंबई में मौजूद हमलावर ऑस्ट्रिया को फोन कर रहे थे और उन्हें अमेरिका के एक नंबर +1 201 253 1824 से कॉल आ रही थीं। अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के शुरुआती आकलन से पता चला कि एटीएस ने जो खुलासा किया था, वह कोई अमेरिकी या यूरोपीय आतंकी संगठन नहीं था, बल्कि कुछ ऐसा था जिसका उन्होंने पहले कभी सामना नहीं किया था: एक इंटरनेट टेलीफोन नेटवर्क, जिसमें भारत में मौजूद हमलावर एक दूरस्थ केंद्र को फोन कर रहे थे जो कॉल को उनके हैंडलर तक पहुंचाता था, और हैंडलर से हैंडलर का संपर्क होता था। हैंडलर का नियंत्रण कक्ष दुनिया में कहीं भी हो सकता था, यहां तक कि कोलाबा स्थित एटीएस इकाइयों की नाक के नीचे भी। क्राइम ब्रांच के मेहनती नंबर दो अधिकारी, देवेन भारती को अपनी गाड़ी की पिछली सीट पर लैपटॉप गोद में रखकर अगली कॉल का इंतजार करना पड़ता था।

ताज होटल के अंदर रखा मोबाइल थोड़ी देर बाद फिर बज उठा, देवेन भारती के आदमियों ने दिशा बताने वाले यंत्रों की मदद से उसका पीछा किया और कोलाबा के होटल के कमरों के दरवाजे खटखटाए, जबकि एटीएस के इंस्पेक्टर कदम ने फोन की आवाजें सुनीं।
‘सलाम अलैकुम।’ एटीएस अब उस आवाज़ को पहचान चुकी थी। यह वासी था, जो उनका हैंडलर था। वह ताज पैलेस के कमरा नंबर 632 में पांच बंधकों के साथ छिपे चार बंदूकधारियों को फोन कर रहा था और उन्हें स्थिति की जानकारी चाहिए थी। टीवी पर दिख रही तस्वीरों से वासी को पता चल रहा था कि छत से आग की लपटें उठ रही हैं और उसके आदमियों को नीचे उतरना होगा।

‘वालेकुम अस्सलाम, हमें पाँचवीं मंजिल पर एक कमरा मिल गया है।’ ये पीले रंग के कपड़े पहने बंदूकधारी अली बोल रहा था। वह आग से बचने के लिए एक सुरक्षित कमरे की तलाश में निकला था।
वसी ने पूछा कि क्या उन्होंने बंधकों को पहले ही स्थानांतरित कर दिया है? अली ने जवाब दिया, अभी नहीं। उमर नीचे तैयारी कर रहा है।
वासी ने उन्हें जल्दी करने के लिए कहा: 'ऊपर के कमरों में आग लगा दो और नीचे आ जाओ।' हमेशा की तरह, अली ने आज्ञा का पालन किया: 'ईश्वर की इच्छा से।' उन्हें अपनी गति बनाए रखनी थी और कैदियों की सुरक्षा करनी थी। वासी ने उससे कहा: 'मेरे मित्र, क्या तुम जानते हो कि तुम्हें क्या काम करना है? बंधकों को पूरी सुरक्षा के साथ नीचे लाओ। पुलिस वाले ऊपर आ रहे होंगे। पुलिस वालों को पास नहीं आना चाहिए।' उन्हें सतर्क रहना था, क्योंकि निश्चित रूप से अधिकारी जल्द ही छापा मारेंगे।
एटीएस ने पुलिस कंट्रोल रूम को चेतावनी संदेश भेजा। पाटिल और राजवर्धन से संपर्क करना आवश्यक था। ताज होटल के बंदूकधारी नीचे आ रहे थे और पुलिस से निपटने की रणनीति पर चर्चा कर रहे थे: 'बंदूकधारी लड़ाई के लिए उतावले हैं।'
अली नीचे जाने का रास्ता देखने लगा: ‘ठीक है, अब हम चलते हैं। इंशा अल्लाह, वहाँ से आते समय हम एक सरप्राइज देंगे। इंशा अल्लाह।’ जैसे ही अली अकेले सीढ़ियों से नीचे उतरा, वसी ने उसे अभ्यास याद दिलाया: ‘ग्रेनेड। याद रखना। फेंकने के लिए तैयार हो जाओ।’ लेकिन अली पाँचवीं मंजिल पर अपने नए परिवेश की भव्यता में खो गया। ‘मेरी बात सुनो,’ उसने वसी से कहा। ‘प्रवेश द्वार शानदार है। कांच के बड़े-बड़े दरवाजे।’
वासी सतर्क था। कांच उनके लिए मुसीबत खड़ी कर सकता था। कांच के टूटने पर वे आर-पार दिख सकते थे और टुकड़े-टुकड़े हो सकते थे। लेकिन अली उसकी बात नहीं सुन रहा था। वह हैरान था: 'कमरा बहुत मजबूत है। हमें ऐसा दूसरा कमरा नहीं मिल सकता। यह बड़ा है। बहुत बढ़िया है। इसमें शीशे लगे हैं, और यह बहुत सुरक्षित है, इसमें दो रसोईघर हैं। एक शौचालय है। एक भंडारघर है। हर जगह शीशे लगे हैं।' वे अपने मानव तस्करी के सामान को यहाँ छिपाएंगे और फिर पुलिस से भाग जाएंगे।
एटीएस ने पुलिस कंट्रोल को संदेश भेजा। खुफिया एजेंसियों ने राजवर्धन को संदेश भेजा। उन्हें अब सीसीटीवी कक्ष खाली करना था।

वासी चिंतित था। बुनियादी चीज़ों का क्या? अली ने काले कपड़ों में लिपटे आतंकवादी उमर से चिल्लाकर पूछा, 'क्या यहाँ पानी है?' उमर ने जवाब दिया, 'हाँ।' वासी ने कहा, 'पानी की एक बाल्टी अपने पास रखो। एक तौलिया और पानी भी, क्योंकि तौलिया तुम्हें बचाएगा। अगर वे गैस के गोले फेंकते हैं, तो पानी और तौलिया तुम्हें बचा लेंगे।'
अली आत्मविश्वास से भरा हुआ था जब वह बंधकों को लाने के लिए ऊपर गया: 'ठीक है। इंशा अल्लाह, आज रात हमारी है।' हैंडलर वसी ने उसे एक और सलाह दी। 'जब तुम उन्हें नीचे लाओ तो सबको अच्छे से बांध देना। कसकर। ध्यान रखना कि कोई भी खुला न रहे।' इस बार अली उससे आगे था: 'मैंने उन्हें इस तरह बांधा है कि वे अपना सिर भी नहीं उठा सकते, अल्लाह का शुक्र है।' वसी ने एक शिक्षक की तरह आदेश दोहराया। 'ऊपर आग जलाओ। बम लगाओ। और बंधकों को नीचे ले आओ।' एटीएस ने फिर संदेश भेजा: बम। हमला कुछ ही मिनटों में हो सकता है। उन्हें सीसीटीवी कक्ष में मौजूद लोगों की सुरक्षा को लेकर चिंता सता रही थी। अली ने कहा, “हमारे लिए दुआ कीजिए।” उन्हें एक छोटी सी परेशानी थी, उनके पैर में गोली का घाव। “मेरे पैर की वजह से मैं वो नहीं कर सकता जो मेरे दिल में है। चलने में बहुत दर्द होता है।” वसी ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा, “चिंता मत करो, अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।” लेकिन अली को चिंता थी कि वह बोझ बन रहे हैं: “यह काम तो सिर्फ मेरा था, लेकिन सबको मिलकर करना पड़ रहा है। मेरा पैर मेरा साथ नहीं दे रहा। अल्लाह से दुआ कीजिए कि हम उन्हें नचा सकें।”

सुबह 2:30 बजे – कमरा नंबर 632

कमरा नंबर 632 में, राम के कान से कुछ ही इंच दूर एक चेहरा चीखा: 'उठो, मोटे आदमी।' बंधक बनाए गए बैंकर को इतनी बुरी तरह बांधा गया था कि वह दर्द से कराह रहा था और उसकी कलाई और टखनों से खून बह रहा था। 'चलो, बूढ़े, उठो,' लाल कमीज पहने बंदूकधारी ने चिल्लाते हुए, आवारा कुत्ते की तरह उसकी पसलियों पर लात मारी, इससे पहले कि उसके एक साथी ने उसे गलियारे में बुलाकर उसका ध्यान भटका दिया।
राम के लिए यह राहत का क्षण था, जो पूरे शरीर में दर्द से कराह रहे थे। जब वे लेटे हुए थे और कुछ सोचने-समझने की कोशिश कर रहे थे, तभी उनके होठों पर

एक धुन आ गई। यह कर्नाटक संगीत की गायिका मदुरै सुब्बुलक्ष्मी की हनुमान चालीसा (भक्ति गीत) थी, जिसे उन्होंने बचपन में कई बार सुना था: 'तुम अपने हाथ में बिजली और विजय ध्वज लिए फिरते हो, और अपने कंधे पर पवित्र धागा धारण करते हो।'
‘आह!’ राम को एक बंदूकधारी ने उसके टखनों पर लिपटे पवित्र धागे से खींचकर होश में लाया। वह चीख उठा। बंदूक का बट उसकी पीठ पर लगा। ‘क्या तुम हमारी बात सुन रहे हो?’ बंधक होने की बेतुकी स्थिति राम को व्याकुल कर रही थी। उसके बंधकों ने उसे इस तरह बांध रखा था कि वह कुछ भी नहीं कर सकता था, और फिर उसकी गतिहीनता से वे और भी परेशान हो रहे थे। जिस तरह से उन्होंने उसे तब तक पीटा जब तक वह दर्द से बेहाल नहीं हो गया और फिर उससे समझदारी भरे जवाब देने की उम्मीद की गई। उसकी आँखों में आँसू आ गए और वह सोचने लगा कि इन नौजवानों के जीवन में ऐसा क्या घट हुआ था जिसने उन्हें ऐसे गुंडे बना दिया।
कुट्टलम, जिस गाँव से राम आया था, वहाँ मुसलमान ही स्थानीय वैद्य हुआ करते थे, सबके घरों में उनका आना-जाना लगा रहता था और वे सबसे निजी ज्ञान के गुप्त संरक्षक बन गए थे। राम ने अपना जीवन कट्टरता और संगठित धर्म की राजनीति से दूर रहकर, सांप्रदायिकता को त्यागकर बिताया था। अब वह उठने के लिए संघर्ष कर रहा था। पीले रंग का बंदूकधारी अली दरवाजा खुला रखे हुए था, जबकि लाल रंग का बंदूकधारी अब्दुल रहमान कमरे में आग लगा रहा था। वे क्या कर रहे थे, अपने ही सुरक्षित ठिकाने को जला रहे थे? अचानक, कमरे से हवा निकल गई, और एक ज़ोरदार धमाका हुआ, जैसे एक विशाल ध्वनि तरंग ने सब कुछ हवा में उछाल दिया हो। कांपती दीवारों को पकड़े हुए बंदूकधारी भी चौंक गए। उन्होंने क्या कर दिया था? उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। उन्होंने दूसरा बम धमाका कर दिया था, यह छठी मंजिल पर था, और इससे इतना बड़ा विस्फोट हुआ जितना किसी ने सोचा भी नहीं था। वे चिल्लाने लगे: 'उठो, उठो, जल्दी उठो।' राम ने सोचा, यह पुरानी इमारत और कितना झेल सकती है? वह जानता था कि उसकी सहनशक्ति की सीमा समाप्त हो चुकी है।
अभी भी नग्न अवस्था में, उसे बाकी लोगों के पीछे धकेल दिया गया। पांच घायल और घबराए हुए बंधक कमरे से निकलकर धुएं से भरे गलियारे में लड़खड़ाते हुए पहुंचे, उनकी हरकतें एक आधे-अधूरे काम कर रहे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गईं। काले कपड़े पहने बंदूकधारी उमर दरवाजे के बाहर पहरा दे रहा था। पूल

के किनारे वेटर आदिल सबसे आगे था। नग्न राम सबसे पीछे चल रहा था। लाल कपड़े पहने बंदूकधारी ने राम को कंधे से पकड़ते हुए चिल्लाकर कहा, 'मोटे आदमी, हम तुझे मार डालेंगे। अगर तू एक बार भी रुका तो मैं तुझे खुद गोली मार दूंगा।' आदिल ने सांस फूलने का नाटक किया, अपनी गति धीमी की और उनके साथ चलने लगा। उसने अंग्रेजी में फुसफुसाते हुए कहा, 'वे तुझे मार डालेंगे। कृपया हमारे साथ चलने की कोशिश कर।' उनके चारों ओर सब कुछ जल रहा था: एक भयंकर आग वॉलपेपर और फर्नीचर को जला रही थी। दम घोंटने वाली राख उनके सिर के चारों ओर घूम रही थी और लकड़ी की छत की पसलियां चटक रही थीं और टूट रही थीं। जल्द ही इमारत के नंगे स्टील के ढांचे के अलावा कुछ भी नहीं बचेगा।
उन्हें एक सेवा द्वार से होते हुए कंक्रीट की सीढ़ियों से नीचे ले जाया गया; सीढ़ियों की ठंडक से राहत मिली। फिर उन्हें पाँचवीं मंजिल पर धकेल कर कांच के स्लाइडिंग दरवाजों वाले एक आलीशान सुइट में ले जाया गया। राम ने देखा कि कपड़े और सामान इधर-उधर बिखरे पड़े थे। एक मेहमान घबराकर भाग गया था। उसे उम्मीद थी कि वे बच गए होंगे। पाँचों बंधकों को फर्श पर लेट जाने को कहा गया और राम को धातु की खटखटाहट सुनाई दी। उसने अपना सिर घुमाया और कुछ देर तक समझ नहीं पाया। ऐसा लग रहा था कि बंदूकधारी इस कमरे के चारों ओर भी ग्रेनेड लगा रहे थे। जब उन तक आग पहुँचती, तो कुछ भी नहीं बचता।

*

तीन मंजिल नीचे, फ्लोरेंस मार्टिस स्टेशनरी के स्टोररूम में थीं जब आपातकालीन बत्तियाँ बुझ गईं। उन्होंने इमारत को हिलते हुए महसूस किया, एक 'तेज़ हवा की आवाज़ और एक धीमी गड़गड़ाहट', पूरा होटल मानो हिलने-डुलने लगा। फिर डेटा सेंटर में अंधेरा छा गया।
कमरे में सन्नाटा छा गया और एयर कंडीशनिंग यूनिट धीरे-धीरे बंद हो गईं। एसी सिस्टम से कुछ और भी आ रहा था। फ्लोरेंस उसकी हवा महसूस कर सकती थी। उसने अपना चेहरा एक यूनिट के पास सटाया और उल्टी करते हुए पीछे हट गई। डेटा सेंटर में धुआं भर रहा था। कमरा धुएं से भर रहा था।
वह लड़खड़ाते हुए उठी। उसके ऑफिस का फोन बज उठा। ‘मैडम, सिक्योरिटी से कॉल है, आप कहां हैं?’ क्या उसे बचाया जाने वाला था? ‘मैं हूं। मुझे नहीं पता,’

वह हकलाते हुए बोली, उसका गला रुंध गया था। ‘मैं अंदर हूं...’ फ्लोरेंस को खांसी आने लगी। धुआं उसके फेफड़ों में भर गया था। वह बोल नहीं पा रही थी। ‘आराम से समय लो। तुम कहाँ हो?’
‘मैं…’ धुएँ से उसकी आँखों में जलन होने लगी और दिमाग सुन्न हो गया। वह अपने मन में कुछ भी स्पष्ट नहीं कर पा रही थी और बेहोश होने से खुद को रोकने के लिए संघर्ष कर रही थी, क्योंकि उसे पेट में पित्त जैसा महसूस हो रहा था, उंगलियों में सुई चुभने जैसा दर्द हो रहा था। लाइन कट गई। फिर घंटी बजी, इस बार एक अलग आवाज़ थी जो उसे कंबल की तरह लपेटे हुए थी। ‘फ्लोरेंस, फ्लोरेंस।’ यह फॉस्टीन थी। ‘डैडी!’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘फ्लोरेंस, मैं तुम्हारे लिए आ रहा हूँ।’ वह टाइम ऑफिस में होने के बारे में कुछ कह रहा था कि तभी उसे एक बीप सुनाई दी और उसने नीचे देखा। मोबाइल बंद हो गया था। उसे अपना मोबाइल और एक चार्जर ढूंढना था।
कमरे में इधर-उधर खोजते हुए वह दहशत से पीछे हट गई। डेटा सेंटर का दरवाज़ा गायब था। वह कांपते हुए बैठ गई। धमाके से वह गिर गया था। अब उसके और बंदूकधारियों के बीच कुछ भी नहीं था। उसे तुरंत कुछ सोचना था। चारों ओर देखते हुए उसे एक डेस्क दिखाई दी। उसने खुद को उसके नीचे छिपा लिया। जगह बहुत तंग थी। वह तब तक सरकती रही जब तक कि वह दीवार से सटकर बैठ नहीं गई, अपने घुटनों को ठुड्डी तक खींच लिया। उसने हाथ बढ़ाकर एक कुर्सी पकड़ी और उसे अपनी ओर खींच लिया, जब तक कि वह ठीक उसके नीचे नहीं आ गई, मानो वर्कस्टेशन खाली हो।

*

पास ही में सीसीटीवी कक्ष भी अंधेरे में डूब गया था, विस्फोट ने पाटिल की टीम को ज़मीन पर गिरा दिया था। राजवर्धन ने ताज होटल के परिसर के बाहर घूम रहे अनुसंधान एवं विश्लेषण शाखा (आरएडब्ल्यू) के एक वरिष्ठ एजेंट को संदेश भेजा: 'छठी मंजिल पर बम फट गया है। बंधकों को सुरक्षित स्थान पर ले जाया जा रहा है।'
फिर अचानक फायर स्प्रिंकलर चालू हो गए, जिससे सब लोग गर्म पानी से भीग गए और कमरे का तापमान दस डिग्री बढ़ गया। सीसीटीवी सिस्टम भी अचानक बंद हो गया, जिससे उनका एकमात्र फायदा भी छिन गया। दरवाजे के बाहर झरने जैसी

गर्जना सुनाई दे रही थी। इससे लकड़ी का दरवाज़ा हिलने लगा। घबराए हुए पाटिल उठे और अपना चेहरा पोंछा। सुबह के 2:45 बज रहे थे।
बाहर, करमबीर कांग का दिल धड़क रहा था। उन्होंने सीसीटीवी कक्ष में मौजूद ताज सुरक्षाकर्मियों को संदेश भेजकर तसल्ली मांगी। उनकी पत्नी से आखिरी बार रात के 2 बजे के बाद संपर्क हुआ था, जब उन्होंने स्विचबोर्ड पर संदेश भेजकर उनसे बात करने की कोशिश की थी। अब उनका फोन बज रहा था, लेकिन कोई जवाब नहीं दे रहा था। इस बीच करमबीर होटल के अंदर मौजूद कर्मचारियों के फोन उठा रहे थे: 'इमारत में आग लगी है, छत में आग लगी है, गुंबद में आग लगी है।' क्या उन्हें उन्हें वहीं रुकने के लिए कहना चाहिए या अपनी किस्मत आजमाने और भागने की कोशिश करनी चाहिए? इतने सारे लोगों की जान जोखिम में थी, लेकिन उन्हें ऐसा करना ही था। जब ताज सुरक्षाकर्मियों ने जवाब दिया, तो बुरी खबर थी। उन्हें सीसीटीवी कक्ष से बाहर निकलना होगा, जो पिघलता हुआ सा लग रहा था। करमबीर भीड़ से दूर चले गए और बार-बार अपनी पत्नी को फोन करने की कोशिश करते रहे।
सीसीटीवी कक्ष के अंदर, काले सूट पहने पुरु पेटवाल और ताज होटल के कई अन्य कर्मचारियों के पास एक योजना थी। वे गलियारे में एक सर्विस लिफ्ट के बारे में जानते थे, जहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता था और जो उन्हें भूतल पर नॉर्थकोट निकास के पास ले आती। लेकिन पाटिल असहमत थे। उनके विचार कुछ और थे। वे ग्रैंड स्टेयरकेस की ओर जाना चाहते थे, जो आग से बचने का सबसे सीधा रास्ता था। राजवर्धन ने कुछ नहीं कहा। वह अभी भी विस्फोट के बारे में सोच रहे थे। सहज प्रतिक्रिया के रूप में, विस्फोट की लहर उनके मुँह से गुजरते ही उन्होंने अपना मुँह खोल दिया था, ठीक वैसे ही जैसे एक अनुभवी पैदल सैनिक अपने सिर के ऊपर से गोली गुजरने पर अपना जबड़ा नीचे कर लेता है, और स्नाइपर की दिशा का पता लगाने के लिए हवा के खिंचाव को महसूस करता है। उन्होंने अनुमान लगाया कि आठ से दस किलो आरडीएक्स विस्फोट हुआ था। गढ़चिरोली में अपने अनुभव से, वे जानते थे कि इस आकार की इमारत को अपनी नींव से उखड़ने जैसा महसूस कराने के लिए कम से कम इतनी सैन्य-श्रेणी के विस्फोटक की आवश्यकता होगी।
आरडीएक्स का इस्तेमाल बहुत कुछ बता रहा था। सफेद धुंआ छोड़ने वाले नाइट्रिक एसिड और हेक्सामाइन का यह जटिल मिश्रण अत्यधिक गर्मी में भी स्थिर रहता था और गलती से भी इसमें आग लगना मुश्किल था। इन सभी कारणों से

स्कर्टिंग बोर्ड में धंस रही थीं। राजवर्धन ने सीढ़ियों पर दो शव देखे, तभी और गोलियां बरसने लगीं, जिससे पंक्ति टूट गई। पाटिल आगे बढ़े, उनके साथी ने उनका पीछा किया और एट्रियम में गोलियों की बौछार कर दी। इसके बाद इंस्पेक्टर धोले और रेडियो ऑपरेटर आए। फिर धोले ने दहशत से देखा कि आग का एक विशाल गोला आगे बढ़ा और पाटिल और राजवर्धन से टकराकर उन्हें गिरा दिया। वह आग को घूरता रहा, भले ही उससे उसके चेहरे पर जलन हो रही थी। गोला फट गया, और पीछे धुएं का गुबार छूट गया। अधिकारी गायब हो गए थे। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। वे अकेले थे। वह अकेला था। कोई भी उस आग के गोले से बच नहीं सकता था।
भयभीत होकर इंस्पेक्टर ने चारों ओर देखा। अब वह वरिष्ठ अधिकारी था और उसे एक योजना की आवश्यकता थी। लेकिन पुरु पेटवाल, काले सूट वाला, इंतज़ार नहीं कर रहा था। उसने सीढ़ियों पर एक भारी, प्राचीन लकड़ी का संदूक देखा और उसकी ओर दौड़कर उसके अंदर घुस गया। 'न देखा गया, न चोट लगी,' उसने मन ही मन कहा। सदमे में चारों ओर देखते हुए, धोले ने देखा कि पाटिल के युवा रेडियो ऑपरेटर को गोली लग गई थी।
ढोले घुटनों के बल रेंगते हुए उस आदमी के पास पहुंचा। उसके पेट में मुट्ठी भर छेद हो गया था और उसकी आंतें बाहर निकल रही थीं। ढोले ने घाव पर हाथ रखकर उसे दबाने की कोशिश की, खून रोकने के लिए अपनी जैकेट से एक पट्टी फाड़कर उस छेद को ढक दिया। उसने 21 वर्षीय युवक की कमर में हाथ डालकर उसकी बेल्ट में उंगलियां फंसाईं और उसे दीवार के सहारे खड़ा कर दिया। पास ही एक ग्रेनेड फटा। ढोले के कान बजने लगे, आंखों में तेज रोशनी से चकाचौंध हो गई। फिर उसने देखा कि एसआरपीएफ का एक कांस्टेबल छर्रों से घायल होकर गिर रहा है। ढोले ने तुरंत घूमकर गोलियां बरसाना शुरू कर दिया, जब तक कि उसकी गोलियां खत्म नहीं हो गईं। दूसरा एसआरपीएफ कांस्टेबल भी गिर गया और जमीन पर तड़पने लगा, उसकी हालत गंभीर लग रही थी। ढोले उसके पास पहुंचा। कांस्टेबल को सीने में गोली लगी थी और वह फटे हुए गुब्बारे की तरह पिचक रहा था। ढोले ने उसे अपनी गोद में उठाया, कांस्टेबल दांत पीस रहा था और कई छेदों से खून और हवा बह रही थी। ‘कोई उम्मीद नहीं,’ ढोले ने मन ही मन फुसफुसाया। ‘उसका बहुत खून बह रहा है।’
गोलीबारी फिर से शुरू हो गई। ‘हमें उसे यहीं छोड़ना होगा,’ धोले ने अपने पीछे दुबके और खून से लथपथ साथियों की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘सीसीटीवी कक्ष

में चलो!’ उसने बुरी तरह घायल कांस्टेबल को अपने ऊपर से हटाया, उठा और जिस रास्ते से वे आए थे उसी रास्ते से वापस भागा, गोलियों की आवाज के बीच पाटिल के वायरलेस ऑपरेटर को घसीटता हुआ। लेकिन सीसीटीवी कक्ष अब धुआं उगलती, बिना दरवाजे वाली गुफा बन चुका था।
पांचवीं मंजिल पर मौजूद बंदूकधारियों ने गोलीबारी के दौरान अपने हैंडलर वसी से लगातार फोन पर संपर्क बनाए रखा था। एटीएस के तकनीकी विभाग के इंस्पेक्टर कदम यह सब सुनकर भयभीत थे।
मशीनगन की गोलियों की आवाज़ से अली हांफ रहा था और उसका ध्यान भटक रहा था। वसी ने पूछा कि क्या हो रहा है। अली ने हमेशा की तरह सीधे-सादे अंदाज़ में जवाब दिया, "कुछ हलचल हो रही है, इसलिए हम थोड़ी-बहुत फायरिंग कर रहे हैं।" उसने फोन नीचे रख दिया, लाइन खुली रह गई और वसी ने और जानकारी के लिए पुकारा: "क्या? क्या हुआ है?" पैरों की खड़खड़ाहट हुई और फिर दूसरी आवाज़ आई। एटीएस ने उसे उमर की आवाज़ के रूप में पहचाना, वही आदमी जिसने बंधकों को बेरहमी से पीटा था: "हेलो, हेलो।" वसी चिल्लाया: "क्या हुआ है?"
आस-पास मौजूद सभी लोगों को गोलियों की आवाज और ग्रेनेड की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। वसी जानना चाहता था कि कौन किसे गोली मार रहा है। उसने फोन पर चिल्लाते हुए पूछा, 'हेलो? ये कैसी आवाजें आ रही हैं?' उमर, जो एक ही समय में गोली चला रहा था और फोन पर चिल्ला रहा था, ने जवाब दिया: 'बंदूकें चल रही हैं। मुझे लगता है कोई ऊपर आ गया है।' वसी को और जानकारी चाहिए थी: 'क्या हो रहा है, उमर?' लेकिन बंदूकधारी ने फोन गिरा दिया और पुलिस से भिड़ने के लिए गलियारे में भाग गया। नीचे, इंस्पेक्टर धोले ने दूसरा हथियार उठा लिया था और पुलिस को कवर देने के लिए गोलीबारी कर रहे थे। जानकारी न मिलने से वसी निराश लग रहा था।
एटीएस और वासी ने कदमों की आहट और गोलियों की आवाज सुनी। उमर गलियारे से भागकर फोन की ओर जा रहा था। बंदूकधारी अपने नए गढ़, पांचवीं मंजिल के आलीशान सुइट में खुद को और बंधकों को बंद करने की योजना बना रहे थे: 'ठीक है, अब हम अपना दरवाजा बंद रखें?' नहीं, यह सबसे खराब रणनीति थी, वासी ने जोर देकर कहा। उन्होंने चेतावनी दी: 'सुनिश्चित करें कि आप चारों एक कमरे में न हों। समझ गए? इसे ध्यान में रखें।' वासी ने उन्हें लगातार गोलीबारी जारी रखने को कहा: 'जब आपको लगे कि कोई करीब आ गया है और हमारे लिए खतरा है, तो

उन्हें डरा देना।' उमर समझ गया। 'ईश्वर की कृपा से, हम उन्हें डरा देंगे,' वह चिल्लाया।
फोन पर एक और आवाज आई। एटीएस ने इसे क़हाफ़ा द बुल के रूप में दर्ज किया। अगर कोई नज़दीकी लड़ाई की बारीकियों को समझता था, तो वह क़हाफ़ा ही था।
'सलाम अलैकुम,' उसने शांत भाव से कहा। 'आप किस मंजिल पर हैं?'
उमर ने अपनी बंदूक चलाते हुए जवाब दिया, “हम सबसे ऊपरी मंजिल के ठीक नीचे वाली मंजिल पर हैं…” वह बीच में ही रुक गया। “एक मिनट रुकिए। उन्होंने शोएब पर गोली चलाई है… अब हम रुकेंगे।” उसने फोन काट दिया।
क़हाफ़ा ने वापस फ़ोन किया और शांत स्वर में बोला: ‘हमारी बात मत काटो, हम सुन रहे हैं।’ अब बस लगातार गोलियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। उमर थोड़ी देर के लिए लौटा: ‘एक मिनट,’ उसने चिल्लाकर कहा और फिर धड़ाम से फ़ोन ज़मीन पर गिरा दिया। क़हाफ़ा ने किनारे पर खड़े कोच की तरह आवाज़ लगाई: ‘याद रखो, अपनी जगह बदलो। अपनी जगह बदलो।’ सन्नाटा छा गया। ‘ठीक है,’ उमर ने आखिरकार जवाब दिया। ‘शोएब ने उन लोगों पर गोलियां चलाई हैं,’ उसने हांफते हुए, लेकिन उत्साहित होकर कहा। क़हाफ़ा ने उनका हौसला बनाए रखा: ‘अपनी जगह बदलो; एक साथ मत बैठो। ग्रेनेड फेंको।’ उमर ने फिर से फ़ोन गिरा दिया और क़हाफ़ा और एटीएस को गलियारे में जूतों की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।
बंदूकों की आवाज़ गूंजी। ग्रेनेडों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। 'हेलो?' उमर वापस आ गया। क़हाफ़ा ने पूछा: 'वे ऊपर से आ रहे हैं या नीचे से?' क्या वे अभी भी ऊँची जगह पर डटे हुए हैं? क्या पुलिस फंसी हुई है? उमर हांफते हुए बोला: 'हमें नहीं पता।' उसकी आवाज़ में गुस्सा झलक रहा था। क़हाफ़ा के पास एक उपाय था। चारों बंदूकधारियों को दो टीमों में बंट जाना चाहिए। 'कैदियों को बाँट लो,' उसने आदेश दिया।
लेकिन उमर का ध्यान कहीं और था। ‘एक मिनट रुको, मैं तुमसे बाद में बात करूंगा,’ वह चिल्लाया। ‘पानी चाहिए।’ क़हाफ़ा पीछे हट गया: ‘ठीक है, मैं सुन लेता हूँ; तुम काम करो।’ फिर उसने लश्कर के मलिर टाउन नियंत्रण कक्ष में अपने बगल में बैठे वसी से फुसफुसाकर कहा। पुलिस चौकी पर हमला हुआ था। ‘शोएब ने उन पर गोली चलाई, इसलिए वे भाग गए।’ उन्हें अपनी बढ़त का पूरा फायदा उठाना था। क़हाफ़ा ने फोन पर चिल्लाकर कहा: ‘दो टीमों में बंट जाओ; बंधकों को बांट लो।’

लेकिन उसे सिर्फ उमर के कराहने और चीखने की आवाज सुनाई दे रही थी। उसे उम्मीद थी कि कहीं वह टूट न रहा हो। ‘उमर, उमर, प्रार्थना करो, भाई, आवाज कम करो। उमर, शोर बंद करो।’ क़हाफ़ा ने एक और तरीका आजमाया: ‘उमर, उमर, ग्रेनेड फेंको।’ कोई जवाब नहीं। ‘उमर, उमर, गोलीबारी हो रही है, मेरे दोस्त, गोलीबारी।’ क्या उन पर कब्ज़ा हो गया था? उसने फोन पर चिल्लाते हुए वही तरकीब अपनाई जो हमेशा काम करती थी। ‘अगर तुम उन्हें मार गिराओगे तो तुम्हारे लिए बीस हज़ार रुपये हैं,’ उसने कहा।
लेकिन उमर गायब था, हालांकि फोन लाइन चालू थी। एटीएस और क़हाफ़ा को कुछ नई आवाज़ें सुनाई दे रही थीं: कुछ लोग अंग्रेज़ी और मराठी में फुसफुसा रहे थे। एक आवाज़ ने कहा, 'इसे खोलो, यार। इसे जल्दी खोलो।' एटीएस को समझ नहीं आ रहा था कि और कौन-कौन अंदर है। 'पहले उसके हाथ छोड़ो।' नागपाड़ा में उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि ये बंधक भागने की कोशिश कर रहे होंगे। उमर कहाँ था? एक और नई आवाज़ आई: 'बस हो गया। अब खिड़की खोलो।' क्या पुलिस तीसरी मंज़िल से ऊपर आ गई थी? 'कांच तोड़ दो।'
क़हाफ़ा ने अपने बगल में बैठे वसी से फुसफुसाते हुए कहा, "मुझे लगता है ये कोई और है।" चारों बंदूकधारियों का क्या हुआ? क़हाफ़ा ने उलझन में कहा, "सेना वाले बात कर रहे हैं, मोबाइल गिर गया है; कोई दरवाज़ा तोड़ रहा है।" उसने पुकारा, "उमर?" सन्नाटा छा गया। फिर खिड़की के टूटने की तेज़ आवाज़ से लाइन भर गई।
क़हाफ़ा ने फुसफुसाते हुए कहा, 'वे शहीद हो गए हैं। अल्लाह की प्रशंसा हो।'

दूसरी मंजिल पर, भव्य सीढ़ी के चबूतरे पर, काले सूट वाला पेटवाल अभी भी उस बड़े लकड़ी के बक्से के अंदर था और मुश्किल से सांस ले पा रहा था। वह गिनती करते हुए गोलीबारी रुकने का इंतजार कर रहा था। फिर उसने भारी ढक्कन खोला, बाहर कूदा और एक पेंट्री की ओर भागा, जहाँ उसने एक फायर होज़ देखा और उसे चालू करके अपने चारों ओर पानी की बौछार कर दी, जिससे एक गीला घेरा बन गया। गलियारे में आगे बढ़ते हुए, सीसीटीवी कक्ष के पास, इंस्पेक्टर धोले, जिन्हें अपने कपड़ों और त्वचा के जलने की गंध आ रही थी, ने अग्निशामक यंत्रों की एक कतार देखी, क्योंकि गोलियों और ग्रेनेडों की बौछार उनकी स्थिति पर लगातार हो रही थी। छर्रों से उनके हाथों और बाजुओं में तेज जलन हो रही थी। उनके दल में सभी घायल और झुलसे हुए थे, और उनके तीन जवान मारे जा

चुके थे। साइप्रस में संयुक्त राष्ट्र के एक मिशन पर इंस्पेक्टर ने अग्निशमन का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उन्हें याद आया कि प्रशिक्षक एक पाकिस्तानी सेना अधिकारी थे। 'अब मैं पाकिस्तानियों से खुद को बचाने के लिए आग बुझा रहा हूँ,' उन्होंने खुद से कहा, और एक अग्निशामक यंत्र की ओर दौड़े, पिन खींची, और अपने साथियों के चारों ओर आग की बौछार कर दी। उनकी बाहों की त्वचा पर छाले पड़ गए थे। उनका चेहरा ऐसा लग रहा था जैसे छिल गया हो और जब उन्होंने अपने सिर को हाथ से छुआ, तो बाल झड़ गए। उन्होंने अगले अग्निशामक यंत्र पर नज़र डाली। 'चलो चलें,' उन्होंने चिल्लाकर दूसरों को प्रेरित किया।
आग चारों ओर फैल रही थी, और वे आग बुझाते और भागते हुए एक दरवाजे तक पहुँचे और उसे लात मारकर खोल दिया, जिससे खंभा उनके पीछे ठंडे, घने अंधेरे में गिर गया। ‘भगवान की कृपा,’ उन्होंने मन ही मन कहा। ‘हम मौत के मुंह से बच निकले।’ उन्होंने एक और दरवाजा धकेला और उनके सामने दमकलकर्मी खड़े थे, जो उन्हें भागने का इशारा कर रहे थे। खुशी से झूमते हुए, उन्हें एहसास हुआ कि वे बाहर निकलने के रास्ते पर पहुँच गए हैं। इंस्पेक्टर धोले ने ताजी हवा में सांस ली और घुटनों के बल बैठ गए। एक पैरामेडिक उनके पास दौड़ा, जिसके साथ एक अधिकारी भी था जिसे वे कोलाबा स्टेशन से अच्छी तरह जानते थे। ‘नाम और पद?’ पुलिसकर्मी ने पूछा। ‘धोले। इंस्पेक्टर,’ उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, यह देखकर हैरान थे कि यह आदमी उनके साथ अजनबी जैसा व्यवहार कर रहा है। इस मंदबुद्धि को क्या हो गया है? उन्होंने अपनी उंगलियों से अपना चेहरा छुआ और बड़े-बड़े छाले पाए। आग ने उनका चेहरा बिगाड़ दिया था। उन्होंने पुलिसकर्मी को पास आने का इशारा किया। ‘मेरे पास एक बुरी खबर है,’ उन्होंने कांपती आवाज में कहा। ‘हमने अपने कुछ साथियों को खो दिया है। पाटिल सर और राजवर्धन सर मृतकों में शामिल हैं।’

पांचवीं मंजिल पर, कमरा नंबर 520 में, हाथ-पैर बंधे पांच बंधक अंधेरे में पड़े थे, और हमलावरों द्वारा खुला छोड़ा गया दरवाजा धुआं अंदर भर रहा था। बैंकर राम छटपटा रहा था और अपने खून बहते टखनों और कलाईयों में चुभ रही जंजीरों को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसके बगल में लेटे आदिल ईरानी ने फुसफुसाते हुए कहा: 'सर, वे चले गए हैं। हमें बाहर निकलना होगा।' धुएं से भरे उस धुंधले कमरे में दोनों एक-दूसरे को मुश्किल से देख पा रहे

थे। बिस्तर के दूसरी तरफ लेटे तीन लोग सिसकते हुए कह रहे थे: 'हम जलकर मर जाएंगे।'
राम करवट बदल कर उठा। अपनी पूरी ताकत लगाकर उसने उठने की कोशिश की और एक हाथ छुड़ा लिया। "कुछ ऐसा ढूंढो जिससे हम खुद को छुड़ा सकें," आदिल ने राम से आग्रह किया, जो लंगड़ाते हुए अलमारी की ओर बढ़ा और बीच वाले दराज को टटोलने लगा। दराज खोलकर उसने अंदर हाथ डाला, प्रार्थना की किताबें, कागज़ों का एक फोल्डर और रुई का एक पतला लिफाफा मिला। कैंची नहीं मिली। वह कराह उठा। अलमारी के ऊपर टटोलते हुए उसकी उंगलियों को किसी धातु जैसी चीज़ का स्पर्श लगा। एक कुंद फल काटने वाला चाकू। कुछ न होने से तो बेहतर। उसने उसे उठाया और आदिल के बंधनों को काटने की कोशिश की।
कराची के मलिर टाउन स्थित एटीएस मुख्यालय और लश्कर नियंत्रण कक्ष में, जासूस अभी भी यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि वे क्या सुन रहे हैं, क्योंकि उमर द्वारा फर्श पर गिराया गया मोबाइल फोन लगातार संदेश भेज रहा था। एक आदमी के संघर्ष करने की आवाज़ सुनाई दी: 'नहीं, यह काट नहीं रहा है। यह चाकू से नहीं काट रहा है।' कराची में, क़हाफ़ा द बुल ने ज़ोर से सोचा कि क्या उसने अपने बंदूकधारियों के शहीद होने का निष्कर्ष निकालने में जल्दबाजी की थी। 'उमर?' उसने उम्मीद से पुकारा।
राम ने चाकू गिरा दिया और दराज में वापस गया, जहाँ उसे छोटी कैंची के साथ एक सिलाई किट मिली। वह कमरे में इधर-उधर लड़खड़ाता हुआ सबको आज़ाद करने लगा, जब तक कि पाँचों लोग अपनी कलाई और टखनों को मलते हुए, ज़हरीली गैस में हाँफने लगे। खुले कांच के दरवाजों के बाहर आग लावा की तरह बह रही थी। वे अभी भी फँसे हुए थे। नौकर स्वप्निल ने आगे बढ़कर गीले तौलिये से दरवाज़े बंद कर दिए। उनके फेफड़े जल रहे थे। वे बाहर कैसे निकलेंगे? आदिल सबसे पहले बोला, 'मुझे पता है हम कहाँ हैं। खिड़कियाँ, यही एकमात्र रास्ता है।' युवा वेटर ने एक भारी कूड़ेदान को शीशे पर पटका, जिससे एक शीशा टूट गया और फिर पूरा शीशा बिखर गया। धुआँ बाहर निकला और ताज़ी हवा अंदर आई, जिसे सबने बड़ी उत्सुकता से पी लिया। राम ने पहली बार उम्मीद की किरण देखी और वेटर को बाहर निकलते और किनारे से आवाज़ लगाते हुए देखा। आसमान में कुछ तारे चमक रहे थे, लेकिन चारों ओर घना अंधेरा था, होटल की टाइलों वाली छत पर गहरे काले धब्बे दिखाई दे रहे थे।

एटीएस और कराची नियंत्रण केंद्र दोनों ने आदिल की चीख सुनी: 'मदद करो, मदद करो।'
क़हाफ़ा ने बुदबुदाते हुए कहा: 'उमर?' कोई जवाब नहीं आया, बस वही आवाज़ बार-बार पुकार रही थी: 'मदद करो, मदद करो।'
अन्य बंधकों को बुलाते हुए आदिल ने नीचे की ओर इशारा किया। वे दक्षिणी विंग के ऊपरी भीतरी कोने में, पूल की ओर मुंह करके खड़े थे। उनके नीचे निचली मंजिल की ढलानदार छत थी और उससे तीन मंजिल नीचे, क्रिस्टल रूम के ऊपर एक कंक्रीट की छत थी। 'हम वहां नीचे उतर सकते हैं,' आदिल ने कहा। राम भयभीत दिख रहा था। 'चलिए, साहब,' आदिल ने आग्रह किया। उसने आंखें सिकोड़कर नीचे कुछ हिलता हुआ देखा। उसने कदमों की आहट सुनी और एक आकृति को छत पर भागते हुए देखा। क्या वह कोई बंदूकधारी था? आकृति को ध्यान से देखते हुए, उसे यकीन हो गया कि वह पुरु पेटवाल था। सीसीटीवी कक्ष से भागने के बाद, ब्लैक सूट वाला व्यक्ति दूसरी मंजिल के आग के जाल से बाल-बाल बच निकला था। हिम्मत जुटाकर, आदिल ने हाथ हिलाया और पेटवाल का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करते हुए पुकारा। 'मदद, मदद।' तभी उसे एहसास हुआ कि पेटवाल अकेला नहीं था। उसके साथ पांच नौकर थे। वे ऊपर की ओर हाथ हिला रहे थे। आदिल ने नीचे देखा और पाया कि वे किसी और को इशारा कर रहे थे।
एटीएस और कराची नियंत्रण केंद्र में उन्होंने एक आवाज़ सुनी जो कमरे में मौजूद अन्य लोगों को बता रही थी: ‘वे क्या कह रहे हैं? ये ताज होटल वाले हैं।’ आदिल ने झुककर देखा तो उसे अपने नीचे एक महिला मेहमान नाली के पाइप से लटकी हुई दिखाई दी। वह उसके रोने की आवाज़ सुन सकता था। वह जम सी गई थी और कांप रही थी। पेटवाल चिल्लाया: ‘कृपया, महोदया, हिम्मत मत हारिए।’ नीचे मौजूद सभी लोग उसे धीरे-धीरे नीचे उतरते हुए देख रहे थे। फिर वह रुक गई और उसने अपना सिर हिलाया।
छज्जे पर कदम रखते हुए, आदिल ने आखिरकार पूरा दृश्य देखा। एक पुरुष मेहमान नीचे छत पर पड़ा था, उसके पैर असामान्य रूप से फैले हुए थे। छह घंटे से संकटग्रस्त होटल में फंसे कई अन्य लोगों की तरह, जिन्हें बचाव की कोई उम्मीद नहीं थी, उसने भी जोखिम उठाने का फैसला किया था। लेकिन वह गिर गया और कंक्रीट पर जा गिरा। वह मरता हुआ लग रहा था। पेटवाल और अन्य लोग कंबल और रजाई लेकर दौड़े। उन्होंने महिला को ऊपर से पुकारा, 'कूद जाओ!' ऊपर से, आदिल

ने देखा कि वह महिला पाइप को छोड़ देती है, हवा में लुढ़कती है और चादर की तहों में जा गिरती है, फिर उसे छत से जीवित उठाकर ले जाया जाता है। पेटवाल वापस आया और पहली बार उसने आदिल को छज्जे पर बैठे देखा। उसने इशारा किया: 'रुको', और अंदर भागा, फिर आग बुझाने वाली नली का एक कुंडल लेकर लौटा। उसने आदिल को उसे ऊपर खींचने का इशारा किया। आदिल ने चिल्लाकर जवाब दिया, जिसकी आवाज एटीएस और कराची नियंत्रण केंद्र ने सुनी: 'रुको, यार, मैं तुमसे कह रहा हूँ, तुम वहाँ से नहीं आ सकते।'
पेटवाल के पास एक और चीज़ थी, चादरों की एक रस्सी जिसे उसने भारी नली के एक सिरे से बांध दिया और ढीले सिरे को लपेटकर ऊपर फेंक दिया। एक बार, दो बार। आदिल, जिसने अपने पैर छत के फ्रेम में फंसा रखे थे, आखिरकार उस रस्सी को पकड़ पाया और उसका इस्तेमाल करके भारी नली को ऊपर खींच लिया।
एटीएस और कराची नियंत्रण विभाग को कमरे के अंदर किसी के होने की आहट सुनाई दी। यह बटलर था जो पेटवाल के पर्दे से जोड़ने के लिए अपनी रस्सी गूंथने की कोशिश कर रहा था। 'यह पर्दा इस पर्दे से मोटा है। तकिया ले लो।' उन्होंने रस्सी और पाइप को छज्जे से बांध दिया और अब उन्हें हाथ पकड़कर नीचे उतरना था। पहले जाने की पेशकश करते हुए, आदिल ने छज्जे से धक्का दिया, इमारत की ओर मुड़ा और पाइप को अपना भार संभालने दिया। मखमली अंधेरे की हवाहीन दुनिया में गिरने और बेहोश होने से पहले उसका आखिरी विचार यही था कि उसे इस बात की खुशी थी कि बाकी लोगों ने नीचे पीड़ित व्यक्ति का दृश्य नहीं देखा था।
एटीएस और कराची में, उन्होंने कमरा नंबर 520 में किसी को चिल्लाते हुए सुना: 'बांधो, बांधो, राजू। वह लटका हुआ है।' आदिल बेहोश हो गया था। राम ने सफाईकर्मी राजू बागले पर चिल्लाया, जबकि पेटवाल की टीम ने नली को कसकर पकड़े रखा और प्रार्थना की कि आदिल न गिरे। लेकिन रस्सी उसकी उंगलियों से तेजी से फिसल रही थी और वह गिर पड़ा, ज़मीन पर एक भयानक आवाज़ के साथ। 'क्या वह मर गया?' भयभीत राम ने पूछा। छत के कोण के कारण, आदिल अब दिखाई नहीं दे रहा था। कमरा नंबर 520 में पीछे रह गए लोग दूसरा रास्ता ढूंढने लगे। तभी उन्हें लावारिस पड़ा फोन दिखाई दिया।
एटीएस और कराची में उन्हें कदमों की आहट और एक आवाज सुनाई दी। राजू बागले: 'मुझे लगता है तुम्हारा मोबाइल यहाँ है।' राम: 'नहीं, नहीं, यह तुम्हारा है।' तभी उन्हें अचानक एहसास हुआ कि यह हैंडसेट उनमें से किसी का नहीं है। राम:

'तो फिर यह किसका है?' एक पल का विराम। 'अरे, यह बम या कुछ और हो सकता है, इसे मत छुओ, फेंक दो।' धड़ाम की आवाज।
कराची में, क़हाफ़ा द बुल ने आखिरकार लाइन काट दी।

नीचे छत पर, आदिल को होश आया और उसने पेटवाल के चेहरे को घूरते हुए पूछा, 'क्या आप ठीक हैं?' उसके सीने में तेज दर्द हो रहा था। उसकी पसलियां टूटी हुई लग रही थीं और पैरों से खून बह रहा था। लेकिन वह जीवित था। पेटवाल ने उसे गले लगाते हुए कहा, 'तुम बेहोश हो गए थे, यार।' पीछे, उसने देखा कि सफाईकर्मी दूसरे घायल मेहमान, 39 वर्षीय जर्मन टीवी निर्माता राल्फ बर्की के शव को उठा रहे थे, जिनकी बाद में चोटों के कारण मृत्यु हो गई। उनकी पत्नी क्लाउडिया, जो म्यूनिख में घर पर थीं, ने उनका आखिरी फोन नहीं सुना था, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह होटल से बाहर निकलने की कोशिश करेंगे। उन्हें उनकी मृत्यु की सूचना कई घंटों बाद मिली।
अपनी पूरी ताकत जुटाकर आदिल उठा और लंगड़ाते हुए 520 में फंसे बंधकों के पास पहुंचा। उसने अपनी पसलियों को पकड़ते हुए उन्हें हाथ हिलाकर कहा, 'नीचे आ जाओ, कोशिश तो करनी ही होगी।' छत के किनारे पर बैठा बटलर स्वप्निल अजीब तरह से एक तरफ झुका, थोड़ी देर रुका और फिर बिना आवाज किए रस्सी से नीचे उतरने लगा। उसके बाद हाउसकीपिंग बॉय राजू बागले आया। राम के साथ बेलबॉय सुनील जाधव रह गया। तीनों ने एक-दूसरे को देखा। अब कौन जाएगा? उनके सामने स्पेशल फोर्सेज का एक मुश्किल रास्ता था। सुनील ने इशारा किया कि वह रुकने के बजाय जोखिम लेना पसंद करेगा और खुद को खींचकर किनारे पर चढ़ गया, घूमकर नीचे फिसल गया।
राम अकेला बैठा था, अपने पीछे जलती आग की चटकने की आवाज़ सुन रहा था। उसका मन मानो ताश के पत्तों के ढेर की तरह बिखर रहा था। वह चबूतरे पर बैठा था, उसके पैर लटक रहे थे। उसकी कॉलरबोन में दर्द हो रहा था, और उसकी पीठ और कूल्हे पर गहरे घाव थे। हालाँकि वह दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा जीना चाहता था, लेकिन उसके शरीर ने बहुत कुछ सहा था। वह देख सकता था कि सब उसे हाथ हिलाकर बुला रहे हैं। 'चलो, राम। कोशिश करो।' लेकिन उसने जर्मन मेहमान का शव ले जाते हुए भी देखा था। वह ऐसा नहीं कर सकता था। उसकी आँखों में आँसू भर आए। वह खुद को बहुत टूटा हुआ और बूढ़ा महसूस कर रहा था। राम धुएँ से भरे कमरे में रेंगकर वापस आया और बिस्तर के पास बैठ गया। उसे मोम

और चंदन की सुगंधित खुशबू, एक शांत हॉल में बजती घंटियों की आवाज़, और हज़ारों वर्षों की शोभायात्रा और पूजा से चिकने हो चुके ठंडे, खुरदुरे पत्थरों पर गर्म पैरों का आभास हुआ। वह फिर से कपलेश्वर के मायलापुर मंदिर में था, अपनी मुक्ति के लिए देवी से प्रार्थना कर रहा था, जैसा उसने अपने जीवन में कई बार किया था। उसने मंत्रोच्चार किया, 'यह क्या होगा?'
आँखें खोलते ही उसने फर्श पर कुछ पायजामा पड़ा देखा और उसे अपने नंगे होने का एहसास हुआ। पायजामा पहनते ही उसने मन बना लिया। उसने फर्श से गीले तौलिए उठाए, उन्हें अपने चेहरे और कंधों पर लपेटा, कांच के दरवाजे खोले और लड़खड़ाते हुए आग की लपटों में बाहर निकल गया। वह जीना चाहता था।

7

गहरी रात

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, सुबह 3 बजे।

ताज होटल से एक मील उत्तर में, शामियाना कॉफी शॉप के मैनेजर अमित पेशावे बॉम्बे अस्पताल के गलियारों में चहलकदमी कर रहे थे। उनके करीने से संवारे हुए बाल बिखरे हुए थे, काला सूट धूल से सना हुआ था और सफेद काम की कमीज फड़फड़ा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें किसी बवंडर ने खींचकर थूक दिया हो। अस्पताल के बिना खिड़कियों वाले गलियारे तेज नियॉन रोशनी से जगमगा रहे थे और बीमारों और घायलों की इस धुंधली दुनिया में यह जानना मुश्किल था कि दिन है या रात। सड़े हुए खून की दुर्गंध हर जगह फैली हुई थी और सीढ़ियों से दर्द भरी चीखें गूंज रही थीं।
पिछले पांच घंटों में अमित कई बार मौत के मुंह से बच सकता था। उसके सामने ही उसके एक वेटर को गोली मार दी गई थी। भीषण गोलीबारी के बीच उसने इकत्तीस लोगों को इकट्ठा किया और दो मेहमानों की हत्या होते देखी। लापता बच्चे की तलाश में स्वेच्छा से आगे आने पर उसका सामना एक बंदूकधारी से हुआ, जिसने उस पर गोली चलाई और फिर ग्रेनेड फेंक दिया। अपने प्रिय शहर पर आई विपत्ति को देखकर उसका मन भयभीत हो गया।
ताज होटल से भागने के बाद, अमित ने एक घायल ब्रिटिश मेहमान को अस्पताल पहुँचाया। खून से लथपथ और घायल लोगों की भीड़ के बीच से दौड़ते-दौड़ते और फिर चलते हुए, अमित को रास्ते में हुए कई अन्य हमलों के बारे में पता चला। जब उस व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराया जा रहा था, तभी ब्रिटेन से एक महिला ने अमित के मोबाइल पर कॉल करके बताया कि उसकी बहन (और उसकी पत्नी) लापता है। उसे आखिरी बार ताज होटल की लॉबी में नालंदा बुकशॉप की ओर भागते

हुए देखा गया था। भाभी ने गुहार लगाई, 'कृपया उसे ढूंढने में हमारी मदद करें।' अमित ने उस परेशान महिला का नंबर नोट कर लिया और पूरी कोशिश करने का वादा किया। इसके बाद उसने शेफ हेमंत ओबेरॉय को मैसेज करके होटल वापस बुलाए जाने का अनुरोध किया। लेकिन बॉस ने उसे वहीं रुकने के लिए कहा। 'वहाँ तुम्हारे लिए बहुत काम होगा।'
अमित आधी रात तक सिगरेट की तलाश में वार्ड के बाहर बेचैनी से घूमता रहा, तभी उसकी नज़र ज़मीन पर बैठी एक अस्त-व्यस्त यूरोपीय महिला पर पड़ी, जिसने खून से सना हुआ सलवार-कमीज़ पहना हुआ था। जैसे ही वह उसके पास गया, वह डर के मारे पीछे हट गई। लेकिन अमित ने उससे बात निकलवा ली। उसने अपना परिचय लाइन क्रिस्टिन वोल्डबेक के रूप में दिया, जो एक नॉर्वेजियन पर्यटक थी और लियोपोल्ड हमले में फंस गई थी। 'मेरा प्रेमी बुरी तरह घायल है; उसका बहुत खून बह गया है। मैंने बहुत सारी लाशें देखीं।' अमित अविश्वास से सुनता रहा। यह पहली बार था जब उसने कैफे में हुई घटना के बारे में विस्तार से सुना था।
सिगरेट पीने के लिए अस्पताल के प्रवेश द्वार की ओर जाते समय अमित की नज़र एक सिंक पर पड़ी। उसने कहा, 'अपना चेहरा धो लो।' लाइन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'जी हां, मेरे प्यारे।' उसे यह सोचकर पहली बार हंसी आई कि यह युवा दिखने वाला रेस्टोरेंट मैनेजर उससे दोगुनी उम्र की किसी महिला को आदेश दे रहा है। उसने महसूस किया कि लाइन को राहत मिली है जब उसने अपने बालों, गर्दन, चेहरे और कपड़ों पर जमे सूखे खून की जंग लगी परत को रगड़कर साफ किया। उसने उसे अपना जैकेट दिया ताकि वह खुद को उससे सुखा सके।
तरोताज़ा महसूस करते हुए, लाइन ने अमित को बताया कि कैसे एक गोली ने आर्ने का चेहरा भौंह से जबड़े तक चीर दिया था और उसकी तीन उंगलियों के ऊपरी हिस्से अलग हो गए थे। एक सर्जन उन्हें फिर से जोड़ने की कोशिश कर रहा था। उसने अपनी दोस्त मीतू के बारे में बताया, जो इतनी भाग्यशाली नहीं थी और कैफे के फर्श पर खून बहने से उसकी मौत हो गई थी। उसने बताया कि उसे मीतू का शव वहीं छोड़ना पड़ा था और वह अपने प्रेमी को शहर भर में अस्पताल की तलाश में घसीटती रही थी। यह बताते हुए उसकी आँखों में आंसू भर आए।
अमित और लाइन सिगरेट पीने के लिए जैसे ही बाहर आए, गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। अमित घबराकर वापस अंदर भागा, तभी किसी ने चीखकर कहा: ‘नीचे झुक जाओ!’ लेकिन लाइन कहाँ थी? वह एक संकरी गली में भाग गई थी और वहीं फंस गई थी। जब

अमित ने उसे दोबारा पाया तो वह दीवार पर चिल्ला रही थी। उसने जल्दी से उसे अंदर बुलाया। ‘लिफ्ट में जल्दी से जाओ,’ उसने छठी मंज़िल का बटन दबाते हुए कहा। ऊपर पहुँचकर वह ज़मीन पर गिर पड़ी और फूट-फूट कर रोने लगी। उसे शांत करने के बाद, अमित उसे अपने प्रेमी के खून से सने कपड़े पकड़े हुए छोड़कर चला गया और लिफ्ट की खड़खड़ाहट सुनता रहा, इस डर से कि कोई बंदूकधारी ऊपर आ रहा है। ‘शुभकामनाएँ, लाइन,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मुझे जाना होगा।’ नीचे, अमित अपने घायल ब्रिटिश मेहमान के पास लौट आया था और अस्पताल के कर्मचारियों से उसे खबर मिली कि हाल ही में रंग भवन लेन से गोलियां चली हैं, जहां एक हमले में तीन वरिष्ठ पुलिस अधिकारी - हेमंत करकरे, अशोक कामते और इंस्पेक्टर सालस्कर - मारे गए हैं। अमित ने सोचा, अगर ये लोग मर सकते हैं, तो हम बाकी लोगों का क्या हाल होगा? घबराकर वह ताज होटल में अपने साथियों के पास वापस जाना चाहता था। उसने अपने शेफ बोरिस रेगो को मैसेज किया: 'कैसा चल रहा है?' रेगो चैंबर्स में मदद करने में व्यस्त था। उसने गोल्डन ड्रैगन के शेफ हेमंत तालीम से पूछा: 'आप ठीक हैं?' तालीम भी किसी काम में लगा हुआ था। ऐसा लग रहा था कि सभी मेहमानों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह से जुट गए हैं। उसे कहा गया, 'बस थोड़ा इंतजार करो।'

होटल के अंदर वापस आकर, ताज के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुडियादी ने करमबीर कांग और शेफ ओबेरॉय को एक टेक्स्ट मैसेज भेजा, जो यह तय कर रहे थे कि आगे किसे निकाला जाए। अभी भी पांच महत्वपूर्ण समूह फंसे हुए थे। पहला समूह ज़ोडियाक और स्टारबोर्ड बार में था; शाम की शुरुआत में लॉबी से भाग निकले भोजन करने वाले और मेहमान।
दूसरी घटना महल की पहली मंजिल पर स्थित फंक्शन रूम, गेटवे और प्रिंस रूम में हुई, जहां शक्तिशाली हिंदुस्तान यूनिलीवर बोर्ड के सदस्य भोजन कर रहे थे। होटल की 23 वर्षीय सहायक बैंक्वेटिंग मैनेजर मल्लिका जगद, जो प्रिंस रूम में फंसे 37 मेहमानों और 28 कर्मचारियों की निगरानी कर रही थीं, ने ग्रैंड स्टेयरकेस से भागने की संभावना को खारिज कर दिया था। लेकिन वेटरों ने आग की चपेट में आने की स्थिति में समुद्र की ओर खुलने वाली खिड़कियों से निकलने के लिए पर्दों और मेज़पोशों से रस्सियां बनानी शुरू कर दी थीं। तीसरा समूह टावर की सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित 150 भोजन करने वाले और कोरियाई सम्मेलन के प्रतिनिधियों का था। सबसे बड़ा समूह होटल की पहली

मंजिल पर स्थित चैंबर्स में था: 250 शरणार्थियों में उद्योगपति, कारोबारी नेता, सांसद और एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के साथ-साथ पत्रकार भीष्म मनसुखानी, उनकी मां और उनके दोस्त, नौका मालिक एंड्रियास लिवेरास और उनके क्रूज निदेशक, रमेश चेरुवोथ, माइक और अंजली पोलैक और उनके साथ भोजन करने वाले लोग शामिल थे।
महल की दूसरी से छठी मंजिल तक के कमरों में अलग-अलग मेहमान फंसे हुए थे, जिनमें कमरा नंबर 253 में अमित और वर्षा थडानी और कमरा नंबर 316 में विल पाइक और केली डॉयल शामिल थे। इनकी सुरक्षा करना सबसे कठिन था – जैसा कि करमबीर कांग अपने परिवार की चिंता करते हुए जानते थे। और वे सबसे अधिक असुरक्षित थे। अकेले और सब कुछ सुनते हुए: उन्होंने बंदूकधारियों को गलियारों में इधर-उधर घूमते, दरवाजे तोड़ते, कुछ कमरों में गोलियां चलाते और आग लगाते सुना। कुछ लोग गोली लगने से मारे गए लोगों की जान बचाने की कोशिश में चीख-पुकार भी सुन सकते थे, जिनमें तीसरी मंजिल पर मौजूद 71 वर्षीय ऑस्ट्रेलियाई व्यवसायी भी शामिल थे, जिन्होंने अपनी पत्नी के साथ भागने की कोशिश की। उन्हें गोली मार दी गई, उनकी पत्नी घायल और दर्द से कराह रही थीं। उनकी मदद के लिए चीखें विल और केली को सुनाई दीं, और उन्हें यह सुनकर रोंगटे खड़े हो गए।
वे पांच घंटे से अधिक समय से अपने कमरे में फंसे हुए थे और खुद को संभाले रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे। दूसरे बम धमाके के बाद बिजली चली गई थी, इसलिए उनके पास एयर कंडीशनिंग, रोशनी या मोबाइल चार्ज करने के लिए बिजली नहीं थी। जैसे-जैसे रात के सबसे गहरे समय, रात के 3 बजने का समय करीब आया, कमरा और भी अंधेरा होता गया और अंत में पूरी तरह से गायब हो गया। केवल कभी- कभार किसी वाहन की हेडलाइट की टिमटिमाती रोशनी ही दीवार पर लकीरें बनाती थी, जिससे उन्हें क्षण भर के लिए बाहरी दुनिया से जुड़ने का मौका मिलता था। विल खिड़कियों पर बचाव के संकेतों की तलाश कर रहा था। उसने केली से फुसफुसाते हुए कहा, 'बाहर तो बिलकुल सन्नाटा है।' उसे बस अरब सागर ही दिखाई दे रहा था। उस दोपहर वह ठंडा और लुभावना लग रहा था, लेकिन अब चाँद डूब जाने के बाद वह एक उदास और सुनसान जगह बन गया था। गहरा डर अब निराशा में बदल रहा था।

वह ठंड से कांपते हुए केली के बगल में वापस आ गया। आधी रात में समय अपने ही खास तरीके से बीतता है और दूर से आती गड़गड़ाहट और चटकने की आवाजें मानो युगों तक गूंजती रहती हैं।
अचानक, विल उठ खड़ा हुआ। "जिन और टॉनिक?" उसने बची-खुची उम्मीद जुटाते हुए पूछा। उसने स्ट्रॉ और स्टिरर से खेलते हुए हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहा कि उसे महंगे बिल की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। "धन्यवाद, विल," उसने एक घूंट लेते हुए फुसफुसाया। वे इस मुश्किल से निकल जाएंगे।
उसने उनके साथ बिताए उन सुखद महीनों को याद करने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही वह फिर से निराशा में डूब गया। वे अभी भी चप्पल पहने हुए थे, सिगरेट खत्म हो चुकी थी, और तबाही के कगार पर खड़े थे। एक साथ फंसे होने की बेतुकी और भयावह स्थिति, लंदन में उनके द्वारा मचाई गई अराजकता, और यह न जानना कि इन सबका क्या मतलब है, सब कुछ बेतुका लग रहा था।
यह याद करना मुश्किल था कि सिर्फ चौबीस घंटे पहले वे पालोलेम बीच पर सिएरन के रिसॉर्ट में अपने छोटे से कॉटेज की बांस की बुनी हुई छत को निहार रहे थे और ताज होटल में एक शानदार रात बिताने की उम्मीद कर रहे थे। उन्होंने अपने गिलास खाली कर दिए। अब वे क्या कर सकते थे? उन्होंने सोचा, जीवन बदल देने वाले इस संकट में व्यक्तिगत स्थान का शिष्टाचार क्या होता है? क्या अब भी पालन करने के लिए सामाजिक नियम हैं? सामान्य तौर पर, उन्हें शौच करने की ज़रूरत थी। लेकिन शौचालय फ्लश करने से बंदूकधारियों को सतर्क किया जा सकता था। फिर भी वे गए और उन्होंने शौच के ऊपर कागज़ का ढेर लगा दिया। धमाके फिर से शुरू हो गए, जिससे उनकी खिड़कियाँ हिलने लगीं। तौलिये से ढकी दीवार के पार धुआँ आ रहा था और अभी भी कोई फोन नहीं कर रहा था। कोई नई जानकारी नहीं थी। कोई पूर्वानुमान नहीं। बस विल और केली, दो खाली गिलास और शौचालय में पड़ा मल। उसने अपने पिता को संदेश भेजा। फोन की बैटरी कम होने के कारण, वह हौसला बढ़ाने वाले इन संदेशों को सोच-समझकर भेज रहा था। 'क्या हो रहा है, पिताजी?' निगेल, जो घर पर टीवी से चिपका हुआ था, अपनी गोद में तीन फोन रखे हुए, अभी भी लंदन के विदेश मंत्रालय से जानकारी लेने की कोशिश कर रहा था। 'शांत रहो, वे जल्द ही तुम्हारे पास आएंगे।' केली ने अपनी माँ को फोन किया और फोन पर रोने लगी।
गलियारे में धमाकों की गूंज किसी संगीतमय संगीत की तरह सुनाई दी। तीसरी मंजिल पर कहीं कांच बिखर गया और लकड़ी चटकने की आवाज आई। ऐसा लग रहा था

मानो किसी ने पार्टीशन की दीवार तोड़कर बूट ठोक दिया हो और अब उसे मरोड़ा और मोड़ा जा रहा हो। कम से कम गलियारे में चिल्ला रही महिला की आवाज तो बंद हो गई थी। केली ने एक फल काटने वाला चाकू उठाया और विल को दे दिया। वह छोटा और कुंद था।
वे बाथरूम में गए और बाथटब में एक-दूसरे के सामने बैठ गए। अगर गोवा की छुट्टियों ने उन्हें करीब लाया था, तो इस मुसीबत से बच निकलने का क्या असर होगा? यह एक निर्णायक क्षण था। 'हम बाथटब में क्यों हैं?' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'इसका कोई मतलब नहीं है।' विल मुस्कुराया। 'कम से कम हम साथ तो हैं,' उसने कहा। केली ने मुंह बनाया। यह बात घिसी-पिटी सी लगी। 'ठीक है, अगर सबसे बुरा हुआ तो हम साथ मरेंगे,' उसने आगे कहा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, रोने की कोशिश न करते हुए। उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था।
टेलीफोन की घंटी बजी। इतने लंबे सन्नाटे के बाद, यह किसी आग के अलार्म की तरह लग रही थी। विल खुशी से बाथटब से बाहर निकला, जैसे उसे फोन आया हो। 'हैलो!' एक महिला की आवाज़ थी, शांत और आश्वस्त करने वाली। 'हैलो? मिस्टर डॉयल? मिस्टर डॉयल?' जब उन्होंने फोन उठाया था, तो इस गलती पर वह जोर से हँस पड़ा था। अब वह बस यह जानना चाहता था कि उन्हें बाहर निकालने के लिए वे क्या कर रहे हैं। 'कमरे में ही रहिए, मिस्टर डॉयल, स्थिति नियंत्रण में है। पुलिस आ चुकी है।' कहकर उसने फोन रख दिया।
विल दंग रह गया। क्या बस इतना ही था? इससे भी ज़्यादा चिंता की बात यह थी कि क्या यह कोई चाल थी? कॉल करने वाली ने कहा था कि वह स्विचबोर्ड से कॉल कर रही है, लेकिन उन्हें क्या पता, कहीं उसके सिर पर बंदूक तो नहीं तनी हुई थी। जो भी था, अब उसे पता चल गया था कि कमरा नंबर 316 में कोई है और वह अपने गुंडों को ऊपर भेज रहा होगा। केली ने उसे दिलासा देने की कोशिश की। लेकिन विल बहुत परेशान हो रहा था। मानो अपनी बात साबित करने के लिए, गलियारे में गोलियों की आवाज़ गूंजी, एक बड़ा गोला उनके कमरे के बगल में संगमरमर के फर्श और दीवारों से टकराया। केली और विल वापस टब में चले गए।
एक गोली चलने के बाद एक तीखी चीख सुनाई दी। एक दरवाज़ा ज़ोर से खोला गया। फिर एक और गोली चली। गलियारे में लोग लोगों को मार रहे थे। 'हम मरने वाले हैं,' विल ने फुसफुसाते हुए कहा, उसे हैरानी हो रही थी कि उसने ये बात ज़ोर से कह दी। दोनों में से कोई भी कमज़ोर नहीं दिखना चाहता था। वह उछल पड़ा।
'दरवाज़े के पीछे छिप जाओ!' दोनों बाथरूम के दरवाज़े के पीछे घुस गए, केली

झुकी हुई थी और विल अभी भी फल काटने वाला चाकू पकड़े हुए था। 'मैं इसका क्या करूँगा?' उसने उसकी आँखों में देखा: 'वो अंदर आएगा और तुम उसकी गर्दन में चाकू घोंप दोगे।' विल ने उसे संदेह भरी नज़रों से देखा। फिर उसने अपने बजते हुए फ़ोन की तरफ हाथ बढ़ाया। 'विल,' उसके पिता का संदेश आया, 'अभी इमारत से बाहर निकलो। उन्होंने इसमें आग लगा दी है।'
वे बाथरूम से बाहर निकले और खिड़की की ओर रेंगते हुए गए। केली जानती थी कि वह क्या सोच रहा है। 'हम साठ फीट ऊपर हैं,' उसने धड़कते दिल से कहा। उसने जवाब दिया, 'कोई उनकी मदद के लिए नहीं आ रहा है। सब कुछ जल रहा है।' वह बिस्तर से चादरें खींचने लगा। 'केली, मेरी मदद करो।' खिड़कियाँ ही उनके पास एकमात्र विकल्प थीं। उन्होंने जो कुछ भी मिल सका उसे एक साथ बाँध दिया, जबकि केली ने डेस्क की दराज में कैंची ढूँढी। 'देखो, हम इनसे पट्टियाँ काट सकते हैं। चलो पर्दे भी नीचे उतार देते हैं। तौलिए ले आओ।'
उन्होंने रस्सियों के टुकड़ों को काटकर आपस में गांठें लगाईं और एक लंबी भागने की रस्सी बुन ली। विल पीछे हट गया और रस्सी को खोल दिया। केली ने चेतावनी दी, 'यह काफी मजबूत नहीं है।' विल ने जवाब दिया, 'चलो एक बार कोशिश करते हैं।' उन्होंने बिस्तर पर रस्साकशी शुरू कर दी। रस्सी मजबूत रही, इसलिए वे उसे खिड़कियों तक खींच ले गए। विल ने संगमरमर की कॉफी टेबल को उठाया और फेंक दिया, लेकिन वह उछलकर उसके चेहरे पर जा लगी। 'ये क्या बकवास है।' चोटिल होकर उसने उसे फिर फेंका। इस बार अंदर का शीशा टूट गया और तीसरी बार में बाहर का शीशा भी टूट गया, जिससे ठंडी रात की हवा उमस भरे कमरे में अंदर आ गई।
विल को दर्द का एहसास हुआ। उसने नीचे देखा तो पाया कि उसका हाथ कट गया है; खून कालीन पर टपक रहा था। वह अपना काम जारी रखते हुए बचे हुए कांच के टुकड़ों को निकालने लगा। वह आगे झुका, अपने चेहरे पर हवा का झोंका महसूस कर रहा था, तभी केली ने उसके कटे हुए हाथ को खौफ से देखा। विल ने ऊपर देखा तो छत से आग की लपटें उठ रही थीं। उसने नीचे देखा तो बचाव दल नहीं था, सिर्फ गेटवे से शूटिंग कर रहे पत्रकार थे। 'केली, हमें कोशिश करनी होगी।' वह पहले जाएगा। केली रोने लगी और उससे विनती करने लगी कि वह न जाए। सब कुछ बहुत ही बेतरतीब लग रहा था। लेकिन विल पहले ही रस्सी को डेस्क से बांध चुका था। रस्सी को परखते हुए उसने अपनी बालकनी की गोल मुंडेर से नीचे देखने की कोशिश की। 'मुझे ज़मीन नहीं दिख रही,' वह चिल्लाया। वह मुड़ा और उसे चूमा।

'मैं तुमसे प्यार करता हूँ,' उसने धीरे से कहा, जैसे ही उसने हाथ से बनी रस्सी को अपना वजन उठाने दिया, उसकी रुकावट को महसूस करते हुए, बालकनी के किनारे तक पहुंचा और नीचे गिर गया। केली ने उसे संभालने की कोशिश की, क्योंकि उसके भीतर आशा की एक छोटी सी किरण जगी थी। वह देख सकती थी कि वे भारत से एक ऐसी कहानी लेकर लौट रहे हैं जो उन्हें सुनानी है और एक ऐसी कहानी जो उनके बीच के इस बेतहाशा बढ़ते रिश्ते को और भी मजबूत कर देगी। रस्सी ढीली पड़ गई। केली ने उसे खींचा और वह तेजी से उसकी ओर खिंची। 'विल!' उसने उस भारी-भरकम रस्सी को मोड़-मोड़कर ऊपर खींचा, मानो कोई मछुआरा टूटी हुई डोर को खींच रहा हो। 'विल!' उसने टूटी हुई खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला, लेकिन नीचे ज़मीन दिखाई नहीं दे रही थी। बगल में देखते हुए, उसने पास के कमरे की खिड़की पर एक महिला को देखा। केली ने रस्सी को अपनी कमर के चारों ओर बांधना शुरू किया और जैसे ही वह दीवार के ऊपर से नीचे उतरने वाली थी, तभी उस महिला ने उसे ज़रूरत से ज़्यादा मदद का इशारा किया।
उसने कुछ शब्द बुदबुदाए, क्योंकि चिल्लाने से हत्यारे उसकी ओर आकर्षित हो सकते थे। केली ने उसके होंठों को ध्यान से देखा और कुछ शब्द समझ पाई: 'नीचे मत उतरो।' केली ने भौंहें चढ़ाईं। पड़ोसी ने हाथ हिलाया और बुदबुदाती रही, 'मैं उसे देख सकती हूँ। तुम्हारा प्रेमी मर चुका है।'

एक मंजिल नीचे, 253 वें फ्लोर पर, नवविवाहित अमित ने अपनी घड़ी पर नजर डाली और झुंझलाहट के साथ देखा कि सुबह के 3:15 बज चुके थे और वे अभी भी फंसे हुए थे। आखिरी जोरदार धमाका हुआ था, जिससे उनका दरवाजा अपने कब्जों से उखड़ गया था, और वह गलियारे में घूरते हुए बुदबुदा रहा था, 'यह हमारा 9/11 है', जबकि वर्षा उसके पीछे दौड़ती हुई चिल्ला रही थी, 'दरवाजा बंद करो।' 80 किलो से अधिक वजन का अमित कुछ जोर लगा सकता था और होश में आने के बाद उसने टूटे हुए दरवाजे पर कंधे से धक्का दिया और उसके सामने दराजों का एक सेट खिसका दिया, जबकि वर्षा ने एक फ्लोर लैंप लिया और उसे हैंडल पर जोर से ठोक दिया। तभी उसे गलियारे में मोबाइल फोन की घंटी सुनाई दी। उसने आवाज पहचान ली, नोकिया का फोन था, क्योंकि उसके पास भी ठीक वैसा ही फोन था। किसी कारणवश उसने गिनती शुरू की... आठ, नौ, दस... और फिर एक जोरदार धमाका हुआ। उन्हें अब तुरंत बाहर निकलना था। यह मानते हुए कि मोबाइल ने बम को ट्रिगर कर दिया है, वह सोचने लगा कि अगला बम कहाँ लगाया गया है। उनके अस्थायी उपाय ज्यादा देर

तक टिकने वाले नहीं थे। अमित खिड़कियों की ओर भागा और उसने देखा कि लोग इमारत के आगे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। टीवी क्रू द्वारा फिल्माए गए ये दृश्य, जिनमें 9/11 की भयावह यादें गूंज रही थीं, दुनिया भर में प्रसारित हो रहे थे।
थका-हारा और भूखा अमित अब इस स्थिति से निकलने का कोई रास्ता नहीं सोच पा रहा था, लेकिन कूदना भी उसके लिए मुमकिन नहीं था। एक व्यापारी और उद्यमी, जो आम तौर पर नए-नए विचारों से भरा रहता था, उसे कुछ न कुछ तो सोचना ही था। रेंगते हुए वह टूटे हुए दरवाजे तक पहुँचा और फिर से अंदर झाँका, उसे सिर्फ़ गहरा लाल धुंध और कालीन पर पड़े कुछ शव जैसे दिखाई दिए। 'पीछे हटो,' वर्षा फुफकारते हुए बोली। जैसे ही वह जवाब देने के लिए मुड़ा, दोनों ने एक तेज़ आवाज़ सुनी, जैसे कोई गोली कमर की ऊँचाई पर दरवाजे से आर-पार हो गई हो, बाल-बाल उसे छूकर निकल गई।
वह वर्षा के साथ बिस्तर के दूसरी तरफ लेट गया। टूटे हुए दरवाजे के ठीक बाहर उन्हें कदमों की आहट और आवाजें सुनाई दे रही थीं। वर्षा ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे लगता है वे कमरे-कमरे जाकर मेहमानों को मार रहे हैं।' दोनों एक-दूसरे को घूर रहे थे। रविवार को दोस्तों के साथ पार्टी, मंगलवार को शादी, क्या वे गुरुवार तक मर जाएंगे? उन्होंने योजना के अनुसार गोवा में शादी क्यों नहीं की? अमित खुद को कोस रहा था।
वह रेंगते हुए मिनीबार की ओर बढ़ा, अंधकार में खड़ी वर्षा उसे देखती रही, जब उसने कई बीयर और आधी बोतल शराब उठाई। वह कहने ही वाली थी कि यह नशे में धुत होने का समय नहीं है, तभी उसने वर्षा के चेहरे के भाव देखे और समझाया कि वह उस दरवाजे से आने वाले किसी भी व्यक्ति पर बोतलें फेंकने वाला है, खासकर नाजुक, टूटने वाले हिस्सों पर। 'देखो, मुझे बंदूक चलाना आता है, इसलिए अगर मैं उनसे हथियार छीन लूं, तो मैं इस घटिया होटल से धमाका करते हुए निकल जाऊंगा।' हालांकि वर्षा शादी से पहले कई सालों से अमित को जानती थी, लेकिन अब उसे लगा कि वह उसे बेहतर समझती है और उसे उस पर विश्वास हो गया।
आवाजें फिर से सुनाई देने लगीं। वे नीचे झुक गए और एक ऐसी भाषा सुनने लगे जिसे वे समझ नहीं पा रहे थे। अमित ने फुसफुसाते हुए कहा, 'यह उर्दू नहीं है। क्या तुम्हें लगता है कि यह पश्तो है?' उसे उम्मीद थी कि ये लोग

अफ़गानिस्तान-पाकिस्तान सीमा से नहीं आए होंगे। उसके मन में पठान कबायली भाड़े के सैनिकों की एक डरावनी तस्वीर उभर आई।
उसके फोन की घंटी बजी। उसके भाई का फोन था, अच्छे इरादे से, पूछ रहा था कि वह ठीक है या नहीं। वह पहले ही लगभग आधा दर्जन बार फोन कर चुका था, और कई अन्य लोगों ने भी। अमित चिढ़कर गुस्से से फुफकारा: 'देखो, चुप हो जाओ, और फोन रख दो, दरवाजे के बाहर लोग हैं और हम बात करने का जोखिम नहीं उठा सकते।' उसकी आवाज़ कठोर लग रही थी, लेकिन उसकी तेज़ इंद्रियों ने फोन की कंपन को एक हिमस्खलन की तरह सुना।
उसका फ़ोन फिर बज उठा। ‘कौन है?’ न्यूयॉर्क टाइम्स का फ़ोन था। ‘फ़ोन काट दो!’ उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्हें उसका नंबर मिल गया है। ‘क्या करोगे मुझे बचाने? हमें एक हेलीकॉप्टर चाहिए, क्या तुम्हारे पास है?’ उसने फ़ोन बंद कर दिया। ‘उन्हें लगता है कि मैं बता दूँगा कि हम कहाँ हैं, मतलब, बता दूँगा कि हम किस कमरे में हैं। बेवकूफ़। सबको अपने फ़ोन बंद रखने चाहिए,’ उसने किसी से विशेष रूप से नहीं कहा। ‘खबरों पर पूरी तरह रोक लगा देनी चाहिए। ऐसा क्यों नहीं है?’
टैप, टैप, टैप। उन्होंने एक-दूसरे को देखा। सांस मत लो। यह बगल वाले कमरे से आ रही थी। टैप। टैप। टैप। कोई 254 नंबर के कमरे पर दस्तक दे रहा था। अमित बाथरूम में घुस गया, जिसकी दीवार साझा थी, और वर्षा को भी आने का इशारा किया। उन्होंने एक चटकने की आवाज़ और ताले पर किसी के जूते की आवाज़ सुनी, फिर सुरक्षा चेन के कमज़ोर फ्रेम से टूटकर बिखरने की आवाज़ सुनी, जैसे ही बंदूकधारी बगल वाले कमरे में घुस गए।
अमित को याद आया कि उसने शाम को कमरे में रहने वाली महिला को देखा था। वे दोनों लिफ्ट से ऊपर आए थे और उन्होंने एक-दूसरे का हालचाल पूछा था। तभी वर्षा अमित से लिपट गई और धड़ाम-धड़ाम की आवाज़ के साथ गोलियों की आवाज़ें कमरे में गूंजने लगीं। उन्हें बिस्तर के खिसकने और टीवी के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। इस मंजिल के सभी कमरे एक जैसे थे, इसलिए उन्हें हर कदम की आहट सुनाई दे रही थी। बेडसाइड कैबिनेट इधर-उधर फेंके गए और संगमरमर की कॉफी टेबल पलट गई। आवाज़ें आपस में बहस करती हुई खिड़कियों और फिर बाथरूम की ओर बढ़ने लगीं, जिसके बाहर एक बड़ी अलमारी खड़ी थी। तभी उन्हें एक चीख सुनाई दी; एक महिला अंदर छिपी हुई मिली थी।

‘आह!’ वो चीखी। ‘मुझसे दूर हटो। मुझे अकेला छोड़ दो।’ वो इतनी करीब थी कि उसकी साँसें सुनाई दे रही थीं। छी! छी! गोलियाँ उनकी साझा प्लास्टर की दीवार से होकर, उनके सिर के ठीक ऊपर से गुज़र रही थीं। उसने वर्षा को सीधा लेटने का इशारा किया। वो औरत चिल्ला रही थी और उसे घसीटकर गलियारे में ले जाया जा रहा था। ‘मेरी मदद करो!’ वो रोई। ‘कोई मेरी मदद करो!’ वर्षा ने अपना सिर अपनी बाहों में छिपा लिया, मानो सब कुछ भुलाने की कोशिश कर रही हो। अमित ने मन ही मन बुदबुदाया कि जब वो उन्हें पकड़ने आएँगे तो वो उन्हें चीर-फाड़ देगा। लेकिन वो हिला तक नहीं।
एक मिनट बाद, ऐसा लगा जैसे चिल्लाती हुई महिला को जबरदस्ती उसके कमरे में वापस धकेला जा रहा हो। आह, आह, आह। कई गोलियां चलीं और फिर उस अजीब भाषा में चीखें सुनाई दीं। फिर बूटों के चलने की आवाज़ आई। उस भयानक सन्नाटे को सुनते हुए, वर्षा का हाथ थामे अमित ने कहा: 'उन्होंने उसे सिर्फ़ दो-तीन गोलियां नहीं मारीं, बल्कि पूरी मैगज़ीन खाली कर दी।'
वह महिला मरी नहीं थी। ‘कोई मेरी मदद करो। कृपया मेरी मदद करो।’ उसकी आवाज़ कमज़ोर थी, मानो वह अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रही हो। वे क्या करें? अगर वे बाहर गए तो उन्हें भी गोली मार दी जाएगी। अमित और वर्षा ने एक-दूसरे की आँखों में देखा और वहीं खड़े रहे, सिसकने की आवाज़ धीरे-धीरे कम होती जा रही थी, फिर भी वे उसे अनसुना करने की कोशिश कर रहे थे।

सुबह 3.30 बजे

उनके ठीक नीचे, पहली मंजिल पर, डीसीपी विश्वास पाटिल क्रिस्टल रूम के अंधेरे में धंसे हुए थे, और उस हमले और आग से बचने की घटना को याद कर रहे थे। भूख, प्यास और कालिख व खरोंचों से लथपथ, उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि होटल के बाहर पुलिस उनकी और राजवर्धन की मौत पर शोक मना रही है।
आग के गोले के फटते ही वे खुद को नीचे फेंककर बच निकले और क्रिस्टल रूम में शरण ली, जहाँ पाटिल घबराकर बार-बार अपनी ग्लॉक पिस्टल की जाँच कर रहा था। उसके बगल में, राजवर्धन ने एक मेज़पोश को काटकर अपनी टखने पर बाँधा, जो जलते हुए गोले से बचने के लिए लुढ़कते समय फट गई थी और मुड़ गई थी। उसे पता था कि उसकी हड्डी टूट गई है, लेकिन वह इसके बारे में सोचना नहीं चाहता था। घंटों तक उनके चारों ओर ग्रेनेड और एके-47 की गोलियों की आवाज़ गूंजती

रही। झुलसे और भीगे हुए, उन्होंने भयानक चीखें सुनीं, लेकिन वे कुछ भी करने में असमर्थ थे। अब वहाँ केवल अँधेरा और आग की गर्जना थी।
‘तुम्हें यह जानने के लिए कितनी बार मैगज़ीन में देखना पड़ेगा कि हमारे पास सिर्फ़ पाँच गोलियाँ हैं?’ राजवर्धन गुस्से से बोला। वह जानता था कि पाटिल उसके इस गुस्से का पात्र नहीं था, लेकिन वह क्रोधित, थका हुआ और पीड़ा में था। यहाँ वे दोनों पड़े थे, पुलिस के सीमित संसाधन एक सुसज्जित और बेहतरीन प्रशिक्षित निजी आतंकी नेटवर्क के सामने। राजवर्धन को ऐसा लग रहा था मानो उसे भी उतना ही हथियार रखने का पूरा अधिकार है जितना कि उसके सामने वालों को, और वह इस बात से आश्वस्त होना चाहता था कि मदद आ रही है। इस समय वह किसी बात पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। वे दोनों जानते थे कि वे अकेले हैं, आग की लपटों और भारी हथियारों से लैस बंदूकधारियों से घिरे हुए हैं जो अभी भी कहीं बाहर मौजूद हैं। सीसीटीवी कमरे से इंस्पेक्टर धोले और अन्य लोगों का राजवर्धन का आखिरी दृश्य उन्हें पीछे हटते हुए, आग की लपटों को घेरते हुए और गोलियों की बौछार होते हुए देखने का था। ‘धोले पीछे क्यों हटे? पीछे कभी नहीं हटते। क्या उन्हें यह पता नहीं था?’
राजवर्धन ने अपने नए परिवेश का जायजा लिया और शादी समारोह के अवशेषों पर नजर डाली। दोनों को भोजन की जरूरत थी, इसलिए राजवर्धन ने आधा खाया हुआ सेब चबाया, जबकि पाटिल परित्यक्त भोज के बर्तनों के बीच घूमते हुए किसी और की आधी पी हुई कोक उठा ली।
पाटिल ने केक का एक टुकड़ा उठाते हुए सोचा, यह भव्य सैलून कितना जर्जर लग रहा है! यहाँ आने वाले लोग शायद एक दिन में उतना कमा लेते होंगे जितना वह कई महीनों में कमाता है। दूर कोने में गुलाबी फूलों का एक घना जंगल था, जो कुचला हुआ पड़ा था, ऐसा उसने पहले कभी नहीं देखा था। सजी-धजी सलाद की थालियाँ ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं और चूर-चूर हो गई थीं। एक टूटा हुआ स्पंज केक था जो किसी फटे हुए ज्वालामुखी जैसा लग रहा था और उसने दरवाजे के पास एक क्षतिग्रस्त पट्टिका पर दिलों के घेरे में गुंथे हुए दो नाम पढ़े। 'अमित और वर्षा थडानी।' क्या वे बच गए थे? 'चलो, चलते हैं,' वह भीगे हुए कालीन से उठते हुए बोला। 'हमला ही बचाव का सबसे अच्छा तरीका है।' राजवर्धन ने अपना सिर हिलाया। वह भी बंदूकधारियों का पीछा करना चाहता था, लेकिन हालात उसके खिलाफ थे। वह घायल था, यह जगह एक भूलभुलैया थी, उनके पास हथियार कम थे, और उसके पास अब कोई ऊर्जा नहीं बची थी।

अनिच्छा से वह लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ, और वे धुंधले गलियारे में आगे बढ़े। अंधकार में वे चिकनी, ठंडी संगमरमर की दीवार से पीठ सटाकर भव्य सीढ़ी की ओर सरकते हुए बढ़े। राजवर्धन ने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम आगे बढ़ो, मैं पीछे से रक्षा करूँगा।' पाटिल धीरे-धीरे आगे बढ़ा और फिर मुट्ठी उठाकर बोला, 'रुको।' उसने दो उंगलियाँ ऊपर उठाकर इशारा किया: 'हथियारबंद। सीधे आगे।' राजवर्धन की नज़र दो काली परछाइयों पर पड़ी, जो अपने हथियारों के साथ नीचे की ओर भाग रही थीं। पाटिल ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे लगता है मैं कर सकता हूँ। अगर मुझे सिर पर सटीक निशाना मिल जाए।' राजवर्धन ने पाटिल को अपने करीब खींच लिया। 'मुझे तुम पर विश्वास है। लेकिन पीछे से रक्षा कर रहे बाकी लोगों का क्या?' उसने धधकते गुंबद की ओर इशारा किया। 'मान लो तुम दो-तीन गोलियाँ चला देते हो। पचास फीट से आगे तुम्हारी पिस्तौल की सटीकता बहुत कम हो जाएगी।' 'शायद तुम उन्हें मार गिराओगे।' इसके विपरीत, एके राइफल की घुमावदार मैगज़ीन में तीस गोलियां आती थीं, और रूसी शैली की सपाट क्लिप में सौ तक गोलियां भरी जा सकती थीं। 'अगर उन्होंने अपनी मैगज़ीन को टेप से चिपकाया है, तो यह संख्या दोगुनी हो सकती है। समझे?' पाटिल निराश हो गया। उनके लिए सबसे अच्छी उम्मीद यही थी कि वे पीछे हटें और ज़िंदा बच निकलें। वे एक सर्विस कॉरिडोर की ओर बढ़े और राजवर्धन ने एक और आकृति देखी और रुक गया। धुएँ के छंटने का इंतज़ार करते हुए, उसने एक पश्चिमी महिला की परछाई देखी। वह सीढ़ियों की ओर रेंग रही थी, उसके कपड़े जले और काले हो चुके थे, मानो वह भागने की कोशिश कर रही हो। वह एक और समस्या खड़ी कर रही थी। बिना वर्दी के, वह शायद उसे आतंकवादी लग रहा था, और उसकी कोई भी चीख असली बंदूकधारियों को सतर्क कर सकती थी। जब वह इस बारे में सोच रहा था, तभी उस महिला ने उसकी उपस्थिति महसूस की और मुड़कर उसकी आँखों में देखने लगी। राजवर्धन के पास हाथ ऊपर उठाकर 'शांत' रहने का इशारा करने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसने धीरे से कहा: 'दोस्ताना'। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और वह डरे हुए हिरण की तरह भाग गई, जिससे राजवर्धन को राहत मिली कि कम से कम वह चुपचाप भागी।
लंगड़ाते हुए वह सर्विस कॉरिडोर में दाखिल हुआ। पाटिल ने दुआ की कि आगे कोई पहरा न हो। जब वे बाहरी रसोईघर में पहुँचे, तो उनके जूते सूखते खून से चिपक गए। सर्विस सीढ़ियों से नीचे उतरकर उन्हें एक रास्ता मिला जो लॉबी की

ओर जाता था। तीन घंटे अंदर बिताने के बाद, पाटिल को अपने प्रिय शहर की जानी-पहचानी खुशबू महसूस होने लगी।
वह दोनों हाथ ऊपर उठाकर आगे दौड़ा और बोला, ‘पुलिस, पुलिस!’ उसके चिल्लाने पर पुलिस अधिकारियों का एक छोटा समूह आगे बढ़ा: ‘डीसीपी जोन 1 आ रहे हैं!’ वे पहले तो हैरान दिखे, फिर खुशी से झूम उठे और मृतकों को गले लगाने के लिए दौड़ पड़े। उनमें से एक ने पाटिल को थपथपाते हुए कहा, ‘तुम भूत हो,’ पाटिल ने राजवर्धन की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘इस आदमी को चिकित्सा सहायता की जरूरत है।’ किसी ने एम्बुलेंस बुलाई और संयुक्त आयुक्त कानून व्यवस्था और अपराध शाखा के दूसरे नंबर के अधिकारी देवेन भारती खुशी से दौड़ पड़े। मोबाइल डायरेक्शन फाइंडर से चार घंटे की निराशाजनक परेशानी के बाद, भारती को ताज होटल की लॉबी में पुलिस कमांड पोस्ट की कमान सौंपी गई थी।
संयुक्त आयुक्त, जिन्हें हमलों की शुरुआत में ताज ऑपरेशन का संचालन करने का आदेश दिया गया था, जबकि उनकी अनुभवी सहयोगी मारिया नियंत्रण कक्ष में निष्क्रिय बैठी थीं, ने ब्रीफिंग मांगी। उन्हें जो भी जानकारी मिलती, वह खुफिया शाखा और अनुसंधान एवं विश्लेषण विंग के लिए, और विशेष बलों के लिए (यदि वे कभी वहां पहुंचते हैं) अत्यंत महत्वपूर्ण होती।
राजवर्धन स्तब्ध रह गए। उन्हें उम्मीद थी कि लॉबी में त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) के जवान AK-47 और 9mm पिस्तौल से लैस, बुलेटप्रूफ जैकेट और हल्के हेलमेट पहने मौजूद होंगे, लेकिन वहां सिर्फ कुछ ही अधिकारी इधर-उधर घूम रहे थे। क्या कोई बचाव अभियान चल ही नहीं रहा था? जेसी ने कंधे उचका दिए। 'पुलिस कमिश्नर गफूर ने क्यूआरटी को इलाके को सील करने का आदेश दिया था।' दुबले-पतले और कम बोलने वाले राजवर्धन के लिए यह बात एक तरह से करारा जवाब थी।
राजवर्धन ने पूछा, ‘स्ट्राइकिंग मोबाइल्स कहाँ हैं?’ कई लोग रिपोर्ट करने में विफल रहे थे, क्योंकि उनके पास मौजूद पुरानी सेल्फ-लोडिंग राइफलों में गोलियां नहीं थीं। क्या कोई उन्हें दोष दे सकता था? जेसी ने आगे सवाल करना जारी रखा। यह समय किसी भी घटना का विश्लेषण करने का नहीं था, हालांकि कई बातें उनकी समझ से परे थीं, शहर भर में कई गलतियाँ और निर्णय संबंधी चूकें गूंज रही थीं, और अनुभवी अधिकारियों के लापता होने की कहानियां सामने आ रही थीं, जो गोलियां चलने के तुरंत बाद किसी न किसी तरह उस जगह से गायब हो गए थे जहाँ उन्हें होना चाहिए था। अब सब कुछ राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड पर

टिका था। यह इस काम के लिए सही बल था। लेकिन यह अभी तक शहर में नहीं पहुंचा था और इसकी तैनाती के लिए कोई स्पष्ट समय सारिणी भी नहीं थी।
जेसी ने शर्त लगाई: जब यह सब खत्म हो जाएगा, तो कोई सार्थक जांच नहीं होगी। यह ब्रिटेन या अमेरिका नहीं था, जहां एक शक्तिशाली आयोग हर संस्था पर दबाव डालता है। सत्ताधारी वर्ग ऐसी किसी भी जांच को विफल कर देगा। कोई भी खुलकर सामने नहीं आएगा और उसके बाद भी वही पुराना, अक्षम और भ्रष्ट शासन अपना दबदबा कायम रखेगा।
इस समय, जूनियर कमांडो को एक विस्तृत जानकारी चाहिए थी: रणनीति, आतंकवादियों की संख्या और साजो-सामान। उन्होंने नौसेना के एक कमांडो को बुलाया, जो मार्कोस दल का सदस्य था। दो टीमें अभी-अभी पहुंची थीं। राजवर्धन अचंभित था। पाटिल अविश्वास से देख रहा था। इतने घंटों तक उन्हें अपनी जगह पर डटे रहने के लिए मजबूर किया गया था, जबकि विशेष बल अपनी पूरी ताकत जुटा रहे थे। अब, एनएसजी के अभी तक न आने के कारण, 1,000 सैनिकों की लड़ाकू क्षमता वाले दल में से इमारत में बीस से भी कम मार्कोस मौजूद थे। जो आए थे, उनके पास केवलर जैकेट या हेलमेट भी नहीं थे। और ऐसा भी नहीं था कि उन्हें कोई लंबी दूरी तय करनी पड़ी हो। ये इकाइयां दक्षिण में एक मील से भी कम दूरी पर स्थित कोलाबा से आई थीं।
पाटिल ने मार्कोस टीम के पीछे जाने की तैयारी की। उन्हें एक गाइड की ज़रूरत थी और पाटिल ही सबसे उपयुक्त विकल्प थे क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि उन्हें किस चीज़ का सामना करना पड़ेगा या उसे कैसे ढूँढना है। राजवर्धन ने भी पैर का इलाज करवाने के बाद वापस आने का वादा किया। पाटिल के फोन पर संदेश आया - कमिश्नर गफूर: 'आपको ऊपर नहीं जाना है। दोहराता हूँ, ऊपर नहीं जाना है।' गफूर को गलती से गोलीबारी होने का डर था। 'मार्कोस टीम अपने आप ऊपर जाएगी। डीसीपी नीचे रहकर यह सुनिश्चित करेंगे कि ताजमहल सुरक्षित रहे।' पाटिल को घेराबंदी की निगरानी करने का निर्देश दिया गया।
अविश्वास और हताशा से भरा वह व्यक्ति बाहर निकल गया, चकाचौंध भरी रोशनी, कैमरा क्रू और शोरगुल से उसका मन विचलित हो रहा था, जबकि मार्कोस धुएं के बीच से होते हुए अंधेरे में सीसीटीवी कक्ष को फिर से चालू करने की उम्मीद में आगे बढ़ गया। होटल का कोई नक्शा उपलब्ध नहीं था, इसलिए उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि वे कहाँ जा रहे हैं। किसी तरह वे बिना किसी रुकावट के पहली मंजिल तक पहुँच गए। वे दूसरी मंजिल पर भी चढ़ गए। और वे ताज डेटा

सेंटर के टूटे-फूटे, बिना निशान वाले दरवाजे के पास से दौड़ते हुए निकल गए, जिसके अस्तित्व के बारे में किसी को पता ही नहीं था।

अपने घर में बने छोटे से कमरे में, डेस्क के नीचे दुबकी हुई, फ्लोरेंस मार्टिस इस सोच से खुद को दिलासा दे रही थी कि इतना अंधेरा और धुआँ है कि टूटे हुए दरवाजे से कोई अंदर नहीं देख सकता। 'सुबह होने पर उसका सामना कर लूँगी,' उसने खुद से कहा, जैसे-जैसे सन्नाटा गहराता गया और वह अपना पसंदीदा फिल्मी गाना गुनगुनाने लगी। 'तुम्हें तो पता ही होगा। मैं तो तुम्हारे लिए ही पागल हूँ।'
उसके पिता फॉस्टीन ने उसे ढूंढने का वादा किया था और उसे उन पर कोई शक नहीं था। वह एक खोजी कुत्ते की तरह थे और उन्होंने उसे कभी निराश नहीं किया था। उसे याद आया कि कैसे, स्कूल बोर्ड की परीक्षाओं के दौरान, जब वह इतनी डरी हुई थी कि खाना भी नहीं खा पा रही थी, तब वह स्कूटर पर चावल और चिकन लेकर आए थे। तभी उसका मोबाइल बजा और वह होश में आ गई।
‘हेलो। कौन है?’ उसने झिझकते हुए पूछा। एक आदमी की आवाज सुनाई दी। ‘हेलो, फ्लोरेंस, मेरा नाम रोशन है।’
रोशन। वह रोशन नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानती थी। उसने अनुमान लगाया कि ताज होटल का कोई तकनीशियन होगा जो दुनिया के किसी अन्य हिस्से से फोन कर रहा होगा, क्योंकि डेटा सेंटर वैश्विक स्तर पर ताज होटल से संबंधित काम करता था। क्या उसे नहीं पता था कि होटल घेराबंदी में है? 'रोशन, अभी बात करने का सही समय नहीं है,' उसने धीरे से कहा।
‘सुनो, फोन नीचे मत रखो।’ उसकी आवाज़ दृढ़ थी, उसने सोचा। ‘बस मुझे बताओ, क्या तुम डेटा सेंटर में फंसी हो? कोई पता नहीं लगा पा रहा कि तुम कहाँ हो। फॉस्टीन कहती है कि तुम लापता हो। मैं भी पहले डेटा सेंटर में काम करता था। मुझे इसकी हर एक जगह का पता है।’ उसने फॉस्टीन को जानने वाले एक दोस्त के ज़रिए फ्लोरेंस के बारे में सुना था, और वह पिता-पुत्री की मदद करने के लिए हर संभव कोशिश करना चाहता था।
फ्लोरेंस थोड़ी सतर्क हुई। ‘ओह, भगवान का शुक्र है। धन्यवाद, रोशन। मैं ठीक हूँ, लेकिन कृपया मुझे यहाँ से बाहर निकालो। दरवाज़ा टूट गया है और मेरा दम घुट रहा है।’ वह ठीक से समझ नहीं पा रही थी कि वह कौन है, लेकिन उसे उसकी आवाज़ का लहजा अच्छा लगा। ‘देखो, रोशन, अगर वे मुझे मार डालें... मतलब, अगर

वे मारना चाहें।’ उसका मुँह सूख रहा था और उसका खाली पेट गुड़गुड़ा रहा था। वह वाक्य सोच तो पा रही थी, लेकिन आधे ही उसके मुँह से निकल रहे थे।
‘शांत रहो, फ्लोरेंस,’ रोशन ने कहा। ‘जब तक कोई तुम्हें ढूंढ नहीं लेता, मैं फोन पर बना रहूंगा। फ्लोरेंस। क्या तुम अभी भी वहां हो?’ गाना उसके दिमाग में फिर से गूंज उठा और उसने फोन को थाम लिया, और रोशन के लिए गाने लगी: ‘हे शोना, हे शोना [ओ प्यारी, ओ प्यारी]’।

होटल के बाहर, टीवी कैमरों ने करमबीर कांग को अचानक पकड़ लिया। दाढ़ी बढ़ी हुई और डरे हुए, वह रतन टाटा के साथ खड़े थे, जिनके दादा ने होटल बनवाया था। टाटा समूह के अध्यक्ष, टाटा, जो इस होटल के मालिक थे, हमले शुरू होने के समय घर पर थे और उन्हें पुलिस द्वारा घटनाक्रम का पता लगाने तक वहीं रहने की सलाह दी गई थी। इसके बजाय, वह सीधे नीचे आ गए और आधी रात तक इंतज़ार करते रहे, मुश्किल से सो पाए, अविश्वास से भरे हुए, क्योंकि आग की लपटें परिवार के इस अनमोल रत्न को अपनी चपेट में ले रही थीं। टाटा ने आस-पास मौजूद हर किसी से कहा, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि होटल जल रहा है। यह संभव ही नहीं है।' करमबीर कांग भी आग की लपटों को घूर रहे थे। उनकी आँखें लाल थीं। और उस क्षण भर में, जब उन्होंने अपनी गर्दन ऊपर उठाई, कैमरे उन पर केंद्रित थे, उनकी आशंकाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। एक विशालकाय व्यक्ति ऐसा लग रहा था मानो वह भूसे का बना हो।
आग का केंद्र ठीक वही जगह लग रहा था जहाँ उनके परिवार का अपार्टमेंट स्थित था। टीवी पर खबर आ रही थी कि आग की लपटों ने ऊपरी मंजिलों को अपनी चपेट में ले लिया है और अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को जलाकर राख कर दिया है। टीवी एंकरों ने बताया कि बंदूकधारियों ने मेहमानों को उनके कमरों से खींचकर ताज होटल के अन्य हिस्सों में बंधक बना लिया था और सीसीटीवी कैमरों के सामने ही कुछ लोगों को बेरहमी से पीट-पीट कर पुलिस को यह संदेश दिया था कि वे बेबस हैं।
इससे पहले, नीति ने अपने पति की सलाह मानी थी: उसने खुद को और लड़कों को अपने अपार्टमेंट के बाथरूम में बंद कर लिया था और गीले तौलिये से सभी दरारों को बंद कर दिया था। उदय उसके बगल में दुबका हुआ था और वह समर को गोद में लिए उसके बालों को सहला रही थी। यह विश्वास करना मुश्किल था कि कुछ ही घंटे पहले वह लड़का बहरीन में अपने दादा से फोन पर बात कर रहा था। 'समर, मैं

जल्द ही मुंबई आ रहा हूँ। क्या तुम मुझे अपने कमरे में सोने दोगे?' समर ने खुशी से जवाब दिया, 'ज़रूर।'
ताज होटल का एक अधिकारी आया और उसने महाप्रबंधक के चौड़े कंधों पर हाथ रख दिया। ‘हम बस यही उम्मीद और प्रार्थना कर सकते हैं कि नीति और लड़के बंधक बनाए गए हों और सुइट में न हों।’ उसने बताया कि छठी मंजिल का केवल दक्षिणी हिस्सा जल रहा था। अगर वे इमारत के दूसरे छोर तक पहुँच गए होते तो उनके जीवित पाए जाने की पूरी संभावना थी।
करमबीर कुछ पल चलकर समुद्र तट पर गया, जहाँ एक हल्की, नमकीन हवा बह रही थी। क्षितिज की ओर देखते हुए उसने बहरीन में 3,000 मील दूर अपने माता-पिता को फोन किया, जहाँ वे उसकी बहन अमृत से मिलने गए थे। कांपती आवाज़ में उसने अपने पिता से कहा, 'मुझे नहीं लगता कि वे बच पाए होंगे।' अगर नीति ज़िंदा होती तो वह संपर्क में रहने का कोई न कोई रास्ता ज़रूर निकाल लेती। एक घंटे से उससे कोई खबर नहीं मिली थी। उसके पिता ने उससे कहा, 'एक बहादुर सिख बनो।' उन्होंने आगे कहा, 'तुम एक सेनापति के बेटे हो,' और याद दिलाया कि कैसे उनका बेटा ग्यारह पाउंड का एक विशालकाय बच्चा था, जो सेना के अलग-अलग परिसरों में अपने पिता की युद्ध कहानियाँ सुनते हुए पला-बढ़ा था। शिशु करमबीर को सेना की गाड़ी में घूमना बहुत पसंद था और उसके पिता भी चाहते थे कि वह एक सैनिक बने। अब वह अपने बेटे को क्या बताते? उन्होंने फोन करमबीर की माँ को दे दिया। उन्होंने उससे कहा, 'मैं उन्हें नहीं बचा सकता।' उसने कोमल स्वर में उत्तर दिया, 'तो जाओ और दूसरों को बचाओ।' ‘तुम एक बहादुर लड़के हो।’ दोनों ही इस दुखद घटना से गहरे दुखी थे।
अंततः, करमबीर ने फिर बात की। ‘मैं यहाँ आखिरी आदमी रहूँगा,’ उसने प्रतिज्ञा की। उसे उस सुबह परिवार के साथ जल्दबाजी में किए गए नाश्ते की याद आई, जो उनका आखिरी साझा पल था। जिस होटल ने उसके जीवन का इतना बड़ा हिस्सा ले लिया था, उसने अब उन्हें उससे हमेशा के लिए छीन लिया था।
उसने फोन रखा और क्षतिग्रस्त होटल की ओर मुड़ गया, उसकी आँखों में आग की लपटों का प्रतिबिंब दिख रहा था। उसने वहाँ मौजूद भीड़ में अविश्वास और भय से भरे चेहरे देखे। करमबीर कांग को आगे बढ़ने का हौसला जुटाना था। मलाबार हिल स्थित अपने अपार्टमेंट में सावित्री चौधरी भी ताज महल की दिल दहला देने वाली तस्वीरें देख रही थीं। सबीना से कई घंटों से कोई खबर नहीं मिली थी। उन्हें कुछ करना था। उन्होंने शांतनु को फोन किया: ‘मैं सबीना के

कमरे को आग की लपटों में जलते हुए देख रही हूँ। वह वहाँ से बाहर नहीं निकल सकती। तुम जानते हो ना?’ शांतनु अभी भी दिल्ली में थे, सुबह होने तक उनके पास उड़ान भरने का कोई रास्ता नहीं था। ‘प्लीज,’ उन्होंने कहा। ‘शांत हो जाओ। उसे फोन करो और अलविदा कह दो।’

ऊपर रेंडेज़वस रूम में, सूक से आए मेहमान और कोरियाई सम्मेलन के प्रतिनिधि नीचे जलते हुए महल को चिंता से देख रहे थे, तभी ताज के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुडियादी का संदेश आया। 'मार्कोस टीम महल के विंग में घुस गई है। अब आपके बाहर निकलने का समय है।' पूर्वी क्षितिज पर, भोर की पहली किरण आसमान को सीप के रंग जैसा भूरा कर रही थी।
निजी सुरक्षा प्रमुख बॉब निकोल्स ने अपने पूर्व कमांडो दल और अमेरिकी मरीन कप्तान रवि धर्निधरका को इकट्ठा किया। रेंडेज़वस रूम की रक्षा करना आसान था: चारों ओर से किलेबंदी थी, लिफ्टें जाम थीं और आग से बचने के रास्ते बंद थे। लेकिन रसोई के बर्तनों को ही हथियार बनाकर बैठे उत्तेजित भोजनार्थियों की भारी भीड़ के साथ बीस से अधिक मंजिलों से नीचे उतरना बेहद खतरनाक था।
‘मरीन में हम कहते हैं, “बंदूक की लड़ाई में चाकू लेकर मत जाओ”,’ रवि ने यह बात खुद से भी कही। इससे पहले, जब वे रसोईघरों से गुज़रे थे, तो उसने दूसरों की तरह हथियार नहीं ढूंढे थे, रसोई के चाकुओं से मिलने वाली झूठी उम्मीदों से चिंतित होकर। खाना खाने वाले ज़्यादातर लोग पहले से ही घबराए हुए थे। कुछ तो बुरी तरह टूट रहे थे। फिर उसके रिश्तेदार थे, जिनकी रक्षा करना उसका कर्तव्य था, लेकिन साथ ही उनसे सुरक्षित दूरी बनाए रखना भी ज़रूरी था। कोरियाई व्यापार प्रतिनिधिमंडल, जिनकी अंग्रेज़ी टूटी-फूटी थी और जिन्हें उपमहाद्वीप के कामकाज की बिल्कुल भी समझ नहीं थी, बहुत परेशान थे।
रवि ने अभी तक किसी को नहीं बताया था कि वह एक अमेरिकी मरीन है, जो बंदूकधारियों के लिए एक आदर्श बंधक साबित हो सकता था। उसे मन ही मन यह चिंता भी थी कि निकोल्स की टीम कुछ ज़्यादा ही जोश में लग रही थी। यह शायद एक पायलट का पूर्वाग्रह था; उसकी नज़र हैरियर के कॉकपिट से छनकर आती थी, हज़ारों फीट की ऊंचाई से वह पल भर में हालात का जायज़ा लेता था। एक कमांडो एक अलग तरह का योद्धा होता है, जो अपने सामने आने वाली हर चीज़ को भांप

लेता है, और युद्ध के नियमों के अनुसार जितना संभव हो सके उसके करीब जाता है।
एक बात पर वे दोनों सहमत थे: रवि और बॉब की टीम समझ सकती थी कि भारत की पश्चिमी नौसेना कमान मार्कोस को भेजने में क्यों हिचकिचा रही थी। मरीन कमांडो को शहरी युद्ध का कोई अनुभव नहीं था। ताज होटल उनके लिए किसी विदेशी धरती की तरह अनजान था। अब जब वे अंदर पहुँच चुके थे, तो इस घोर अंधेरे, धुएँ से भरे भूलभुलैया में आतंकवादियों को ढूँढ़ना भी उनके लिए बड़ी चुनौती होगी। रवि ने कहा, 'गलत टीम का सामना उन छिपे हुए आतंकवादियों से हो रहा है जिन्होंने कई घंटों से होटल पर कब्ज़ा कर रखा है।' बॉब ने सहमति जताते हुए कहा, 'वे भाग्यशाली होंगे अगर वे आपस में न टकराएँ।'
सबसे ऊंचे स्थान पर, निर्णय लेने का समय आ गया था। कुडियादी ने उन्हें बताया था कि मार्कोस की टावर पर चढ़ने की कोई योजना नहीं है, और ज़्यादा से ज़्यादा वह महल के विंग में एक छलावा बनकर रहेगा। बॉब की टीम इस मौके का फायदा उठाकर चुपके से निकल सकती थी। रवि को यह विचार पसंद आया, क्योंकि वह हमेशा से यही मानता था कि उनकी सबसे अच्छी उम्मीद 'लड़ाई न लड़ना' ही है। बॉब ने अपने आदमियों को संदेश दिया। उसने दल से कहा, 'एक समन्वित, धीमी गति से निकासी,' और चेतावनी दी कि 150 नागरिकों को सावधानीपूर्वक संभालना होगा। किसी ने पूछा, 'पुलिस का क्या?' क्या वे मदद नहीं कर सकते? बॉब ने सिर हिलाया और पीए चालू कर दिया। उसने घोषणा की, 'अगर हमें बाहर निकलना है, तो हमें खुद ही करना होगा।' कमरा शांत हो गया। सशस्त्र सहायता के बिना बाहर निकलना नागरिकों के लिए एक डरावना विचार था।
‘कोई बचाव दल आस-पास नहीं है,’ बॉब ने जोर देकर कहा और कुडियादी की चेतावनी दी: ‘कुछ मंजिलों में आग लगने के बाद सारी बिजली कट जाएगी, इसलिए हम आग की रेखा के ऊपर फंस जाएंगे।’ रवि को संदेह था कि अगर आग टावर में फैल गई तो उनके बाहर निकलने की संभावना ‘लगभग शून्य’ थी। भोजन कर रहे सभी लोग बाहर निकलने के लिए सहमत हो गए और बॉब ने स्टाफ रेडियो से कुडियादी को फोन किया: ‘अगर आप आ सकते हैं तो ऊपर आ जाइए।’
वे नागरिकों को दस-दस करके, एक मिनट के अंतराल पर नीचे भेजते थे, महिलाएं और बच्चे आगे रहते थे। बॉब ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा, 'हम सब नीचे उतर जाएंगे।' रवि ने अपने उन चचेरे भाइयों और चाचाओं को देखा जिनसे वह अठारह साल की उम्र के बाद से नहीं मिला था। वे इस रात यहाँ कैसे आ गए? इसकी

संभावना का अंदाजा लगाना मुश्किल था। अपने अतीत को कुरेदने का साहस जुटाना एक बड़ी छलांग थी। अमेरिका के युद्धों के बीच भारत आने का समय निकालना एक संघर्ष था। वे आखिरी समय में ही सौक पहुँच पाए थे, जबकि परिवार के अन्य सदस्यों ने ओबेरॉय होटल की लॉबी में टिफिन का विकल्प चुना था। पिछले एक घंटे में, उसने ऐसी भयानक कहानियाँ सुनी थीं कि कैसे बंदूकधारियों ने उसे गोलियों से छलनी कर दिया था।
बॉब ने सबको संबोधित करते हुए कहा: ‘हमें नहीं पता कि ये बंदूकधारी कहाँ हैं, इसलिए हमें चुप रहना होगा।’ अगर बॉब को ये जानकारी केबल न्यूज़ से मिल रही थी, तो उन्हें यह मान लेना चाहिए कि आतंकवादी भी ऐसा ही कर रहे थे, इसलिए कोई फ़ोन कॉल नहीं। ‘जूते उतारो।’ सबको चुपचाप जॉगिंग या दौड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। ‘अपनी जेबों से सारे खुले पैसे निकाल लो।’
निजी तौर पर, रवि ने नीचे हो रही घटनाओं की आवाज़ को ध्यान से सुना और एक ध्वनि विश्लेषण किया: एके-47, छोटे हथियार (संभवतः 7.65 मिमी या 9 मिमी), ग्रेनेड और सबसे चिंताजनक रूप से, किसी प्रकार का उच्च विस्फोटक। इससे पता चलता है कि मुंबई पर हुआ यह हमला वास्तव में कितना मिश्रित था। रवि के विचार में, इसमें एक इस्लामी संगठन द्वारा नागरिकों को बेरहमी से मारने की अंधाधुंध आतंक की प्रवृत्ति, मेसोपोटामिया में अल-कायदा द्वारा फालुजा में किए गए नरसंहार जैसी क्रूरता, और अमेरिकी मरीन जैसे जल-थल कमांडो द्वारा इस्तेमाल किए गए कौशल का मिश्रण था। रवि ने दोहराया, 'हमें बस दुश्मन से बचना है।'
उन्हें अपने कंधे पर एक थपकी महसूस हुई। एक सलीके से कपड़े पहने हुए व्यक्ति को चिंता थी कि उनकी बुजुर्ग मां आग से बचने वाली सीढ़ी से नीचे नहीं उतर पाएंगी। चौरासी वर्षीय रमा पारेख ने विनती करते हुए कहा, 'कृपया मुझे यहीं छोड़ दीजिए।' रवि ने सिर हिलाया। 'हम किसी को नहीं छोड़ेंगे।' उन्होंने एक कुर्सी का सुझाव दिया। 'हम बारी-बारी से आपको उठाकर ले जाएंगे।'
बैरिकेड्स को धीरे-धीरे हटाया जा रहा था: फर्नीचर, कुशन और रेंडेज़वस स्टेज के हिस्से। जैसे ही रवि ने आखिरी उलटी हुई मेज को नीचे उतारा, उसे बाहर सीढ़ियों में हलचल सुनाई दी। 'हे भगवान!' उसने दबी आवाज़ में कहा और बॉब की ओर मुड़ा, जो हाथ में मांस काटने वाला चाकू लिए खड़ा था। उन्हें क्या पता, कोई बंदूकधारी भी हो सकता है। रवि ने संभलकर दरवाजा खोला और काले

सूट पहने दो थके-हारे और पसीने से तर सुरक्षाकर्मियों को रेडियो के साथ देखा। 'सुनील!' बॉब चिल्लाया और सुरक्षा प्रमुख कुड़ियादी का अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ा। उनके अंदर आते ही आग और बारूद की गंध फैल गई। डरे हुए मेहमान पीछे हट गए।
दरवाजे खुल गए, जिससे गश्ती दल आगे बढ़ सके और हर मंज़िल पर बने गोल खिड़कियों से अंदर का जायज़ा ले सके। ये खिड़कियाँ हर गलियारे में खुलती थीं और संभावित जानलेवा क्षेत्र थीं। आगे बढ़ने वाली टुकड़ियाँ जोखिम का लगातार आकलन करने की कोशिश करती रहीं, जिसकी जानकारी भोजन कर रहे लोगों के काफिले को दी जाती रही। इस काफिले की पहली टुकड़ी सीढ़ियों से नीचे भेजी जाने वाली थी। कमांडो रेंगते हुए नीचे उतरे, दिन की उमस के बाद ठंडी, शुष्क रात की हवा चलने से आग से बचने वाली सीढ़ियों की दीवारें छूने पर चिपचिपी लग रही थीं। वे मंज़िल से बस एक फुट की दूरी पर थे और फिर सामने धुंधली रोशनी वाले गलियारे को पूरी तरह से देख पा रहे थे। वे अगली सीढ़ी से नीचे उतरे। कुछ भी नहीं हिला। टावर एक भूतिया जहाज की तरह था, होटल प्रबंधन ने ज़्यादातर मेहमानों से संपर्क कर उन्हें चेतावनी दी थी कि जब तक उन्हें नाम से न बुलाया जाए, वे बाहर न निकलें।
बॉब ने कहा, 'अगर कुछ हिल रहा है, तो समझ लो कि वह दोस्ताना नहीं है।' पहला खोजी भीगा हुआ, लेकिन खुश होकर लौटा। 'कुछ खास नहीं।' बॉब ने दस लोगों के पहले समूह की गिनती की, रवि ने यह सुनिश्चित किया कि उसका परिवार भी उनमें शामिल हो। जैसे ही वे धीरे-धीरे आगे बढ़े, एक तीखी गंध उनकी नाक में भर गई। जल्द ही एक लंबी कतार टेढ़ी-मेढ़ी होकर नीचे उतरने लगी और लगभग तुरंत ही किसी का मोबाइल फोन बज उठा। बॉब उन्हें चुप कराने के लिए मुड़ा और देखा कि कोरियाई लोग अपने जूतों और सम्मेलन के उपहारों से लदे हुए थे। आखिर वे इस जुलूस को कैसे संभालेंगे?
नीचे से गोलियों की गड़गड़ाहट गूंजी और कतार एकदम सिकुड़ गई। क्या आगे बढ़ने वाली टुकड़ी का किसी से सामना हुआ था? बॉब ने फुसफुसाते हुए जानकारी देते हुए आश्वस्त किया, 'गोलियां हमसे दूर एक गलियारे में चल रही हैं। कृपया आगे बढ़ते रहिए।' पीछे चल रहे रवि को कुर्सी छोड़नी पड़ी। वह आग से बचने वाली सीढ़ी के तीखे मोड़ों पर कुर्सी घुमा नहीं पा रहा था, इसलिए उसने रमा पारेख को कोयले की बोरी की तरह अपने कंधे पर लाद लिया। वह चुपचाप उससे चिपकी रही। नीचे उतरते हुए उसने सोचा, वह तो बड़ी बहादुर है।

कई घंटों के बाद, बॉब पहली मंजिल तक पहुंचा, फिर पांचवीं मंजिल पर, जहां जलते हुए कालीनों की दुर्गंध आ रही थी। हर कदम के साथ वे बंदूकधारियों के करीब पहुँच रहे थे और यहीं पर आधुनिक टावर के मूल महल के शीर्ष भाग से मिलते ही आग से बचने का रास्ता अचानक खत्म हो गया। 'अब हम कहाँ जाएँ?' उसने सोचा कि आग से बचने का रास्ता टावर के चारों ओर घूमकर भूतल तक जाएगा, लेकिन आगे मौजूद स्काउट्स ने बताया कि यह एक खुले गलियारे से होकर गुजरता है। भयभीत नागरिकों के समूह को एक ऐसे तल से होकर गुजरना होगा जिसकी अभी तक जांच नहीं हुई थी: स्नाइपर के लिए एक आदर्श जाल।
उन्होंने सीढ़ियों में जमा भीड़ को तैयार किया। ‘हमें जाना होगा।’ बॉब ने अपने आसपास मौजूद लोगों से चुप रहने का आग्रह किया, यह सोचते हुए कि आगे और कौन-कौन सी बाधाएँ आने वाली हैं। उदाहरण के लिए, वे भारतीय सुरक्षा बलों को अपनी उपस्थिति का संकेत कैसे देंगे ताकि पुलिस की गोलीबारी से बचा जा सके? कुड़ियादी पुलिस के लगातार संपर्क में था, लेकिन क्या संदेश उन तक पहुँचा था? बॉब को घबराहट हो रही थी। ‘हमें हाथ ऊपर उठाकर खुले में निकलना होगा, और फिर सरपट भागना होगा।’
सभी लोग बिना किसी घटना के 50 मीटर लंबे गलियारे को पार कर गए और कुछ और सीढ़ियाँ उतरते हुए एक आग से बचाव वाले दरवाजे के सामने आ पहुँचे। क्या यही वह दरवाजा था? ऐसा लग रहा था कि अभी बहुत जल्दी है। भीड़ को रोकने के लिए उन्हें दरवाजा खोलना ही पड़ा। लेकिन फिर किस दिशा में भागें? बॉब को अब अपनी दिशा का ठीक-ठीक पता नहीं था। रवि कतार में आगे बढ़ा और आखिरी झटके से बाहर निकलने का दरवाजा खोला तो देखा कि दो सेना के जवान (कांस्टेबल) फुटपाथ पर बैठे सिगरेट पी रहे थे और उनकी राइफलें हवा में उठी हुई थीं। जब उन्होंने हैरानी से ऊपर देखा तो बॉब का चेहरा बिगड़ गया। वे टावर के पीछे, बॉम्बे यॉट क्लब के सामने, बाहर निकल चुके थे।
‘भागो!’ उसने चिल्लाते हुए पहले मेहमानों को छोड़ दिया। एक, दो, तीन, चार, वे रात की हवा में तेज़ी से भागे: ‘रुको मत। गेटवे की ओर बढ़ो।’ आखिरकार, वे सभी बाहर आ गए। काफिले का पीछा किए जाने के डर से किसी ने आग से बचाव वाले दरवाजे को मजबूती से बंद कर दिया, जिससे लकड़ी का एक टुकड़ा हैंडल में फंस गया। अब कोई भी इतनी जल्दी उससे पार नहीं जा सकता था।
रवि भाग रहा था, रमा पारेख अभी भी उसकी पीठ पर लटकी हुई थी। होटल के सामने, AK-47 की मारक क्षमता के भीतर, बेखौफ भीड़ देखकर वह दंग रह गया।

पुलिसकर्मी सड़क पर लेटे हुए थे और बैरिकेड के पीछे छिपे हुए थे, जबकि सैनिक ऐसे निष्क्रिय बैठे थे मानो मुख्य कार्रवाई समाप्त हो चुकी हो। कमान अधिकारी और घेराबंदी कहाँ थे? टावर की शांति और सुव्यवस्थित उतरने के बाद, अब वह अराजकता के बीच फँस गया था। एक कैमरा क्रू साक्षात्कार लेने की कोशिश में उसके पास दौड़ पड़ा।
रवि धूल उड़ाते पहले राउंड की गड़गड़ाहट को ध्यान से सुन रहा था, युद्ध के मैदान में उसका सहज ज्ञान उसे भीड़ के विपरीत आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था, जब तक कि वह रमा को मार गिराने के लिए पर्याप्त दूरी पर नहीं पहुंच गया। उसने सोचा कि क्या उसने रमा की पसलियां तोड़ दी हैं, लेकिन रमा ने उसे हार्दिक धन्यवाद दिया। 'रवि।' उसने अपना नाम पुकारा जाते सुना: 'रवि। रवि।' ये कुछ अन्य रिश्तेदार थे, जो घंटों से बाहर इंतजार कर रहे थे। वे उसके पास पहुंचे, उसे गले लगाया, उसे जल्दी से एक कार की ओर ले गए, और इस भयानक खबर की पुष्टि की कि उसके दो चचेरे भाई और एक चाचा ट्राइडेंट - ओबेरॉय के टिफिन रेस्टोरेंट में मारे गए थे।
रवि के कुछ समझ पाने से पहले ही, उसने देखा कि पत्रकारों का एक बड़ा समूह, जो अपने पैड और कैमरे लहरा रहा था, बॉब को अपने साथ ले जा रहा है। उसे बस एक आखिरी काम करना था। 'बॉब!' उसने बॉब को पुकारा और हाथ हिलाया। दोनों ने अविश्वास से एक-दूसरे को देखा और विजयी निकासी पर खुशी और परिधि पर अभी भी मौजूद संभावित आपदा और सुनील कुडियादी के लिए संभावित खतरों को लेकर आशंका का मिलाजुला भाव महसूस किया, जो पहले ही अंदर जा चुके थे। 'देखो, मैं तुम्हें ऊपर नहीं बता सकता था,' रवि ने कहा। 'मैं एक अमेरिकी मरीन पायलट हूँ।' उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। 'मैंने इराक में उड़ानें भरी हैं। बस इतना जान लो, मुझे अपने परिवार और खुद की रक्षा करनी थी, और यही एकमात्र कारण है...' बॉब ने उसे चुप करा दिया। उसे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। रवि ने महसूस किया कि उसे कार के अंदर खींच लिया गया है, एक यात्री दिशा-निर्देश चिल्ला रहा था: टाइटन टावर्स, ब्रीच कैंडी में। वह बॉब को हाथ हिलाते हुए देख सकता था।
बॉब मुस्कुराया। पूरी रात वह यही समझने की कोशिश कर रहा था कि रवि किस तरह का सिपाही है। उसने मन ही मन कहा, 'पायलट,' और अपने साथियों को लेकर ब्राबोर्न स्टेडियम की ओर चल पड़ा, जहाँ क्रिकेट टूर्नामेंट होना था। अब

[illegible]

8

मृत्यु की छाया

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, सुबह 3.40 बजे।

जैसे ही ताज होटल के कर्मचारियों को टावर से सफलतापूर्वक लोगों को निकाले जाने की खबर मिली, होटल के बाहर खुशी की लहर दौड़ गई। अब तक उनके आसपास की हर चीज़ उन्हें याद दिला रही थी कि वे होटल पर अपना नियंत्रण खो चुके हैं। हालांकि टाटा समूह का आपातकालीन प्रशासनिक केंद्र गेटवे होटल से कफ़ परेड स्थित प्रेसिडेंट होटल के सुरक्षित परिसर में स्थानांतरित हो गया था, करमबीर कांग भी बाहर ही रहे, सब कुछ देखते, सूंघते और सुनते रहे। बाज़ार की खबर ने उन्हें और भी उत्साहित किया, और अपोलो बंदरगाह पर इधर-उधर घूमते हुए उन्हें कई और अच्छी खबरें मिलीं।
दमकलकर्मी अभी-अभी महल के दक्षिणी भाग से सटी वृक्षों से घिरी गली, बेस्ट मार्ग में दाखिल हुए थे और उन्होंने छठी मंजिल के शहर वाले हिस्से से कुछ मेहमानों को सुरक्षित बाहर निकाला। सभी की मौत नहीं हुई थी। खाद्य समीक्षक सबीना सैकिया के बारे में भी खबर थी, जो समुद्र की ओर वाले हिस्से में नीति, उदय और समर के फंसे होने की जगह से कुछ ही फीट की दूरी पर ठहरी हुई थीं। बताया जा रहा था कि वह संदेश भेज रही थीं या फोन कर रही थीं, जिससे संकेत मिलता है कि वह अभी भी जीवित हैं।
सबीना की सहेली अंबरीन खान को होटल के उत्तर में, पेडर रोड के पास एक दोस्त के अपार्टमेंट में शरण लेने के दौरान कई संदेश मिले। पहले तो वह अविश्वास से उन्हें देखती रही। उसने नंबर और भेजने वाले की आईडी चेक की। उसे लगा कि उसे भ्रम हो रहा है, लेकिन ये संदेश निश्चित रूप से सबीना के फोन से ही आए थे। 'अविश्वसनीय!' अंबरीन ने जलते हुए ताजमहल की टीवी तस्वीरें देखीं और एक

संदेश दोबारा पढ़ा। उसकी सहेली ने लिखा था, 'तुमने मुझे एक सपने के बारे में बताया था। मैं शहर की सबसे लोकप्रिय लड़की हूँ। हम समुद्र किनारे हैं और मैं चारपाई पर लेटी हूँ। मेरे एक तरफ शांतनु है और दूसरी तरफ तुम।' अंबरीन कभी-कभी खुद को उनकी शादी में अदृश्य साथी, बच्चों तक संदेश पहुँचाने वाली एक माध्यम, एक विचलित माँ के संदेश पहुँचाने वाली के रूप में महसूस करती थी। 'शांतनु सबको एक-एक करके मिलने के लिए कह रहा है।' एक लंबा विराम आया और फिर एक और संदेश आया। 'मेरे पेट में दर्द हो रहा है, और मेरा मोबाइल फोन ही एकमात्र रोशनी है, लेकिन मैं उस सपने के बारे में सोच रही हूँ।' उसमें तुमने चारपाई पर करवट बदलकर मेरी ओर मुँह किया और कहा: “तुम मर जाओगे।”
अंबरीन चौंक गई। क्या सच में ऐसा हो रहा था?

लॉबी में सुनील कुडियादी अपने ब्लैक सूट्स के साथियों के साथ फिर से इकट्ठा हुए। निराशाजनक खबर आई थी कि राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) के बड़े अधिकारी अभी-अभी दिल्ली से निकले हैं, जिसका मतलब था कि होटल पहुंचने में उन्हें कई घंटे और लगेंगे। बाज़ार में मिली सफलता से उत्साहित ब्लैक सूट्स ने एक बार फिर अकेले ही आगे बढ़ने का फैसला किया और दूसरी बार निकासी का प्रयास किया, इस बार मार्कोस की मदद से। कुडियादी ने शेफ ओबेरॉय को संदेश भेजा, 'अगर आप आ सकते हैं तो कृपया लॉबी में आ जाइए। सब ठीक है। बंदूकधारी ऊपरी मंजिलों पर हैं।'
एक ऐसे व्यवसाय के बादशाह, जहाँ सूक्ष्म मापों पर ही सब कुछ निर्भर करता है, जहाँ चाकू और खाने की थाली के बीच की दूरी को आधे मुड़े हुए अंगूठे से मापा जाता है, ओबेरॉय ने ग्राउंड फ्लोर पर उतरते समय सर्विस लिफ्ट में देखा कि उनकी आमतौर पर बेदाग रहने वाली शेफ की वर्दी खून से सनी हुई थी। उन्होंने दागों को रगड़ा, और पिछली रात 9 बजे के बाद पहली बार रसोई से बाहर निकलने पर जो कुछ भी देखने को मिले, उस डर को दबाने की कोशिश की।
एक गहरी सांस लेकर, उसने लिफ्ट का गेट पीछे सरकाया और एक सर्विस डोर से बाहर निकला, जो बंद होने पर संगमरमर के पैनल जैसा दिखता था। यह सुनिश्चित करने के बाद कि गलियारा खाली है, वह अंधेरी लॉबी में दबे पांव निकला। हार्बर बार के प्रवेश द्वार पर खून के निशान देखकर उसे जली हुई लकड़ी की गंध आई। शामियाना के बगल में स्थित पुलिस कमांड पोस्ट पर पहुँचते ही

करमबीर कांग और कुडियादी उसका इंतजार कर रहे थे। हाथ मिलाते ही करमबीर ने धीरे से बताया कि शायद उसका परिवार मर चुका है। ओबेरॉय स्तब्ध रह गया। जनरल मैनेजर ने फोन और मैसेज के जरिए हुई लगातार बातचीत में कुछ नहीं कहा था, इसलिए उसने मान लिया था कि नीति और लड़के सुरक्षित हैं। वह करमबीर के दर्द का सिर्फ अंदाजा लगा सकता था, लेकिन इस पर सोचने का समय नहीं था। उन्हें एक योजना बनानी थी। पुलिस के संयुक्त आयुक्त और एक मार्कोस कमांडर के साथ मिलकर, उन्होंने अपने विकल्पों पर विचार किया।
मार्कोस टावर को खाली कराने और उसे पूरी तरह से बंद करने का काम एनएसजी को सौंपना चाहता था। यह एक जटिल ऑपरेशन था जिसके लिए उन्हें प्रशिक्षित नहीं किया गया था और उनके पास गलत उपकरण और अपर्याप्त सैनिक थे। तो फिर अपनी ऊर्जा कहाँ केंद्रित करें? भूतल पर स्थित ज़ोडियाक और स्टारबोर्ड बार में फंसे मेहमान फिलहाल सुरक्षित थे, क्योंकि उन्होंने खुद को अंदर बंद कर लिया था। पहली मंजिल पर फंक्शन रूम में बैंक्वेटिंग मैनेजर मल्लिका जगद के साथ फंसे लोगों की स्थिति अधिक गंभीर थी, लेकिन वह बता रही थीं कि उनके गलियारे में अभी भी ग्रेनेड विस्फोटों की आवाजें गूंज रही थीं। एक 23 वर्षीय युवती इन अनुभवी अधिकारियों को कैसे संभाल रही थी? उन्होंने रूखेपन से जवाब दिया, 'शराब। मेरे पास एक बेहतरीन सिंगल माल्ट व्हिस्की है जो उन्हें प्रेरित करने में मदद कर रही है।'
अब बचा था चैंबर्स का कमरा। दुनिया से छिपा हुआ, लेकिन सर्विस कॉरिडोर से आसानी से पहुँचा जा सकने वाला, होटल का प्राइवेट क्लब निकासी के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प था, खासकर इसलिए कि वहाँ फंसे लोगों में प्रभावशाली राजनेता और कई बड़े उद्योगपति शामिल थे। 'ठीक है,' करमबीर ने कहा, 'चलो चैंबर्स चलते हैं।' सहायता की तैयारी करते हुए, जेसी ने पुलिस कंट्रोल रूम को फोन किया और बैकअप की मांग की। कमिश्नर गफूर, जो अभी भी ट्राइडेंट होटल के बाहर अपनी कार में तैनात थे, ने साफ इनकार कर दिया। 'आपके पास मार्कोस है। एनएसजी के आने तक रुकिए।' केवल कुडियादी के ब्लैक सूट्स ही मैदान में उतरे - अपने रेडियो से लैस और मरीन कमांडो की एक छोटी इकाई के समर्थन से। शेफ ओबेरॉय हार्बर बार के बगल में स्थित अदृश्य संगमरमर के दरवाजे से वापस लौटे और उसे नैपकिन से बांधकर बंद कर दिया - टूटा हुआ ताला उन कई चीजों में से एक था जिन्हें ठीक करने की कभी कोई कोशिश नहीं की गई थी। पुरानी सर्विस लिफ्ट से बाहर निकलकर वे अपने क्षेत्र में आ गए, जहाँ अभी भी कास्टिक सोडा

और मीठे फलों की मनमोहक खुशबू फैली हुई थी। उन्हें चिंता थी कि इतने सारे लोगों को मुख्य लॉबी से बाहर नहीं निकाला जा सकता क्योंकि बंदूकधारी अभी भी समुद्र की ओर मुख वाले महल के गलियारों में घूम रहे थे। वे और उनके कर्मचारी चैंबर्स समूह को होटल के बैकस्टेज क्षेत्रों से होते हुए मैरी वेदर रोड पर स्थित टाइम ऑफिस से बाहर निकालेंगे। अब उन्हें बस किचन ब्रिगेड से स्वयंसेवकों की जरूरत थी।

मेरी वेदर रोड स्थित सी लाउंज के हेड वेटर, फॉस्टीन मार्टिस, होटल में वापस जाने की पूरी कोशिश कर रहे थे। टावर से लोगों को सफलतापूर्वक निकाले जाने की खबर मिलते ही उन्होंने हिंदुस्तान टाइम्स के एक रिपोर्टर से पूछा, 'कौन-कौन बाहर है और कहां?' रिपोर्टर ने कहा, 'टावर से अब तक करीब डेढ़ सौ लोग बाहर आ चुके हैं।' लेकिन पैलेस से कोई नहीं आया। फॉस्टीन निराश होकर ताज होटल के स्टाफ एंट्रेंस की ओर भागे। पत्रकार ने उनके पीछे से चिल्लाकर कहा, 'वे कुछ नया प्लान कर रहे हैं।' लेकिन उन्होंने नहीं सुना।
एक काले सूट वाले सिपाही ने फाउस्टीन को अंदर घुसने की कोशिश करते हुए पकड़ लिया। 'तुम गलत रास्ते पर जा रहे हो,' उसने उसे धीरे से घुमाते हुए कहा। यह चौथी बार था जब उन्होंने उसे वापस भेज दिया था और हर बार उसने वही बेबस कहानी सुनाई थी: 'मेरी बेटी दूसरी मंजिल पर अंदर है।' काले सूट वाले सिपाही ने उससे धैर्य रखने को कहा: 'कृपया, महोदय। हम सभी तक पहुँच जाएँगे।' लेकिन फाउस्टीन इंतज़ार नहीं कर रहा था: 'तब तक तो वह मर चुकी होगी,' वह चिल्लाया। 'कमरा पहले ही धुएँ से भर चुका है। दरवाज़ा भी गायब है।' वह रो रहा था और दृढ़ निश्चयी था।
सुबह 4 बजे से कुछ ही देर पहले जब पुलिस का एक छोटा दस्ता आया, तो फॉस्टीन भी उनके साथ चल पड़ा। जैसे ही वे कांच के सुरक्षा बॉक्स के पास पहुँचे, वह एक पोर्टर जितनी चौड़ी सीढ़ियों से तेज़ी से नीचे उतर गया। उसने अपना काम कर दिखाया था। अब उसका इरादा तहखानों, लॉकर रूम और तिजोरियों की जानकारी का फायदा उठाकर पहली मंज़िल पर बने रसोईघर तक पहुँचने का था। वहाँ से वह सर्विस लिफ्ट का इस्तेमाल करके डेटा सेंटर जा सकता था। कहीं आस-पास ही उसकी बेटी उसका इंतज़ार कर रही थी।
सुबह 4 बजे – चैंबर्स

चैम्बर्स लाइब्रेरी के अंदर, न्यूयॉर्क के फाइनेंसर माइक पोलैक बेचैन थे। जैसे-जैसे वह, अंजली और उनके साथ खाना खा रहे लोग अंधेरे में रहते गए, उनका डर बढ़ता गया। पोलैक ताज के कर्मचारियों की सराहना करते थे कि उन्होंने उन्हें यहाँ तक पहुँचाया, खासकर शेफ ओबेरॉय के अटूट सकारात्मक सहायक, विजय बंजा की, जो एक हंसमुख व्यक्ति थे और जिनके बाल बिखरे हुए थे और जिन्होंने उन्हें वासाबी से निकलने में मदद की थी। लेकिन माइक को यह स्पष्ट था कि चैम्बर्स होटल सिर्फ़ एक अस्थायी राहत थी। वह मुंबई के प्रशंसक थे, एक नियमित पर्यटक। लेकिन सुरक्षा बलों को अब सक्रिय होना ही था।
उसके चारों ओर अंधेरे में मोबाइल फोन की स्क्रीन चमक रही थीं। कुछ बातचीतें उसे ऐसी लग रही थीं मानो उसके दांत तोड़े जा रहे हों, जिनमें एक भारतीय सांसद की बातचीत भी शामिल थी, जो मानो लाइव टीवी इंटरव्यू दे रहा हो। 'हम होटल के पहले तल पर स्थित एक विशेष हिस्से में हैं जिसे चैंबर्स कहते हैं। यहां 200 से अधिक महत्वपूर्ण लोग मौजूद हैं: कारोबारी नेता और विदेशी।'
पोलैक ने अंजलि के कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'क्या तुम यकीन कर सकती हो? यह बेवकूफ सांसद सीएनएन या किसी और चैनल को हमारी सटीक लोकेशन बता रहा है।' अमेरिका में उसके दोस्तों ने मैसेज करके बताया कि भारतीय सांसद का इंटरव्यू पहले ही रिपोर्ट किया जा रहा है। घेराबंदी अब कहीं ज़्यादा घातक रूप ले चुकी थी। उसके सारे डर चरम पर पहुँच गए और हमेशा की तरह जल्दबाज़ी में उसने अंजलि के चचेरे भाई को फोन किया, जो उनके दो बेटों का कानूनी अभिभावक था। 'हालात बिगड़ते जा रहे हैं। अगर हम यहाँ से नहीं निकल पाए तो कृपया उनका ख्याल रखना।'
अंजलि ने शेफ बंजा को एक तरफ खींच लिया। "आपकी देखभाल करना मेरा काम है। क्या कोई योजना है?" "चिंता मत करो," उन्होंने उसका हाथ पकड़ते हुए उसे आश्वस्त किया। "मैं मर जाऊंगा लेकिन तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगा।"
अगर नरक दूसरे लोग हैं, तो पत्रकार भीष्म मनसुखानी भी उसकी गहराई में उतर रहे थे। माइक और अंजली के कमरे के गलियारे में लैवेंडर रूम में बैठे, वे एक तीखी बहस देख रहे थे: एक मेहमान अपने मोबाइल फोन के लिए सही चार्जर न देने पर वेटर को कोस रहा था। भीष्म ने सोचा, कितना बदतमीज़ है! तभी उन्होंने उस गुस्से में भरे आदमी को गुंजन नारंग के रूप में पहचाना, जिसके साथ वे और नवविवाहित अमित थडानी स्कूल में पढ़े थे। तब भी गुंजन एक दबंग था। खास

चैंबर्स में पहुंचने की चहल-पहल शांत होने के बाद, भीष्म घबराने लगे थे। वे लगभग छह घंटे से ताज होटल में थे, और उन्हें कुछ मेहमानों की निजी और बेतुकी बातें सुननी पड़ रही थीं, जो उच्च अधिकारियों के अपने संपर्कों की आलोचना कर रहे थे। एक आदमी को भारतीय वायु सेना से एक हेलीकॉप्टर मंगवाने की कोशिश करते सुना गया, जिसका सुझाव था कि वह चैंबर्स की छत पर मंडरा सकता है।
भीष्म खुद को यही समझाते रहे कि एकमात्र अप्रत्याशित वरदान यही था कि वे एक और भव्य भारतीय शादी से बच गए। केवल थडानी ही उन्हें ऐसी किसी शादी में आने के लिए मना सकते थे, बचपन के एक दोस्त के अनुरोध ने उन्हें अपने उस निजी वचन को तोड़ने पर मजबूर कर दिया था कि वे कभी भी उन समारोहों, दावतों और पार्टियों में शामिल नहीं होंगे जो आजकल ज्यादातर आलीशान शादियों में देखने को मिलती हैं। उन्होंने अपने ब्लैकबेरी पर अमित को फोन किया। घंटों से अमित या वर्षा की कोई खबर नहीं थी। भीष्म ने प्रेस क्लब में अपने दोस्त से पूछा: 'क्या यह सच है कि वे कमरे-कमरे जाकर गोलीबारी कर रहे हैं?' एक अन्य मित्र, जो टाइम्स ऑफ इंडिया में लेखक हैं, ने बेहतर खबर भेजी: 'दमकलकर्मी आग बुझा रहे हैं।' शायद अमित और वर्षा आखिरकार सुरक्षित थे। तभी एक अन्य पत्रकार मित्र ने एक भारतीय सैटेलाइट चैनल के लिए लाइव इंटरव्यू करने के लिए फोन किया। भीष्म ने घोषणा की, 'हम चैंबर्स में हैं,' लेकिन बाद में उन्हें पछतावा हुआ। आखिर उन्होंने अपनी लोकेशन बताकर क्या सोच लिया था? उनकी सोच अचानक एक सनसनीखेज खबर से टूट गई: सौक को बिना किसी हताहत के सुरक्षित निकाल लिया गया था। उन्हें आशा की एक किरण दिखाई दी और उन्होंने एक बार फिर दोस्तों को संदेश भेजना शुरू कर दिया। 'सुबह 4:10 बजे: निकासी का इंतजार।'
चैम्बर्स लाइब्रेरी में, जहाँ माइक के साथी बैठे थे, वहाँ नौका मालिक एंड्रियास लिवेरस ने हलचल देखी और सिर हिलाया। पिछले कुछ घंटों से वह अपने सोफे पर बैठे हुए थे और एलिसिया पर मौजूद निक एडमिस्टन से लगातार संपर्क में थे, उन्हें आश्वस्त कर रहे थे कि सब कुछ नियंत्रण में है। अपने बगल में फर्श पर बैठे अपने भरोसेमंद सहायक से उन्होंने गंभीरता से कहा, 'रेमेश, हम यहीं रुकेंगे। भागना मूर्खता होगी।' वे हँसे। 'ये लोग तो खुद को भी नहीं संभाल सकते।'

ऐसा नहीं था कि एंड्रियास क्रूर था। रमेश सबको बताता था कि उसे इससे बेहतर बॉस नहीं मिल सकता था। लेकिन अजनबियों को उसका सीधापन अप्रिय लगता था। वह हमेशा से जानता था कि उसे क्या चाहिए और दूसरों के असमंजस का फायदा उठाता था। आजकल, अगर आप शुरुआत में सीधे-सादे नहीं होते, तो एंड्रियास आपको बीच में ही टोक देता था। यह उसकी मेहनत का नतीजा था, जिसने उसने शून्य से अपना भाग्य बनाया था, एक-एक केक बनाकर, खानपान के कारोबार से कमाए लाखों रुपये और नौका किराए पर देने के धंधे से कमाए गए पैसों से। सच कहें तो, एंड्रियास इतना जीवंत था कि दूसरों के गलत फैसलों और बेकार विकल्पों से वह दब नहीं सकता था।
अब उसके दिमाग में सशस्त्र सुरक्षा का ख्याल था। लंदन में अपने चार चिंतित बच्चों से फोन पर बात करते हुए उसने रमेश से कहा, 'हम बंदूकधारियों का इंतजार करेंगे।' फोन के बीच में रमेश ने चेतावनी दी, 'श्रीमान एल, वे विदेशियों को ले जाने की योजना बना रहे हैं। आप उन्हें बता दीजिए कि आप सीरियाई हैं।' साइप्रस के रंग-रूप के कारण एंड्रियास बच सकता था। लेकिन उसका ध्यान कहीं और था। उसके मन में एक विचार आया था। वह अपनी कहानी सार्वजनिक करेगा, जिससे ब्रिटिश सरकार भारतीयों पर दबाव डालेगी और एक त्वरित बचाव अभियान शुरू होगा। शायद एसएएस को भी तैनात किया जाएगा। उसने सोचा कि इस लड़ाई को शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका बीबीसी को फोन करना होगा।
लंदन के न्यूज़ रूम में, जहाँ अभी-अभी आधी रात हुई थी, अपनी परेशानी बताने के कुछ ही मिनटों के भीतर, उनका संपर्क रिपोर्टर मैट फ्री से हो गया, जो बीबीसी न्यूज़ 24 पर लाइव इंटरव्यू ले रहे थे। 'मैं ताज महल होटल में करी खाने आया था, जो यहाँ का सबसे अच्छा रेस्टोरेंट है,' एंड्रियास ने बताया, जबकि बीबीसी ने ताज महल से सामान की ट्रॉलियों पर मृत पर्यटकों को बाहर ले जाते हुए फुटेज दिखाया, जिसमें पूल के पास गोली मारे गए कनाडाई दंपति भी शामिल थे।
घेराबंदी में घिरे होटल की खबर इस समय दुनिया भर में छाई हुई थी, और फ्रेई को अंदर मौजूद एक प्रत्यक्षदर्शी पाकर बेहद खुशी हुई। उन्होंने पूछा, 'फिर क्या हुआ?' एंड्रियास ने आगे बताया: 'जैसे ही हम मेज पर बैठे, हमें बाहर गलियारों में मशीनगनों की आवाज़ सुनाई दी। हम मेज के नीचे छिप गए। वेटरों ने सारी बत्तियाँ बंद कर दीं। मशीनगनें चलती रहीं। फिर वे हमें रसोई में

ले गए और वहाँ से तहखाने में, फिर ऊपर एक बैठक कक्ष में। यहाँ दो-तीन बैठक कक्ष हैं और यहाँ एक हज़ार से ज़्यादा लोग होंगे।' उन्होंने जो संख्या मनगढ़ंत बताई, वह ध्यान आकर्षित करने के लिए काफी बड़ी थी, जो उनकी विशिष्ट बहादुरी भरी प्रस्तुति थी।
फ्रेई ने तथ्यों को स्पष्ट करने की कोशिश की: 'एंड्रियास, आप कहाँ हैं?' साक्षात्कारकर्ता थोड़ी देर रुका, चिड़चिड़ाते हुए बोला: 'मैं होटल के एक सैलून में हूँ। हम यहाँ बंद हैं। कोई हमें कुछ नहीं बता रहा है। लोग डरे हुए हैं। आखिरी बम पैंतालीस मिनट पहले फटा। हर बार बम फटने पर होटल हिल जाता है। हम एक-दूसरे को देख रहे हैं और हर कोई डर के मारे उछल पड़ता है।' बुलेटिन समाप्त होते-होते, फ्रेई ने बीच में कहा: 'हमें इसे यहीं छोड़ना होगा। एंड्रियास, शुभकामनाएँ।' बीबीसी ने प्रसारण समाप्त किया। क्या उसने व्हाइटहॉल को चुनौती देने के लिए काफी कुछ किया था?
कुछ ही देर बाद, उन्हें चैंबर्स के प्रवेश द्वार से शोर-शराबा, चीख-पुकार और धक्का-मुक्की की आवाज़ें सुनाई दीं। लिवेरस ने अपनी आँखें बंद कर लीं और सोफे पर पीछे की ओर झुककर बैठ गया। जो भी हो रहा था, वह उसमें शामिल नहीं होना चाहता था। भीष्म ने एक दोस्त को संदेश भेजा: 'हॉल में लोग हैं।' निकासी शुरू हो रही थी। वह जोखिम उठाने को तैयार था। उसने अपनी माँ और उनकी सहेलियों को जगाया।
ताज होटल का एक सुरक्षा अधिकारी उनके बीच से गुज़रा और निर्देश देने लगा। ‘अपने फ़ोन बंद कर दो। अपनी जेबों से खुले पैसे निकाल लो।’ निकासी तुरंत शुरू हो गई थी। ‘हम आप सबको बाहर निकालेंगे। कृपया तैयार रहें।’ भीष्म और उसकी माँ एक अंधेरे गलियारे से होते हुए रसोई के निकास द्वार की ओर बढ़े। ‘एक सीधी लाइन बना लो।’ लंबे समय तक निष्क्रिय रहने के बाद अब वह उत्सुक तो था, लेकिन थका हुआ भी। आगे उसे तेज़ आवाज़ें और लोगों के धक्का-मुक्की करने की आवाज़ सुनाई दी। ‘क्या तुम उन विदेशियों को देख सकते हो जो लाइन तोड़ रहे हैं?’ किसी ने चिल्लाकर कहा, क्योंकि यूरोपियनों का एक समूह ज़बरदस्ती आगे बढ़ रहा था। भीष्म ने स्कूल के बदमाश गुंजन को फिर से देखा, जो अब अपने परिवार के साथ था।
ताज ब्लैक सूट्स के कर्मचारियों ने माहौल को सहज और सौहार्दपूर्ण बनाए रखने की कोशिश करते हुए कहा, 'सब लोग धैर्य रखें। आप सब सुरक्षित बाहर निकल जाएंगे।' लेकिन टावर की तुलना में यहाँ का माहौल ज़्यादा गंभीर था, जहाँ

भोजन करने वालों ने अपने-अपने नेता और सुरक्षाकर्मी चुन रखे थे। 'अगर आप लाइन बनाकर चलें तो सब सुरक्षित बाहर निकल जाएंगे। अपने फ़ोन बंद कर दें। बिल्कुल शांत रहें।' सूक की तुलना में यहाँ सौ ज़्यादा मेहमान थे, और वे सब अपने-अपने बाहर निकलने की योजना बना रहे थे: फ़ोन कर रहे थे, मैसेज भेज रहे थे और ट्वीट कर रहे थे।
सामने की ओर, खुले दरवाजे से, भीष्म मुश्किल से शेफ हेमंत ओबेरॉय को देख पा रहे थे, जिन्होंने मौन धारण करने के लिए अपने हाथ ऊपर उठाए हुए थे। उनके बगल में शेफ बंजा थे, जिन्होंने सभी का मनोबल बनाए रखा था। उनके सामने सफेद जैकेट और भूरे रंग के रूमाल पहने हुए शेफ डी पार्टी खड़े थे, जो रसोई के सबसे वरिष्ठ और कुशल अधिकारी थे, और उनके सहायक शेफ भी मौजूद थे। नीली, धूसर और भूरी वर्दी पहने प्रशिक्षु, बर्तन धोने वाले और मार्मिटन भी उपस्थित थे, जो गहरे कैसरोल बर्तनों को साफ करने वाले युवा रसोई के लड़के थे।
शेफ ओबेरॉय ने अपनी रसोई टीम को संगठित करते हुए समझाया कि कुछ ही मिनटों में वे मेहमानों को रसोई से होते हुए, उनके केबिन के पास वाली सीढ़ियों से नीचे ले जाकर टाइम ऑफिस के स्टाफ निकास द्वार से बाहर निकालना शुरू कर देंगे। उन्हें स्वयंसेवकों की आवश्यकता थी जो किसी भी अप्रत्याशित आपदा की स्थिति में बाहर निकल रहे मेहमानों के चारों ओर मानव श्रृंखला बना सकें।
गोल्डन ड्रैगन के वरिष्ठ सू-शेफ नितिन मिनोचा, जिनकी मूंछें करीने से कटी हुई थीं और ऊपरी जेब में हमेशा चॉपस्टिक रहती थीं, आगे बढ़े। उन्होंने आज रात पहले ही दिखा दिया था कि वे शांत रह सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने रेस्टोरेंट को बंद कर दिया था और मेहमानों को छुपा लिया था, फिर उन्हें वासाबी ले जाकर चैंबर्स में सुरक्षित पहुँचा दिया था। शेफ बंजा ने मज़ाक में कहा कि आज रात मिनोचा 'सफेद वर्दी में सिपाही' बनेंगे, जिसमें उनके सू- शेफ हेमंत तालीम ने भी उनका साथ दिया, जिन्होंने स्वेच्छा से मदद की। जोशीले तालीम, जो अमित पेशावे के दोस्त और पूर्व रूममेट थे, 2002 से ताज में काम कर रहे थे, लेकिन अभी भी इतने युवा थे कि रसोई में उन्हें 'चिकन' के नाम से जाना जाता था। वॉक स्टेशन पर काम करने के कारण उनकी बांहें काफी मजबूत हो गई थीं और वे होटल के सबसे बेहतरीन आर्म रेसलर थे।

ओबेरॉय ने तालीम के कंधों पर थपथपाया, तभी वासाबी में मुख्य वेटर थॉमस वर्गीस, जो एक सीरियाई ईसाई थे, ने अपना हाथ उठाया। रात्रि शिफ्ट के प्रभारी वर्गीस रसोई में सबके चहेते थे क्योंकि वे कर्मचारी संघ में ताज के कर्मचारियों का बचाव करते थे और वे लगभग अकेले ही अपने रेस्तरां का प्रबंधन कर सकते थे: ग्यारह टेपान्यकी सीटें, नौ सुशी स्थान और बीस अलग-अलग टेबल।
शेफ ओबेरॉय ने शामियाना के तेज-तर्रार सहायक शेफ बोरिस रेगो को आवाज़ दी। अमित पेशवे के 'अथक रेगो' शाम को कॉफी शॉप पर गोलीबारी के दौरान बच निकले थे और रसोई से होते हुए पहली मंजिल के सर्विस एरिया में भाग गए थे। पिछले तीन घंटों से वे चैंबर्स में मेहमानों को इकट्ठा करने में मदद कर रहे थे। अब वे आगे आए, उनके साथ कैज़ाद कामदीन भी थे, जो 6 फुट 4 इंच लंबे पारसी थे और भोज कक्षों में काम करते थे और जिन्हें सर्वत्र भाई कैज़ के नाम से जाना जाता था, और ज़हीन मतीन, जो ज़ोडियाक ग्रिल में काम करने वाले फुर्तीले और गुस्सैल राजस्थानी थे।
जैसे ही रसोइयों ने सुरक्षा घेरा बनाया, पहले तीस मेहमानों को अंधेरे रसोईघर में बुलाया गया, जिनमें भारतीय राजनेता सबसे आगे खड़े थे। सभी को शांत रहने को कहा गया। 'दूसरी तरफ आपके लिए बसें इंतज़ार कर रही हैं,' रसोइया बंजा ने आग्रह किया। आतंकवाद-रोधी दस्ता भी आ गया था, लेकिन केवल सांसदों को सुरक्षा देने के लिए। 'वे आपको राष्ट्रपति के पास ले जाएंगे, जहाँ होटल के महाप्रबंधक इंतज़ार कर रहे हैं।' सभी ने सहमति में सिर हिलाया, लेकिन लगभग तुरंत ही कतार में हलचल मच गई। एक रसोई कर्मचारी दौड़ता हुआ आया। चैंबर्स के अंदर से चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। धुंधले गलियारे में धक्का-मुक्की के कारण मेहमानों का आना-जाना रुक गया और गुस्से भरे शब्द सुनाई दे रहे थे। ओबेरॉय आगे बढ़े: 'मैं अंदर जाता हूँ।' कार्यकारी रसोइया स्थिति को संभालेंगे। 'सभी को शांत रखें। साथ रहें। चलते रहें,' उन्होंने बंजा, मिनोचा, तालीम, वर्गीस, कामदीन और मतीन को पीछे मुड़कर चिल्लाकर कहा।

आह, आह, आह। वासाबी कॉरिडोर और सर्विस लिफ्ट की ओर पीठ करके, शेफ मिनोचा ओबेरॉय के केबिन के बगल में खड़े थे, काइज़ाद कामदीन और हेमंत तालीम के साथ हाथ मिलाकर मेहमानों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे, तभी उन्हें

राजमिस्त्री द्वारा टाइलें तोड़ने जैसी आवाज़ सुनाई दी। 'क्या?' झुंझलाकर उन्होंने दाईं ओर शेफ बंजा को देखा, जो उसी तरह हैरान दिख रहे थे, उनके सफेद कपड़ों पर अचानक लालिमा छा गई, इससे पहले कि उनके घुटने जवाब दे गए और वे ज़मीन पर गिर पड़े। गिरते ही मिनोचा की नाक में खून की हल्की फुहार भर गई, उन्हें आखिरकार एहसास हुआ कि बंदूकधारी रसोई में घुस आए थे और उनकी पीठ पर गोलियां चला रहे थे।
आह, आह, आह। ब्रिगेड बिखर गई, मानव सुरंग ध्वस्त हो गई, कर्मचारी और मेहमान अपनी जान बचाने के लिए भागने लगे।
आपातकालीन बत्तियाँ टिमटिमाती और बुझती रहीं, मिनोचा ने अपने चारों ओर की ज़मीन को खून से लथपथ होते देखा। सहज ही वह गोलीबारी से दूर रेंगने लगा, उसकी नज़रों से टखने और जूते तेज़ी से गुज़रते हुए निकल गए, जबकि खड़े-खड़े मेहमान और कर्मचारी चीखते-चिल्लाते हुए भाग रहे थे। 'टाइम ऑफिस की ओर भागो,' उसने खुद को समझाया, क्योंकि उसे लगा कि कुछ लोग चैंबर्स में पीछे हट रहे हैं, जबकि अन्य लोग नीचे की ओर, घोर अंधेरे तहखानों की ओर भाग रहे हैं। मिनोचा के बाईं ओर, थॉमस वर्गीस एक पुतले की तरह बाहें फैलाए दौड़ रहा था। वह क्या कर रहा था? मिनोचा समझ गया कि वह दूसरों की तरह भाग नहीं रहा था, बल्कि बंदूकधारियों से भटके हुए लोगों को बचा रहा था। जानबूझकर, वर्गीस गोलीबारी की चपेट में आ गया, शूटर के कोण को सीमित करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन लड़खड़ाकर गिर पड़ा। जैसे ही वह ज़मीन पर गिरा, मिनोचा ने देखा कि होटल के प्लांट रूम में काम करने वाला एक इंजीनियर अचानक कहीं से आया और वर्गीस की जगह लेने के लिए आगे बढ़ा। ताज होटल के कई गुप्त कर्मचारियों में से एक, राजन कांबले ने कुछ महत्वपूर्ण सेकंड के लिए बंदूकधारी का रास्ता रोक दिया, इससे पहले कि उसकी पीठ में गोली लग गई।
मिनोचा ने अपनी आँखें बंद करने की कोशिश की। जब उसने आँखें खोलीं तो कुछ भी नहीं बदला था। उसने ओबेरॉय के केबिन की ओर एक नज़र डाली और देखा कि एग्जीक्यूटिव शेफ चैंबर्स से बाहर आ गया था और पंजों के बल खड़ा होकर देख रहा था कि शेफ की प्लीटेड टोपियाँ बर्फ के गड्ढों में सील की तरह आँखों से ओझल हो रही थीं। मिनोचा को लगा जैसे वह बेहोशी की ओर बह रहा हो, खून से सने शेफ के सफेद कपड़ों के सागर में। वह सोचने लगा कि उस सरल योजना का क्या हुआ।

शेफ की कैंटीन के अंदर, जहाँ ओबेरॉय ने शरण ली थी, उस पर लगी चीनी मिट्टी की टाइल पर खून के धब्बे थे, जिस पर उनकी रसोई की प्रार्थना लिखी थी: 'हे प्रभु, मेरी इस छोटी रसोई को आशीर्वाद दें, और जो भी इसमें प्रवेश करें, उन्हें केवल आनंद, शांति और सुख मिले।' इसके पास खड़े होकर शेफ ओबेरॉय का दिमाग चकरा रहा था। आखिर उन्हें कैसे पता चला कि हम सब यहाँ हैं? उन्हें इस बात का डर सता रहा था कि कहीं बंदूकधारी भूतल पर बने संगमरमर के गुप्त दरवाजे से अंदर न घुस आए हों, जिस पर नैपकिन लगाने का जुगाड़ लगा था। तभी स्टेनलेस स्टील की अलमारियों और वॉशस्टैंड पर गोलियों की तेज आवाज से उनकी चिंता दूर हुई।
दरवाजे से बाहर निकलते ही ओबेरॉय ने अपने दाहिनी ओर कुछ ही मीटर की दूरी पर बंजा को देखा, जो 1986 से उनका दोस्त और प्रतिद्वंद्वी था, खून से लथपथ ज़मीन पर पड़ा हुआ था। वह उस तक नहीं पहुँच पा रहा था और उसे घबराहट होने लगी। क्या यही अंत होगा? उसने बंजा को अंजली पोलाक और अन्य लोगों से यह कहते हुए सुना था कि वह उन्हें कष्ट सहते देखने के बजाय मरना पसंद करेगा और उसने प्रार्थना की कि बंजा को केवल मामूली चोट लगी हो। हर समस्या का कोई न कोई समाधान होता है। ताज होटल में यही बात सीखने को मिलती है, जहाँ सेवा व्यवस्था में अक्सर गड़बड़ी हो जाती है, जिससे सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है और फिर किसी की कोहनी के हल्के से धक्के से सब कुछ ठीक हो जाता है।
तभी एक बंदूकधारी ने ओबेरॉय से नज़रें मिलाईं और ताबड़तोड़ गोलियां चला दीं। एग्जीक्यूटिव शेफ घबरा गया और बचने का रास्ता ढूंढते हुए उसने दो असिस्टेंट मैनेजरों को तहखाने की ओर जाते देखा और एक तीसरा व्यक्ति उसे बेतहाशा हाथ हिला रहा था। वह उसका फूड एंड बेवरेज मैनेजर था: 'भागो!' वह सीढ़ियों की ओर इशारा कर रहा था। कर्मचारियों और मेहमानों का एक समूह घबराए हुए ओबेरॉय को अपनी ओर खींच लाया और सभी अंधेरे केबिनों, लॉकरों और स्टोर रूमों के एक भूलभुलैया में उतर गए। उसने खुद को घसीटकर दूर ले जाने की कोशिश की। 'मुझे बंजा जाना है,' वह चिल्लाया। किसी ने उसे रोका: 'सर, कृपया वापस मत जाइए, बहुत देर हो चुकी है।'
ऊपर, शेफ मिनोचा को होश आ गया था। खून के तालाब में पड़ा हुआ, वह जानता था कि उसे उठना होगा या मरना होगा। लेकिन उसने अपने अंगों को आदेश भेजा, फिर भी कुछ नहीं हुआ। उसने नीचे देखा और पाया कि उसका एक हाथ बेजान लटका हुआ था, उसकी बांह की हड्डियाँ चकनाचूर हो चुकी थीं। भावहीन निगाहों से उसने

सोचा कि बांह लगभग कट चुकी है और अब ठीक नहीं हो सकती। वह बस यही सोच रहा था कि वह फिर कभी काम नहीं कर पाएगा, अंधाधुंध बर्खास्तगी के कारण उसे अपना पेशा छोड़ना पड़ा। 'मैं खत्म हो गया,' उसने बुदबुदाया, उसकी आँखों में आँसू भर आए।
आह, आह, आह। बंदूकधारी वापस आ गए थे। अपने सही-सलामत हाथ और पैरों का इस्तेमाल करते हुए, मिनोचा ने खुद को टेढ़े-मेढ़े तरीके से आगे बढ़ाया, स्टेनलेस स्टील के वर्कस्टेशनों के बीच सरकते हुए, उसके पैर खून से सने हुए थे। आगे, उसे शेफ बंजा दिखाई दिए, जो ऊपर की ओर देखते हुए लेटे थे, उनके घुंघराले बाल खून से सने हुए थे। उनके बगल में, अजीबोगरीब कोणों पर पैरों के साथ, ज़हीन मतीन लेटे थे, जो राशि चक्र के प्रतिभाशाली युवा शेफ थे, जिनकी हर कोई उनके लाजवाब कहलुआ मूस के लिए प्रशंसा करता था। वह कांप रहे थे और फटे होंठों से लार के बुलबुले निकाल रहे थे। मतीन ने अभी-अभी अपनी मैट्रिक परीक्षा में असाधारण अंक प्राप्त किए थे, जिससे उन्हें किसी भी सर्वश्रेष्ठ स्नातकोत्तर विद्यालय में प्रवेश मिल गया था। कल ही, सभी ने उनकी भावी सफलता का जश्न मनाया था - लेकिन अब उनके लिए कोई उम्मीद नहीं थी। मिनोचा ने एक आकृति को तेज़ी से भागते हुए देखा, गठीले शरीर और घनी मूंछों वाला। क्या वह सी लाउंज का मुख्य वेटर फॉस्टीन मार्टिस था? वह क्या कर रहा था? मार्टिस मांस के गोदाम में छिपने के लिए भागा, भारी दरवाज़ा खोला और जूट का पर्दा हटाया। मिनोचा सोच रहा था, क्या उसे भी उसके पीछे जाना चाहिए? लेकिन किसी चीज़ ने उसे वापस टाइम ऑफिस की ओर खींच लिया, और बाहर निकलने के रास्ते की ओर, जहाँ उसका सामना विपरीत दिशा में भागते हुए मेहमानों से हुआ। वे सब चीखते हुए बोले कि उन्होंने टावर के अग्निरोधक द्वार से बाहर निकलने की कोशिश की थी, लेकिन वह जाम था। 'किसी ने बाहर से निकलने का रास्ता रोक दिया है और हम सब फंस गए हैं।'
भीड़ दो हिस्सों में बंट गई, एक हिस्सा शेफ ओबेरॉय के दल के पीछे अंधेरे तहखानों में चला गया, दूसरा हिस्सा मिनोचा को लेकर टाइम ऑफिस की ओर बढ़ा। आगे, उसने खून से लथपथ शेफ हेमंत तालीम को देखा, जिसे सुनील कुड़ियादी घसीटकर बाहर ला रहा था। सुरक्षा प्रमुख ने तालीम को धीरे से फुटपाथ पर लिटाते हुए कहा, 'एम्बुलेंस बुलाओ। बस थोड़ा सब्र रखो, तुम ठीक हो जाओगे, मेरे साथ रहो।' तालीम, जिसे पेट में गोली लगी थी, ने कमजोर आवाज में जवाब दिया, 'जी सर।'

तहखाने में, एक दर्जन से ज़्यादा लोग एक अंधेरे, उमस भरे गोदाम में ठसाठस भरे हुए थे। शेफ ओबेरॉय ने भीड़ को शांत करने की कोशिश की, उन्होंने देखा कि उनके समूह में कुछ बच्चे भी थे जो गोलियों की आवाज़ और भारी जूतों की धमक से डरे हुए थे। 'मैं मरना नहीं चाहता। हम मरना नहीं चाहते,' दो युवा रसोई सहायकों ने रोते हुए कहा, वे खुद को संभाल नहीं पा रहे थे, जैसे-जैसे कदमों की आहट नज़दीक आती गई। किसी ने सहायकों को अपनी ओर खींच लिया और उनके चेहरे छिपा लिए। ओबेरॉय ने अपना एक हाथ छुड़ाया और अपना ब्लैकबेरी फोन अपने चेहरे के पास लाया, चमकती स्क्रीन पर संदेशों का गुच्छा डाउनलोड होते देख उनकी आँखें अभ्यस्त हो गईं।
थॉमस वर्गीस: ‘मैं घायल हूँ, सर। लिफ्ट के पास खून बह रहा है।’ हताश और भयभीत, खुद को ज़िम्मेदार मानते हुए, ओबेरॉय ने वर्गीस का संदेश प्रेसिडेंट होटल के ताज कंट्रोल सेंटर को भेज दिया। शेफ तालीम का एक संदेश आया: ‘बहुत खून बह रहा है, लेकिन बाहर आ गया हूँ। आप ठीक हैं, सर?’ कितने लोग मरे?, ओबेरॉय सोचने लगे। इनमें से कई शेफ उनके साथ पंद्रह साल या उससे भी ज़्यादा समय से काम कर रहे थे। उन्हें कैंटीन की दीवार पर लगी वो तस्वीर याद आ गई जिसमें वे सब खुशहाल दिनों में मुस्कुरा रहे थे। कई संदेशों में उनके लंबे-चौड़े बैंक्वेट शेफ डी पार्टी, कैज़ाद कामदीन को केबिन के पास बेसुध पड़ा देखने का ज़िक्र था। कामदीन को तो मारा नहीं जा सकता! शेफ विजय बंजा के बारे में कोई खबर नहीं थी, जो उनकी जानकारी के अनुसार अभी भी टाइल वाले फर्श पर पड़े थे। शायद वो ज़िंदा हों। उन्हें बंजा की पत्नी या कामदीन के परिवार को क्या बताना चाहिए? वो अभी दोनों शेफ को मृत घोषित नहीं कर सकते थे।
नितिन मिनोचा ने मैसेज भेजा: ‘घायल हूँ। लेकिन चल रहा हूँ। क्या आप ठीक हैं, शेफ?’ भगवान का शुक्र है। मिनोचा को खत्म करना मुश्किल था। ओबेरॉय ने जवाब में मैसेज किया, ‘बहुत बढ़िया। निकलो!!’ गोवा से शेफ रेगो के पिता का भी एक मैसेज था। वह उसे पढ़ना नहीं चाहते थे। अर्बानो रेगो ने पूछा, ‘मेरा बेटा कहाँ है?’ उचित जवाब क्या होता? और अंत में, करमबीर कांग से संपर्क करके, उन्हें पूरी घटना के बारे में बताने के बाद, एग्जीक्यूटिव शेफ को अपने परिवार के मैसेज मिले। वे बहुत परेशान थे। पहले: ‘पिताजी निकलो!’ फिर: ‘टीवी पर खबर चल रही है: एग्जीक्यूटिव शेफ ओबेरॉय की मौत हो गई!’ उन्होंने सभी को एक ही मैसेज भेजा: ‘जिंदा हूँ! कृपया अभी कॉल या जवाब न दें।’

ओबेरॉय ने अपना फोन बंद कर दिया और सबको भी ऐसा ही करने को कहा। अंधेरा और सन्नाटा ही उनके एकमात्र साथी थे। बाहर कदमों की आहट तेज़ होती जा रही थी। पास के कमरे में, गुंजन नारंग अपने फोन से खेल रहा था। नारंग, जो भीष्म और दूल्हे अमित के साथ स्कूल गया था, आज रात अपने परिवार के साथ ताज होटल में गोल्डन ड्रैगन में अपना बत्तीसवाँ जन्मदिन मनाने आया था। वे सभी पहले हमले में बच गए थे और उन्हें चैंबर्स में ले जाया गया था। लेकिन अब भगदड़ और गोलीबारी के बाद वे अलग हो गए थे, गुंजन अपने पिता और ताज के एक कर्मचारी के साथ स्टोर में छिपा हुआ था। उसने अपनी बहन, पत्नी और उसके माता-पिता के लिए प्रार्थना की, उम्मीद की कि वे सुरक्षित बाहर निकल गए होंगे। 'हम वाइन सेलर में हैं,' उसने मैसेज किया। 'तुम कहाँ हो?' उसके बगल में मौजूद ताज कर्मचारी को कदमों की आहट सुनाई दी। 'हमें पूरी तरह से अंधेरा करना होगा, सर।' गुंजन ने उसकी बात अनसुनी कर दी। उसकी पत्नी का एक मैसेज आया। उसने खुशी से मुट्ठी भींची। वह और उसके माता-पिता सुरक्षित बच गए थे। उसकी माँ और बहन झरना कहाँ थीं? उसने उन्हें फिर से संदेश भेजा, सेंड बटन दबाते ही उसकी स्क्रीन चमक उठी, और फिर गुस्से से लबरेज होकर उस कर्मचारी की ओर मुड़ा, जिसने पहली बार उसे पहचाना: 'अगर तुम सिर्फ एक काम करो,' उसने उंगली से इशारा करते हुए कहा, 'तो यह सुनिश्चित करो कि ऐसा दोबारा न हो...'
इससे पहले कि वह अपना वाक्य पूरा कर पाता, दरवाजा तोड़ दिया गया और गोलियां चलाई गईं, जिससे सैकड़ों शराब की बोतलें चकनाचूर हो गईं और उनका सारा पेय फर्श पर बिखर गया। कांच के टुकड़े उस कर्मचारी पर बरस पड़े, जिसने अपने आंसू रोकते हुए प्रार्थना की, जब उसने गुंजन और उसके पिता को फर्श पर मृत पड़ा देखा।
पास के एक तहखाने में छिपी झरना नारंग मंत्रोच्चार कर रही थी। बौद्ध धर्म को मानने वाली झरना का मानना था कि ज्ञानोदय मृत्यु के बाद नहीं मिलता, बल्कि जीवितों के लिए एक उपहार है, जिसके रहस्य उसके भीतर कहीं गहरे छिपे हुए हैं। 'मुझे विश्वास करना होगा,' उसने स्वयं से कहा, कमल के फूल की कल्पना करते हुए विनाश की आवाज़ों को दबाते हुए। 'मुझे जीना है... मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ है।' वह सुगंध और फूलों में लिपटी हुई, स्वयं को आगे और भीतर की ओर धकेलती रही। 'मुझे एक मिशन पूरा करना है।' झरना ने स्वयं द्वारा निर्मित एक गहन मौन में स्वयं को लीन कर लिया और गौतम बुद्ध के शब्दों पर

ध्यान केंद्रित किया: 'हमें हत्या करने की इच्छा को मारना होगा।' उसे बंदूकधारियों से डरना नहीं चाहिए और न ही उनसे द्वेष रखना चाहिए।
क्लिक, क्लैक। दरवाजा खुला। एक, दो, तीन और चार चक्कर उसके हाथों और पीठ से गुज़रे, उसे घुमाते हुए, उसकी कमर को चकनाचूर करते हुए, उसके पूरे शरीर में एक तेज़ लहर दौड़ा दी। 'मैं मर नहीं सकती। मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ है!' वह बुदबुदाई, तभी एक और मेहमान का भारी शरीर उसके ऊपर गिर पड़ा।
उसे इस बात का एहसास था कि कोई लाशों को पलट रहा है और काम पूरा कर रहा है। उसे और भी गहराई में जाना था, लगभग मौत के कगार तक। उसने मंत्र जपते हुए अपनी कांपती मांसपेशियों को आराम दिया, आँखें कसकर बंद कर लीं, जीवन के सभी बाहरी संकेतों को मिटा दिया, ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने अपनी त्वचा पर कफ़न ओढ़ लिया हो, ताकि बाहर से केवल उसका छेदा हुआ, प्रतीत होता है कि निर्जीव शरीर ही दिखाई दे।

बंदूक की नली से निकली गोलियां सुपरसोनिक गति से चलती हैं, अपने सामने की हवा को संपीड़ित करती हैं और धनुष के आकार की एक शॉकवेव उत्पन्न करती हैं, एक गोल चिकनी आकृति एक शंक्वाकार ध्वनि तरंग से टकराती है जिसे कुछ लोग चाबुक की आवाज या तालियों की आवाज के रूप में सुनते हैं। वासाबी का एक वेटर, जो गलियारे के एक मोड़ पर पहुंचा था, जहां उसे यह तय करना था कि तहखाने में जाना है या टाइम ऑफिस की ओर, तभी उसे एक सुपरसोनिक धमाका सुनाई दिया जिससे वह वहीं रुक गया। 'नीचे मत जाओ,' उसने खुद से कहा और स्टाफ के निकास द्वार की ओर भागा।
उसका फ़ोन बजा। उसने अपनी हथेलियों से उसे दबा लिया, कहीं उसकी लोकेशन का पता न चल जाए, फिर दौड़ते हुए फ़ोन को कान से लगा लिया। फ़ोन करने वाले ने कहा, 'मुझे खून बह रहा है।' उसे यह समझने में कुछ सेकंड लगे कि यह उसका बॉस, थॉमस वर्गीस था। 'मेरे पैर में गोली लगी है, मैं रसोई में लिफ्ट के पास पड़ा हूँ। कृपया मदद भेजिए।'
घबराया हुआ वेटर दौड़ना बंद कर दिया। क्या उसे वापस जाना चाहिए? वह वहीं जम गया और सुनने लगा। उसे फोन के दूसरी तरफ से बस किसी के चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, नंगे पैर गीले रसोई के फर्श पर पड़ रहे थे, और आवाज़ तेज़ी से नज़दीक आती जा रही थी। 'सर?' उसने फुसफुसाया। वेटर जानता था कि जो कुछ भी

वह सुन पा रहा था, उसका बॉस उसे देख रहा था। एक धातु की क्लिक की आवाज़ आई और फिर 'आक, आक, आक' की आवाज़ें।
वेटर भागते हुए टाइम ऑफिस पहुंचा और बाहर गिर पड़ा। उसने अपने दोस्त अमित पेशवे, जो शामियाना का मैनेजर था, को फोन किया और रोते हुए बोला: 'वर्गीज सर का काम तमाम हो गया। उन्होंने उन्हें मार डाला।'

सुबह 4.45 बजे – मेरी वेदर रोड

जब तक नितिन मिनोचा किसी तरह खुद को घसीटते हुए बाहर निकले, कौवे कांव-कांव कर भोर का स्वागत कर रहे थे। मुंबई में अब तक के सबसे भीषण नरसंहार के बाद भी, आज भी सड़क सफाईकर्मी काम पर लग चुके थे। वे गिरे हुए पत्तों के छोटे- छोटे ढेर बना रहे थे, सड़क को साफ कर रहे थे और धूल को दबा रहे थे। सदमे और दर्द से कराहते हुए मिनोचा फुटपाथ पर बैठ गए और उन्हें देखते रहे। सुबह की ठंडी हवा में वे कांप रहे थे, जबकि अजनबी लोग उलझन भरे भावों के साथ इधर-उधर घूम रहे थे।
आज रात शहर में इतना खून बह चुका था कि एक और घायल व्यक्ति अब कोई खास बात नहीं थी और उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह अदृश्य हो गया हो। मिनोचा लड़खड़ाते हुए उठा। जो कुछ उसने अभी देखा था, उससे वह गुस्से से भरा हुआ था। वह एक पुलिसकर्मी की तलाश में निकल पड़ा, गवाही देने, गवाह बयान देने और हत्यारों को बेनकाब करने के लिए दृढ़ संकल्पित था। अपनी टूटी हुई बांह के दर्द के बावजूद, वह मामले को मजबूत बनाने में मदद करना चाहता था।
रास्ते में उसे नाले में पड़ा एक ताज नैपकिन मिला। उसने उसे अपने हाथ पर दांतों से बांधकर पट्टी बना ली। मिनोचा को थोड़ी तकलीफ सहनी पड़ी। वह खून बहना रोकने की कोशिश करते हुए हाथ ऊपर उठाकर चलता रहा, जब तक कि वह पास के पुलिस स्टेशन नहीं पहुंच गया। धमाका। धमाका। उसने दरवाजे पर दस्तक दी। 'यह कैसे बंद हो सकता है?' उसने अविश्वास से खुद से कहा। निराश होकर वह फुटपाथ पर बैठ गया। पूरी रात उन्होंने मदद का इंतजार किया था। और अब पुलिस कहां थी? घर पर बिस्तर पर अपनी रखैल के साथ मजे कर रहे थे? एक गुजरती मोटरसाइकिल रुकी, जिस पर दो आदमी सवार थे। वे घबराए हुए लग रहे थे। 'अरे यार, तुम्हारी हालत खराब है,' ड्राइवर ने कहा। 'तुम्हें अस्पताल जाना चाहिए।'

मिनोचा की शेफ की वर्दी खून से लाल हो गई थी और उसका हाथ बुरी तरह ज़ख्मी था। उसने अपनी पैंट की जेब में रखे फोन की ओर सिर हिलाते हुए विनती की, “मेरे लिए एक कॉल कर दो।” वह चाहता था कि किसी को पता चले कि वह उस खूनी चक्की से बच गया है। ड्राइवर ने फोन ढूंढा और आखिरी नंबर रीडायल करके मिनोचा के चाचा कमल से बात कर ली। मिनोचा ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, “मैं ज़िंदा हूँ, अस्पताल जा रहा हूँ।” कमल के पास उसे बुरी ख़बरों के बारे में बताने का बस थोड़ा ही समय था। माना जा रहा था कि शेफ ओबेरॉय और उनके कई रसोई के साथी गोलीबारी में मारे गए थे। मोटरसाइकिल सवारों ने मिनोचा से उसका फोन छीन लिया और उसे गिरने से बचाने के लिए अपने बीच में दबा लिया। उनमें से एक ने डरते हुए कहा, “हमें अभी जाना होगा, दोस्त।” उसे डर था कि मिनोचा का सारा खून निकल चुका होगा।

सुबह 5 बजे – चैंबर्स

चैम्बर्स के अंदर, कर्मचारी पीछे हट रहे मेहमानों के पीछे दरवाजे बंद करने के लिए जी-जान से काम कर रहे थे। चार उत्तेजित बंदूकधारी अभी भी बाहर थे, जंगली कुत्तों की तरह क्लब के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे, हर प्रवेश द्वार और सर्विस हैच पर दस्तक दे रहे थे, ताले खड़का रहे थे, शीशे तोड़ रहे थे, अंदर आने का कोई भी रास्ता तलाश रहे थे। शेफ रघु देवरा, जो चैम्बर्स की रसोई में विशालकाय कैजाद के साथ काम करते थे और शेफ मिनोचा के सबसे करीबी दोस्तों में से एक थे, ने बाहर रहकर सुरक्षा कवच और ध्यान भटकाने का काम करने की पेशकश की थी। वह किसी से छिपने वाले नहीं थे। जैसे ही वह इंतजार कर रहे थे, गोलियों की आवाज आरी की तरह तेज हो गई और कई लोग दरवाजे से अंदर आ गिरे। जैसे ही वे फर्श पर गिरे, उन्हें एहसास हुआ कि वे बंदूकधारी नहीं बल्कि मेहमान थे। उन्होंने आखिरी बचाव की योजना बना ली थी, लेकिन इन लोगों को बंद क्लब में लाने का समय नहीं था। इसके बजाय, उन्हें उनके साथ खतरे के क्षेत्र में रहना होगा। 'हम सब बच जाएंगे,' उन्होंने उन्हें आश्वस्त किया, नई वास्तविकता को स्वीकार करते हुए। लेकिन अब उन्हें यकीन नहीं था। 'हमें चुप रहना होगा।' हिम्मत रखो।’ लेकिन शेफ देवरा डरी हुई थी।
बंद कमरों के दरवाज़ों के पीछे, भीष्म और उसकी माँ गहरी साँसें ले रहे थे। वे निकलने वाले चौथे समूह में थे और गलियारे के रसोईघर वाले छोर के पास ही

पहुँच रहे थे कि तभी बंदूकधारी दूसरी तरफ से अंदर घुस आए। भीष्म ने 'मशीन गन लिए आदमियों' की एक झलक देखी और फिर क्लब के अंदर भाग गया। अब, जब वह लैवेंडर रूम के कालीन पर लेटा हुआ था, अपने हाथों को अपने चारों ओर लपेटे हुए, अपने काँपते हाथों और फड़फड़ाते पैरों को काबू करने की कोशिश कर रहा था, तभी एक पश्चिमी व्यक्ति दरवाजे पर एक बेजान शरीर को लिए हुए दिखाई दिया।
माइक पोलैक, राजन कांबले को कंधे पर उठाकर ले जा रहा था, वही इंजीनियर जिसने मेहमानों की रक्षा करने की कोशिश की थी। अमेरिकी फाइनेंसर ने फुसफुसाते हुए कहा, 'उसे गोली लगी है,' और धीरे से उस आदमी को सोफे पर लिटाकर बाहर चला गया। माइक जानता था कि अंजलि गलियारे के उस पार पुस्तकालय में अपने डिनर साथियों, शिव और रेशमा दर्शित के साथ थी, लेकिन उसका इरादा उसके पास जाने का नहीं था। उसने एक कठिन निर्णय लिया था: यह एक युद्ध था। यदि प्रायिकता एक या एक से अधिक घटनाओं के घटित होने की संभावना को संभावित परिणामों की संख्या से भाग देने पर प्राप्त होती है, तो अपने बच्चों के अनाथ होने की संभावना को दोगुना क्यों किया जाए? शुरू से ही उसे चैंबर्स जैसी जगह पर इतने सारे मेहमानों को इकट्ठा करने का विचार नापसंद था, क्योंकि इससे वह बंधकों का संभावित अड्डा बन सकता था, और वह जानता था कि उसकी गोरी त्वचा और लहजा उसे एक आसान निशाना बना सकता है। अंजलि से सलाह लिए बिना ही उसने फैसला कर लिया था कि उसके बिना अंजलि के बचने की संभावना अधिक है।
‘यह कभी अच्छा विचार नहीं था,’ उसने मन ही मन कहा, और एक नया ठिकाना खोजने निकल पड़ा, ‘असल में यह एक बेहद बुरा विचार साबित हुआ है।’ माइक ने क्लब के शौचालय देखे और एक अंधेरे स्टॉल में घुस गया, जहाँ उसे रसोई में फिर से गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। उसका सिर कमोड और टॉयलेट ब्रश होल्डर के बीच फंसा हुआ था, और उसने खुद को महोगनी रंग की बड़ी-बड़ी आँखों में घूरते हुए पाया, और उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मेहमान या शिकारी? ‘जो,’ एक गहरी आवाज़ ने परिचय देते हुए कहा। ‘माइक,’ उसने साँस छोड़ते हुए जवाब दिया। माइक के लहजे को देखकर, जो ने खुद को ‘कुछ-कुछ अमेरिकी’ बताया। नाइजीरिया में जन्मा, उसके पास ग्रीन कार्ड था। राहत महसूस करते हुए पोलैक अपनी ही दुनिया में लौट गया। अभी बहुत कुछ करना बाकी था।

टॉयलेट के फर्श पर लेटे हुए, उसने अंजलि को मैसेज किया और अकेले जाने के अपने फैसले के बारे में बताया। उसे उम्मीद थी कि अंजलि ने अपने दोस्तों के साथ कोई अच्छी छुपने की जगह ढूंढ ली होगी। इसके बाद उसने वाशिंगटन डीसी में अपने एक सहकर्मी को मैसेज किया जिसके सरकारी संपर्क थे। पहले ही बहुत समय बर्बाद हो चुका था, इसलिए उसने अपने दोस्त से एफबीआई से संपर्क करवाने का इंतजाम करने को कहा। दस मिनट के भीतर ही वह एफबीआई से संपर्क करने में जुट गया और एजेंटों से अपडेट और सलाह का आदान-प्रदान करने लगा। माइक पूरी तरह तैयार था। वह अंधेरे में, जो के बगल में लेट गया और गोलियों की भयानक आवाज़ें सुनने लगा जो मानो दरवाजे के दूसरी तरफ से आ रही हों। एड्रेनालाईन के कारण उसकी नसों में आवाज़ें अजीब तरह से सुनाई दे रही थीं, उसने गौर किया। लेकिन इस सदमे से उसकी तंत्रिकाओं पर अद्भुत असर हो रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे वे पहले कभी इस तरह से काम नहीं कर रही थीं। सालों में पहली बार असफलता और शर्मिंदगी की उसकी सारी चिंताएं, उसका स्वाभिमान और उसकी उम्मीदें दूर हो गईं। खोने के लिए कुछ नहीं था। अब अपने दिल की बात मानने का कोई कारण नहीं था।
उसने बंदूकधारियों पर ध्यान केंद्रित किया और उन्हें अपने दिमाग में देख सकता था। वे अब कमरों में अंधाधुंध गोलियां नहीं चला रहे थे, बल्कि एक-एक गोली चला रहे थे, मानो वे विशिष्ट लक्ष्यों को चुन रहे हों। माइक को बंदूक की थामर तैयार और ट्रिगर दबा हुआ दिखाई दिया। 'मेरे शरीर की स्वचालित क्रियाएं पूरी तरह से नियंत्रित हैं,' उसने अपने आप से कहा, अपनी सुनने की क्षमता और सूंघने की बढ़ी हुई शक्ति से प्रभावित होकर। 'मैं पल भर में अलग-अलग चीजों के अनुकूल हो सकता हूँ।' उसके मन में एक छवि उभरी: सिकंदर महान अपनी सेना के आगे-आगे घोड़े पर सवार। इसे समझने के लिए इसे महसूस करना जरूरी था। उसने खुद को कुछ ऐसा करते हुए पाया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। 'चाहे मैं मृत्यु की घाटी से होकर गुजरूँ, मुझे किसी बुराई का भय नहीं है, क्योंकि आप मेरे साथ हैं।' एक ऐसा व्यक्ति जिसे अक्सर लगता था कि कोई ईश्वर नहीं है, उसे एक भजन के शब्दों में सांत्वना मिली।
अंजलि पोलैक पुस्तकालय के फर्श पर बैठी उस कड़वी सच्चाई को स्वीकार करने की कोशिश कर रही थी, जो उसके सामने थी: माइक मर चुका था। उसने उसे आखिरी बार गलियारे में निकासी का इंतज़ार करते देखा था। गोलीबारी की अफरा-तफरी में, वह उसे खो बैठी थी। वह सोच रही थी कि उस गोलीबारी में उसका बचना नामुमकिन

था, तभी उसका फोन बज उठा। उसने कंपन को दबाने की कोशिश करते हुए फोन को कसकर पकड़ लिया, तभी उसने माइक का संदेश देखा। वह राहत और गुस्से से भर उठी और रोने लगी। अब उनके रास्ते अलग थे, लेकिन यह उसके अकेले लिए गए फैसलों की बारीकियों पर विचार करने का समय नहीं था। रसोई में गोलियों की आवाज़ सुनकर वह सहम गई। उसे यकीन था कि कुछ गोलियां चैंबर्स के अंदर से चलाई जा रही थीं। क्या माइक निशाना था? उसे नहीं पता था कि वह कहाँ छिपा था। 'मैंने खुद से सुलह कर ली है,' उसने खुद से कहा और पहले से कहीं ज़्यादा प्रार्थना करने लगी। ज़्यादातर, उसने माइक और बच्चों के लिए प्रार्थना की। 'अगर किसी को मरना ही है, तो कृपया मुझे मरने दो,' उसने विनती की।
धीरे-धीरे, उसका ध्यान अपने आस-पास छिपे लोगों की आवाज़ों की ओर गया, जो लगातार फुसफुसा रहे थे और खांस रहे थे। क्या वे चुप नहीं रह सकते थे? वह सोचने लगी कि कहीं अनजाने में कोई उन्हें धोखा न दे दे, तभी उसकी नज़र एक सांवले, सफ़ेद बालों वाले आदमी पर पड़ी जो एक सोफे पर आराम से लेटा हुआ था और अपने फोन पर टैप कर रहा था, जो बिल्ली की आंख की तरह चमक रहा था। नाकाम निकासी के दौरान वह उठने की ज़हमत तक नहीं उठा था। और वह मैसेज करना बंद ही नहीं कर रहा था। यह एंड्रियास लिवेरस था। उसके चारों ओर मौजूद मेहमान, उसकी हरकतों से डरे हुए, उसे चुप कराने की कोशिश कर रहे थे। 'चुप रहो,' एक बुज़ुर्ग महिला ने उससे कहा। वह अपने ब्लैकबेरी पर क्लिक करता रहा, मानो बीबीसी से दोबारा संपर्क करने की ठान चुका हो। 'हम अभी भी यहाँ क्यों हैं, रमेश?' उसने अपने सहायक से फुसफुसाकर पूछा। रमेश ने जवाब नहीं दिया। उसने अभी-अभी झुककर देखा था कि लाइब्रेरी के दरवाज़े के पास से दो परछाइयाँ गुज़र रही थीं, एक काली और एक लाल। आह, आह, आह। गोलियाँ दरवाज़े से टकराईं। ‘सर, कृपया रुक जाइए,’ रमेश ने अपने बॉस के घुटने को छूते हुए फुसफुसाया। आह, आह। पुस्तकालय में एक और तेज़ धमाके की आवाज़ गूंजी। ‘हे भगवान,’ एंड्रियास ने धीरे से कहा।
रमेश दर्द से कराह उठा, उसके कंधे पर जलन सी फैल गई थी। उसने उंगलियों से छूकर देखा तो खून जमा हुआ था। उसे दो गोलियां लगी थीं। वह थोड़ा लड़खड़ा गया, अपने बॉस के पैर पकड़ लिए और फुसफुसाते हुए बोला: 'चिंता मत करो, साहब, हम बच जाएंगे।' वह दांत पीसते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। ये सब कैसे हो सकता है? कम से कम श्री एल. को तो आखिरकार बात समझ आ गई थी और वे शांत हो गए थे। रमेश वहां अकड़ा हुआ पड़ा रहा, मानो सदियों बीत गईं।

लैवेंडर रूम के गलियारे में, भीष्म हर गोली से सहम जाता था जो उसे कुछ ही इंच दूर लगती थी। वह कालीन पर लेटा हुआ था, उसकी माँ उसके बगल में कुर्सी पर बैठी थी, आवाज़ों को दबा रही थी, और अपने स्कूल के दोस्त गुंजन नारंग के तहखाने में जाने के दृश्य से परेशान थी, जहाँ से सबसे भयानक आवाज़ें आ रही थीं। कोई भी उससे बच नहीं सकता था। गुंजन को पहले कोसने के कारण बीमार, भीष्म का दिमाग चकरा रहा था।

सुबह 5:10 बजे – ताज के रसोईघर

पास ही धातु की सतहों से गोलियों की बौछार हुई। चूल्हे पर पीठ टिकाए शेफ रघु, जिनके दोनों ओर एक-एक भारतीय मेहमान दुबके बैठे थे, तुरंत समझ गए कि एक या एक से अधिक हमलावर अंदर घुस आए हैं। कुछ ही सेकंड बाद, बंदूकधारी उनके सामने खड़ा था, काले कपड़े पहने हुए, लेकिन रघु ने शायद ही कोई प्रतिक्रिया दी, क्योंकि उन्होंने पहले ही अपनी कार्रवाई तय कर ली थी। उन्होंने चेहरे की ओर देखा। वह एक आदमी नहीं, बल्कि एक बच्चा था। जैसे ही भारतीय मेहमान दया की भीख मांगने लगे, उस युवक ने आदेश दिया, 'लेट जाओ।' रघु ने उन्हें चुप रहने के लिए फुसफुसाया, क्योंकि वह जानते थे कि इससे मामला और बिगड़ जाएगा। उन्हें खुद को शिकार बनने से बचाना था। मेहमानों को उग्रवाद के मनोविज्ञान की कोई समझ नहीं थी, लेकिन मुंबई से आने के कारण रघु को ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें इस विषय में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हो। बंदूकधारी ने दहाड़ते हुए कहा, 'मुंह नीचे करो,' फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। 'अपनी पीठ के बल लेट जाओ। मेरी तरफ देखो।' रघु चुपचाप लेट गया, जबकि मेहमान भी अपनी पीठ के बल लेट गए और पैसे, बटुए और घड़ियां देने लगे। रघु चाहता था कि वे रुक जाएं। आह, आह, आह। तंग रसोई में गोलियों की आवाज गूंज रही थी और रघु ने अपनी आंखें बंद कर लीं। एक गोली चली, फिर दूसरी: उसने अपने चेहरे पर खून के छींटे महसूस किए। क्या यह उसका था या उनका? 'रघु मर गया,' उसने मन ही मन कहा, बंदूकधारी के करीब आने पर खुद को स्थिर रखने की कोशिश करते हुए। उसके बगल में दो मेहमान अपनी मौत की पीड़ा से तड़प रहे थे। सुनील कुडियादी, जो किसी तरह वापस अंदर आ गया था, कोने से दौड़ता हुआ आया और रुकते ही उसने काले कपड़े पहने आतंकवादी को तीन लाशों के बीच भूखे कौवे की तरह बैठे देखा, उसकी बंदूक एक खून से लथपथ टांग पर टिकी हुई थी। उसने

मुड़कर कुडियादी को देखा और दहाड़ते हुए कहा, 'इधर आओ', और सुरक्षा प्रमुख अपनी जान बचाने के लिए विपरीत दिशा में भागा, जिसके पीछे गोलियों की बौछार हुई।
भीष्म ने अपनी सांस रोक ली और कान बंद कर लिए। जैसे ही वह बंदूकधारियों के चले जाने की प्रार्थना कर रहा था, उसने देखा कि लैवेंडर रूम का दरवाजा थोड़ा खुला हुआ है। 'यह कैसे हो सकता है?' उन्हें इसे बंद करना चाहिए था, लेकिन वह डर से इतना सहम गया था कि कुछ भी उसे ज़मीन से उठा नहीं पा रहा था। उसने अपने बगल में खड़े एक आदमी की ओर मुड़कर धीरे से निर्देश दिए: 'दरवाजा... हमें इसे बंद करना होगा।' अगर कोई बंदूकधारी अंदर आ गया तो सबसे पहले वही मरेगा। 'तुम इसे बंद करो,' उस आदमी ने घृणा भरी नज़र से कहा। भीष्म ने अपने आस-पास मौजूद लगभग बीस शरणार्थियों को अपने पास बुलाया। कुछ लोगों ने आज रात सबको सुरक्षित महसूस कराने के लिए हर संभव प्रयास किया था, सामूहिक रूप से काम करते हुए, यह सुनिश्चित किया कि सबके पास पानी हो, फिर बत्तियाँ, टेलीफोन और एयर कंडीशनिंग बंद कर दीं, जिससे निजी भोजन कक्ष एकदम शांत हो गया। भीष्म ने कुछ नहीं किया था और निराशा से अब वह रोने लगा, तभी एक बूढ़ी औरत बैसाखी के सहारे रसोई से रेंगती हुई अकेले वहाँ पहुँची। उनकी मां की दोस्त, बॉम्बे अस्पताल में एनेस्थेटिस्ट डॉ. तिलू मंगेशिकर के पास आत्म-मंथन का समय नहीं था। उनके हाथ घायल इंजीनियर राजन कांबले के पेट के अंदर गहरे धंसे हुए थे। एक गोली उनकी पीठ से अंदर घुसी और सामने से निकलकर फट गई, जिससे पांच गुना बड़ा घाव हो गया था। "तुम्हें गोली लगी है," उन्होंने कांबले को हंसाते हुए कहा। "जी मैम," वह सिसकते हुए बोले और रोने की कोशिश करते हुए मुट्ठी मुंह में ठूंस ली। डॉ. तिलू ने उन्हें स्थिर रखा, उन्हें डर था कि कहीं उनकी आंतें बाहर न निकल जाएं। उन्होंने कुछ कपड़ा अंदर डाला और उसके धड़ के चारों ओर एक मेज़पोश लपेटकर उसे वहीं रोके रखा। उन्होंने उनकी नब्ज़ जांची। कम से कम उनका खून बहना तो नियंत्रण में था। "हम संभाल लेंगे," उन्होंने कहा, तभी एक ग्रेनेड विस्फोट से लैवेंडर की दीवारें हिल गईं। भीष्म ने अपना फोन उठाया और एक संदेश भेजा, किसी भी तरह से अपना ध्यान भटकाने के लिए: "निकासी रद्द। गलियारे में गोलीबारी। पता नहीं कमांडो अभी भी वहां हैं या नहीं। एक आदमी के पेट में गोली लगी है।" मां मेरे साथ हैं। लाइट बंद कर दो। इंतजार कर रहे हैं।

दोस्त ने जवाब में संदेश भेजा: 'कमांडो और नौसेना के जवान वहां मौजूद हैं। बस कुछ ही समय की बात है। चिंता मत करो।'
उसने दिल्ली में अपने एक दोस्त को संदेश भेजा: 'यही आखिरी मौका हो सकता है।' और पांच मिनट बाद एक और संदेश भेजा: 'तो क्या हुआ: )'
दोस्त ने घबराकर उसे वापस फोन किया: 'तुमसे संपर्क नहीं हो पा रहा है। आग अभी भी लगी हुई है। लोग कूद रहे हैं। क्या तुम वहाँ हो?'
क्या वह यहाँ था? भीष्म अपने सामने आने वाली तमाम विपत्तियों को तेजी से भुला रहा था, उसका दिमाग भयानक दृश्यों के एक घूमते हुए ज़ोएट्रोप की तरह था।

सुबह 5.15 बजे – डेटा सेंटर

दूसरी मंजिल से, चैम्बर्स में हो रहे हमले की आवाज़ सांडों के भगदड़ जैसी लग रही थी। मेज के नीचे बने अपने गुप्त ठिकाने से फ्लोरेंस मार्टिस सब सुन रही थी और उस नरसंहार की कल्पना कर रही थी। कुर्सी खींचकर बैठी, ठुड्डी के नीचे फोन दबाए, रोशन, जिसने पहले फोन किया था, लगातार उसका नाम पुकारता रहा। कमरे में धुएं का एक और बादल छाने से पहले उसे फ्लोरेंस को बेहोशी में जाने से रोकना पड़ा।
आपातकालीन बत्तियों की एक पट्टी बार-बार जल-बुझ रही थी, जिससे टूटा हुआ दरवाजा दिखाई दे रहा था। वह एक छोटी सी खिड़की से देख सकती थी कि भोर हो रही है और जानती थी कि वह जल्द ही पूरी तरह से बेनकाब हो जाएगी। उसने रोशन की आवाज़ पर ध्यान केंद्रित किया: 'फ्लोरेंस, मैं अब भी तुम्हारे लिए यहीं हूँ। मुझे मत भूलना।'
उसे लकड़ी के टूटने की आवाज़ सुनाई दी और फिर बूटों की चरमराहट। कोई कमरे में दबे पांव चल रहा था, करीब आता जा रहा था। 'वह कुछ ढूंढ रहा है,' उसने खुद से कहा, अपनी सांस रोककर, अपनी पीठ दीवार से सटाकर, तभी एक बंदूकधारी अंदर आया। उसने उसके बूटों की एक झलक देखी और उन्हें अपनी ओर आते हुए देखा। अब उसे बंदूक की नली भी दिखाई दे रही थी। 'रोशान,' उसने मोबाइल पर धीरे से कहा। 'बंदूकधारी अंदर है... कोई... कमरे में है।'
उसने काली पतलून पहनी हुई थी। उसे उसके पसीने और जोश की महक आ रही थी। उसने डेस्क पर नज़र घुमाई, उसकी कमर उसके चेहरे से बस कुछ इंच दूर थी, फिर वह

घूमा और टूटे हुए बगल के दरवाज़े से बाहर निकल गया। फ्लोरेंस, जिसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, एक ऐसी दुनिया में खो गई जहाँ सब कुछ मानो मिट्टी की तरह फैला हुआ लग रहा था। थोड़ी दूरी पर एक और फ़ोन की घंटी बजी। क्या यह उसके पिता थे? 'पिताजी?' उन्हें क्या हुआ? उन्होंने उसे बताया था कि वह रास्ते में हैं। लेकिन यह तो घंटों पहले की बात थी।

सुबह 5.16 बजे – रसोईघर

पहली मंजिल पर स्थित कड़ाके की ठंड से ठिठुरे मांस के स्टोर में, फॉस्टीन मार्टिस ताज के कई कर्मचारियों के साथ छिपा हुआ था, तभी उसका फोन बजने लगा। हे भगवान! उसने कांपते हाथों से फोन निकालते हुए सोचा, अपने परिवार द्वारा उपहार में दिए गए चमकदार नए हैंडसेट को देखकर वह दंग रह गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इसे बंद कैसे करे।
जब आखिरकार शोर बंद हुआ, तो फॉस्टीन ने दूसरों की ओर देखते हुए माफी मांगी और सोचने लगा कि क्या दीवारें इतनी मोटी थीं कि आवाज दब गई हो। उसके साथी कर्मचारी देख रहे थे कि फॉस्टीन ने धीरे से जूट का पर्दा हटाया और कांच के छोटे से छेद से बाहर अंधेरी रसोई में झांका। धुंधले कांच में उसका अपना चेहरा प्रतिबिंबित हुआ, और उसने उसे रगड़ा, फिर उसे एहसास हुआ कि कोई अंदर देख रहा है।
हाय, हाय, हाय।

9

अल्लाह तुम्हें नहीं चाहता

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, सुबह 5 बजे।

अमित पेशावे अभी भी बॉम्बे अस्पताल में फंसे हुए थे। एक घंटा पहले ही उन्होंने पता लगाया था कि जिस घायल ब्रिटिश मेहमान को वे अस्पताल लाए थे, उसकी लापता पत्नी जीवित मिल गई है, लेकिन वह अभी भी ताज होटल में फंसी हुई है। अब वे अस्पताल की सफेद इमारतों में इधर-उधर घूम रहे थे, जहां गलियारों में घायल और मृत लोगों के ढेर लगे थे, और वे अपने फंसे हुए दोस्तों और सहकर्मियों से मिलने के लिए बेताब थे। उन्होंने अपने बॉस हेमंत ओबेरॉय को संदेश भेजा।
कार्यकारी शेफ ने ज़ोर देकर कहा: 'अस्पताल में ही रहो।' उन्होंने कारण नहीं बताया, न ही उन्होंने अपने खुद के अंधेरे तहखानों में कैद होने या किचन ब्रिगेड नरसंहार के बारे में कुछ कहा। संदेश की संक्षिप्तता ने उस आशंका को और बढ़ा दिया जो अमित को एक घंटे पहले थॉमस वर्गीस की प्रत्यक्ष मृत्यु की सूचना मिलने पर पैदा हुई थी।
भोर होते ही पहली बार होश में आकर वह सिगरेट पीने के लिए बाहर गया। वह सोच ही रहा था कि नया दिन उम्मीद लेकर आता है, तभी सायरन की तेज़ आवाज़ सुनाई दी और एक एम्बुलेंस आकर रुकी, जिसके दरवाज़े रुकने से पहले ही खुल गए। पास जाकर उसने स्ट्रेचर पर बेहोश और खून से लथपथ पड़े व्यक्ति को देखा और चौंक गया। 'हे भगवान!' यह हेमंत तालीम था, गोल्डन ड्रैगन का शेफ, अब्बास मेंशन्स का उसका दोस्त। आखिरी बार उनकी बात कुछ घंटे पहले हुई थी, जब तालीम चैंबर्स में था। एक वार्ड बॉय ने चिल्लाकर कहा: 'जिगर, गुर्दा और जांघ।' अमित ने शेफ

को घूर कर देखा। क्या वह पहले ही मर चुका था? उसने उसके कान में फुसफुसाया: 'हेमंत।'
अमित को एक विचार आया। ‘डॉक्टर साहब, हमें मदद चाहिए। यह आदमी मर रहा है।’ उसने एक वार्ड अटेंडेंट को ढूँढा। ‘आप इसे कहाँ ले जा रहे हैं?’ अमित ने कलम निकाली और कागज़ पर अपने दोस्त के भर्ती वार्ड का नाम लिख लिया। वह हर आने वाले मरीज़ के लिए यही करता था। 800 बिस्तरों वाले इस अव्यवस्थित अस्पताल में, जो सबसे ज़्यादा गुहार लगाते थे, उन्हें ही सबसे पहले इलाज मिलता था। वह सीढ़ियों के पास खड़ा होकर हर आने वाली एम्बुलेंस पर नज़र रख रहा था। रेगो जूनियर कहाँ था, उसका शागिर्द, जिसने उसे उसके सपनों का पिज़्ज़ा देने का वादा किया था? कैज़ाद कामदीन कहाँ था, बैंक्वेटिंग का वो पारसी दिग्गज? चैंबर्स और बैंक्वेटिंग हॉल में चूल्हों के पीछे, उसे बावा के नाम से जाना जाता था, जो पारसियों के लिए स्नेहपूर्ण बोलचाल का शब्द है। सप्ताहांत में हॉकी खेलने वाला कामदीन आज रात मोर्चा संभाल सकता था, अमित को इसमें कोई संदेह नहीं था। उसने कामदीन और अन्य सहकर्मियों से आखिरी बार कब बात की थी, यह देखने के लिए अपने संदेशों को दोबारा पढ़ा, तभी एक तीसरी एम्बुलेंस आकर रुकी। अमित धड़कते दिल से दौड़ा। उसने शव को देखा, लेकिन वह किसी परिचित का नहीं था। शेफ विजय बंजा कहाँ था, ओबेरॉय का उदार, प्यारा सहायक? ज़ोडियाक का उभरता सितारा शेफ ज़हीन मतीन कहाँ था?
जैसे ही भोर की धुंधली रोशनी शहर पर फैली, अमित को अपना मकसद मिल गया। रसोई के उस्ताद हेमंत ओबेरॉय को अपने साथियों को बचाने के लिए उसकी यहाँ ज़रूरत थी। एक मोटरसाइकिल आई जिस पर तीन आदमी सवार थे। बीच में उसने अर्ध-बेहोशी की हालत में नितिन मिनोचा को देखा, जिसकी टूटी हुई बांह उसकी गोद में थी और उसका चेहरा मुंबई के किसी जहाज़ के पाल की तरह सफ़ेद था।
नीचे उतारे जाने पर मिनोचा लड़खड़ाती आवाज़ में बोला, "पानी!" और वह गिर पड़ा। अमित ने पूछा, "और कौन?" मिनोचा ने बस अपना सिर हिलाया और अमित ने उसकी बात को अपनी डायरी में दर्ज कर लिया।
जब मिनोचा को होश आया, तो वह बिस्तर पर अकेला लेटा हुआ था। उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी: उसकी जेब पर एक काला धब्बा। उसने अपनी गोल्डन ड्रैगन चॉपस्टिक निकाली और देखा कि वे दो टुकड़ों में टूट चुकी थीं। मिनोचा को एक अजीब सी खुशी महसूस हुई: उसके दिल की ओर आ रही गोली चॉपस्टिक को छूकर निकल गई थी। उसकी छाती पर एक कोमल, मुट्ठी के आकार का निशान था।

सुबह 5:30 बजे – नियंत्रण कक्ष

क्रॉफर्ड मार्केट के पास स्थित पुलिस नियंत्रण कक्ष में, किचन ब्रिगेड हत्याकांड की खबरें धीरे-धीरे फैल रही थीं, और अपराध शाखा के प्रमुख राकेश मारिया को इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। उन्होंने गुस्से में कहा, 'हमने पहले कभी चुपचाप बैठकर इंतजार नहीं किया। हम पर रणनीतिक रूप से बेहतर स्थिति से हमला किया जा रहा है - और हमने अभी तक पुनर्गठन भी नहीं किया है।' कई घंटों तक वे यही बातें हर किसी को दोहराते रहे, क्योंकि आतंक के भयावह माहौल ने पुलिस बल का मनोबल गिरा दिया था।
नियंत्रण कक्ष एक तनावपूर्ण, हवा रहित तहखाने जैसा लग रहा था; हमले की शुरुआत से ही हर कोई चमकती स्क्रीन के सामने फंसा हुआ था। थके हुए फोन ऑपरेटरों ने उसकी बात सुनने के लिए क्षण भर के लिए सिर उठाया और फिर अपने हेडसेट में वापस लग गए।
मारिया को घुटन और निराशा महसूस हो रही थी, ये भावनाएँ उसने इस अति- राजनीतिक शक्ति में पहले भी कई बार अनुभव की थीं। ऐसा 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों की जाँच को संभालने से पहले और फिर 2003 में भी हुआ था। लेकिन उसने इन आशंकाओं को कभी सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया। आत्म-आलोचना को सक्रिय रूप से हतोत्साहित किया जाता था, राज्य संस्थाएँ घटनाओं के ऐसे कृत्रिम संस्करण गढ़ना पसंद करती थीं जो अंततः सच्चाई को दबा देते थे। फिर भी, गफूर के पद छोड़ने और राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड पर पूरी उम्मीदें टिकाने के फैसले से नाराज़ मारिया, कमान के क्रम को लेकर उलझन में थी। आखिर उन्हें कंट्रोल रूम में क्यों फंसाकर वह काम सौंपा गया था जो कोई और कर सकता था – और शायद बेहतर भी? संयुक्त आयुक्त अपराध के रूप में उन्हें सड़कों पर और ताज होटल की लॉबी में डटे रहना चाहिए था, न कि पूरे शहर में पुलिस बल के साथ संपर्क साधने में फंसे रहना। आयुक्त अभी भी ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल के पास खड़ी अपनी कार में थे।
सात घंटे बीत चुके थे और कोई भी हरकत कामयाब नहीं हुई थी। मारिया को कुछ नया करना था, इसलिए उसने क्राइम ब्रांच के उस इंस्पेक्टर को बुलाया जिसे उसने नायर अस्पताल में गिरफ्तार बंदूकधारी अजमल कसाब से पूछताछ पर नज़र रखने के लिए भेजा था। उसने आदेश दिया, 'उसे क्रॉफर्ड मार्केट लाओ।'

इंस्पेक्टर हैरान रह गया। क्या पुलिस को एडिशनल कमिश्नर घड़गे द्वारा की गई पहली पूछताछ से ही ज़रूरी जानकारी नहीं मिल गई थी? उसने यह चेतावनी भी दी कि डॉक्टरों का कहना है कि कैदी की हालत स्थिर नहीं हुई है, इसलिए वे उसे रिहा करने से इनकार कर सकते हैं।
लेकिन मारिया अपनी बारी चाहता था। वह भड़क उठा। 'बकवास!' वह चिल्लाया। 'मेरे पास कैदी से पूछताछ करने के तीन ठोस कारण हैं: कामते, काकरे और सालस्कर,' वह गुस्से में बोला। 'उसे यहाँ लाओ, चाहे इसके लिए डॉक्टर के सिर पर बंदूक ही क्यों न रखनी पड़े।' अपराध शाखा आपराधिक जांच संभालेगी और अगर उसे चुनौती दी गई तो वह तर्क देगा कि यह उचित है कि उसके प्रमुख ही सवाल पूछें। मारिया ने चेतावनी देते हुए अपनी बात समाप्त की: 'उस पर हाथ मत लगाना और यह सुनिश्चित करना कि जब तुम यात्रा कर रहे हो तो तुम्हारे पास पर्याप्त बैकअप हो। हम कोई भी गलती बर्दाश्त नहीं कर सकते।'
नायर अस्पताल में डॉक्टर गुस्से से आग बबूला थे। अजमल कसाब के मरीज़ के रिकॉर्ड में लिखा था: 'चिकित्सकीय सलाह के विरुद्ध डिस्चार्ज किया गया।' इंस्पेक्टर ने मारिया को चेतावनी देने के लिए फोन किया, लेकिन क्राइम ब्रांच का मुखिया अपने रुख पर अड़ा रहा: 'यह जिनेवा कन्वेंशन के नियमों का समय नहीं है,' उसने चिल्लाकर कहा।
आधे घंटे बाद, भ्रमित कैदी पुलिस मुख्यालय के प्रांगण में पहुँचा और मारिया ने नीचे आते हुए उसे पुकारा, ‘कसाब को एईसी ले चलो।’ यह उसकी पहली चाल थी, कैदी से जबरन वसूली विरोधी प्रकोष्ठ में पूछताछ करना, जो सालस्कर का क्षेत्र था। मारिया के इकलौते कैदी को एक अस्थिर शहर में, जो अभी भी हमलों की चपेट में था, अपराध शाखा में ले जाने का जोखिम भरा कदम, बदले की भावना से भी बढ़कर, एक कार्रवाई बन रहा था। ‘अब देखते हैं उसे कैसा लगता है,’ मारिया ने सीढ़ियों से नीचे दौड़ते हुए कहा और प्रांगण में आँखें झपकाते हुए बाहर निकला, जहाँ सात घंटों में पहली बार उसने ठंडी हवा में साँस ली, और हल्की रोशनी में उसकी आँखों में जलन हो रही थी।
एईसी के बाहर भारी-भरकम वर्दीधारी पुलिसकर्मियों का एक छोटा समूह पैर पटकते हुए खड़ा था, और उधार ली हुई प्लास्टिक की चप्पल पहने एक छोटे कद के व्यक्ति को घेरे हुए था। मारिया ने अपने आदमियों को सिर हिलाकर इशारा किया। कांपते हुए कैदी को देखते हुए उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'मेरा दिल कह रहा है कि मुझे इस आदमी का गला यहीं, अभी घोंट देना चाहिए, लेकिन मेरा

दिमाग कह रहा है कि इस अनसुलझे मामले से जुड़ा यही एकमात्र सुराग है।' अजमल के पकड़े जाने के बाद से मारिया के आसपास हर तरफ से मुंबई की पुरानी कहानी सुनाई जा रही थी: 'लड़कों के लिए एक कहानी'। उसे गोली मारने से पहले भागने दिया जाना चाहिए। कुछ लोग उसे फांसी पर लटकाकर आत्महत्या का नाटक करना चाहते थे।
गंभीर चेहरे लिए वे सभी सालस्कर की दुनिया में दाखिल हुए और मृत इंस्पेक्टर के कागज़ात और सामान को हैरानी से देखने लगे: संदिग्धों की तस्वीरें, 'वांटेड' नोटिस, बाँस की लाठियाँ और बुलेटप्रूफ जैकेट। अजमल को एक प्लास्टिक की कुर्सी पर बिठाया गया, उसके बाएँ हाथ में हथकड़ी थी। अगर किसी कमरे में ज़बरदस्ती की बू आ सकती थी, तो सालस्कर के कमरे में ज़रूर आ रही थी। कैदी से भी लंबी और वर्दीधारी कांस्टेबलों से घिरी मारिया ने अजमल की मातृभाषा पंजाबी में बात करना शुरू किया। यह मारिया के पिता की भी भाषा थी, जो 1950 के दशक में बॉम्बे आकर बस गए थे।
मारिया ने अजमल से पूछा कि क्या उसे पता है कि वह कहाँ है। अपनी मैली- कुचैली बेज और सफेद टी-शर्ट में, कलाई और बांह पर पट्टी बांधे, वह बेहद दयनीय लग रहा था। मारिया ने अब तक जितने भी सीरियल किलर देखे थे, उनमें से वह सबसे साधारण दिखने वाला था। पीला और चिकना सा, वह पुलिसवाली को ज़वेरी बाज़ार में मिठाई बेचने वाले की दुकान पर डीप-फैट फ्रायर चलाने वाले बच्चे की याद दिला रहा था।
एक कुशल पूछताछकर्ता को शुरुआत के लिए एक वाक्य की आवश्यकता होती है, और मारिया तैयार थी: 'तुम मरना चाहते थे, इसलिए तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं तुम्हें मारने वाली नहीं हूँ।' उसने सालस्कर के कमरे में अपने बगल में रखे कुंद मुक्कों की ओर इशारा किया। 'ये भी तुम्हें नहीं मारेंगे।' उसने अजमल को इस बात को समझने का समय दिया।
‘ये लोग,’ मारिया ने कमरे में चारों ओर इशारा करते हुए कहा, ‘ऐसा करना चाहते हैं। लेकिन मैं इसकी इजाज़त नहीं दूंगी। तुम अपने मिशन में नाकाम हो गए हो क्योंकि तुम मरे नहीं हो। अब दुनिया को पता चलेगा कि तुमने कितनी बड़ी गलती की है। तुमने मेरे एक आदमी से कहा था कि तुम शहीद बनना चाहते हो। खैर, मेरे दोस्त, मेरे पास तुम्हारे लिए एक खबर है। अल्लाह तुम्हें नहीं चाहता। कोई नहीं चाहता। तुम्हारे दुख भरे जीवन की कहानी हमेशा की तरह जारी रहेगी।

किसी को कोई फ़र्क नहीं पड़ता। तुम एक बेचारे, दयनीय नाकामयाब इंसान हो, मरने की कोशिश में भी।’
मारिया के वार से अजमल कराह उठा। कैदी के सामने निराशा का एक बवंडर खुल रहा था, जो उसे बचपन से ही स्वीकृति न मिलने की याद दिला रहा था, जब उसके पिता उसे त्यागने के लिए बेताब थे। जबकि उसके साथी आज रात सड़कों पर अपना मिशन पूरा करने की कोशिश कर रहे होंगे, वह पहले ही देख चुका था कि उसे भारत द्वारा तय किए गए एक दिन तक जीवित रखा जाएगा, जिस दिन, उसे कोई संदेह नहीं था, उसे सिर पर कपड़ा डालकर फांसी दे दी जाएगी। उसके मन में एक आखिरी निराशाजनक विचार आया, जिसे वह हस्ताक्षरित और दिनांकित पर्ची पर एक वकील के साथ साझा करेगा। अब उसे समझ आ गया था कि उसकी फांसी के बाद भी कोई उसके शव पर दावा नहीं करेगा। उस क्षण, अजमल को एक भयानक बात का एहसास हुआ: मैं कभी घर नहीं जा पाऊंगा।
मारिया के मन में कई सवाल थे। ‘शहर में आप कितने लोग हैं? आप अपने साथ कौन से हथियार लाए हैं? आपकी योजना क्या है? आपको कौन सिखा रहा है?’ अजमल ने अस्पताल में उस मोटे पुलिसवाले को जवाब दिए थे, जिसका मुंह लाल पान से भरा हुआ था। अब उसे वही बातें दोबारा पूछनी पड़ीं। मारिया चुपचाप बैठी रही, उस लहजे को ध्यान से सुनती रही, नाक से निकलने वाले स्वर, सीटी जैसी आवाज़ वाला ‘स’ और लुढ़कता हुआ ‘र’, एक झूलती हुई वाक्य रचना और वाक्यांश जो किसी पेड़ के तने को आरी से काटने जैसा लगता था। यह पूर्वी पंजाब की आवाज़ थी: भूमिहीनता और गरीबी का मंजर। मारिया की राय में, वहां बच्चे बिकने के लिए पैदा होते हैं और मरने के लिए जीते हैं।
अजमल ने मछली पकड़ने वाले जहाज एमवी कुबेर की अनुमानित स्थिति का विस्तृत विवरण देते हुए बताया कि भारतीय नौसेना के जहाज के आने के डर से मची अफरा- तफरी में वे कुबेर को डुबाने या भारतीय कप्तान के शव को समुद्र में फेंकने का समय नहीं निकाल पाए थे। तटरक्षक बल को सूचना दे दी गई थी। उन्होंने पुष्टि की कि वे गलती से एक सैटेलाइट फोन और एक जीपीएस हैंडसेट वहीं छोड़ आए थे और उस पीले रंग की inflatable नाव का वर्णन किया जो उन्हें किनारे तक लाई थी। उन्होंने लश्कर द्वारा भर्ती किए जाने, प्रशिक्षित किए जाने और साजो-सामान दिए जाने के बारे में और अधिक जानकारी दी और फिर कराची से जहाज़ों को रवाना किया। उन्होंने खुलासा किया कि उनके संचालक भी वहीं थे। अंत में, मारिया को कुछ नया, एक अनमोल सुराग मिला, और उसने गफूर और खुफिया

विभाग के लोगों को संदेश भेजा: सारा तमाशा कराची के एक नियंत्रण कक्ष से नियंत्रित किया जा रहा था।
मारिया को अजमल का यह दावा स्वीकार करना मुश्किल लग रहा था कि शहर में सिर्फ दस लोग थे। इतने कम लोग इतना कहर कैसे बरपा सकते हैं? मारिया के दिमाग में उनकी कार्यशैली के सारे उपाय घूमने लगे और अंत में उसने बम धमाकों पर ध्यान केंद्रित किया। उसने सोचा कि चलती टैक्सियों में लगाए गए टाइमर वाले बम, जो पूरे शहर में फटते थे, ने इस ऑपरेशन को और भी बड़ा दिखाने की कोशिश की थी। कड़वी सच्चाई यह थी कि क्रिकेट टीम से भी कम एक आदमी ने पूरे देश को दहशत में डाल दिया था।
मारिया का काम पूरा हो चुका था। यहाँ की छोटी-मोटी कमियों को दूर कर दिया जाएगा, जिससे आलोचकों को शांत किया जा सके। उसने अपने नंबर दो, देवेन भारती और संयुक्त आयुक्त कानून व्यवस्था को संदेश भेजा, जो दोनों ताज होटल की लॉबी में मौजूद थे। होटल में केवल चार आतंकवादी थे, जिनके पास चार असॉल्ट राइफलें, चार पिस्तौलें और चालीस किलो आरडीएक्स था, जो निश्चित रूप से अब तक खत्म हो चुका था। उसे लगा कि हालात बदल रहे हैं, क्योंकि सूरज की हल्की रोशनी आखिरकार सातों द्वीपों पर फैल गई।
ताज होटल के अंदर देवेन भारती को एक अप्रत्याशित लाभ मिला। सुबह 5:40 बजे एक काले सूट पहने व्यक्ति ने पूल के पास मिला एक मोबाइल फोन लेकर बाहर आया। भारती ने फोन की जांच की और पाया कि उसकी मेमोरी में केवल एक ही नंबर सेव था - ऑस्ट्रिया का अंतर्राष्ट्रीय डायलिंग कोड।
भारती जब इसके अर्थ को समझने की कोशिश कर रही थी, तभी फोन की घंटी बज गई। स्क्रीन पर एक इनकमिंग नंबर दिखाई दिया। यह भी एक अंतरराष्ट्रीय कोड था, लेकिन ऑस्ट्रिया का नहीं। इसका प्रीफिक्स +1 201 था। भारती असमंजस में पड़ गए। उन्हें लगा कि यह तो न्यू जर्सी का कोड है। भारती को याद आया कि आईबी मुंबई में हमलावरों के अमेरिकी/ऑस्ट्रियाई कनेक्शन की जांच कर रही है। उन्हें क्या करना चाहिए? उन्होंने फोन उठा लिया।
‘सलाम अलैकुम।’ एक आवाज़ ने उनका अभिवादन किया और पूछा कि वे कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं। भाषा उर्दू थी, लेकिन भारती ने पंजाब के लहजे को भी पहचान लिया। उन्हें अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था। उन्हें पूरा यकीन था कि यह बंदूकधारियों का हैंडलर है। उन्हें कुछ कहना था, कुछ बनना था, कुछ पेशकश करनी थी, ताकि कॉल को लंबा खींचा जा सके।

'मैं एक वेटर हूँ, महोदय, क्षमा करें,' भारती ने यह देखते हुए कि बातचीत किस दिशा में जाएगी, अकड़कर कहा। 'मैं आपके एक आदमी के साथ हूँ और फोन की घंटी बजी इसलिए मैंने उठाया।'
‘उसने जवाब क्यों नहीं दिया?’ एक संदेह भरी आवाज ने जवाब दिया।
भारती को तुरंत सोचना पड़ा। 'आपका आदमी घायल है, महोदय।' यह मुश्किल साबित हो रहा था। 'वह बोल नहीं सकता, महोदय। उसने इशारा किया है कि मैं जवाब दूं।' फोन करने वाले ने फोन काट दिया। क्या भारती ने उसकी दिलचस्पी जगाने के लिए काफी कुछ किया था, या बस इतना ही था? क्राइम ब्रांच का नंबर दो अधिकारी उत्सुक और घबराया हुआ था। यह पूरा ऑपरेशन अवास्तविक था: लोग समुद्र के रास्ते उतरे, एक शहर को बंधक बनाया, ऑस्ट्रिया को फोन किया और अमेरिका में बैठे प्रतीत होने वाले संचालकों द्वारा दूर से नियंत्रित किया जा रहा था। यह उनकी कल्पना से परे था। क्या यह भी एक समस्या है?, भारती ने सोचा। हमारी कल्पनाशीलता की कमी? उसे फोन पैक करके उसकी जांच करवानी थी।
भारती ने महाराष्ट्र के संक्षिप्त प्रवक्ता और नई दिल्ली स्थित आईबी के संपर्क अधिकारी को फोन किया। उन्हें बताया गया कि अमेरिकी खुफिया समुदाय पहले से ही सहायता कर रहा था, क्योंकि उसने यह राय दी थी कि लश्कर इंटरनेट कॉल सिस्टम का उपयोग कर रहा था, जिसका अर्थ था कि सभी नंबर वास्तविक स्थानों के बजाय आभासी या लीज्ड लाइनें थीं।
भारती प्रभावित हुई। इसे लागू करना सस्ता और चलाना आसान था, स्काइप से बस थोड़ा ही ज़्यादा जटिल। लश्कर इस मामले में सबसे आगे था। लेकिन इतनी योजना के बावजूद, उससे चूक हो गई। एक बुनियादी मानवीय गलती ने पूरे गिरोह के पर्दाफाश को खतरे में डाल दिया। एक बंदूकधारी, जिसे अपनी जानकारी के साथ मरना था, जिंदा पकड़ा गया।
गोलियों की आवाज ने भारती को होश में ला दिया। चार बंदूकधारी अभी भी ताज होटल के अंदर खुलेआम घूम रहे थे और लोगों को मार-काट कर घायल कर रहे थे। उन्होंने प्रार्थना की कि राष्ट्रीय सुरक्षा बल जल्द ही पहुंच जाए।

सुबह 5:58 बजे – पांचवीं मंजिल

पुलिस कमांड पोस्ट से पांच मंजिल ऊपर, बैंकर के. आर. राममूर्ति एक जलते हुए कमरे में होश में आए।

उसे ठीक से पता नहीं था कि वह कितनी देर तक बेहोश पड़ा रहा, लेकिन किसी तरह चारों ओर लगी आग ने उसे अपनी चपेट में नहीं लिया था। स्प्रिंकलर से लगातार पानी बरस रहा था, जिससे चारों ओर काली और भाप निकल रही थी। एक जहरीली बदबू और ऊपर से आती तेज गर्जना उसे याद दिला रही थी कि किसी भी क्षण छत गिर सकती है। उसे उठना था और अपनी पीठ और गर्दन के चुभते दर्द को भूलना था। उसे अपनी अनियमित धड़कन और सांस फूलने की चिंता छोड़नी थी।
वह घुटनों के बल बैठ गया और उंगलियों से रास्ता टटोलते हुए रेंगने लगा। घना धुआँ सब कुछ धुंधला कर रहा था और उसकी आँखों में चुभ रहा था। कभी-कभी वह धूप सेंकती मछली की तरह लेट जाता, ताकि साँस ले सके। उसे नीचे जाने वाली सीढ़ियाँ ढूँढनी थीं। 'थोड़ा आराम कर लो,' उसने खुद से कहा और एक कोने में दुबक कर गहरी साँस ली। या क्या आराम अंत की शुरुआत थी? फिर से उठकर वह रेंगने लगा, उसके पैर जकड़े हुए थे, बाहें कमजोर थीं, क्योंकि आग उसके शरीर के तरल पदार्थों को सोख रही थी, उसे गर्म कर रही थी और उसे पीस रही थी। आखिरकार, राम ने पांचवीं मंजिल पर स्थित बिजनेस सेंटर को पहचान लिया। सामान्य दिनों में यह उसका दूसरा घर होता था। लेकिन धक्का-मुक्की करते हुए अंदर घुसते हुए, उसे मंद रोशनी में देखने में बहुत मुश्किल हो रही थी और टूटे हुए कांच पर उसके पैर चरमरा रहे थे। उसने उसे छूने के लिए हाथ बढ़ाया और उसका हाथ खून से लथपथ हो गया। वह रुक गया। जिन आलीशान कुर्सियों और वर्कस्टेशन से वह कभी ईमेल भेजा करता था, उनका नामोनिशान नहीं था। 'यह तो नरक है,' उसने कहा और पीछे हट गया, आगे क्या होगा, यह सोचकर वह और भी डर गया था। एक और काले, धुएं से भरे गलियारे में वह रेंगता हुआ गया और आखिरकार उसे नीचे की ओर जाती हुई कुछ रेलिंग मिल गईं। 'सीढ़ियों को गिनो,' उसने हांफते हुए खुद से कहा, जब तक कि उसे यकीन नहीं हो गया कि वह तीसरी मंजिल पर है, जहां धुआं छंटने लगा था।
‘रोशनी।’ धुएँ के बीच से उसे दिन की रोशनी की एक झलक दिखाई दी। वह रेंगता हुआ उस ओर बढ़ा और एक अतिथि कक्ष में पहुँचा जिसका दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था। अंदर कौन है?, उसने सोचा, और दबे पांव अंदर घुसते हुए प्रार्थना की कि कहीं वह किसी आतंकवादी नियंत्रण कक्ष में तो नहीं पहुँच गया। अंदर कोई नहीं था। राम एक दीवार के सहारे बैठ गया और सुनने लगा। कोई नहीं बताता कि आग कितनी भयानक होती है, उसने सोचा, क्योंकि उसके पीछे आग दहाड़ रही थी और सारी हवा निगल रही थी। खिड़कियों से रोशनी अंदर आ रही थी। राम समय का ध्यान

भूल गया था, लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि दिन हो गया है। उसके हाथ शीशे से छू गए। ‘मैं यहाँ हूँ,’ उसने खिड़की खोलकर ताज़ी हवा अंदर लेते हुए कहा।
वह चौखट पर चढ़ गया, जहाँ से वह दमकलकर्मियों को ताज होटल की समुद्र की ओर वाली दीवारों पर सीढ़ियाँ चढ़ाते और जलते कमरों से मेहमानों को बाहर निकालते देख सकता था। लगभग सात घंटों में पहली बार उसे उम्मीद की किरण दिखी। ऊपर देखते हुए उसने छठी मंजिल पर एक दमकलकर्मी को भीषण आग बुझाते देखा। 'मैं यहाँ हूँ। मैं यहाँ हूँ।' दमकलकर्मी मुड़ा और नीचे झाँका। उसने जाँच करने के लिए अपनी हाइड्रोलिक सीढ़ी को आगे बढ़ाया। अंत में, उसने इशारा किया। अंगूठा ऊपर उठाकर: 'तुम्हें पा लिया!' बैंकर भावुक हो गया। 'मैंने तुम्हें पा लिया है,' दमकलकर्मी दहाड़ा, नीचे झूलते हुए राम को चौखट से उठाकर अपनी जैकेट की तहों में भर लिया और बूढ़े को ऐसे गले लगाया जैसे वह उसका पिता हो। 'धन्यवाद,' राम ने काँपते हुए कहा। तभी उसकी नज़र नीचे किसी चीज़ पर पड़ी। 'वहाँ।' दूसरी मंजिल की ओर इशारा करते हुए उसने देखा कि एक महिला बंद खिड़की के पीछे बेतहाशा हाथ हिला रही है। सीढ़ी नीचे उसके पास गई और दमकलकर्मी ने कुल्हाड़ी से उसकी खिड़की तोड़ दी। कांच के टुकड़े राम पर बिखर गए, लेकिन राम को इसका ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। महिला रोते हुए टोकरी में घुस गई। राम की नज़र उसका मोबाइल फ़ोन पर पड़ी। ‘फ़ोन!’ राम ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। ‘प्लीज़!’ राम के हाथ काँप रहे थे जब उसने घर पर फ़ोन किया। जब उसने अपनी पत्नी की नींद भरी आवाज़ सुनी, तो वह बड़बड़ाने लगा: ‘मैं सुरक्षित हूँ। मैं सुरक्षित हूँ।’ वह फूट-फूटकर रोने लगा, आँसू उसके गले में अटक गए। ‘सब ठीक है। मैं ठीक हूँ।’ वह दर्द और खुशी से दहाड़ सकता था, लेकिन पत्नी अविचलित सी लग रही थी।
राम के बेटे ने फोन पर आकर बताया कि उसकी माँ जल्दी सो गई थी और अभी-अभी उठी है, इसलिए मुंबई में हुई घटनाओं के बारे में उसे कुछ पता नहीं था। राहत महसूस करने के बजाय, राम पूरी तरह टूट गया। वह अपने साथ हुए कष्टों, अपनी वास्तविक और काल्पनिक यात्रा, उस आतंक को कैसे समझाता, जिसने उसे अपने पैतृक गाँव कुट्टलम की याद दिला दी थी, और अपनी बुद्धिमान माँ के दर्शन करवा दिए थे, मायलापुर के मनोकामना पूरी करने वाले मंदिर की यात्रा जहाँ उसने देवी से मदद माँगी थी, वे यादें जो उसे मार-पीट और बंधन के दर्द से बचाती थीं। फिर वह एक भयंकर आग के बीच होश में आया, उसका आत्मसम्मान चकनाचूर हो गया, उसका शरीर नंगा हो गया, इस पीड़ा ने उसे अपने दिमाग में एक

शांत, एकांत जगह खोजने पर मजबूर कर दिया, जिसके अस्तित्व के बारे में उसे कभी पता ही नहीं था, और जहाँ से वह लगभग बाहर नहीं निकल पाया। जैसे ही सीढ़ी आखिरकार नीचे उतरी, वह घबराते हुए बुदबुदाया, 'मुझे यहाँ से दूर जाना है।'
पहले राम अपना फर्ज निभाना चाहता था। कांपते हुए वह पास के पुलिसकर्मी के पास गया और अपना परिचय दिया: के. आर. राममूर्ति – बैंकर, बंधक। उसने अपनी गिरफ्तारी और भागने की हर घटना को ऐसे समझाया जैसे किसी विस्तृत सबूतों की फाइल में लिखा हो। लेकिन थके हुए पुलिसकर्मी ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। राम ने मन ही मन कहा, 'किसी को परवाह नहीं।' वह गुस्से में, निराश और टूटा हुआ शहर की ओर चल पड़ा।
एक कार, जिसकी हेडलाइट्स अभी भी जल रही थीं, रुकी। लड़खड़ाते हुए, फटे और जले हुए पायजामे में राम शायद गिरने ही वाला था। क्या उसे लिफ्ट चाहिए? उसने कृतज्ञतापूर्वक सिर हिलाया और कार में बैठ गया, घंटों के दर्द के बाद नरम सीटें उसे आरामदायक लग रही थीं। वह बिल्कुल शांत बैठा रहा, गहरी साँसें लेता और छोड़ता रहा, विनाइल और पेट्रोल की जानी-पहचानी सी गंध को अंदर लेता रहा। 'क्या आप मुझे खार, मुंबई तक ले जा सकते हैं?' उसने फुसफुसाते हुए कहा, उस उपनगर का जिक्र करते हुए जहाँ उसका भतीजा रहता था, राम एक बार फिर अजनबियों के सहारे पर निर्भर था। 'भारतीय,' उसने मन ही मन कहा, 'अभी भी भारतीय ही हैं।'

महल की दूसरी मंजिल पर, अमित और वर्षा थडानी अभी भी 253 नंबर कमरे में फंसे हुए थे, और डगमगाती हाइड्रोलिक सीढ़ियों को झूलते जिराफों की तरह इधर-उधर हिलते हुए देख रहे थे। बाहर गलियारे में आग की लपटें किसी सुरंग से गुजरती ट्रेन की तरह गरज रही थीं। खिड़की से वे मेहमानों को नीचे उतारे जाते देख सकते थे। कुछ मेहमान इतने करीब थे कि उन्हें आवाज़ दी जा सकती थी, लेकिन नवविवाहित जोड़ा हिचकिचा रहा था और इशारे कर रहा था, स्नाइपर की गोली के डर से चुप था। फिर अमित ने वर्षा को उठाया और खिड़की के किनारे पर बिठा दिया। ऐसा लग रहा था कि वे महिलाओं और बच्चों को प्राथमिकता दे रहे थे। उसने और भी गुस्से से हाथ हिलाया और अपनी पत्नी की ओर इशारा किया। नीचे एक आदमी रेडियो पर बात कर रहा था और वर्षा ने अमित से एक सफेद तौलिया लाने को कहा जिसे उसने अपने सिर के ऊपर फड़फड़ाया।

एक सीढ़ी ऊपर उठ रही थी, और उसे उम्मीद थी कि वह उन्हीं के लिए है। अमित ने वर्षा की कमर पकड़ रखी थी और वे सीढ़ी को हिलते हुए देख रहे थे। वह सीढ़ी उन्हीं के लिए आ रही थी। टोकरी में बैठे एक अधिकारी ने उनकी दिशा में इशारा किया। अब कोई शक नहीं था; एक दमकलकर्मी थडानी परिवार को बचाने आ रहा था। उसने वर्षा को पंख की तरह हल्का उठाया, और अमित उसे गले लगाते हुए नीचे उतरा, दोनों को चक्कर आ रहा था। एक झटके और कंपन के साथ, वे कुछ ही मिनटों में जमीन पर थे, घेराबंदी के भंवर में, पत्रकारों से घिरे हुए: आपने कितनी लाशें देखीं? क्या आपने किसी को फांसी देते देखा? बंदूकधारियों से धमकी मिलना कैसा लगा? क्या आपको लगा कि आप मर जाएंगे? जिंदा रहना कैसा लगता है? अमित ने यही सब सुना। खून में शुगर की कमी से जूझते हुए, उन सभी को नोच डालने की इच्छा से, उसे अचानक वर्षा के लिए असीम प्यार महसूस हुआ और भीष्म, गुंजन नारंग और अपने बाकी सभी दोस्तों के लिए डर से कांप रहा था जो फंसे हुए थे।
वर्षा को खींचकर वह ताज होटल से जितना हो सके उतनी दूर, जितनी जल्दी हो सके, भागने की ठान चुका था। उसे अपने पेडर रोड वाले अपार्टमेंट में घर पहुँचना था। अगर कोई पुलिसवाला उसे रोक लेता, तो वह वहीं रुक जाता। यही एक चीज़ थी जो उसे रोक सकती थी। अमित अब गुस्से से पागल हो चुका था। वह हर बात का ब्योरा देना चाहता था। वह उन बंदूकधारियों को फांसी पर चढ़ते देखना चाहता था। पिछले नौ घंटों में उसने जो कुछ सुना, देखा, महसूस किया और सूंघा था, उसका ब्यौरा लिख लिया था। दोनों में से कोई भी पड़ोस में रहने वाली महिला को उसके छिपने की जगह से घसीटकर निकाले जाने और मारे जाने की आवाज़ नहीं भूल सकता था। लेकिन जिन जासूसों से उसने संपर्क किया, वे चिड़चिड़े लग रहे थे। 'भारतीय नियम,' उसने मन ही मन सोचा, यह सोचते हुए कि उपमहाद्वीप में अंत करने का तरीका कितना बुरा है।
शादी के रिसेप्शन के बचे हुए हिस्से से दूर जाते हुए अमित को एक जाना- पहचाना चेहरा दिखाई दिया। चेहरों को याद रखने की अपनी अद्भुत क्षमता के कारण, अमित उसका नाम याद करने की कोशिश कर रहा था। आज शाम बहुत कुछ हो चुका था और उसका सिर दर्द कर रहा था। लेकिन फौजी चेहरे वाला वह बड़ा आदमी उनकी तरफ बढ़ता रहा। पास आते ही वह प्रेत जैसा लगने लगा। भूरे चेहरे वाला, बिना दाढ़ी वाला और आंखों के चारों ओर गहरी लकीरों वाला वह आदमी आगे बढ़ा और अपने बड़े हाथ बढ़ाते हुए बोला, 'अगर हम आपके लिए कुछ कर सकते हैं, तो कृपया

प्रेसिडेंट होटल चले जाइए, जहां हम आपका ख्याल रखेंगे।' उस आदमी ने मुस्कुराया, और हालांकि अमित को इसमें कोई शक नहीं था कि वह मुस्कुरा रहा था, लेकिन अंदर से वह स्तब्ध रह गया। 'वह कौन था?' वर्षा ने अजनबी की आकर्षक आंखों को देखकर पूछा। 'करमबीर कांग,' अमित ने अविश्वास से बुदबुदाया, 'उसका परिवार... छठी मंजिल पर रहता था।'
वर्षा ने ऊपर जलती हुई सबसे ऊपरी मंजिल की ओर देखा। रोते हुए उसने कहा, 'वे बच नहीं पाए होंगे।' अमित सोच रहा था कि इस समय काम ही उसे संभाले हुए है, और उसे ताज के महाप्रबंधक के नाम के बारे में किसी की बताई एक कहानी याद आ गई। उसकी माँ एक सिख संत से मिलने गई थी, जिन्होंने दुष्ट दमन नाम सुझाया, जिसका अर्थ है 'राक्षसों का नाश करने वाला'। माँ ने कहा कि यह नाम बच्चे के लिए ठीक नहीं है, और इसके बजाय उन्होंने करमबीर नाम रखा, जिसका अर्थ है 'वीर कर्म करने वाला व्यक्ति'।
अमित ने अपने भाई को फोन किया, जिससे उसने शाम को पहले थोड़ी कहा-सुनी की थी। वे गेटवे पर मिले और सारी कड़वाहट गायब हो गई। उसके भाई ने चुटकी लेते हुए कहा, 'खुशी हुई कि तुम हमारे साथ आ गए।' अमित ने पहली बार खुलकर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'हम ही सब कुछ संभाल रहे थे।' उसका जाना-पहचाना संक्षिप्त अंदाज़ फिर से लौट आया था। उसने कहा, 'हमें घर छोड़ दो।' उन्हें नहाना था और कपड़े बदलने थे। उसे खाना भी खाना था। अमित को बहुत भूख लगी थी।
जैसे ही वे चले गए, ताज होटल के सामने वाले हिस्से में हलचल मच गई। एक राहगीर ने कराहने की आवाज़ सुनी और जाँच करने गया, जहाँ उसे एक व्यक्ति ज़मीन पर पड़ा मिला। उसने चिल्लाकर कहा, 'यह एक विदेशी है। तुरंत एम्बुलेंस बुलाओ।' तैयार खड़ी एम्बुलेंस टीम पास पहुँची और बीस साल के उस युवक की जाँच करने लगी, जिसकी दाढ़ी कहीं-कहीं बढ़ी हुई थी और बाल बिखरे हुए थे।
उनमें से एक ने उसकी हांफती हुई सांसों को सुनते हुए कहा, 'वह जीवित है।' 'क्या आप हमें अपना नाम बता सकते हैं? अपने देश का नाम?' घायल व्यक्ति कराह उठा, उसकी आंखें घूम गईं। उन्होंने उसकी गर्दन पर एक पट्टी बांधी और उसके नीचे एक स्ट्रेचर खिसकाया। जैसे ही उन्होंने स्ट्रेचर उठाया और उसे बॉम्बे अस्पताल की ओर जाने वाली एम्बुलेंस के पिछले हिस्से में रखा, वह चीख उठा।

भूतल पर स्थित एक जांच कक्ष में, उसके कपड़े उतारे गए, जबकि आपातकालीन विभाग का एक डॉक्टर उसकी चोटों की जांच कर रहा था और एक नर्स बेहोशी की दवा लेकर तैयार खड़ी थी। मरीज के चीखने पर डॉक्टर ने लिखा, 'कूल्हे की हड्डी चकनाचूर हो गई है।' करीब से देखने पर पता चला कि कूल्हे की हड्डी दो हिस्सों में टूट गई थी, इतनी बुरी तरह से कि हड्डी के ऊपरी या निचले हिस्से पर बहुत ज़ोर लगा होगा। डॉक्टर ने मरीज के शरीर और जोड़ों को टटोलते हुए कहा, 'यह आदमी गिरा या कूदा होगा।'
‘दाहिनी कोहनी बुरी तरह टूट गई है,’ उसने लिखा। बायां हाथ फ्रैक्चर हो गया है, जहां उसने गिरने से बचने की कोशिश की थी। उसे एक्स-रे और एमआरआई स्कैन की ज़रूरत होगी। डॉक्टर को आशंका थी कि रीढ़ की हड्डी भी टूट गई है, क्योंकि उसके पैर सुन्न लग रहे थे। दर्द शरीर के ऊपरी हिस्से में केंद्रित था, जिसका मतलब था कि मुख्य चोट उसकी पीठ के मोड़ में थी। डॉक्टर को उम्मीद थी कि उसका निदान गलत हो, क्योंकि टी12 फ्रैक्चर का मतलब लकवा होता है। एक नर्स ने इंजेक्शन तैयार किया और मरीज की आंखें खुल गईं। घबराकर उसने हाथ-पैर पटकने की कोशिश की, लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि उसके हाथ-पैर मुश्किल से हिल पा रहे हैं। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा: ‘केली, केली, केली।’

सुबह 6.50 बजे – चैंबर्स

ताज होटल के प्राइवेट क्लब के अंदर, ब्लैकआउट पर्दों के किनारों से सूरज की रोशनी छनकर आ रही थी। लगभग सात घंटे के अंधेरे के बाद, सुबह भीष्म मनसुखानी के लिए किसी वरदान से कम नहीं थी, जिससे उनका मन प्रसन्न हो गया, लेकिन तभी उनकी नज़र उन भयानक घटनाओं पर पड़ी: दीवारों पर गोलियों के अनगिनत निशान। पत्रकार चाहता था कि यह सब जल्द से जल्द खत्म हो जाए। वह मौत का इंतज़ार करते-करते थक चुका था।
कहीं झड़प शुरू हो गई। गालियों की आवाजें, बर्तन फेंके गए या कड़ाही गिराई गई और फिर से गोलीबारी शुरू हो गई। एक कांच का पैनल टूट गया। बंदूकधारी घात लगाए बैठे थे। उसने अपनी मां की दोस्त, डॉ. तिलू की ओर देखा, जो अभी भी घायल इंजीनियर राजन कांबले का इलाज कर रही थीं। अब हर कोई घाव में संक्रमण की गंध महसूस कर सकता था। मरीज की हालत बिगड़ती जा रही थी। भीष्म इस संकट पर सुस्त प्रतिक्रिया देखकर गुस्से से उबल रहा था। इतने घंटे बीत जाने के बाद

भी बचाव दल क्यों नहीं आया? उसने डॉ. तिलू के मुरझाए चेहरे और अपनी शांत मां के चेहरे को देखा और एक भयानक विचार उसके मन में आया जिसने उसे फिर से घबराहट में डाल दिया। दिन के उजाले ने उनका एकमात्र आश्रय छीन लिया था। उसने अपना फोन उठाते हुए सोचा कि बाहर मौजूद बाकी लोगों का क्या हुआ होगा। 'अमित, क्या तुम बाहर हो? क्या वर्षा ठीक है? कृपया जवाब दो।' कोई जवाब नहीं आया।
उसने सुबह 6:52 बजे अपनी दोस्त अनाहिता को संदेश भेजा: 'बाहर भारी गोलीबारी हो रही है।' क्या उसने समाचारों में किसी बचाव अभियान के बारे में कुछ सुना था?
भीष्म को ऐसा लग रहा था जैसे वह डूब रहा हो। बाहर मौजूद दोस्तों ने भी इसे भांप लिया और उसका साथ देने के लिए एकजुट हो गए। सुबह 7:23 बजे, एक अन्य मित्र, एंटोनी ने संदेश भेजा: 'हिम्मत रखो, हम सब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।'
तीन मिनट बाद, भीष्म ने बेजान स्वर में उत्तर दिया: 'मुझे उम्मीद है कि मैं बाहर निकल जाऊंगा, मुझे उम्मीद है कि सभी लोग बाहर निकल जाएंगे।'
सुबह 7.38 बजे एंटोनी ने उसे जवाब दिया: 'मुझे यकीन है कि तुम कर लोगे। पुलिस लगभग स्थिति को नियंत्रण में कर चुकी है।'
उसे कैसे पता चला? कक्ष अभी भी स्वचालित हथियारों की गोलियों की आवाज़ से गूंज रहा था। भीष्म ने अपनी माँ की ओर देखा, जो प्रार्थना करते हुए आधी बंद आँखों से लीन थीं। उसे इस बात से चिढ़ थी कि वह साधारण चीज़ों को असाधारणता का प्रमाण बना देती थीं, और उनकी अच्छाई उसे बुरा महसूस कराती थी। वह उनके शराब-मुक्त जीवनशैली और अटूट शाकाहार से चिढ़ता था, जबकि उसे मोंटेपुलसियानो वाइन के एक गिलास से बेहतर कुछ नहीं सूझता था। चारों ओर गोलीबारी करते बंदूकधारियों के बीच कक्ष में फँसे रहना, उन्हें यह दिखाता था कि कोई परम सत्ता नहीं है। यह सब भाग्य का खेल है। लेकिन उनकी अभिव्यक्ति में उसे इसका ठीक उल्टा दिखाई दिया। भीष्म ने मन ही मन कहा, "वह सोचती हैं कि हम सब अब तक उनकी मान्यताओं के कारण ही जीवित हैं।" लाइब्रेरी के गलियारे में, अंजली पोलैक भी सोच रही थी कि सुबह क्या होगा। उसके बच्चे जल्द ही जागने वाले थे और वह उन्हें जगाने के लिए आसपास नहीं थी। जैसे ही 'आह, आह, आह' की आवाज़ फिर से तेज़ हुई, उसने माइक को उसके गुप्त

ठिकाने में संदेश भेजा। यह कब तक चलेगा? उसने तुरंत जवाब दिया। वह सुरक्षित था। यह उसके लिए सबसे अच्छी खबर थी जिसकी वह उम्मीद कर सकती थी। कमरे के दूसरे कोने में सोफे पर धंसे हुए, एंड्रियास के क्रूज़ डायरेक्टर, रमेश चेरुवोथ, किसी तरह होश में थे, हालांकि उनकी कमीज़ और पैंट खून से लथपथ थे। उनके कंधे और पीठ में जलन हो रही थी, जहां दो गोलियां लगी थीं। अगर मुमकिन होता, तो उन्हें कुछ करना होता और वे एंड्रियास लिवेरस को भी उठाना चाहते थे, लेकिन बॉस सोफे पर सो गए थे। तभी मोबाइल का अलार्म बज उठा। 'पाह। पाह। पाह।' डरे हुए मेहमानों ने शोर बंद करने की गुहार लगाई, जिससे कमरे में सन्नाटा छा गया। यह रमेश का फोन था। 'मेरी गलती,' उन्होंने कराहते हुए कहा। उन्होंने चारों ओर देखा, उन्हें नाराज़ और गुस्से से भरे चेहरे दिखाई दिए। वे उठकर चिल्लाना चाहते थे: 'मुझे गोली लगी है और मैंने ज़रा भी आवाज़ नहीं की।' लेकिन हंगामा करना उनकी आदत नहीं थी।
एलीसिया के स्पा में काम करने वाली लड़कियों में से एक, नाओमी ने धीरे से उसका हाथ दबाया। 'रेमेश,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'अभी बात मत करो,' उसने दर्द से कराहते हुए जवाब दिया। उसने फिर से उसकी आस्तीन खींची। 'रेमेश।' वह समझ नहीं पाया। वह उसके पास रेंगकर आई। 'श्री एल.,' उसने कहा। उसने सिर हिलाया। 'श्री एल. मर चुके हैं।' रेमेश ने अपना सिर हिलाया। 'देखो,' उसने एंड्रिया की टांग चुटकी से दबाते हुए कहा। लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई और मांस ठंडा महसूस हुआ। रेमेश ने अपने बॉस के शरीर पर हाथ फेरा, प्रार्थना कर रहा था कि वह गलत हो। लिवरास की राख जैसी कनपटी पर खून का थक्का देखकर वह स्तब्ध रह गया। एक गोली उसके सिर से आर-पार हो गई थी। उसे मरे हुए दो घंटे हो चुके थे और रेमेश को इसका एहसास भी नहीं हुआ था।
रमेश पूरी तरह टूट गया था। दुबई बोट शो में पहली मुलाकात के बाद से वे लगभग एक दशक से एक-दूसरे को जानते थे। समुद्र के प्रति उनके साझा प्रेम ने शांत स्वभाव वाले केरलवासी और महत्वाकांक्षी साइप्रसवासी को एक साथ ला दिया था। उन्होंने श्री लिवेरस के लिए चार साल काम किया था और अपने चिड़चिड़े बॉस से उन्हें प्यार हो गया था, जो हर क्रिसमस और ईस्टर पर मालदीव जाकर अपने सभी कर्मचारियों, चाहे वे डेकहैंड हों या कप्तान, के साथ विशेष लंच करते थे। अब, उनकी सबसे बड़ी ज़रूरत के समय, रमेश को लगा कि उसने उन्हें धोखा दिया है। उसने किसी तरह अपना फोन छीना और एलिसिया के कप्तान को फोन किया। 'श्री एल. की मृत्यु हो गई है,' उसने धीरे से रोते हुए फुसफुसाया और

कहा कि वह और लड़कियाँ फँस गई हैं। फिर उसने लंदन में रहने वाले लिवेरस के बेटे डियोन को फोन किया, जिसे वह अच्छी तरह जानता था। 'श्री डियोन,' रमेश ने मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज़ में कहा, और अब वह चैंबर्स के फर्श पर लेट गया था, यही एकमात्र स्थिति थी जिसमें उसे दर्द महसूस नहीं हो रहा था: 'मुझे बहुत अफ़सोस है, लेकिन आपके पिताजी चले गए हैं। श्री एल. अब हमारे बीच नहीं हैं।' कृपया मुझ पर विश्वास कीजिए, हमने अपनी पूरी कोशिश की।’ डियोन के गहरी सांस लेने पर उन्होंने अपनी चोटों के बारे में कुछ नहीं कहा। ‘हे भगवान,’ उन्होंने कहा, ‘रमेश, क्या तुम ठीक हो?’ वह बुरी तरह से घबरा गए थे। ‘हमें अपने लोगों और परिवार को सूचित करना होगा। मैं अभी इस पर काम शुरू करता हूँ।’
रमेश का सिर दुख से चकरा रहा था। उसकी नज़र के कोने से उसने देखा कि कुछ मेहमान गलियारे में चुपके से निकल रहे हैं। वे क्या सोच रहे थे? आह, आह, आह। कमरे के अंदर मौजूद लोगों को टूटी हुई लकड़ी की गंध आ रही थी, क्योंकि वही मेहमान वापस भाग रहे थे और पेट के बल गिर पड़े थे। आह, आह, आह। ऐसा लग रहा था जैसे चारों ओर से और भी ज़ोरदार गोलीबारी हो रही हो। बाहर गलियारे में गोलियों की बौछार हो रही थी। रमेश ने अपने कान ढक लिए, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कब तक यह सब सह पाएगा, क्योंकि पुस्तकालय में संदेशों की बाढ़ आ गई थी और मेहमान अपने फोन निकाल रहे थे। एक महिला ने कहा: 'सरकार ने एक अभियान शुरू किया है। एनएसजी शहर में है। ब्लैक कैट्स ताज होटल आ रहे हैं।' कमरे में रोमांच की लहर दौड़ गई।
रमेश पीछे लेट गया, उसका मन कालीकट की ओर भटक गया, जो उसका गृह नगर था, केरल के मालाबार तट पर स्थित मसालों का शहर, जहाँ उसकी पत्नी और छह वर्षीय बेटा खबर का इंतजार कर रहे थे। पिछली रात की अफरा-तफरी में उसने उन्हें फोन तक नहीं किया था। अब फोन करते हुए उसने कहा, 'सुप्रभात। मुझे ज्यादा देर नहीं लगनी चाहिए क्योंकि मैं ताज होटल में फंसा हुआ हूँ। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। टूटे हुए कांच से थोड़ी चोट लग गई है। ठीक हो जाएगा। मेरे लिए प्रार्थना करना। आप सभी को प्यार।'

बंदरगाह पर, एलिसिया जहाज पर सवार मेहमान और चालक दल के सदस्य सूरज की गर्माहट से जागने लगे थे। उनकी निगाहें तुरंत जलते हुए ताज होटल पर टिक गईं। रात बीत चुकी थी, लेकिन खतरा टला नहीं था। पहली बार वे उस भव्य पुराने

होटल के चारों ओर मची अफरा-तफरी का नजारा देख पा रहे थे: आग की लपटें चारों ओर फैल रही थीं, दमकल गाड़ियां पुलिस की गाड़ियों के बीच से निकल रही थीं, छलावरण वाली लॉरियां और खाकी जीपें इंजन की तेज रफ्तार से चल रही थीं। भारी भीड़ ध्यान से देख रही थी और आहें भर रही थी, जब दमकलकर्मी मेहमानों को सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहे थे।
निक एडमिस्टन विपरीत दिशा में, समुद्री धुंध में घूर रहा था। उसे मुश्किल से नींद आई थी: पूरी रात नौसेना ने फ्लेयर्स दागे थे, अंधेरे पानी को रोशन करने के लिए बेचैनी से, कहीं और बंदूकधारी न आ रहे हों। हर बैंगनी और लाल रंग के धमाके ने एलिसिया को रोशन कर दिया था। अगर किनारे पर किसी ने उन पर गोली चला दी होती, तो क्या होता, क्योंकि वे पानी में सबसे बड़े और सबसे अजीब प्राणी थे? या उन पर हमला हो जाता? 5,000 मील तक जाने के लिए पर्याप्त ईंधन से भरी नाव भागने के लिए एक कारगर साधन साबित हो सकती थी। उन्होंने पूरी रात छिपने की जगहें तय करने और हथियार के रूप में इस्तेमाल की जा सकने वाली चीजों पर विचार करने में बिताई थी। उन्हें बस एक छोटी सी जगह मिली थी जो एक साफ-सुथरे पुजारी के छिपने की जगह बन सकती थी और जिसमें एक आपातकालीन जनरेटर और एक कुल्हाड़ी रखी थी। निक सोच रहा था कि इसे कौन चला सकता है। अब, दूर क्षितिज पर टकटकी लगाए, छोटी-छोटी मछली पकड़ने वाली नावों को अपना शिकार लेकर लौटते हुए देखकर, उसके मन में अलग ही चिंताएँ थीं। वे कल रात बिना कुछ जाने ही निकल गए होंगे और एक ऐसे शहर में लौट रहे थे जिसका अब कोई अस्तित्व नहीं था। हो सकता है उनमें बंदूकधारी भी हों। सब कुछ खतरनाक लग रहा था।
एस्टोनियाई कप्तान पास आया और निक को एक तरफ खींचकर बोला, ‘सर, मेरे पास एक बहुत बुरी खबर है। श्री लिवेरस का निधन हो गया है। मुझे बहुत खेद है।’ निक का चेहरा पीला पड़ गया, वह इस बात को समझ नहीं पा रहा था। एंड्रियास से काफी समय से कोई संपर्क नहीं हुआ था, लेकिन उन्होंने यही मान लिया था कि उसका फोन बंद हो गया है। निक ने नम आंखों से कहा, ‘अभी कुछ मत कहिए। पहले इस नाव को खाली करवा लीजिए, फिर हम एंड्रियास के लिए कुछ और सोचेंगे।’ मेहमानों को किनारे तक पहुंचाने के लिए एक नाव आकर रुकी। निक के भारतीय साथी रतन कपूर ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए अपने धनी और उद्यमी पिता से शराब बनाने और हवाई जहाज़ के मालिक विजय माल्या को फ़ोन करवाया, जिनके पास समुद्री क्षेत्र में काफी संसाधन थे। माल्या ने अपने बेड़े के

प्रमुख के रूप में एक सेवानिवृत्त कमोडोर को नियुक्त किया था और उन्होंने अपने सेवारत नौसेना सहयोगियों से निकासी शुरू करने की अनुमति देने का अनुरोध किया था। कुछ 'अल्ट्रा' लोगों को तीस मिनट की नाव यात्रा करके खाड़ी के पार अलीबाग ले जाया गया। वे भी पूरी रात अपने संपर्कों को फ़ोन करते रहे और अपने ड्राइवरों को शहर से बाहर एक तय स्थान पर मिलने के लिए रवाना होने को कहते रहे। उनके हीरे जड़े बेल्ट बकल और पेटेंट जूते, चमड़े की पतलून और साटन गाउन, दिन के उजाले में बेमेल लग रहे थे। रतन ने निक को समझाया, 'वे मुंबई की अराजकता में नहीं फंसना चाहते।' जिन मेहमानों के पास संसाधन थे, वे सभी इस जलते हुए शहर से निकलने का रास्ता तलाश रहे थे।
अंततः एलिसिया शांत हो गई। नाव बंद होने के बाद, केवल एडमिस्टन परिवार और उनके कर्मचारी ही उस पर रह गए। निक ने अपने बेटे वुडी को पाया। 'एंड्रियास मर गया है,' उसने कहा। उसकी आवाज़ में पश्चाताप झलक रहा था। वुडी ने घबराकर कहा, 'यह कैसे हो सकता है...?' अदम्य एंड्रियास ने एक सुखमय जीवन जिया था। 'यह संभव नहीं लगता।' वुडी ने अपने संयमित पिता की ओर देखा। वह कभी कोई भावना क्यों नहीं दिखाते थे? 'क्या आपको परवाह नहीं है?' वुडी गुस्से से बोला। निक अचानक दहाड़ उठा, उसकी आँखों में आँसू भर आए, जैसे रात भर का सारा तनाव बाहर निकल आया हो।

दिन के उजाले में टेलीविजन पर ताज होटल को जलते हुए देखकर व्याकुल शेफ अर्बानो रेगो अपने बेटे के लिए प्रार्थना कर रहे थे। शाम ढलते समय उन्हें शामियाना के शेफ बोरिस का फोन आया था, जिसमें उन्होंने पुष्टि की थी कि बोरिस किसी तरह रसोई में हुए भीषण नरसंहार से बच गया है। अर्बानो बेहद खुश थे। उनके 25 वर्षीय बेटे ने जून में ही ताज होटल में काम शुरू किया था। भोर होते ही परिवार को एक और फोन आया, एक जानी-पहचानी आवाज़ हैंडसेट पर फुसफुसा रही थी। 'मैं अभी भी सुरक्षित हूँ। मेरे बारे में चिंता मत करो।' एक बार फिर बोरिस था। युवा शेफ एक बार फिर बंदूकधारियों को चकमा देने में कामयाब हो गया था। उसने कहा, 'मैं तहखाने में हूँ। यहाँ हममें से सैकड़ों लोग हो सकते हैं।'
परिवार गोवा में मांडोवी नदी के किनारे बसे दिवर द्वीप पर इकट्ठा हुआ और अगली खबर का बेसब्री से इंतज़ार करने लगा। कुछ देर बाद, उनके छोटे भाई केविन को एक कॉल आया। उन्होंने ध्यान से सुना, लेकिन दूसरी तरफ कोई नहीं

था। केविन फोन रखने ही वाले थे कि उन्हें एक कर्कश आवाज सुनाई दी। उन्होंने ध्यान से सुना और इंतज़ार किया। फिर एक आवाज़ आई, पतली और कांपती हुई; एक रहस्यमयी मौजूदगी: 'केविन? डैडा?'
उस शब्द का प्रयोग केवल एक ही व्यक्ति ने किया। वह बोरिस था। अवाक केविन ने फोन अपने पिता को थमा दिया। 'हां, बाबा, मैं आपको सुन सकता हूं,' अर्बानो ने कहा, उनका चेहरा सिकुड़ गया था। 'बाबा, मैं आपको सुन सकता हूं। बाबा,' उन्होंने फोन पर गुनगुनाया। लेकिन अब उन्हें केवल सन्नाटा ही सुनाई दे रहा था।

ताज होटल में, केली डॉयल ने आखिरकार लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा और आसमान के गुलाबी रंग में बदलने के साथ ही दमकल कर्मियों ने उसे नीचे उतारा। विल के गिरने के बाद उसने अपने पिता से संदेश के ज़रिए संपर्क किया था, और खुद पर काबू रखने की कोशिश कर रही थी। 'कृपया शांत रहें,' निगेल ने विनती की, क्योंकि वह किसी भयानक दुर्घटना के उसके उलझे हुए बयान को पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था। उसने कहा कि वह विदेश मंत्रालय को सूचित करेगा और तुरंत मुंबई आएगा, विल के शव को स्वदेश वापस लाने के भयावह सपने के बारे में सोचते हुए। वह केली की माँ को भी साथ लाएगा।
होटल के बाहर, सांत्वना देने वाला कोई न होने पर, केली उन लोगों की अराजक भीड़ में समा गई जो अपने-अपने निजी दुखों में डूबे हुए थे। वह अपनी बात किसी को समझा नहीं पा रही थी, लेकिन किसी न किसी तरह उसे मदद मिल ही जाएगी। बिना पैसों के और बिना किसी जानकारी के कि विल का शव कहाँ ले जाया गया था, वह पूरे शहर में भीख माँगती रही, एक के बाद एक अस्पताल जाती रही, नंगे पैर और वही पोशाक पहने हुए जो उसने उस डिनर पार्टी में पहनी थी जो कभी हुई ही नहीं। आपातकालीन विभाग किसी युद्धक्षेत्र जैसे लगते थे और वह उनमें भटकती रही, विल का नाम पुकारती रही, यह सोचती रही कि कब उसमें इतनी हिम्मत आएगी कि वह मुर्दाघरों में कफ़न उठा सके।
आखिरकार वह बॉम्बे अस्पताल पहुंची, जहां अमित पेशावे अभी भी अपने सहयोगियों की देखभाल में लगे हुए थे। इधर-उधर घूमते हुए, उन्हें एक बगल के कमरे की ओर इशारा किया गया, जहां एक अज्ञात यूरोपीय व्यक्ति प्लास्टर में लिपटा हुआ था। सदमे से उसका चेहरा पीला पड़ गया था, और उसके शरीर के जो हिस्से अभी भी दिखाई दे रहे थे, वे खून और गंदगी से सने हुए थे। उसकी छाती

से इलेक्ट्रोड जुड़े हुए थे और एक प्लास्टिक की थैली से उसके रक्त में तरल पदार्थ पहुंचाया जा रहा था, उसके कंधे पर ऑक्सीजन सिलेंडर था और उसकी नाक और बांह में पारदर्शी ट्यूब लगी हुई थीं। उसने उसके चेहरे और बालों को गौर से देखा। 'विल,' वह अचानक चिल्लाई। यह निश्चित रूप से विल ही था। उसकी छाती तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थी और उसके चारों ओर मशीनें बीप कर रही थीं और चमक रही थीं, उसके महत्वपूर्ण संकेतों की निगरानी कर रही थीं। विल जीवित था। 'विल।' ऐसा लग रहा था जैसे उसने उसकी आवाज नहीं सुनी हो। खुशी और उलझन में डूबी हुई, उसने एक नर्स को पकड़ने की कोशिश की क्योंकि वह यह पता लगाने के लिए संघर्ष कर रही थी कि उसे क्या हुआ है। उसकी बांह से मॉर्फिन की ड्रिप लगी हुई थी। 'विल,' वह चिल्लाई। उसने उसके चेहरे को गौर से देखा, जैसे ही उसकी पलकें फड़कने लगीं। वह होश में आया और ऊपर उसकी ओर देखने लगा, फिर अपने आसपास के वातावरण को देखने लगा, उसकी नज़र तारों, ट्यूबों और केबलों के विशाल जाल पर टिक गई। उसके बगल में लगी एक मशीन से अलार्म की आवाज़ आई और उसकी पलकें फिर से तेज़ी से बंद हो गईं।
‘उसकी हालत बिगड़ रही है!’ केली चीखी। वह उसे दोबारा खोना नहीं चाहती थी। ‘मेरे प्रेमी, कृपया मदद करो...’ एक सर्जन अंदर आया और उसने अपना परिचय समीर दलवी के रूप में दिया, जो रीढ़ की हड्डी की चोटों का विशेषज्ञ था। ‘कृपया धैर्य रखें,’ उसने उनके चारों ओर फैली अफरा-तफरी की ओर इशारा करते हुए कहा। विल सदमे में था। उसकी टूटी हुई पेल्विस की आपातकालीन सर्जरी की ज़रूरत थी, लेकिन दलवी ही एकमात्र कंसल्टेंट थे जो अस्पताल पहुँच पाए थे और वे एक साथ तीन ऑपरेशन थिएटरों की देखरेख कर रहे थे। केली ने सिर हिलाया, वह इतनी डरी हुई थी कि विल के होश में आने पर उससे कुछ पूछ नहीं पाई। ‘केली,’ उसने धीरे से कहा, ‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ।’ वह हल्की सी मुस्कुराई। ‘प्लीज़,’ उसने आगे कहा, ‘मुझे यहाँ से निकालो।’

10

एक काली बिल्ली और एक सफेद झंडा

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, प्रातः 8 बजे - मंत्रालय,
दक्षिण मुंबई

नरीमन प्वाइंट स्थित राज्य के प्रशासनिक परिसर, मंत्रालय के बगीचों में नारियल के पेड़ों के नीचे कमांडो इकट्ठा हुए, वे बेचैन और चिंतित थे। जलते हुए ताज महल से एक मील दूर भी, हवा में धुएं की गंध फैली हुई थी। दस पाकिस्तानी बंदूकधारियों के अपनी छोटी नाव में तट पर आने के बारह घंटे बाद, भारत ने आखिरकार राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) को तैनात किया, जिसके केंद्र में 51 स्पेशल एक्शन ग्रुप था। उन्हें बंधकों को बचाने और घेराबंदी तोड़ने का प्रशिक्षण दिया गया था, और उनकी गहरे लाल रंग की वर्दी, स्की मास्क और फुर्ती ने उन्हें 'ब्लैक कैट्स' उपनाम दिया था।
यहां मौजूद सभी सैनिक अपनी-अपनी सैन्य इकाई से तैनाती पर थे, जिन्होंने 780 मीटर लंबे कुख्यात बाधा कोर्स को पार किया था, जिसे विदेशी सैन्य प्रशिक्षकों ने सेवन/एट/नो नाम दिया था: यह एक बेहद कठिन और थका देने वाला कोर्स था जिसमें भारी बैग और भरी हुई बंदूक के साथ रेंगना, चढ़ना और छलांग लगाना शामिल था। सांस लेने से पहले ही उन्हें दूर के लक्ष्यों को नष्ट करना पड़ता था और चिलचिलाती धूप और जमा देने वाली ठंड में अलग-अलग ऊंचाइयों पर पैदल मार्च करना पड़ता था। उन्हें एक भूमिगत किल रूम में उतारा जाता था जो दक्षिण एशिया के दर्जनों परिदृश्यों - बाजारों, घनी आबादी वाली गलियों, अस्पतालों और होटलों - की नकल कर सकता था। वहां उन्हें सायरन की तेज रोशनी से बहरा कर दिया जाता था, जबकि उनका लक्ष्य केवल

दुश्मनों को निशाना बनाना होता था, दो गोलियों की बौछार करके यह सुनिश्चित करना होता था कि जो भी गिरे वह निश्चित रूप से मर जाए।
यह बल मुंबई ऑपरेशन के लिए बिल्कुल उपयुक्त था। तो फिर, ओस से भीगे हरे-भरे बगीचों में अपने साजो-सामान की जाँच करते हुए जवानों ने सोचा, कि उन्हें यहाँ आने में इतना समय क्यों लग गया? ब्रिगेडियर गोविंद सिसोदिया, उनके उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन), एक छोटे कद के, चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति, जिनकी नज़रें संकट को तुरंत भाँप लेती थीं, पिछली शाम से यही सवाल पूछ रहे थे। उन्होंने दिल्ली के दक्षिण-पश्चिम में स्थित मानेसर स्थित बल की बैरक में टीवी पर मुंबई हमले की शुरुआती गोलीबारी देखी थी और रात 10 बजे के कुछ ही देर बाद अनौपचारिक रूप से जवानों को जुटा लिया था। वे तीस मिनट से भी कम समय में पालम हवाई पट्टी के तकनीकी क्षेत्र में तैनात होने के लिए तैयार थे, फिर भी वे भारत के सबसे भीषण आतंकवादी हमले के लिए आधा दिन देरी से पहुँचे, जिस समय तक कम से कम 156 लोग मारे जा चुके थे और 240 गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। ब्रिगेडियर के बॉस ज्योति दत्त इस अव्यवस्थित तैनाती से बेहद नाराज़ थे, जिसका दोष उन्होंने राजनीतिक अक्षमता और आपसी कलह पर डाला। लेकिन अब इस पर विचार करने का समय नहीं था।
मुंबई मिशन को लेकर ब्रिगेडियर का दिमाग पहले से ही उलझन में था, क्योंकि सुबह-सुबह मिली कई उलझी हुई जानकारियों ने उन्हें मिशन के बारे में अनिश्चित बना दिया था। पुलिस ने उन्हें बताया था कि बंदूकधारियों की संख्या 'बीस तक' हो सकती है और ताज होटल के अंदर बंद सबसे क्रूर दल के पास अज्ञात संख्या में AK-47 राइफलें, साथ ही सैन्य श्रेणी के विस्फोटक, ग्रेनेड और अन्य हथियार थे, जबकि टीवी रिपोर्टों में कहीं अधिक सटीक जानकारी दी गई थी, जिनमें फिदायीनों की संख्या दस बताई गई थी। इस बारे में किसी ने कुछ खास नहीं बताया कि दूर बैठे हैंडलर बंदूकधारियों को कैसे निर्देश दे रहे थे, हालांकि एनएसजी ने सुना था कि अन्य जगहों पर टेलीफोन इंटरसेप्ट का विश्लेषण किया जा रहा था।
दत्त की राय में, खुफिया एजेंसियां 'जानबूझकर टालमटोल' कर रही थीं, 2006 से मिल रही चेतावनियों को नजरअंदाज कर रही थीं और इतना व्यापक आकलन पेश कर रही थीं कि यह उस सेना के लिए बेकार था जो उन इमारतों के अंदर होने वाली आमने-सामने की लड़ाई में किसी भी छोटे से फायदे को हासिल करने की कोशिश कर

रही थी, जिसके बारे में उन्हें यकीन था कि वह बहुत ही जटिल संरचनाओं के अंदर होगी।
उन्हें शक था कि मुंबई के अधिकारी जानबूझकर स्थिति को धुंधला कर रहे हैं, हमलावर सेना के वास्तविक आकार और क्षमताओं को छिपा रहे हैं, ताकि उन्हें एक छोटी, लेकिन अच्छी तरह से हथियारों से लैस और बेहद प्रेरित फिदायीन टुकड़ी से निपटने में नाकाम रहने के लिए आलोचना का सामना न करना पड़े। ब्रिगेडियर सिसोदिया जानते थे कि ऐसे विचार सार्वजनिक रूप से व्यक्त करना उचित नहीं है। तैंतीस वर्षों की सेवा कर चुके, एक शांत और गुमनाम सैनिक, वे अपने विचार गुप्त रखते थे। वे हमेशा से ऐसे ही थे और उनकी पत्नी और बेटे ज्यादातर उनके जूतों की हालत देखकर ही अंदाजा लगा लेते थे कि वे क्या कर रहे हैं। जुलाई 2007 में जब उनका चयन ब्लैक कैट्स के लिए हुआ था, तब से वे और भी सतर्क हो गए थे।
उसने अपने दिमाग को खाली करने की कोशिश की। ब्रिगेडियर का पूरा ध्यान अपने सैनिकों पर था। उन्हें तीन समूहों में बाँटकर, जो चाबाद हाउस, ट्राइडेंट-ओबेरॉय और ताज होटल पर हमला करने वाले थे, उसने उन्हें बताया कि उनका सामना प्रशिक्षित लड़ाकों से होगा, जिनका उद्देश्य आतंक को लंबे समय तक फैलाना और गढ़ बनाकर तथा बंधकों को फाँसी देकर अधिकतम प्रचार प्राप्त करना था। ब्रिगेडियर ने चेतावनी दी कि कोई बातचीत नहीं होगी। 'या तो मारो या मरो।' कमांडो ने अपनी हेकलर एंड कोच एमपी5 सबमशीन गन की मैगज़ीन में गोलियां भरीं, मैगज़ीन को टेप से बांधा, अपनी कमरबंद कसी और अपने बालाक्लावा नीचे खींच लिए। ब्रिगेडियर अपनी गाड़ी में सवार होकर टास्क फोर्स को, इंजन चालू किए, नगरपालिका बसों में सवार होकर चमकीली सुबह में निकलते हुए देख रहे थे। उनके पीछे सामरिक और हथियार विशेषज्ञ, अपने कुत्तों के साथ बम निरोधक दस्ता, फील्ड चिकित्सक, एक संचार टीम जो मोबाइल नियंत्रण चौकियों को आपस में बातचीत जारी रखने के लिए तैयार करेगी, और खुफिया अधिकारी थे जिन्हें ताज महल के पास भीड़ में इधर-उधर घूमने का निर्देश दिया गया था, ताकि कमांडो को चारों ओर की जानकारी मिल सके।

सुबह 9.15 बजे – अपोलो बंडर

‘खून, कांच, जली हुई लकड़ी।’ जब ब्रिगेडियर सिसोदिया आखिरकार ताज होटल में दाखिल हुए, तो तबाही का मंजर देखकर वे दंग रह गए। उन्होंने उस भारी गोलाबारी को देखकर हैरानी जताई जिसने संगमरमर के फर्श को चकनाचूर कर दिया था और क्रिस्टल के झूमरों को चूर-चूर कर दिया था। उन्होंने चेतावनी दी कि यह एक लंबा और कठिन संघर्ष होने वाला है, और उन्होंने टावर की लॉबी में पुलिस के बगल में एक ब्लैक कैट कमांड पोस्ट स्थापित किया, जिसका संचालन स्पेशल फोर्सेज के एक कर्नल द्वारा किया जा रहा था और जिसमें मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, एक बलवान अधिकारी, उनकी सहायता कर रहे थे, जिन्हें सिसोदिया ने ताज की इकाइयों का नेतृत्व करने का आदेश दिया था। पुणे के बाहर स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, जो एक प्रतिष्ठित संयुक्त सेवा प्रशिक्षण कॉलेज है, के पूर्व छात्र, 31 वर्षीय ब्लैक कैट प्रशिक्षक मेजर उन्नीकृष्णन, मानेसर में ही रुक सकते थे। लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से यह जिम्मेदारी संभाली थी।
थके-हारे दिख रहे करमबीर कांग ने ब्लैक कैट्स को मार्कोस कमांडर और ताज होटल के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुडियादी से मिलवाया, जो थके-हारे ब्लैक सूट पहने अधिकारियों के एक समूह के साथ बैठे थे। पूरी रात निहत्थे रहकर सुरक्षा घेरे में रहने के बाद, कुडियादी की टीम ने उनकी बात सुनी जब उन्होंने रसोई ब्रिगेड के भयावह नरसंहार और अंधेरे तहखानों में बढ़ते संकट का वर्णन किया। उन्होंने चेतावनी दी कि टावर में सैकड़ों लोग अभी भी अपने कमरों में फंसे हुए हैं, और पैलेस विंग में कई और लोग लापता हैं, हालांकि दमकलकर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर कुछ लोगों को सुरक्षित निकाल लिया था। अन्य लोग कम भाग्यशाली थे, जो आग की चपेट में आ गए या बंदूकधारियों के हाथों मारे गए, जिनमें करमबीर की पत्नी और बेटे भी शामिल थे, जो खाद्य समीक्षक सबीना सैकिया के साथ छठी मंजिल पर फंसे हुए थे। जब लोग शोक व्यक्त कर रहे थे, करमबीर ने अपना हाथ उठाया: 'मैं अंत तक यहीं रहूंगा; अन्यथा आतंकवादी जीत जाएंगे।'
मार्कोस कमांडर ने सिसोदिया को चैंबर्स के बारे में जानकारी दी, जहाँ उनके सैनिकों ने भीषण लड़ाई लड़ी थी, जिसमें वे रसोई में छिपे बंदूकधारियों को खदेड़ने में असमर्थ रहे थे। उन्होंने बताया कि क्लब के अंदर अभी भी दर्जनों मेहमान फंसे हुए थे, जो ग्यारह घंटे बाद सदमे में थे।

ब्रिगेडियर सिसोदिया ने होटल के नक्शे मांगे और करमबीर ने उन्हें एक कागज का टुकड़ा दे दिया। इतने समय बाद भी, बचावकर्मी एक साधारण रेखाचित्र के सहारे काम कर रहे थे जो पैमाने के अनुसार नहीं था और उसमें केवल पहली दो मंजिलों का ही कुछ हिस्सा बना हुआ था। ब्रिगेडियर ने झल्लाकर कहा, 'यह असंभव है। हमें वास्तुशिल्पीय नक्शे चाहिए।' करमबीर ने सिर हिलाते हुए कहा, 'महोदय, हम पूरी रात खोज रहे हैं लेकिन होटल नहीं मिल रहा है।' ब्रिगेडियर अपनी बात पर अड़े रहे: 'इन्हें प्राप्त करना हमारी प्राथमिकता है।'
मार्कोस कमांडर ने ब्रिगेडियर को एक तरफ ले जाकर चेतावनी दी, ‘इस होटल में दो ही दुनिया हैं, एक पर्दे के पीछे और दूसरी होटल के सामने।’ होटल के कर्मचारियों की मदद के बिना, ताज होटल स्नाइपरों के लिए एक खतरनाक अड्डा बन चुका था। एक बार उनके आदमियों ने एक सर्विस डोर से धक्का देकर अंदर प्रवेश किया, लेकिन अचानक वे दूसरे विंग में पहुँच गए, जहाँ उनकी पीठ बंदूकधारियों के सामने खुली हुई थी। भीषण आग ने कई मील लंबे अस्थिर गलियारे भी छोड़ दिए थे जो किसी भी क्षण ढह सकते थे।
ब्रिगेडियर थके-हारे ताज के सुरक्षाकर्मियों के पास गए और उन्हें बुलेटप्रूफ जैकेटों का एक बंडल फेंकते हुए बोले, 'तुम हमारे साथ चलोगे।'

सुबह 9:30 बजे – चैंबर्स

भीष्म मनसुखानी ने खट-खट की आवाज़ सुनी और डर के मारे उछल पड़े। कोई लैवेंडर रूम के बंद दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक दे रहा था। अंग्रेज़ी में एक आवाज़ आई, 'दरवाज़ा खोलो!' अंदर मौजूद सभी लोग धीरे-धीरे पीछे हटते हुए बोले, 'हिलो मत!' बाहर से एक महिला की कोमल आवाज़ आई, 'कृपया दरवाज़ा खोलिए।' क्लब मैनेजर ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि यह हमारा ही कोई है।' उन्होंने दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और देखा कि स्की मास्क पहने कुछ आदमी बंदूकें लहरा रहे हैं, उनके साथ एक महिला कर्मचारी भी है। खुशी से झूमते हुए उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया और चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई। ब्लैक कैट्स के सदस्य अंदर आए और सबको चेतावनी देते हुए चुप करा दिया कि बंदूकधारी अभी भी आसपास ही हैं।

डॉ. तिलू जब अर्ध-बेहोशी की हालत में पड़े इंजीनियर कामले को उठाने की कोशिश कर रही थीं, तभी एक कमांडो ने निर्देश दिया, 'सिर्फ चलकर ही चलो।' डॉक्टर ने कहा, 'वह मर रहा है,' लेकिन ब्लैक कैट अपनी बात पर अड़ा रहा। जब डॉ. तिलू ने उसे वापस लिटाया, तो कामले ने फुसफुसाते हुए किसी से अपनी पत्नी और दो बच्चों से संपर्क करने को कहा। डॉ. तिलू ने अनिश्चितता से जवाब दिया, 'तुम खुद कर लोगे।' वह जानती थीं कि अगर उन्हें पहले ही मुक्त करा लिया जाता, तो उसके घावों का इलाज संभव था। लेकिन लगातार हो रही देरी ने कामले को खतरे में डाल दिया था।
पुस्तकालय में, क्रूज़ निदेशक, रमेश चेरुवोथ की हालत भी बिगड़ती जा रही थी। जैसे ही ब्लैक कैट्स (पुलिसकर्मी) छिपे हुए बंदूकधारियों की तलाश में तेज़ी से कमरे में आगे बढ़े, किसी ने उन्हें उठने में मदद की। "हमारे साथ नीचे आइए," उन्होंने चिल्लाकर कहा, क्योंकि खून से लथपथ कमीज़ में रमेश ने कमज़ोर आवाज़ में कहा: "मुझे श्री लिवेरास का शव ले जाना है।" देह से व्याकुल होकर, उन्होंने अपने बॉस को सोफे पर सावधानी से लिटाया था। "सिर्फ़ ज़िंदा," कमांडो ने झल्लाकर कहा, और रमेश को एंड्रियास की घड़ी खोलने के लिए छोड़ दिया। उनकी सुन्न उंगलियां लड़खड़ा रही थीं, उन्होंने उनका बटुआ भी ढूंढ लिया, उनका हार खोला, उनका ब्लैकबेरी और नोकिया हैंडसेट निकाले और उन्हें एलिसिया की स्पा गर्ल में से एक को दे दिया। "कृपया इन्हें कप्तान को दे दीजिए," उन्होंने रोते हुए गलियारे में जाते हुए कहा। अंजलि पोलैक, जो पांच घंटे से माइक से अलग थीं, अपने साथ खाना खा रहे लोगों के साथ गलियारे में आईं। वह इतनी खुश थीं कि उन्हें बाहर ले जा रही काली बिल्ली उन्हें 'ब्रैड पिट जितनी सुंदर' लग रही थी। उन्होंने दूसरे मेहमानों को रोककर पूछा कि क्या उन्होंने उनके 'लंबे, लगभग सुनहरे बालों वाले अमेरिकी पति' को देखा है। अंत में, उन्होंने क्लब के शौचालयों में सैनिकों को प्रवेश करते और एक परिचित दुबली-पतली आकृति को सिकुड़ी हुई धारीदार कमीज में लौटते देखा। भीड़ के धक्के खाते हुए उन्होंने माइक को हाथ हिलाया, जब तक कि वे टावर की लॉबी में नहीं पहुँच गए, जहाँ सब लोग सदमे से रुक गए। एक शव दीवार से सटा पड़ा था। फर्नीचर गोलियों से छलनी हो गया था, कालीन जले हुए और धब्बेदार थे। हर जगह खून बिखरा हुआ था।
पुलिसकर्मी आसपास खड़े होकर वॉकी-टॉकी पर बात कर रहे थे, जबकि नकाबपोश सैनिकों के छोटे-छोटे समूह अपनी तोपों में तेल भर रहे थे। सुबह की हवा में

धुआं ऐसे छाया हुआ था मानो गांव में जल रही आग हो। जैसे ही मेहमान बाहर निकलने की ओर बढ़े, टूटे हुए कांच सबके पैरों के नीचे चरमराए। किसी ने एक खाली कारतूस उठाया और उसे अपनी जेब में रख लिया, लेकिन भीष्म को कोई यादगार चीज़ नहीं चाहिए थी। वह दूसरों के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ा, कांच के दरवाजों से छनकर आती धूप को निहारता रहा।
आखिरकार, वह बाहर आ गया, कैमरों की क्लिक और गूंज सुनाई दे रही थी और सुबह की गर्म धूप उसके चेहरे पर पड़ रही थी। एक पुलिस वैन आकर रुकी, और एक कांस्टेबल ने भीष्म की बूढ़ी माँ को, जो खून बहते पैरों से लंगड़ाकर चल रही थी, पास के आज़ाद मैदान पुलिस स्टेशन ले जाने का इशारा किया। हैरान भीष्म ने उसे मना कर दिया और इंतज़ार कर रही बस में चढ़ गया। उसने ताज होटल की खिड़कियों की ओर देखा और सोचने लगा कि क्या थडानी परिवार भी बच निकला होगा।
होटल की सीढ़ियों पर माइक पोलैक की मुलाकात अंजलि से हुई। उसे घुमाते हुए उसने झट से अपना ब्लैकबेरी फोन निकाला और एक तस्वीर खींची: माइक मुस्कुरा रहा था, अंजलि सिसक रही थी, उसकी आँखों में डर और राहत दोनों झलक रहे थे। आह, आह, आह। माइक ने अपना फोन हवा में उठाए हुए ही घूमकर देखा कि ऊपर की खिड़कियों से गोलियां बरस रही थीं। रात के लिए तैयार लोग दिन में भी आंखें झपकाते खड़े थे, अविश्वास से। मेहमान एक-दूसरे को बचाते हुए चीखने लगे। माइक ने अंजलि को एक खुली बस के दरवाजे से अंदर उठाया और चिल्लाया, 'नीचे लेट जाओ,' जबकि ताज होटल के कर्मचारियों ने बचे हुए लोगों के चारों ओर मानव ढाल बना ली। गर्म गोलियां और आग की ताबड़तोड़ बौछारें हर तरफ गूंज रही थीं, माइक को एक चारदीवारी की ओर खींचा जा रहा था, वह उसके सहारे आधा घुटने टेककर दुबक गया। उसने एक क्लिक की आवाज सुनी और पीछे मुड़कर देखा तो एक फोटोग्राफर तस्वीर खींच रहा था।
भीष्म ने अपना चेहरा बस के गंदे रबर के फर्श पर दबा रखा था और रो रहा था। बस के आगे बढ़ते ही, गति बढ़ती जा रही थी, और अंत में गोलियों की आवाज सुनाई देना बंद हो गई। इस दौरान वह लगातार डर से कांप रहा था और बोला, "यह सब किसी पागलपन भरी फिल्म की शूटिंग जैसा लग रहा है।"
एक घंटे के भीतर वह और उसकी माँ ब्रीच कैंडी स्थित अपने घर पहुँच गए और टीवी पर समाचार देखने लगे, लापता दोस्तों की खबरें ढूंढ रहे थे, मानो यह सब एक सपना हो। नहाने के बाद, उसने उस लाल शराब की बोतल का कॉर्क निकाला जो

उसे उसी साल इटली में उपहार में मिली थी। उसने मन ही मन कहा, यही सही मौका है, जैसे ही उसने रसीले, गाढ़े लाल फलों का स्वाद चखा, उसकी माँ ने घृणा से अपना चेहरा बिगाड़ लिया। भीष्म भड़क उठा, 'शराब ने हमारी जान बचाई। अगर मैं रात 9:30 बजे हमें क्रिस्टल रूम में शराब पीने के लिए ऊपर न ले जाता, तो तुम और मैं उस लॉबी में मर गए होते।'
शराब के नशे से उसका मन शांत हुआ, तभी उसे एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई जिसे वह समझ नहीं पा रहा था। लेकिन यह बेचैनी न तो मृतकों और घायलों के लिए थी, न ही उस भव्य होटल के लिए जिस पर अभी भी बमबारी हो रही थी, न ही उस स्कूल के बदमाश गुंजन नारंग के लिए, जिसे अब वह जानता था कि तहखाने में उसके परिवार के साथ मार डाला गया था, और न ही उन अन्य लोगों के लिए जिनके भाग्य के बारे में उसे अभी भी पता नहीं था। उसे निराशा महसूस हो रही थी, या शायद उदासी भी। 'मुझे इतना यकीन हो गया था कि मेरा अंत हो गया है कि मैंने अपनी मृत्यु को ही अपना लिया था,' उसने याद किया। अब जब वह बच गया था, तो उसे सामान्य जीवन में लौटने में बहुत समय लगेगा।
माइक पोलैक आखिरकार अपने ससुराल वापस पहुंचे, बेहद खुश थे। अपने दोनों बेटों को गले लगाते हुए उन्होंने अंजलि से कहा, "जो कुछ भी हुआ है, वह सचमुच बाइबिल में वर्णित है।" उनके विचार में, बाइबिल में वर्णित नरसंहार और आपदाएँ काल्पनिक थीं। लेकिन ताज महल के अंदर उन्होंने जो कुछ सहा, वह एक वास्तविक, मौलिक अनुभव था। उछलते-कूदते हुए उन्होंने अंजलि से कहा, "देखो, जब इंसान खतरे में पड़ जाता है तो वह क्या कर सकता है। देखो हम क्या बन गए? हमने एक-दूसरे की मदद कैसे की?"
माइक पहले से ही भविष्य की योजना बना रहा था, अब तक उसने जो कुछ भी किया था उससे वह निराश था, वह मानवीय संभावनाओं की सीमा पर जोखिम भरा खेल खेल रहा था। उसने अंजलि से कहा, 'मृत्यु के सामने ये सब चीजें मिट जाती हैं, केवल वही बचता है जो वास्तव में महत्वपूर्ण है।' वह हेज फंड बेचकर अपनी सारी दौलत और ऊर्जा किसी अधिक संतोषजनक काम में लगाएगा।

सुबह 10 बजे – तहखाने

अंधेरे का एक अजीब सा स्वाद था। उसका स्वाद गत्ते जैसा था और उसमें ग्रेवी की गंध आ रही थी। उसी अंधेरे में घिरे शेफ ओबेरॉय पास आते कदमों की आहट

सुनने लगे। वे पूरी तरह थक चुके थे और प्यास से बेहाल थे, उनका पेट गुड़गुड़ा रहा था। चारों ओर देखने पर लगा कि सब लोग अपनी आखिरी साँसें गिन चुके हैं। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। 'बाहर आओ।' छोटे कद के, मोटे शेफ अंधेरे में काँपते हुए खड़े हो गए। 'कृपया खड़े हो जाइए,' उन्होंने बाकी लोगों को इशारा किया - मेहमानों और उनके बच्चों को, अपनी रसोई टीम के सदस्यों को। वे बाहर जो भी हो, उसका गरिमा के साथ सामना करेंगे।
जैसे ही ओबेरॉय ने दरवाजा खोला, टॉर्च की रोशनी से उनकी आंखें चौंधिया गईं। सोलह लोग, आँखें गड़ाए, दरवाजे से बाहर निकले और सामने खड़े नकाबपोश बंदूकधारियों को घूरने लगे। उनमें से एक ने हिंदी में कहा, 'हमारे पीछे आओ,' और ओबेरॉय को समझ आ गया कि वे फिदायीन नहीं बल्कि भारतीय सैनिक थे। लेकिन जैसे ही वे अंधेरे में चुपचाप आगे बढ़े, किसी को भी खुशी महसूस नहीं हुई, वे उस नरसंहार के सबूतों को नजरअंदाज करने की कोशिश कर रहे थे जो रहस्यमय तरीके से उनसे बच गया था। ओबेरॉय को संदेह था कि वह हत्या की उन आवाजों को कभी नहीं भूल पाएंगे, क्योंकि वे खून के जमे हुए धब्बों के पास से गुजरे, जो उन जगहों को चिह्नित कर रहे थे जहां उनके साथी गिरे थे। कुछ मोड़ों के बाद, वे अचानक बाहर थे और गर्म धूप में खड़े होकर आंखें झपका रहे थे, समुद्र के किनारे बसे उस हलचल भरे शहर की खुशबू को महसूस कर रहे थे। उसने देखा कि सदमे से व्याकुल सहकर्मी जहाज़ दुर्घटना में बचे लोगों की तरह एक साथ huddled थे, जलते हुए महल के हिस्से को देख रहे थे, और हर कोई उन लोगों के बारे में सोच रहा था जो बच नहीं पाए थे। ओबेरॉय को उनकी खबर मिली, और पहली खबर पचाना सबसे मुश्किल था। उसके सहयोगी और प्रतिद्वंद्वी, शेफ बंजा की मौत की पुष्टि हो चुकी थी।
वासाबी के हेड वेटर, दमदार थॉमस वर्गीस भी लापता थे। युवा हेमंत तालीम, गोल्डन ड्रैगन के शेफ, की भी मृत्यु हो चुकी थी और शेफ 'बिग फुट' कामदीन की भी हत्या कर दी गई थी। ओबेरॉय को याद आया कि कैसे किचन ब्रिगेड के लोग मज़ाक में उन्हें विशालकाय कहते थे: 'कैज़ भाई, तेरेको तेरी हाइट मार गई [भाई कैज़, तुम्हारी हाइट ने तुम्हें मार डाला]।' ज़ोडियाक के शेफ मतीन भी मर चुके थे। ओबेरॉय उनके इस्तीफे का इंतज़ार कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने मैट्रिक परीक्षा में इतने अच्छे अंक प्राप्त किए थे कि उन्हें किसी भी शीर्ष बिज़नेस स्कूल में दाखिला मिल जाता। शामियाना के शेफ बोरिस रेगो कहाँ थे? लापता। ओबेरॉय को गहरा सदमा लगा। रेगो के पिता, अर्बानो, उनके

करीबी सहयोगी और मित्र थे, गोवा के सबसे प्रसिद्ध पाक कला के सितारे। वे उन्हें क्या बताते? और शेफ रघु का क्या हुआ, वह बैंक्वेटिंग शेफ जिसने चैंबर्स के किचन में अपनी पहचान बनाई थी? वह भी लापता थे। गोल्डन ड्रैगन के सीनियर सू-शेफ नितिन मिनोचा, जो विजय बंजा बनने की राह पर हैं और होटल की उभरती प्रतिभा हैं, अस्पताल में भर्ती थे, जहां डॉक्टरों को आशंका थी कि कहीं उन्हें अपना एक हाथ न गंवाना पड़े।
ओबेरॉय को ध्यान भटकाने के लिए कुछ चाहिए था। उन्हें काम करना ही था। शेफ ने अस्पतालों का दौरा करना शुरू किया। रतन टाटा ने सभी कर्मचारियों के चिकित्सा खर्चों का वहन करने का वादा किया था। अंतिम संस्कार की व्यवस्था भी टाटा द्वारा ही की जानी थी। ओबेरॉय ने एक फोन उधार लिया और शेफ बंजा की पत्नी फरीदा को फोन किया। उन्होंने फरीदा और उनके अठारह वर्षीय बेटे को यह दुखद खबर सुनाई, क्योंकि चारों ओर एम्बुलेंसें इकट्ठा होकर मृतकों और बचे हुए लोगों को दुखी शहर के अस्पतालों में ले जा रही थीं।
ब्रीच कैंडी के पेडर रोड स्थित जसलोक अस्पताल में एसबी2 के प्रमुख राजवर्धन सिन्हा पहुंचे। अपने सहपाठी विश्वास पाटिल के साथ ताज होटल से निकलने के बाद, वे लड़खड़ाते हुए घर पहुंचे और देखा कि उनका आठ वर्षीय बेटा स्कूल जाने की तैयारी कर रहा है। घर का यह दृश्य उनके लिए स्तब्ध रह गया। अब तक राजवर्धन युद्ध के माहौल में जी रहे थे, मानो किसी भी क्षण मृत्यु के लिए तैयार हों। लेकिन यहां सामान्य जीवन चल रहा था। उनका बेटा सवालों से भरा था और राजवर्धन ने अब तक केवल बुनियादी बातों पर ही ध्यान दिया था। जब लड़का रोने लगा तो वे चौंक गए, दौड़कर उसे गले लगा लिया, यह महसूस करते हुए कि वह अपने पिता को लगभग खो चुका है। यह पीड़ा और राहत का मिला-जुला दृश्य था, जिसे राजवर्धन ने कल्पना की कि पूरे शहर में दोहराया जा रहा है। उन्होंने अपनी पत्नी, जो एक कॉलेज लेक्चरर हैं, से कहा, 'घेराबंदी तो बस इसका एक हिस्सा है।' ‘इन हत्यारों ने हमारी सुरक्षा की भावना को ठेस पहुंचाई है।’ उसने उसे पहले कभी इतना उत्तेजित नहीं देखा था, और यह जानते हुए कि घेराबंदी खत्म होने तक वह चैन से नहीं बैठेगा, उसने जोर देकर कहा कि उसका एक्स-रे कराया जाए।
दो घंटे बाद, टखने पर भारी पट्टी बांधे राजवर्धन लंगड़ाते हुए रंग भवन लेन स्थित अपने कार्यालय लौटे। वहां से उन्होंने राज्य के खुफिया प्रमुख को फोन किया, जिन्होंने पुष्टि की कि सभी सबूत पाकिस्तान की ओर इशारा कर रहे

हैं। राजवर्धन को विदेशी खुफिया एजेंसियों से संपर्क स्थापित करने का आदेश दिया गया, जिसमें उन्हें आश्वस्त करना था कि भारत स्थिति को पूरी तरह से नियंत्रित कर रहा है, साथ ही यह पता लगाना था कि क्या उनके पास ऐसा कोई सबूत है जो पाकिस्तानी सेना की प्रत्यक्ष संलिप्तता की ओर इशारा करता हो। राजवर्धन के आदमियों के सामने बड़ी चुनौती थी। उन्हें हमले में मारे गए विदेशियों की पहचान की पुष्टि करनी थी ताकि उनके शवों को वापस उनके देश भेजा जा सके और कागजी कार्रवाई के अभाव में पैदा हुई अव्यवस्था से निपटना था। कई होटल मेहमानों और लियोपोल्ड हमले के पीड़ितों ने अपना सब कुछ खो दिया था, और उनके आदमियों को निकास परमिट जारी करने से पहले उनकी पहचान की पुष्टि करनी थी। उन्हें एफबीआई से भी निपटना था। उनकी मेज पर रखे एक नोट में उन्हें बताया गया कि ब्यूरो द्वारा एक समानांतर आपराधिक जांच पहले से ही चल रही है। उन्होंने अपनी खिड़की से उस गली की ओर देखा जहां आठ घंटे पहले उनके तीन वरिष्ठ सहयोगियों - कामते, करकरे और सालस्कर - की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। यह कैसे हुआ? जल्द ही उनके अंतिम संस्कार में उन्हें श्रद्धांजलि दी जाएगी।
बॉम्बे अस्पताल में अमित पेशावे, जो दो दिनों में सिर्फ चार घंटे सोए थे, अभी भी काम कर रहे थे। ताज अस्पताल के तहखाने से झरना नारंग नाम की एक महिला को ट्रॉली पर बाहर निकाला जा रहा था, तभी एक वार्ड बॉय चिल्लाया, “गुर्दे खराब हो गए हैं। चार-पाँच गोलियां लगी हैं। कूल्हे में। नितंबों में। हाथों में – दो बार। जांघ में। कमर में।” अमित चौंक गए। “खून, तरल पदार्थ, रास्ता साफ करो।” वार्ड बॉय ने बताया कि महिला के माता-पिता और भाई, गुंजन, मर चुके थे, जबकि हमलावर उसे मरा समझकर वहीं छोड़ गए थे। अमित उसके खून से लथपथ चेहरे को घूरते रहे, उसके होंठों से निकलती हल्की आवाज़ें मानो मंत्र पढ़ रही हों, और वे मंत्रमुग्ध हो गए।
‘शरीर में दो गोलियां, पैर में एक।’ एक और एम्बुलेंस आ गई। अमित स्ट्रेचर उठाने में मदद कर रहा था, तभी ट्रॉली से खून की एक लाल धार बहने लगी, जिससे उसकी कमीज़ और पतलून भीग गई। ‘अरे नहीं,’ वह हांफते हुए बोला, लगभग शव को गिराते-गिराते। उसके माता-पिता डॉक्टर थे, फिर भी उसे खून से डर लगता था। जैसे ही उसने मरीज़ के चेहरे की ओर देखा, उसे एहसास हुआ कि यह शेफ रघु है, चैंबर्स में उसका दोस्त, जिसे वह मरा हुआ समझ रहा था। सुनील कुड़ियादी ने बताया था कि उसने एक बंदूकधारी को रघु के शव पर बैठे देखा था, जिसने उस पर

गोलियों की पूरी मैगज़ीन खाली कर दी थी। अब अमित रघु के सफेद कपड़ों में गहरे लाल रंग के घाव को घूर रहा था और भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। ‘खून और घाव पर पट्टी बांधो,’ एक वार्ड बॉय चिल्लाया। ‘हिम्मत रखो,’ अमित ने नम आँखों से कहा। रघु की आँखें खुलीं और वह मुस्कुराया। ‘हे बॉस,’ उसने फुसफुसाया।
अमित को चलना था। उसने अपनी मैली काली जैकेट उठाई और धूप में टहलते हुए अब्बास मेंशन में अपने छात्रावास की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसकी मुलाकात ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल के एक दोस्त से हुई। दोनों एक-दूसरे की परेशानी समझ गए, इसलिए वे चुपचाप चलते रहे और हनीबी रम की एक छोटी बोतल से घूंट लेते रहे। जब अमित ताज होटल के कोने पर पहुँचा, तो एक सिपाही गेट से बाहर निकला और राइफल तान दी। 'रुको, वरना गोली मार दूंगा।' उसकी उंगली ट्रिगर पर कांप रही थी। 'ताज होटल के कर्मचारी!' अमित ने हिंदी में चिल्लाते हुए कहा, उसका मन दुनिया से नफरत से भरा हुआ था। उसकी घबराहट भरी आवाज और बिखरे हुए हाव-भाव में कुछ सच्चाई झलक रही थी। 'क्या कर रहे हो यार?' सिपाही ने हथियार नीचे करते हुए पूछा। 'मैं अंदर था,' अमित ने ताज होटल की ओर इशारा करते हुए कहा। 'और अब मुझे सोना है।' सिपाही ने सलाम किया और उसे अब्बास मेंशन में जाने दिया।
ऊपर जाकर अमित ने अपने कपड़े उतार दिए और नहाने के लिए बाल्टी भर ली। जब पानी साफ निकला, तो उसने खुद को सुखाया और पुणे में अपने परिवार को फोन किया, फिर घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना की: ‘हे भगवान, मेरी जान बचाने के लिए धन्यवाद।’ आखिरकार, स्नूकर खेलने, लड़कियों से मिलने और गिटार सीखने, घूमने जाने और अपनी पहचान बनाने का समय तो होगा ही। लेकिन पहले उसे सोना था।

सुबह 11 बजे – ताज टावर

ताज महल के अंदर, चार आतंकवादी लगातार इधर-उधर भागते रहे, ग्रेनेड फेंकते रहे और कमरों में गोलियां चलाते रहे। ब्लैक कैट्स को लगा कि ये हरकतें चैंबर्स को खाली कराने का बदला थीं। कमांडो उन्हें महल में ही रोकने की कोशिश कर रहे थे, जबकि वे टावर में प्रवेश करने वाले थे, जो एक जटिल और लंबा अभियान साबित होने वाला था। टावर में बीस मंजिलें थीं, जिनमें आमतौर पर

प्रत्येक मंजिल पर सत्रह कमरे होते थे, जिनमें अज्ञात संख्या में मेहमान होते थे, साथ ही 140 गैर-आवासीय कमरे भी थे - रेस्तरां, रसोईघर और दुकानें। केवल एक इलेक्ट्रॉनिक मास्टर चाबी मिली, जिससे प्रवेश में देरी होगी। मेहमानों को अपने कमरों में ही समन्वित घेरा बनाकर रहने के लिए कहा गया था, इसलिए कुडियादी को डर था कि लोगों को बाहर निकालना मुश्किल होगा। ब्लैक कैट्स के ज़्यादातर सैनिक अंग्रेज़ी नहीं बोलते थे और अंदर से बंद दरवाज़ों को बम से तोड़ना पड़ता। मेजर उन्नीकृष्णन को अपने अनुभव से पता था कि बिना किसी संपर्क के एक कमरे को खाली कराने में औसतन पाँच मिनट लगते हैं। इसका मतलब था कि टावर को खाली कराने में उन्हें अव्यवहारिक रूप से छत्तीस घंटे लगेंगे, जिसमें शनिवार शाम तक का समय लग जाएगा, और यह समय तो तब आएगा जब वे महल के छह मंज़िला विंग के 264 अतिथि कमरों वाले भूलभुलैयानुमा हिस्से की ओर रुख करेंगे। शहर में देर से पहुँचने और ज़मीन पर सैनिकों की सीमित संख्या को देखते हुए, उनके लिए केवल एक छोटा सा विमान ही उपलब्ध था जो केवल 120 सैनिकों और उनके सामान को ले जा सकता था, यह स्थिति अव्यवहारिक थी। ब्रिगेडियर ने चेतावनी दी, 'सब कुछ दुगनी गति से करना होगा।'
सिसोदिया और मेजर उन्नीकृष्णन ने अभ्यास का पूर्वाभ्यास किया। वे टावर के शीर्ष से शुरुआत करेंगे, जहाँ गुरुत्वाकर्षण उनके पक्ष में होगा। मेजर ने अपने जवानों को दरवाजों और खिड़कियों में छिपने से बचने की सलाह दी और उन्हें याद दिलाया कि क्षतिग्रस्त दरवाजा सबसे अधिक असुरक्षित क्षेत्र होता है। दो कमांडो दहलीज के विपरीत दिशाओं में खड़े रहेंगे, आगे बढ़ने के लिए तैयार। वे 'बटनहुक' नामक एक पैंतरेबाज़ी का उपयोग करेंगे, जिसमें उन्हें प्रवेश करना, पार करना और वापस मुड़ना होता है, जिससे वे उस स्थान पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं।
हर कमरे में एक ही प्रक्रिया का पालन करना संभव नहीं था, क्योंकि बार-बार एक ही प्रक्रिया दोहराने से सैनिकों की जान जा सकती थी। बातचीत करना भी खतरनाक था। बंदूकों, हथगोले या अन्य हथियारों की मौजूदगी का संकेत देने के लिए पहले से तय कोडवर्ड के अलावा, वे हाथ के इशारों पर भी निर्भर रहते थे। अंत में, टावर जैसी ऊंची इमारत में, रसद आपूर्ति का एक अहम मुद्दा था। सफाई अभियान में संसाधनों की भारी खपत होती थी और एनएसजी के पास संसाधन बहुत

सीमित थे। उन्हें चार्ज, ग्रेनेड और गोला-बारूद का इस्तेमाल बहुत सोच-समझकर करना पड़ता था।

दोपहर 12 बजे – महल का विंग

टावर ऑपरेशन जारी रहते हुए मेजर उन्नीकृष्णन लॉबी में आए, जहां पुलिस और होटल कर्मचारी टीवी पर महाराष्ट्र पुलिस प्रमुख को बोलते हुए देख रहे थे। उन्होंने घोषणा की कि ताज होटल के अंदर सभी बंधकों को बचा लिया गया है। मेजर उन्नीकृष्णन ने सिर हिलाते हुए कहा, "यह आपकी परिभाषा पर निर्भर करता है," और फिर उन्होंने अपना ध्यान महल की ओर मोड़ दिया। तलाशी अभियान शुरू करने से पहले, वे चारों ओर छानबीन करना चाहते थे, पुलिसकर्मियों को दिशा- निर्देश देना चाहते थे, इधर-उधर भटक रहे मेहमानों को बचाना चाहते थे और बंदूकधारियों के ठिकाने के बारे में जानकारी जुटाना चाहते थे।
वह एक टीम का नेतृत्व करते हुए उत्तरी विंग में जलती हुई छठी मंजिल तक जाते, जबकि दूसरी टीम दक्षिणी विंग में ऐसा ही करती। दोनों टीमों के रवाना होते ही मेजर ने चेतावनी दी कि वह सबसे पहले नीचे उतरेंगे, जिस पर उनके आसपास जमा हुए जवानों ने हल्की हंसी हंस दी। उन्हें उनसे यही उम्मीद थी, क्योंकि उन्नीकृष्णन अपने प्रशिक्षण के दिनों में ही एक नेता के रूप में उभरे थे, जब वह ऑस्कर स्क्वाड्रन का हिस्सा थे, जिसे 'द ओलंपियंस' के नाम से जाना जाता था, जिसका आदर्श वाक्य था 'तेज़, ऊंचा और मज़बूत'। 1999 में 7 बिहार रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त करने के बाद, उन्हें कश्मीर के तीन दौरों और सियाचिन में दो बार तैनात किया गया था, जो भारत और पाकिस्तान के बीच स्थित एक ग्लेशियर है और दुनिया का सबसे ऊंचा युद्धक्षेत्र है। मानेसर में, उन्होंने अपनी क्षमताओं को विनम्रता और हास्य के साथ प्रदर्शित किया, सोशल नेटवर्किंग साइटों से अपने असली पेशे को छुपाया, जहां उन्होंने अपने काम को 'अनुत्पादक मानव संसाधन' बताया। यह एक पुराने मजाक पर चतुराई भरा व्यंग्य था: सशस्त्र बलों में शामिल हो जाओ, बहुत सारे दिलचस्प लोगों से मिलो - और उन्हें मार डालो।
27 नवंबर की शाम तक, मेजर सबसे पहले नीचे उतरे, लेकिन दक्षिणी विंग में तैनात टीम चौथी मंजिल पर फंस गई थी। उन्होंने कमांड पोस्ट पर तैनात कर्नल को रेडियो के ज़रिए 'संपर्क' का संदेश भेजा, और उनकी हालत ठीक नहीं लग रही

थी। कमरा नंबर 472 में कई लोगों को भागते हुए देखकर, उन्होंने दरवाज़ा तोड़ दिया, लेकिन दरवाज़े के पास एक गद्दा पड़ा था, जिसने धमाके को सोख लिया। जैसे ही उन्होंने अंदर जाने की कोशिश की, तभी बंदूकधारियों ने एक मेहमान को मानव ढाल बनाकर बाहर निकलकर उन्हें घेर लिया। इससे पहले कि वे संभल पाते, एक ग्रेनेड से उनकी टीम के तीन सदस्य घायल हो गए, जिन्हें बाकी लोगों को खींचकर लॉबी तक लाना पड़ा।

रात 9 बजे – टावर की लॉबी

मेजर उन्नीकृष्णन चिकित्साकर्मियों की सहायता कर रहे थे, जबकि उत्तरी विंग की टीम को कमांड पोस्ट पर ब्रीफिंग दी गई। छठी मंजिल पर उन्होंने सबीना सैकिया के सुइट का दरवाजा तोड़ा, जहाँ लाउंज पूरी तरह से नष्ट हो चुका था, लेकिन बेडरूम को मामूली नुकसान पहुँचा था। एक कमांडो ने जोर देकर कहा, 'अंदर कोई नहीं था।' सबीना जा चुकी थी। बगल के कमरे में उन्हें एक भयावह दृश्य मिला, बाथरूम में तीन शव: एक महिला और दो बच्चे। यह करमबीर कांग का परिवार था, जो, जैसा कि उन्हें आशंका थी, आग की चपेट में आकर मर गया था।
किसी को सबीना के पति शांतनु सैकिया को ढूंढना था, जो सुबह 8 बजे दिल्ली से उसके भाई निखिल के साथ पहुंचे थे। शांतनु पहले से ही शोक में डूबे हुए थे और खबर सुनकर बेहद दुखी हुए। गुरुवार सुबह 1:30 बजे से उन्होंने सबीना से कोई संपर्क नहीं किया था, जब उन्होंने आखिरी सांस लेने का दर्दनाक फैसला लिया था। निखिल भी सदमे में थे। उनकी बहन कैसे बच निकली? जब तक वह अंदर जाकर खुद न देख लें, उन्हें हर संभव कोशिश करनी थी और इसलिए वह शहर के मुर्दाघरों में छानबीन करने निकल पड़े, कहीं वह अज्ञात मृतकों में से एक तो नहीं थीं।
ताज महल के बाहर पुलिस करमबीर कांग को ढूंढ रही थी। उसने चुपचाप नीति और लड़कों के बारे में खबर सुनी, फिर अपनी माँ को फोन करने के लिए समुद्र किनारे चला गया। वह फूट-फूट कर रोया। हजारों मील दूर से उसकी माँ ने कहा, 'अभी मत रोओ। मेरे आने तक रुको और मेरी गोद में रो लो।' करमबीर इतना लंबा इंतजार नहीं कर सकता था। उसे अभी खुद को संभालना था, उन सभी के लिए जो अभी

भी खबर का इंतजार कर रहे थे। उसने खुद से कहा कि वे उस पर भरोसा कर रहे हैं। वह अभी भी कुछ कर सकता है।
ताज होटल के मालिक रतन टाटा ने उन्हें ढूंढा। “कृपया शोक मनाने के लिए समय लें,” उन्होंने दृढ़ता से कहा, क्योंकि उन्हें डर था कि लंबा-चौड़ा मैनेजर टूट जाएगा। करमबीर ने सिर हिलाया। “यह ज़रूरी है कि मैं भाग न जाऊं,” उन्होंने कहा। “मैं सेना की पृष्ठभूमि से आता हूं। आप जानते हैं? वहां बात करने और सोचने का एक खास तरीका होता है: अनुशासन, कर्तव्य और ज़िम्मेदारी।” दोनों जलते हुए ताज होटल को देखते रहे, करमबीर धीरे से बुदबुदा रहे थे कि अगर उन्होंने अभी इस्तीफा दे दिया, तो उनके कर्मचारी भी चले जाएंगे जिन्होंने अपने दोस्तों और परिवार को खो दिया है। टाटा समझ गए। करमबीर एक आदर्श थे। लेकिन जिस आग ने उनके कार्यस्थल को जलाकर राख कर दिया था, उसने उनके परिवार और घर को भी तबाह कर दिया था। सच तो यह है कि घिरे हुए शहर में एक और दिन के अंत तक, करमबीर कांग के पास कुछ भी नहीं बचा था – यहां तक कि तस्वीरें भी नहीं – और जाने के लिए कोई जगह भी नहीं थी।

*

दूसरी रात के सन्नाटे में, लॉबी आपातकालीन बत्तियों से जगमगा रही थी, ताज होटल किसी डूबे हुए जहाज़ की तरह लग रहा था जिसे गोताखोर निकालने की कोशिश कर रहे हों। ब्लैक कैट्स के कमांड पोस्ट पर लंबी छाया में बैठे ब्रिगेडियर सिसोदिया अपडेट ले रहे थे। टावर की तलाशी उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा तेज़ी से चल रही थी, ज़्यादातर कमरे पहले ही खाली करा लिए गए थे और सुरक्षित कर लिए गए थे। कुछ गलतफहमियां हुई थीं, एक कमरे में मेहमानों की अरबी में मोबाइल फोन पर बातचीत सुनी गई थी, जिससे तनावपूर्ण माहौल में उन्हें कुछ समय के लिए अल-कायदा का गुट समझ लिया गया था। इसके अलावा, ब्लैक कैट्स ने प्रभावी ढंग से काम किया था और पूरा एक दिन वापस हासिल कर लिया था, जिसका मतलब था कि अब ध्यान जल्द ही पैलेस पर केंद्रित किया जा सकता था, जहां घेराबंदी के अट्ठाईस घंटे बाद भी चार बंदूकधारी बेरोकटोक घूम रहे थे।
शहर के अन्य हिस्सों में आतंकवादियों का शिकंजा ढीला पड़ रहा था। हालांकि ताज होटल के दोनों हमलावरों के फोन काम नहीं कर रहे थे, फिर भी आतंकवाद

विरोधी दस्ते का तकनीकी विभाग ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल के अंदर इस्तेमाल किए जा रहे एक हैंडसेट की बातचीत सुन रहा था, जहां पैंतीस मेहमानों और कर्मचारियों की हत्या कर दी गई थी, और ब्लैक कैट्स ने अठारहवीं मंजिल पर दो हमलावरों को घेर लिया था।
अभी-अभी मिली एक टेप में एक बंदूकधारी, जिसकी पहचान फहदुल्लाह (क़ाहाफ़ा द बुल के भतीजे) के रूप में हुई है, कराची में अपने हैंडलर से बात करते हुए सुनाई दे रहा है।

गुरुवार, 27 नवंबर 2008, रात 11.45 बजे –
ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल, नरीमन पॉइंट

रिकॉर्डिंग की शुरुआत गोलियों की बौछार से हुई, जिसके बाद एक पुजारी की आवाज सुनाई दी: 'भाई फहादुल्लाह, क्या हालचाल है?'
एक पल का विराम। “भाई अब्दुल रहमान [“छोटा”] की मृत्यु हो गई है,” बंदूकधारी फहादुल्लाह ने धीमी आवाज़ में बताया। “ईश्वर का धन्यवाद।” ओबेरॉय ऑपरेशन अपने अंजाम तक पहुँच रहा था।
‘अरे, सच में?’ हैंडलर ने लगभग लापरवाही से कहा। ‘क्या वह आस-पास ही है?’ वह भावहीन और ठंडा लग रहा था। एटीएस को लगा कि यह एक अभ्यास किया हुआ लहजा था, जैसे कोई धर्मशाला कर्मचारी किसी मरीज को जाने दे रहा हो।
‘हां। वो मेरे बगल में है। अल्लाह उसकी शहादत कुबूल करे। उसके कमरे में आग लगी है। टीवी पर दिखा रहे हैं। मैं बाथरूम में बैठा हूं।’ एटीएस के अधिकारी ने कल्पना की कि वो सैटेलाइट टीवी पर उन तस्वीरों को ढूंढ रहा होगा। तभी गोलियों की आवाज से संपर्क टूट गया। फहदुल्लाह फंस गया था।
गोलीबारी रुकने पर हैंडलर ने सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा: ‘तुम्हें गिरफ्तार नहीं होने देना है, यह बात याद रखना।’ अजमल कसाब के जिंदा पकड़े जाने की खबर फैल चुकी थी। वे एक और गलती बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। फ़हादुल्लाह ने जवाब दिया: 'ईश्वर की इच्छा से। ईश्वर की इच्छा से।' फिर उसने फ़ोन काट दिया। कुछ मिनट बाद हैंडलर ने फिर फ़ोन किया: 'फ़हादुल्लाह, मेरे भाई।' कोई जवाब नहीं मिला। 'क्या तुम बस बाहर जाकर लड़ नहीं सकते?' वह उसे अपनी जान कुर्बान करने के लिए उकसा रहा था। 'एक ग्रेनेड फेंको और बाहर निकलने की कोशिश करो।'

लेकिन अड़तालीस घंटे से अधिक समय तक चले संघर्ष के बाद फहादुल्लाह पूरी तरह थक चुका था। 'मेरे पास अब ग्रेनेड खत्म हो गए हैं।' उसकी आवाज़ में दर्द झलक रहा था।
‘हिम्मत रखो, भाई। घबराओ मत। तुम्हारा मिशन तभी सफल होगा जब तुम्हारी मृत्यु होगी। स्वर्ग में ईश्वर तुम्हारा इंतजार कर रहा है।’
‘अगर ईश्वर ने चाहा,’ उसने धीरे से कहा। क्या वह रो रहा था? फहदुल्लाह डरा हुआ लग रहा था।
उसके सहायक ने उसे प्रोत्साहित किया। ‘ईश्वर तुम्हारी मदद करे। बहादुरी से लड़ो, और अपना फोन जेब में रखो, लेकिन उसे चालू रखना।’ जब वह क्षण आया, तो क़हाफ़ा पूरी तरह आश्वस्त होना चाहता था। आवाज़ धीमी हो गई और फिर गोलियों की बौछार ने सब कुछ दबा दिया।
‘फहदुल्लाह?’ हैंडलर ने पुकारा। ‘फहदुल्लाह?’
कोई जवाब नहीं मिला।

शुक्रवार, 28 नवंबर 2008, सुबह 2 बजे – ताज पैलेस

सिसोदिया को फोन आया: ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटल ब्लैक कैट के कब्जे में था।
लेकिन कुछ ही क्षणों बाद एक और फोन आया जिसने उन्हें याद दिलाया कि ताज होटल के अंदर मौजूद बंदूकधारी पहले की तरह ही खतरनाक थे।
फ्लोरेंस मार्टिस की बेबस मां ने क्रॉफर्ड मार्केट स्थित पुलिस कंट्रोल रूम को फोन करके बताया कि उनकी बेटी और पति दोनों होटल के अंदर लापता हैं। फ्लोरेंस बुधवार रात से ही पैलेस विंग में कहीं फंसी हुई थी और फॉस्टीन गुरुवार सुबह तड़के चुपके से होटल में वापस आने के बाद से किसी ने नहीं देखा था। रोशन, जो पहले डेटा सेंटर ऑपरेटर थे और परिवार को हर बात की जानकारी दे रहे थे, ने हाल ही में फोन करके बताया था कि बंदूकधारियों ने फ्लोरेंस के छिपने की जगह का पता लगा लिया है।
मेजर उन्नीकृष्णन ने फंसे हुए डेटा सेंटर कर्मचारी को निकालने का जिम्मा उठाया। उन्होंने छह-छह सदस्यों की दो टीमें बनाईं और होटल के संस्थापक जमशेदजी टाटा की प्रतिमा के पास से गुजरते हुए ग्रैंड सीढ़ियों पर चढ़े। जैसे ही वे पहली मंजिल पर सी लाउंज के पास पहुंचे, एक व्यक्ति तेजी से गुजरा, एक हाथ में एके-47 राइफल थामे हुए, ब्लैक कैट्स के ठिकाने पर

गोलियों की बौछार करते हुए, एक ग्रेनेड फेंककर वह नजरों से ओझल हो गया, जबकि बाकी बंदूकधारियों की टीम तीन तरफ से गोलियों की बौछार कर रही थी। कमांडो एक जाल में फंस गए थे और जैसे ही धमाके की लहर उन पर आई, उन्नीकृष्णन एक तरफ लुढ़क गए, छर्रे बाल-बाल उन्हें लगने से बच गए, लेकिन उनके एक साथी के पैरों में जा लगे। वह सुनील यादव थे, जिनके साथ मेजर ने प्रशिक्षण लिया था और ठहरे थे।
जैसे-जैसे गोलीबारी तेज़ होती गई, ब्लैक कैट्स रेलिंग पर लेटकर सोचने लगे कि क्या डेटा सेंटर की कर्मचारी फ्लोरेंस उन्हें फंसाने की कोशिश कर रही थी। क्या उसे पकड़ लिया गया था और उन्हें जाल में फंसाने के लिए मजबूर किया गया था? एक आदमी दर्द से चीख रहा था और खुला पड़ा था, तभी मेजर ने बाकी सैनिकों को क्रिस्टल रूम और बॉलरूम के दरवाजों पर गोलीबारी केंद्रित करने का इशारा किया, जबकि वह यादव को वापस लाने की कोशिश कर रहा था।
मुट्ठी उठाकर उसने टीमों को तैयार किया। 'तीन, दो और एक।' मेजर घायल व्यक्ति के शरीर पर झपटा और उसे पकड़ लिया। पीछे खड़े लोगों ने उन्नीकृष्णन के पैर पकड़े और दोनों को सीढ़ियों से नीचे घसीट लिया। जब यह स्पष्ट हो गया कि यादव खतरे से बाहर है, तो मेजर ने आगे बढ़ने का संकेत दिया और उनके अलग-अलग फायरिंग पोजीशन से बने स्थान में घुस गया। घुटनों के बल बैठकर उसने बाईं और दाईं ओर छोटी-छोटी नियंत्रित गोलियां चलाईं, फिर पाम लाउंज के दरवाजे से अंदर घुस गया। तेजी से सोचते हुए, उसे पता था कि इससे उसे बॉलरूम तक पहुँच मिल जाएगी, जहाँ से वह क्रिस्टल रूम तक पहुँच सकता था, बंदूकधारियों को घेर सकता था, जबकि उसके साथी दबाव बनाए रखते। नीचे, ब्लैक कैट्स आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा कर रहे थे। कोई निर्देश नहीं आया। तभी मेजर के रेडियो पर क्लिक की आवाज़ आई। उनकी आवाज़ हांफती हुई लग रही थी। 'मत आओ,' उन्होंने कर्कश स्वर में कहा। रेडियो पर फिर से क्लिक की आवाज़ आई। 'संचार नहीं हो रहा।' बाकी लोगों ने अपने वॉकी-टॉकी पर बीप करके बताया कि वे समझ गए हैं। 'संपर्क न करें,' उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा।
इसके बाद सन्नाटा छा गया। उन्नीकृष्णन क्या कर रहे थे? क्या वे बंदूकधारियों के इतने करीब थे कि रेडियो पर उनकी स्थिति का पता चल जाता? सैनिकों ने फिर से गोलीबारी शुरू कर दी, क्रिस्टल रूम और भोज कक्ष के दरवाजों पर लगातार गोलियां चलाईं, अपने नेता के लिए चिंतित थे, जबकि पीछे

से आ रही टीम ने घायल यादव को लेकर सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिए आड़ का इस्तेमाल किया।
आधे घंटे बाद, सन्नाटा उनके लिए असहनीय हो गया। उन्होंने कमांड पोस्ट को संकेत दिया कि मेजर उन्नीकृष्णन शायद बाहर नहीं आ रहे हैं और वे ताबड़तोड़ गोलियां बरसाते हुए सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए, जिससे बंदूकधारी वासाबी रेस्तरां की ओर पीछे हटने को मजबूर हो गए। ब्लैक कैट्स रुक गए। मेजर का कोई अता-पता नहीं था, लेकिन चारों ओर धुंआ उठता देख उन्हें एहसास हुआ कि वे आखिरकार लैंडिंग पर पहुंच गए हैं। उन्होंने रेडियो के जरिए कमांड पोस्ट को खबर भेजी, जहां ब्रिगेडियर सिसोदिया ने इसे एनएसजी प्रमुख ज्योति दत्त को सौंप दिया। मेजर लापता थे, लेकिन उन्होंने बंदूकधारियों को घेर लिया था और उन्हें जापानी रेस्तरां में ही फंसा दिया था। ताज ऑपरेशन को आखिरकार कुछ गति मिली – लेकिन इसकी कीमत चुकानी पड़ी।

सुबह 7 बजे – पाम लाउंज

जैसे ही सुबह की रोशनी पाम लाउंज में छनकर आई, ब्लैक कैट की एक टीम दरवाज़ों की ओर बढ़ी और अंदर घुस गई, जबकि कुछ और लोग पीछे से घेरा बनाकर खड़े हो गए। कमरा बुरी तरह जल चुका था, लकड़ी के बीम चमक रहे थे और उनसे धुआँ निकल रहा था। छत से प्लास्टर उखड़ गया था। राख इतनी गहरी थी कि ऐसा लग रहा था जैसे वे बर्फ में चल रहे हों। उनकी आँखों को चुभते धुएँ से अभ्यस्त होने में कुछ पल लगे, और फिर उन्होंने शव देखा। शरीर पर बंधी जाली और हथियारों को देखकर वे तुरंत समझ गए कि यह मेजर उन्नीकृष्णन का शव है। शव को पलटने पर, उनकी चोटों से कुछ हद तक सच्चाई सामने आई। उन्होंने सोचा था कि आग उनके पीछे से आ रही है, इसलिए वे पाम लाउंज में घुस गए थे, जबकि वास्तव में दो और बंदूकधारी उनके दाएं और बाएं घात लगाकर बैठे थे। उनकी मृत्यु रेडियो हाथ में लिए हुए हुई थी।
उन्होंने सूचना दी: ‘मृत्यु की पुष्टि हो गई है।’ ज्योति दत्त ने मोर्चा संभाले हुए जवानों से बात करने की इच्छा जताई, उन्हें चिंता थी कि ब्लैक कैट्स की अजेयता का भ्रम टूट गया है और उनका आक्रमण विफल हो जाएगा। ब्रिगेडियर सिसोदिया का मानना था कि यही पुलिस और सेना का अंतर है। चीफ दत्त पुलिस से आए थे और उन्हें इस बात की चिंता थी कि जवान इस क्षति को सहन

कर पाएंगे या नहीं। सिख रेजिमेंट से आए ब्रिगेडियर ने उनसे कहा: ‘जब तक होटल हमारा नहीं हो जाता, ये जवान मेजर की मृत्यु को स्वीकार भी नहीं करेंगे।’ उन्होंने कहा कि कमांडो को वासाबी होटल पर तुरंत हमला करना होगा। उन्हें यह भी पता लगाना होगा कि फ्लोरेंस मार्टिस कौन और कहाँ है, क्योंकि शहर में अन्य जगहों पर बंधकों को मार डाला जा रहा था।

सुबह 8:52 बजे – चाबाद हाउस

सुबह 7 बजे, बाईस ब्लैक कैट्स ने एमआई-17 हेलीकॉप्टर से रस्सियों के सहारे चाबाद हाउस की छत पर उतरे, जहाँ से एक भारतीय नौकरानी पहले ही रब्बी और उनकी पत्नी के दो वर्षीय बेटे के साथ भाग निकली थी। अधिकारियों के अनुसार, रब्बी और उनकी पत्नी को चार मेहमानों के साथ अंदर बंधक बनाकर रखा गया था, हालांकि कराची के अधिकारियों द्वारा अपने आदमियों को सभी को मारने का आदेश देने की चौंकाने वाली और हैरान करने वाली रिकॉर्डिंग सामने आई थी। रस्सियों से उतरने के कुछ ही समय बाद, केंद्र के अंदर से तीव्र गोलीबारी की आवाज सुनाई दी, और सुबह 8:52 बजे आतंकवाद-विरोधी दस्ते ने बातचीत का एक और हिस्सा रिकॉर्ड किया जिसे उन्होंने ताज कमांड पोस्ट को भेजा। फोन करने वाले को 'BW' के रूप में चिह्नित किया गया था, जो कराची नियंत्रण में तैनात हैंडलरों में से एक, ब्रदर वासी का नाम था। वह चाबाद हाउस के अंदर मौजूद टीम दो के सदस्य आकाशा से बात कर रहा था।
अकाशा हांफ रहा था, स्पष्ट रूप से थका हुआ था। बीडब्ल्यू ने खुद को उसकी जगह रखकर सोचा: 'तुम्हारा पानी खत्म हो गया है। तुम थके हुए हो। वे भी यह जानते हैं। वे तुम्हें भूख और प्यास से कमजोर होते ही गिरफ्तार करने की उम्मीद कर रहे हैं।' बीडब्ल्यू को उम्मीद थी कि अकाशा खुद ही फैसला करेगा और लड़ते हुए मरने के लिए स्वेच्छा से आगे आएगा।
अकाशा समझ गया कि उसे क्या कहा जा रहा है: 'आज शुक्रवार है, इसलिए हमें इसे आज ही समाप्त कर देना चाहिए।' जुम्मा या सभा का दिन, जैसा कि इसे जाना जाता है, सार्वजनिक प्रार्थनाओं से भरा हुआ था और यह बलिदान के लिए बिल्कुल सही समय था।

बीडब्ल्यू ने अकाशा को तुरंत अपना अंतिम हमला शुरू करने का सुझाव दिया: 'गोली चलाओ, गोली चलाओ।' यह निर्देश कारगर साबित हुआ क्योंकि गोलीबारी की आवाज़ में संदेश दब गया।
आकाशा ने फोन पर वापसी की। ‘उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी है। उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी है। उमर, छुप जाओ। छुप जाओ! वे हमारे कमरे में गोलियां चला रहे हैं।’ फोन कट गया और फिर एक कमजोर आवाज सुनाई दी। ‘मुझे गोली लगी है। मुझे गोली लगी है। मेरे लिए दुआ करो।’
जिस सटीक क्षण चाबाद की घेराबंदी ध्वस्त हुई, उस दौरान अदृश्य संचालकों की मौजूदगी में सब कुछ सुनते हुए एटीएस मंत्रमुग्ध हो गया।
बीडब्ल्यू को अभी भी यह सुनिश्चित करना था: 'आपको कहाँ चोट लगी है?'
आकाश ने उत्तर दिया: 'एक मेरी बांह में। एक मेरे पैर में।'
बीडब्ल्यू: ‘ईश्वर आपकी रक्षा करे। क्या आप उनके किसी आदमी को मार गिराने में कामयाब रहे?’ अकाशा घबराते हुए बोला: ‘हमने एक कमांडो को मार गिराया। प्रार्थना करो कि ईश्वर मेरी शहादत को स्वीकार करे।’
कुछ मिनट बाद पुलिस को पुष्टि मिल गई। छत्तीस घंटे बाद, चाबाद हाउस के बंदूकधारी आकाश और उमर मारे गए थे। एक बुरी खबर भी थी। गजेंद्र सिंह नाम का एक ब्लैक कैट गिरोह का सदस्य मारा गया था, साथ ही सभी यहूदी बंधकों को भी मार दिया गया था। रिपोर्टों से पता चला कि उन्हें बेरहमी से प्रताड़ित किया गया था और उनके साथ यौन उत्पीड़न किया गया था, उनके जननांगों को क्षत-विक्षत कर दिया गया था। एक पुरानी रिकॉर्डिंग से एक वाक्य गूंज उठा। एक हैंडलर ने बंदूकधारी से कहा था, 'याद रखो, एक बंदी यहूदी पचास गैर-यहूदियों के बराबर है।'

सुबह 9 बजे – ताज डेटा सेंटर

डेटा सेंटर के अंदर, ताज होटल में फंसी आखिरी लोगों में से एक फ्लोरेंस मार्टिस एक भयानक सपने में खो गई थी। उसने कल्पना की कि वह एक नाव पर है, बंदरगाह से बाहर जा रही है, मछली पकड़ने के जालों से लदी हुई है, और मछली पकड़ने के लिए तैयार है। उसका फोन बजा और वह सोचने लगी कि सिग्नल इतनी दूर किनारे तक कैसे पहुँचता है। 'सपनों में आप कुछ भी कर सकते हैं,' उसने खुद से कहा।

एक अपरिचित पुरुष की आवाज ने अपना परिचय दिया। उसने पूछा, 'आपका नाम क्या है?'
‘फ्लोरेंस,’ उसने कहा, जब उसे एहसास हुआ कि वह अब सपना नहीं देख रही है। कुछ पल रुकने के बाद उसने पूछा, ‘तुम कहाँ हो? तुम किस मंजिल पर हो? क्या तुम उसका वर्णन कर सकती हो?’
टावर की लॉबी से ब्लैक कैट का फोन आ रहा था। उसने फ्लोरेंस को दूसरे हैंडसेट पर बात करते सुना: 'रोशन?' उसने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। 'क्या तुम वहाँ हो?' फ्लोरेंस ने अपना मोबाइल स्पीकर पर रख दिया और कमांडो को एक आदमी की आवाज़ सुनाई दी। 'हाँ, मैं रोशन हूँ। मैं यहीं हूँ।' वह अपने स्कूटर पर ठाणे जा रहा था और मुंबई की भागदौड़ भरी ज़िंदगी की आवाज़ें, गाड़ियों के हॉर्न, गलियों में लोगों के रोने की आवाज़ें और इंजनों की तेज़ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।
‘रोशन,’ फ्लोरेंस ने कहा। ‘ऑफिस की लाइन पर कोई है। वो जानना चाहता है कि मैं कहाँ हूँ।’ उसने मोबाइल फोन लैंडलाइन रिसीवर के पास रख दिया। ‘तुम उससे बात करो,’ उसने कहा। रोशन, गाड़ी चलाते हुए फोन को गले में दबाए, ट्रैफिक के शोर के बीच चिल्लाया: ‘सुनो, वो दूसरी मंजिल पर स्थित डेटा सेंटर में है, सी लाउंज और गेटवे रूम के ऊपर।’ लाइन कट गई और बैकग्राउंड में गोलियों की आवाज सुनाई दी। ‘हम उसे बाहर निकाल लेंगे,’ कमांडो ने कनेक्शन काटते हुए कहा। शुक्रवार, 28 नवंबर को सुबह 10 बजे, दो ब्लैक कैट्स (ब्लैक कैट्स) कमांडो फ्लोरेंस का नाम पुकारते हुए डेटा सेंटर में दाखिल हुए। एक कुर्सी के हिलने की आवाज़ सुनकर उन्होंने उसे पीछे खींचा तो देखा कि एक दुबली-पतली युवती डेस्क के नीचे दुबकी हुई है। वह छत्तीस घंटे से वहीं थी। बेहोश और व्याकुल, उसने अपने पिता के बारे में पूछा, तभी कमांडो ने उसे गलियारे में ले जाने में मदद की, जहाँ उसने देखा कि सफेद संगमरमर अब कालिख से काला हो गया था। 'सावधान रहो,' उन्होंने कहा और उसे दौड़ाकर आगे खड़े एक अन्य कमांडो की बाहों में धकेल दिया। 'बंदूकधारी अभी भी हमारे ऊपर हैं।' एक हाथ से दूसरे हाथ में सौंपे जाने के बाद, फ्लोरेंस रसोई में दाखिल हुई और नीचे जमे हुए खून की धारियों को घूरती रही। जल्द ही उसके सफेद जूते भी खून से सन गए। बुधवार की सुबह उसके पिता द्वारा उपहार में दिए गए ये जूते अब गहरे लाल रंग के हो गए थे और उसके पैरों से चिपक गए थे। जब तक उसे टावर की लॉबी में नहीं ले जाया गया, तब तक उसने अपनी नज़रें जूतों से नहीं हटाईं, जहाँ एक

दूर के रिश्तेदार ने उन्हें फेंक दिया। 'पापा कहाँ हैं?' वह रो पड़ी। ‘अस्पताल में,’ उसने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए उत्तर दिया।
वे सुबह 11 बजे तक उसके घर पहुँच गए। फ्लोरेंस बेहोशी की हालत में थी और अपनी माँ, प्रिसिला को पहचान नहीं पा रही थी। वह सबसे पूछ रही थी, 'पापा कहाँ हैं?' और परिवार के डॉक्टर को भी अपने पास नहीं आने दे रही थी, तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी, जिस पर उसे भरोसा हो गया। क्या यह रोशन था? वह नेक इंसान फ्लोरेंस का चेहरा पहली बार देखने आया था। फ्लोरेंस ने रोशन के निर्देशानुसार गहरी नींद में सो गई, जबकि उसका सोलह वर्षीय भाई फ्लॉयड मुंबई के मुर्दाघरों में अपने पिता को ढूँढ़ने के लिए निकल पड़ा।

शुक्रवार, 28 नवंबर 2008, शाम 4 बजे – वासाबी
रेस्टोरेंट

मानेसर से तीन ट्रक भरकर ब्लैक कैट्स मुंबई पहुँच चुके थे, और ताज होटल के अंदर सौ से ज़्यादा कमांडो तैनात कर वासाबी को घेर लिया गया था। शुक्रवार जैसे-जैसे बीतता गया, उन्होंने घेरा और कड़ा कर दिया और ज़्यादा जवानों को अंदर भेज दिया। लेकिन भारी मुश्किलों के बावजूद, चारों फिदायीन भयंकर गोलीबारी से बेखबर रहे। दो बंदूकधारी भूतल पर बने हार्बर बार से निकले और कमांडो पर निशाना साधा, जबकि वासाबी के अंदर मौजूद दो और कमांडो लगातार गोलीबारी करते रहे।
ब्रिगेडियर सिसोडिया को इमारत के उत्तर-पूर्वी कोने के अंदर नज़र रखनी थी। होटल के बाहर, उन्होंने ब्लैक कैट के निशानेबाजों को अग्निशमन सेवा के चेरी पिकरों पर चढ़ने और वासाबी की मजबूत कांच की खिड़कियों पर अपनी इजरायली स्नाइपर राइफलों से निशाना साधने का आदेश दिया। खिड़कियां परावर्तक थीं, जिससे अंदर देखना असंभव था। सिसोडिया ने अपने निशानेबाजों को निर्देश दिया, 'इन्हें भेदने के लिए एक गोली। मेरे इशारे पर।' बंदरगाहों के चारों ओर गूंजती एक जोरदार आवाज के साथ, तेज गति के गोले दागे गए। फिर ग्रेनेड लॉन्चरों को तिपाई पर चढ़ाया गया, दरारों पर निशाना साधा गया और एक समन्वित विस्फोट में दागा गया जिससे आग और धुएं की दीवार खड़ी हो गई। सिसोडिया ने दूरबीन उठाते हुए बुदबुदाया, "उम्मीद है कि विस्फोटों ने बंदूकधारियों को भी टुकड़े-टुकड़े कर दिया होगा।"

धुंआ छंटने पर, उन्हें पहली मंजिल के अंदर का साफ़ नज़ारा दिखाई दिया और उन्होंने देखा कि बंदूकधारी अभी भी इधर-उधर भाग रहे थे। उनमें से तीन ने बाहर मौजूद सेना पर निशाना साधा, जबकि एक सफेद झंडा लहराता हुआ प्रतीत हुआ। या क्या वह उन्हें अंदर आने के लिए उकसा रहा था? ब्रिगेडियर अचंभित थे।
उन्होंने ब्लैक कैट टीम को वासाबी के रसोईघर से होते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ने और रेस्तरां के सर्विस एंट्रेंस पर फायरिंग पोजीशन लेने का आदेश दिया, जबकि क्राइम ब्रांच के नंबर दो अधिकारी देवेन भारती दूसरी टीम के साथ एक मंजिल नीचे हार्बर बार के एंट्रेंस की ओर बढ़े। ब्रिगेडियर सिसोदिया के आदेश पर, दोनों टीमों ने समन्वित फायरिंग शुरू कर दी, जिससे अंदर मौजूद हर चीज तहस-नहस हो गई। सैनिकों ने एक बंदूकधारी को चिल्लाते हुए सुना: 'बस करो। अल्लाह के नाम पर बस करो।' बाहर, दूरबीन से सिसोदिया ने स्थिति का जायजा लिया। फिदायीन अभी भी जीवित थे। उन्होंने अपनी पोजीशन फिर से ले ली और ब्लैक कैट्स और गेटवे पर फायरिंग की। 'यह क्या हो रहा है?' सिसोदिया स्तब्ध रह गए। उन्होंने इससे पहले कभी इतने दृढ़ लड़ाकों का सामना नहीं किया था। वे महल के भूतल और पहली मंजिल पर घूम-घूम कर यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि आखिर हुआ क्या है। उन्होंने कुडियादी और भारती से सलाह ली। जब तक उन्होंने स्थिति का जायजा लिया, तब तक अंधेरा हो चुका था और उनका संतुलन बिगड़ रहा था। बाहर, दबाव में आए चीफ दत्त ने पत्रकारों को बताया कि ताज महल शनिवार सूर्योदय तक मुक्त करा लिया जाएगा। ब्रिगेडियर ने भारती से कहा, "हम हवाई सहायता क्यों नहीं मंगवा सकते और पूरी इमारत को ध्वस्त क्यों नहीं कर सकते?" उनकी यह बात आधी मजाक थी। उन्होंने बाकी सब कुछ आजमा लिया था।

शनिवार, 29 नवंबर 2008, सुबह 3 बजे – बंदरगाह छड़

कुडियादी उत्साहित और क्षमाप्रार्थी भाव से वहाँ पहुँचे। ताज होटल के सुरक्षा प्रमुख को सब समझ आ गया था और उन्हें इस बात का अफ़सोस था कि वे इतनी जल्दी इस नतीजे पर क्यों नहीं पहुँचे। होटल के इस कोने में मौजूद एक अजीबोगरीब वास्तुशिल्पीय खामी को वे सब नज़रअंदाज़ कर गए थे, जिसके बारे

में कोई भी वेटर या शेफ़ उन्हें बता सकता था: भूतल पर स्थित हार्बर बार को वासाबी से जोड़ने वाली घुमावदार सीढ़ी, जो तीन फुट मोटे, अभेद्य कंक्रीट के खंभे से छत तक सुरक्षित थी। हर बार जब हमलावरों पर हमला होता, वे इसके पीछे छिप जाते।
‘अब कुछ जुगाड़ करने का समय है,’ ब्रिगेडियर ने भारती से कहा। अगर वे खंभे को नहीं गिरा सकते, तो वे निश्चित रूप से एक ऐसा हथियार बना सकते हैं जिसमें इतनी ताकत हो कि उसके पीछे छिपे किसी भी जीवित प्राणी को नष्ट कर सके। क्या यह संभव था? ब्रिगेडियर ने टास्क फोर्स के बम दस्ते को बुलाया। ‘हम क्या जुगाड़ कर सकते हैं?’ जवानों ने एक घंटा इस पर विचार-विमर्श किया। सुबह 4 बजे तक उनके पास योजना तो थी, लेकिन आवश्यक सामग्री की कमी थी। उन्हें प्लास्टिक लेपित तांबे के तार, टेप, पेंच और बॉल बियरिंग की भी आवश्यकता थी – ये सभी चीजें भारती को एक क्लासिक आत्मघाती बम की सामग्री जैसी लग रही थीं – लेकिन वह खरीददारी का जिम्मा लेने के लिए तैयार हो गया। क्राइम ब्रांच के नंबर दो अधिकारी को पता था कि मुंबई जैसे शहर में थोड़ी सी पहल और समझाने-बुझाने से कभी भी कुछ भी मिल सकता है। उसने अपने आदमियों को बुलाया। ‘हम खरीदारी करने जा रहे हैं।’
अपोलो बंडर के आसपास की छोटी गलियों में, उन्होंने पायजामे में सो रहे दुकानदारों को जगाया और स्टील के शटर जबरदस्ती खोल दिए। सुबह 5 बजे तक वे वापस आ गए थे और बम निरोधक दस्ते के सदस्य तार काटने वाले कटर और प्लायर लेकर अपना उपकरण तैयार कर रहे थे। उन्होंने इसके केंद्र में एक ग्रेनेड रखा, जिसके चारों ओर उन्होंने टीएनटी की छड़ें लगाईं और खाली जगहों को प्लास्टिक विस्फोटकों से भर दिया। फिर उन्होंने वही किया जो आतंकवादी करते हैं, बोल्ट और बॉल बेयरिंग ठोककर अधिकतम जानमाल का नुकसान किया। अब उनके पास एक भयानक धमाका, एक चकाचौंध कर देने वाली रोशनी और छर्रों से भरी एक विस्फोट लहर पैदा करने की सामग्री थी। सुबह 6 बजे तक वे तैयार थे। 'ठीक है,' सिसोदिया ने कहा। 'अब चलो एक और बनाते हैं।'
सुबह 7 बजे, ब्लैक कैट की दो टीमें कंक्रीट के खंभे के ऊपर और नीचे अपनी- अपनी जगह पर पहुँच गईं। उनके उपकरण लंबी विस्फोटक रस्सियों से बंधे हुए थे, जो हार्बर बार और वासाबी में फेंकने के लिए तैयार थे। 'दो धमाके, एक साथ,' सिसोदिया ने निर्देश दिया और उलटी गिनती शुरू कर दी। भारती वासाबी से देख रहे थे, जब पिचिंग करने वाला खुद को तैयार कर रहा था, उसके बगल में एक

आदमी रेडियो पर नीचे वाली टीम के साथ उलटी गिनती कर रहा था। 'तीन। दो। एक।' दोनों टीमों ने अपने आईईडी फेंके और धमाके की लहर से होटल हिल गया। फिर एक चीख सुनाई दी क्योंकि हवा अंदर खींची गई और फिर बाहर धकेली गई, जिससे काले धुएं और आग के बड़े-बड़े गुबार आसमान में उठ गए।
एक काला पड़ा हुआ इंसान होटल से बाहर भागा। उसके पैर हवा में ऐसे उछल रहे थे मानो वो आज़ादी के लिए छटपटा रहा हो, उसकी लंबी काली पतलून फटकर चिथड़े- चिथड़े शॉर्ट्स में बदल गई थी। वो कंक्रीट के डिवाइडर पर धड़ाम से गिरा, उसके बगल में एक मरा हुआ कबूतर गिरा, जहाँ पहले से मौजूद निशानेबाज़ ने उसके सिर में गोली मार दी। एक कमांडो दौड़कर आया और झुककर उसकी मौत की पुष्टि करने लगा, जबकि ब्रिगेडियर सिसोडिया वहीं मंडराते हुए उस आदमी के चेहरे को देख रहे थे जो बारूद और तारकोल जैसे अवशेष से सना हुआ था। उसके बाल झुलसे हुए थे, मुट्ठियाँ दर्द से तरबतर थीं। उसकी कमीज़, कालिख से काली और खून से लथपथ, उसकी पीठ से चिपकी हुई थी।
यह अबू शोएब था, वही बंदूकधारी जिसने धूसर वर्दी पहनकर ताज होटल में घुसने से पहले लियोपोल्ड कैफे पर हमला किया था। मुंबई पहुँचने से पहले, शोएब ही वह व्यक्ति था जिसने एमवी कुबेर के पकड़े गए भारतीय कप्तान के पैर पकड़े थे और उसका गला काट दिया था। युवावस्था में ही उसके उपदेशक पिता ने उसे लश्कर के हवाले कर दिया था, वह सभी रंगरूटों में सबसे छोटा था। लश्कर से पहले, शोएब उत्तरी पंजाब के बारपिंड नामक मिट्टी और ईंट के घरों के एक इलाके में रहता था, जहाँ सदियों से सीमा पार गोलीबारी में लोगों की जान जाती रही थी। वह कश्मीर के पहाड़ों के दृश्य वाले एक कमरे में पैदा हुआ था। थकान की लहर सी दौड़ गई और सिसोदिया ने खुद को संभाला। क्या यह सब आखिरकार खत्म हो गया? दमकलकर्मी होटल के कोने से उठ रही लपटों को बुझाने के लिए आगे बढ़े। सिसोदिया ने आदेश दिया, 'हमें खोजी कुत्तों की ज़रूरत पड़ेगी।' सुलगते हुए बार के अंदर कहीं अली (पीला), उमर (काला) और अब्दुल रहमान 'बड़ा' (लाल) के शव पड़े थे। जब खोजी दल को बुलाया गया, तो ब्लैक कैट्स ताज होटल में तलाशी अभियान चलाने लगे। लगभग अट्ठावन घंटे बाद, बंदूकधारी आखिरकार मारे गए, लेकिन होटल को सुरक्षित बनाने में आठ घंटे और लगेंगे।

गेटवे के पास, कराम्बिर कांग और शेफ ओबेरॉय खड़े थे। दोनों गहरे शोक में डूबे हुए थे और भविष्य पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहे थे, मानो वह

उनके लिए जीवनरक्षक नाव हो। उनके चारों ओर उनके बचे हुए कर्मचारी, अमित पेशावे और उनके छात्रावास के साथी मौजूद थे। ओबेरॉय ने धीमी आवाज़ में पूछा, 'किसका पेट इतना मज़बूत है?' 'मैं चाहता हूँ कि रसोई की सफाई हम ही करें। यह काम हमें ही करना होगा।' सबने सहमति में हल्की सी आवाज़ निकाली। ताज होटल की सुरक्षा में तैनात जोन 1 के डीसीपी विश्वास पाटिल को जब यह खबर मिली कि सब कुछ खत्म हो गया है, तो उन्हें राहत और झुंझलाहट दोनों महसूस हुई। उनके पास राष्ट्रीय और राज्य स्तर के राजनेताओं के अनुरोधों की बाढ़ आ गई थी, जो सभी ताज होटल तक ले जाए जाने के लिए बेताब थे, मुक्त होटल के बाहर तस्वीरें खिंचवाना चाहते थे, जनमत सर्वेक्षणों में अपनी लोकप्रियता बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। ये वही लोग थे जिन्हें वे शहर की सुरक्षा में नाकाम रहने के लिए जिम्मेदार मानते थे। पाटिल काली पड़ी खिड़कियों की ओर देखते रहे, इस बात से शुक्रगुजार थे कि तीन दिनों में पहली बार कोई मदद के लिए हाथ नहीं हिला रहा था। वे सोच रहे थे कि क्या कभी उनके मन से यह दुखद एहसास दूर हो पाएगा कि इस खून-खराबे को रोका जा सकता था। मुंबई के तौर-तरीकों के अनुसार, पुलिस बल की कार्रवाई की जांच करने, खुफिया एजेंसियों की सफलता और ब्लैक कैट्स की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए कोई गहन जांच नहीं होगी। पाटिल ने भविष्यवाणी की कि सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त जरूरतमंद लोग 'एक तमाशा' चलाएंगे, जो इस कमजोर ढांचे को सहारा देने के लिए कुछ छोटे-मोटे अधिकारियों की बलि देंगे।
उन्हें सब कुछ आसानी से नहीं मिलने वाला था। पुलिस उपायुक्त और उनके साथियों पर जो बीती थी, उसके बाद तो बिलकुल भी नहीं। पाटिल ने मन ही मन एक रिपोर्ट तैयार करना शुरू कर दिया था, जिसमें उन्होंने शहर पर हुए हमले से पहले के पांच महीनों में जो कुछ भी जाना था और उनके साथियों को 2006 से जो जानकारी थी, उसका ब्यौरा देना था। ताज होटल और अपने वरिष्ठ अधिकारियों से हुई बातचीत का खाका तैयार करते हुए, पाटिल ने शुरुआती वाक्य लिखने शुरू किए, जब उनकी कार उन्हें ब्राबोर्न क्रिकेट स्टेडियम के सामने स्थित उनके घर की ओर वापस ले जा रही थी, जहां उनकी पत्नी और दो बच्चे बेसब्री से उनका इंतजार कर रहे थे। उन्होंने यह रिपोर्ट 19 दिसंबर 2008 को आयुक्त को भेजी, जिसका क्रमांक 23/DI/Zone1/08 था। और मुंबई के खेल को समझते हुए, उन्होंने साथ ही साथ इसकी एक प्रति एक स्थानीय पत्रकार को भी लीक कर दी, जो उनसे एक खबर के लिए लगातार संपर्क में था – ताकि फाइल गुम न हो जाए।

ब्राबोर्न स्टेडियम में बॉब निकोल्स बैठे थे। स्टेडियम शहर की सबसे शांत जगह थी, एक ऐसी पनाहगाह जहाँ उन्होंने ताज स्टेडियम में बिताए अपने अनुभवों और चैंपियंस लीग ट्वेंटी20 के भविष्य के बारे में सोचा था। शेन वार्न और केविन पीटरसन पहले ही अपना कार्यक्रम रद्द कर चुके थे और शहर को शोक मनाने और खुद को फिर से संवारने का समय देने के लिए पूरे आयोजन को स्थगित करना ज़रूरी था। अगर किस्मत अच्छी रही, तो टूर्नामेंट अगले साल के अंत में हो सकता है, लेकिन इसके लिए व्यवस्था बेहद सटीक होनी चाहिए। बॉब सोचते थे कि मुश्किलों के बावजूद यह शहर हमेशा वापसी करता है। उनके विचार में, मुंबई किसी भी चीज़ पर काबू पा सकता है, खासकर अपने शासकों की अक्षमता पर।
टाइटन टावर्स, ब्रीच कैंडी में, कैप्टन रवि धरणीधरका सैन डिएगो में अपनी प्रेमिका के पास वापस जाने की चाहत और अपने भारतीय परिवार के लिए रुकने की मजबूरी के बीच दुविधा में थे। ऊपरी मंजिल से, वे नीचे गलियों में कई अंतिम संस्कार जुलूसों को देख सकते थे। उन्हें खुद भी तीन अंतिम संस्कारों में शामिल होना था - ट्राइडेंट-ओबेरॉय में मारे गए रिश्तेदारों के लिए। लेकिन जिस शहर से उन्हें प्यार था, उसके निवासी जब अपना ख्याल रख रहे थे, तो वे अपने नेताओं से क्या उम्मीद कर सकते थे, जिन्होंने पहले ही दरारों पर पर्दा डालना शुरू कर दिया था, ताज होटल की त्रासदी और मेहमानों और कर्मचारियों के बलिदान को भारत के गौरवशाली क्षण के रूप में पेश कर रहे थे?
बॉम्बे अस्पताल में, केली को यह खबर पचाने में मुश्किल हो रही थी कि सब कुछ खत्म हो गया है। वह भविष्य को लेकर बेहद उत्साहित थी। एक कुशल भारतीय सर्जन ने विल की कुछ रीढ़ की हड्डियों को जोड़कर उसके श्रोणि के चारों ओर एक पिंजरा लगा दिया था ताकि सब कुछ स्थिर रहे और उसे ब्रिटेन वापस ले जाया जा सके। लेकिन इस काम को व्यवस्थित करना सबसे मुश्किल साबित हो रहा था। विल के पिता निगेल, जो ताजमहल पर घेराबंदी हटने के ठीक बाद पहुंचे थे, अत्यधिक व्यस्त ब्रिटिश कांसुलर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पा रहे थे। अधिकारी स्वदेश वापसी की व्यवस्थाओं को लेकर टालमटोल कर रहे थे और ब्रिटेन के अस्पतालों के साथ पर्याप्त तैयारियों का वादा तो कर रहे थे, लेकिन उन्हें पूरा करने में विफल रहे। केली की यात्रा बीमा कंपनी ने आतंकवाद के मामलों में छूट का हवाला देते हुए चिकित्सा बिल या किसी भी

अन्य खर्च को कवर करने से इनकार कर दिया। अपनी निर्धारित वापसी की उड़ानें छूट जाने के बाद, एयरलाइन ने दावा किया कि कई हफ्तों तक उनके पास कोई सीट उपलब्ध नहीं है, जिससे निगेल को किसी भी ऐसे वाहक की तलाश करनी पड़ी जो स्ट्रेचर ले जाने को तैयार हो।
फिर चिकित्सीय पूर्वानुमान की बात आई। केली को बताया गया कि यह अनिश्चित था। अपने अत्यधिक बेहोश प्रेमी को देखते हुए वह केवल इतना ही निश्चित हो सकती थी कि जिस जीवन की उन्होंने आशा की थी, वह हमेशा के लिए खत्म हो गया था।

29 नवंबर को सुबह 10 बजे, सबीना के पति, भाई और दोस्त सावित्री चौधरी सभी ताज होटल के बाहर खड़े थे। गुरुवार की सुबह सबीना द्वारा भेजे गए कथित टेक्स्ट संदेशों और एनएसजी द्वारा खाली सुइट मिलने से संकेत मिलता है कि खाद्य समीक्षक होटल से भाग गई थीं। हालांकि, फोन कंपनी एयरटेल फिलहाल 'घोस्ट कॉल्स' की घटना की जांच कर रही थी, जिसके अनुसार सबीना के टेक्स्ट संदेश शहर के दूरस्थ टावरों पर चले गए होंगे और भेजे जाने के काफी समय बाद वितरित हुए होंगे। यह भी संभव था कि हमले की पहली रात को नेटवर्क पर कॉल की बाढ़ आने के कारण उनका फोन किसी दूरस्थ टावर से जुड़ गया हो, जिससे यह आभास हुआ हो कि वह किसी अन्य स्थान पर थीं। उनके भाई निखिल को शहर के मुर्दाघरों में कोई जवाब नहीं मिला। उन्होंने सावित्री से कहा, 'मैंने ऐसे शव देखे हैं जिन्हें किसी को भी नहीं देखना चाहिए - जले हुए, गोली लगे हुए, फूले हुए।' इसके बजाय, उन्होंने परिवार के संपर्कों पर दबाव डाला कि वे उन्हें ताज होटल के अंदर ले जाएं। होटल में प्रवेश वर्जित था, फिर भी तीनों को लॉबी में ले जाया गया, धुएं से भरे गलियारों से उनकी नाक में जलन हो रही थी। काली बिल्लियाँ भव्य सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे दौड़ रही थीं, जबकि स्ट्रेचर पर विकृत शव ले जा रहे लोग तेजी से गुजर रहे थे। सावित्री रुक गई। वह और बर्दाश्त नहीं कर सकी और पीछे मुड़ गई, जबकि शांतनु और निखिल आगे बढ़ते रहे।
सीढ़ियों के ऊपर पहुँचकर, दोनों आदमी छठी मंज़िल पर सुलगती आग की भयावहता देखकर दंग रह गए। आग ने छत के कुछ हिस्सों को पूरी तरह जला दिया था और सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी। एक कमांडो ने गरजते हुए कहा, 'तुम्हें यहाँ नहीं होना चाहिए,' जब वे तारकोल से धुँधले गलियारे में पहुँचे और एक जले हुए

दरवाजे के सामने खड़े हो गए। शांतनु रुक गया। अपने दर्द को दबाते हुए, वह सनराइज सुइट में घुस गया। सबीना का कमरा तीन हिस्सों में बँटा हुआ था: एक शयनकक्ष, एक बैठक कक्ष जिसमें नाश्ते का कोना था, और एक स्नानघर। निखिल ने देखा कि बैठक कक्ष पूरी तरह जलकर राख हो गया था। 'वह राख में तब्दील हो गया था और राख से मेरा मतलब है कि वह पूरी तरह नष्ट हो गया था, वहाँ कुछ भी नहीं बचा था सिवाय एक झूमर के फ्रेम के जो ज़मीन पर गिर गया था और खाने की मेज के धातु के फ्रेम के जो नाश्ते के कोने में अडिग खड़ा था।'
शांतनु और निखिल बेडरूम में दाखिल हुए और दंग रह गए। कमांडो की रिपोर्ट के मुताबिक, कमरे को लगभग छुआ भी नहीं गया था, हालांकि हर चीज़ पर कालिख की एक परत जमी हुई थी। सामान 'सबिना की आदत के मुताबिक अस्त-व्यस्त' था, लेकिन सुरक्षित था। निखिल ने बाद में गंभीर स्वर में मज़ाक करते हुए कहा, 'ऐसा लग रहा था जैसे आग भी सबिना से डर गई हो और करमबीर के कमरे में चली गई हो।'
वे दोनों विशाल पलंग पर उदास बैठे थे, जहाँ सबीना कराम्बिर कांग के आतिथ्य सत्कार से प्रसन्न होकर खुशी से उछल पड़ी थी। तभी शांतनु की नज़र किसी चीज़ पर पड़ी और वह दीवान के दूसरे छोर की ओर खिंचा चला गया। वह घूमकर पीछे हटा। सबीना वहाँ ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी प्रार्थना कर रही थी, चश्मा उसके सिर पर टिका था और माथा ज़मीन पर था। गुरुवार, 27 नवंबर की सुबह, उसकी अदम्य पत्नी थकी हुई और नींद से भरी हुई अवस्था में घुटनों के बल बैठ गई थी, क्योंकि बगल के कमरे में भयंकर आग लग गई थी और ऑक्सीजन खत्म हो रही थी। और यहीं, अकेली, वह धीरे-धीरे दम घुटकर मर गई।
उन्होंने बिस्तर की चादर हटाई और उसके नीचे एक साफ सफेद चादर बिछी हुई थी, मानो सफाईकर्मी ने अभी-अभी बिछाई हो। शांतनु धीरे-धीरे उस दृश्य को समझने की कोशिश कर रहा था, तभी निखिल घबराया हुआ और रोता हुआ नीचे भागा। उसने ताज होटल के सुरक्षाकर्मियों से चिल्लाकर कहा, 'मुझे एक घंटे में सबीना नीचे चाहिए। मुझे इसी घंटे सबीना हमारे साथ चाहिए।' हालांकि सुरक्षाकर्मियों ने उसे टालने की कोशिश की, लेकिन एक शोकग्रस्त भाई के दृढ़ संकल्प ने उसे ऐसा करने पर मजबूर कर दिया, और कुछ ही देर बाद सबीना सहगल सैकिया आखिरी बार एक साफ सफेद चादर में लिपटी हुई भव्य सीढ़ियों से नीचे आईं।

अजमल कसाब लगातार बोलता रहा, उसे इस वादे से प्रोत्साहन मिला था कि पूछताछ समाप्त होने के बाद वह अपने नौ साथियों से मिल सकेगा, जिन्हें अधिकारियों के अनुसार 'कहीं और हिरासत में रखा गया था'।
जब वह दिन आया, तो क्राइम ब्रांच का एक अधिकारी उसकी कोठरी में दाखिल हुआ: 'क्या तुम तैयार हो?' अजमल उत्सुक था।
कैदी को गेटवे ऑफ इंडिया और ताज महल के पास से ले जाया गया और बायकुला स्थित जेजे अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ चाबाद हाउस के पीड़ितों को भी लाया गया था। जैसे ही दरवाजा खोला गया, अजमल ने अनिश्चितता से पूछा, 'क्या वे सभी बुरी तरह घायल हैं?' अधिकारी ने कहा, 'आप खुद देख सकते हैं,' और उसे सफेद दीवारों वाले एक कमरे में ले गया।
उसके सामने स्टेनलेस स्टील की नौ ट्रे रखी थीं। ताज महल के अंदर लड़ने वाले भाइयों को देखना सबसे कठिन था। अली और शोएब के चेहरे कुचलकर भयानक मुस्कान में बदल गए थे। ताज के छोटे कद के नेता उमर बुरी तरह जल गए थे और उनकी पहचान करना मुश्किल था, और अब्दुल रहमान 'बदा' का केवल जले हुए अंगों और झुलसे हुए लाल पदार्थ का एक क्षत-विक्षत ढेर ही बचा था।
अजमल गुस्से से अपने पुलिस गार्ड की ओर मुड़ा, मानो उसकी दुनिया बिखर रही हो: 'मुझे यहाँ से ले चलो।' उसे वापस उसकी एकांत कोठरी में ले जाया गया, जहाँ उसका पूछताछकर्ता उसका इंतज़ार कर रहा था। 'तो अजमल,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'क्या तुमने उनके चेहरों की चमक देखी और उनके शरीरों से उठती गुलाबों की खुशबू महसूस की?'
अजमल फूट-फूटकर रोने लगा।

रेखांकन

1. ताज होटल, मुंबई, जो केंद्रीय गुंबद और अरब सागर के नजारे पेश करता है। ताज महल पैलेस होटल कलेक्शन

2\. पूल के किनारे से ताज होटल।

□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□

3. □□□□□□□ □□□□ (□□□□ □□ □□□□□), □□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□

□□□□□□□

[illegible]

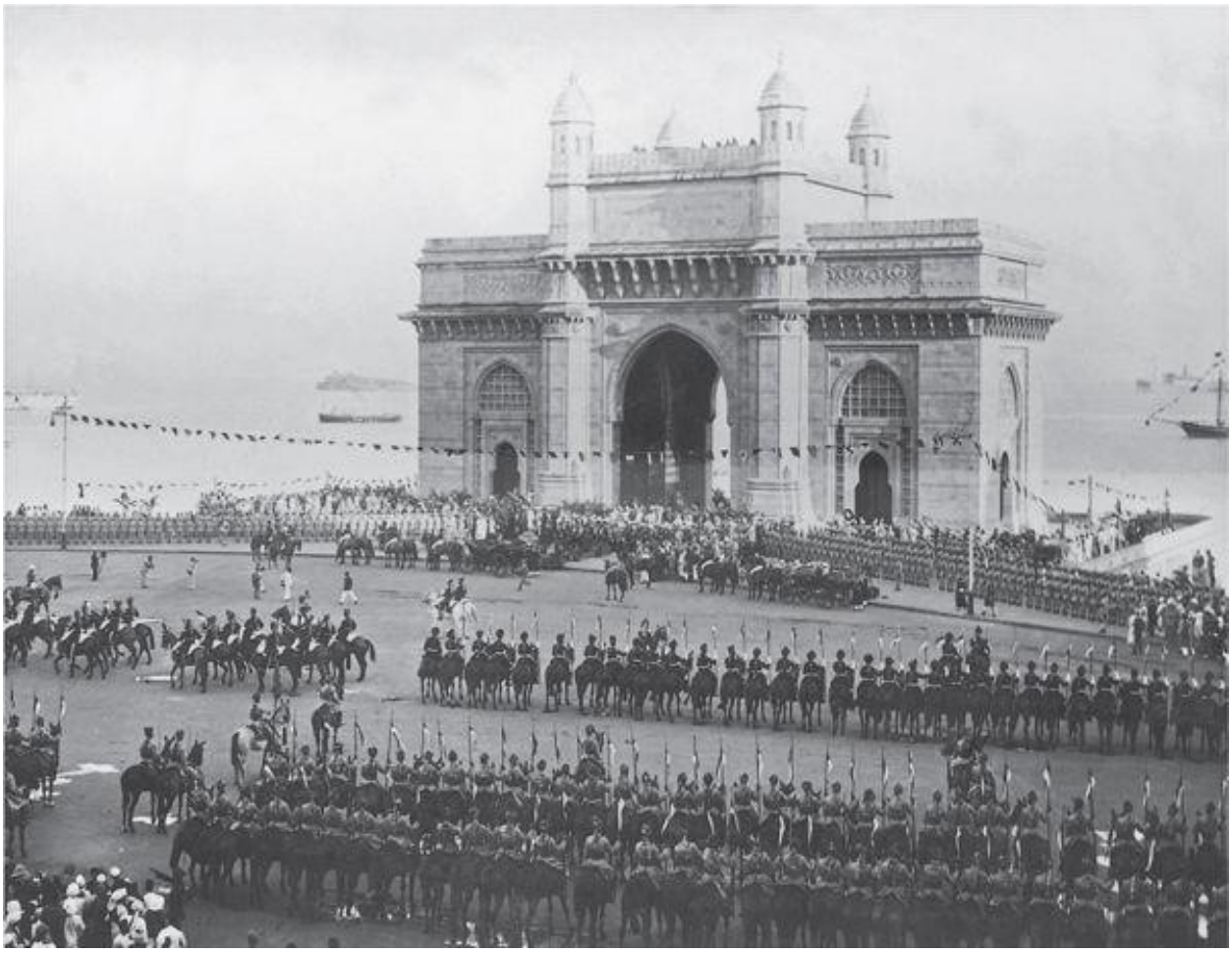

4. भारतीय राजकुमारों ने नए वायसराय, लॉर्ड का स्वागत करने के लिए गार्ड ऑफ ऑनर बनाया।
विलिंगडन, 1931 में गेटवे ऑफ इंडिया पहुंचने पर। यह तस्वीर ली गई थी।
ताज।
ताज महल पैलेस होटल कलेक्शन

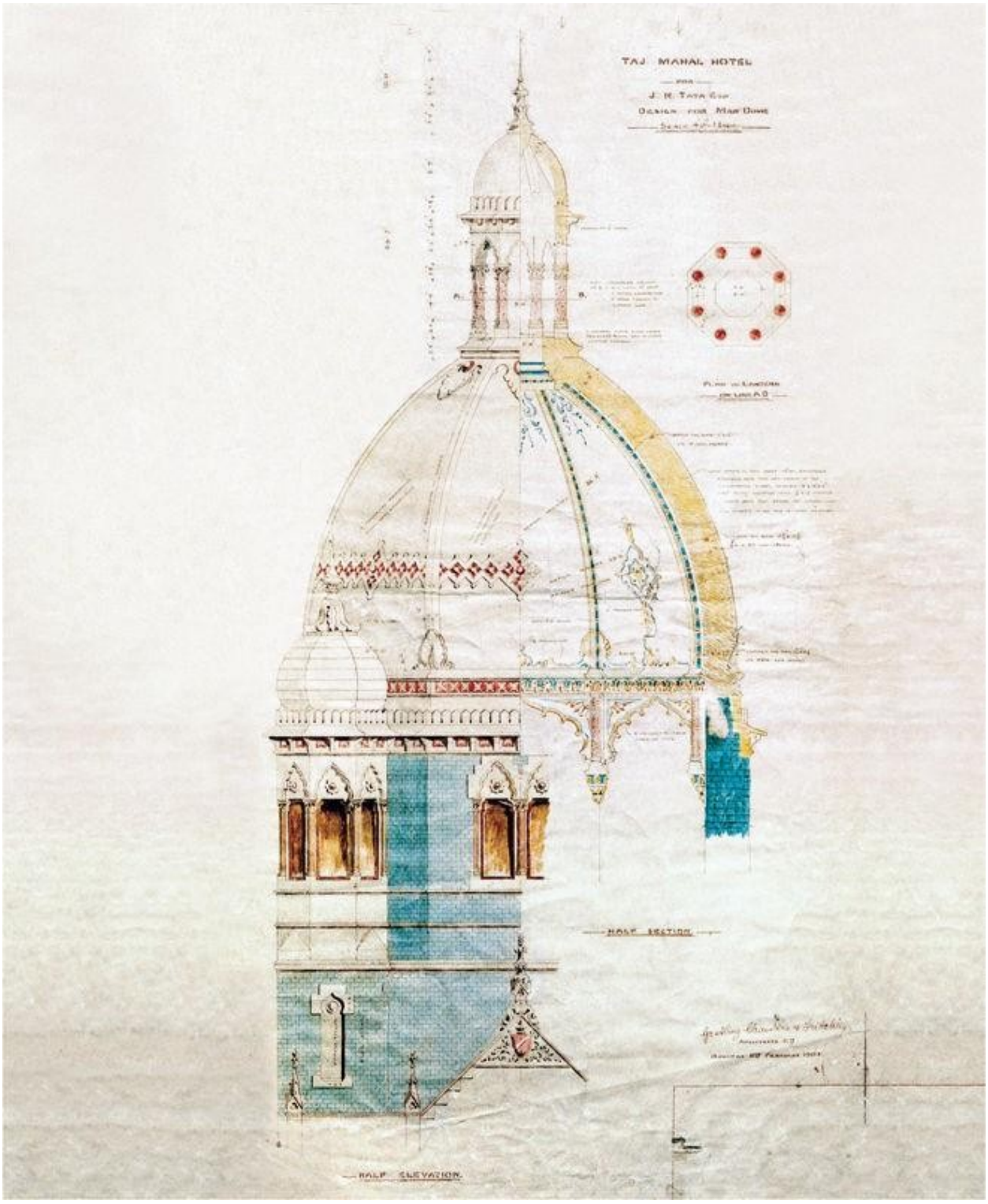


5. □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□
□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□

6. □□□□□□□□□ □□□□□□□□ (□□□□) □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□

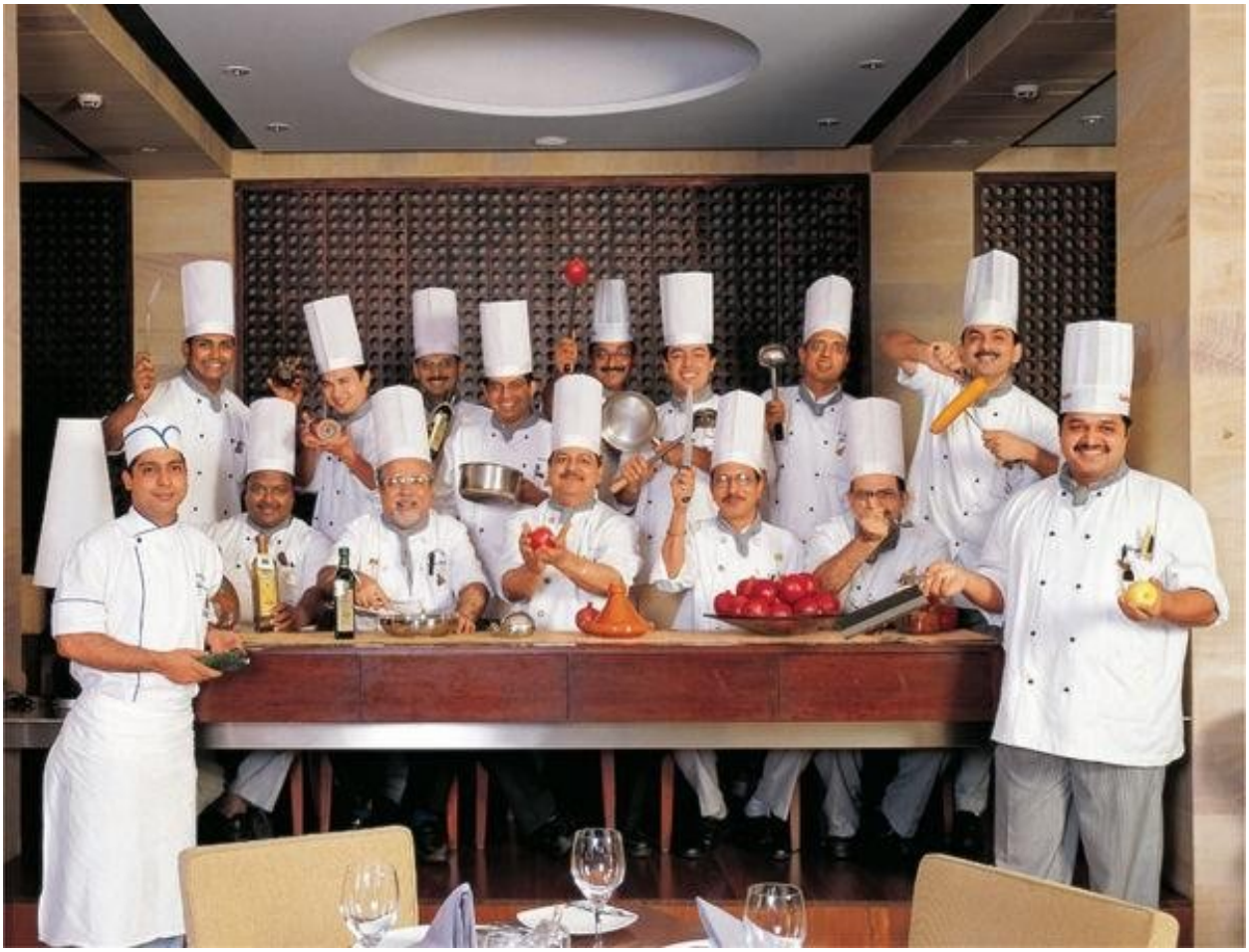

7. □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□

□□□□□□ (□□□□ □□□□ □□) □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□ (□□□ □□□)□

# □□□□ □□□□□

8. □□□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□
□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□

# [redacted]

9. चैम्बर्स क्लब, जहां कई लोग फंस गए थे।
ताज महल पैलेस होटल कलेक्शन

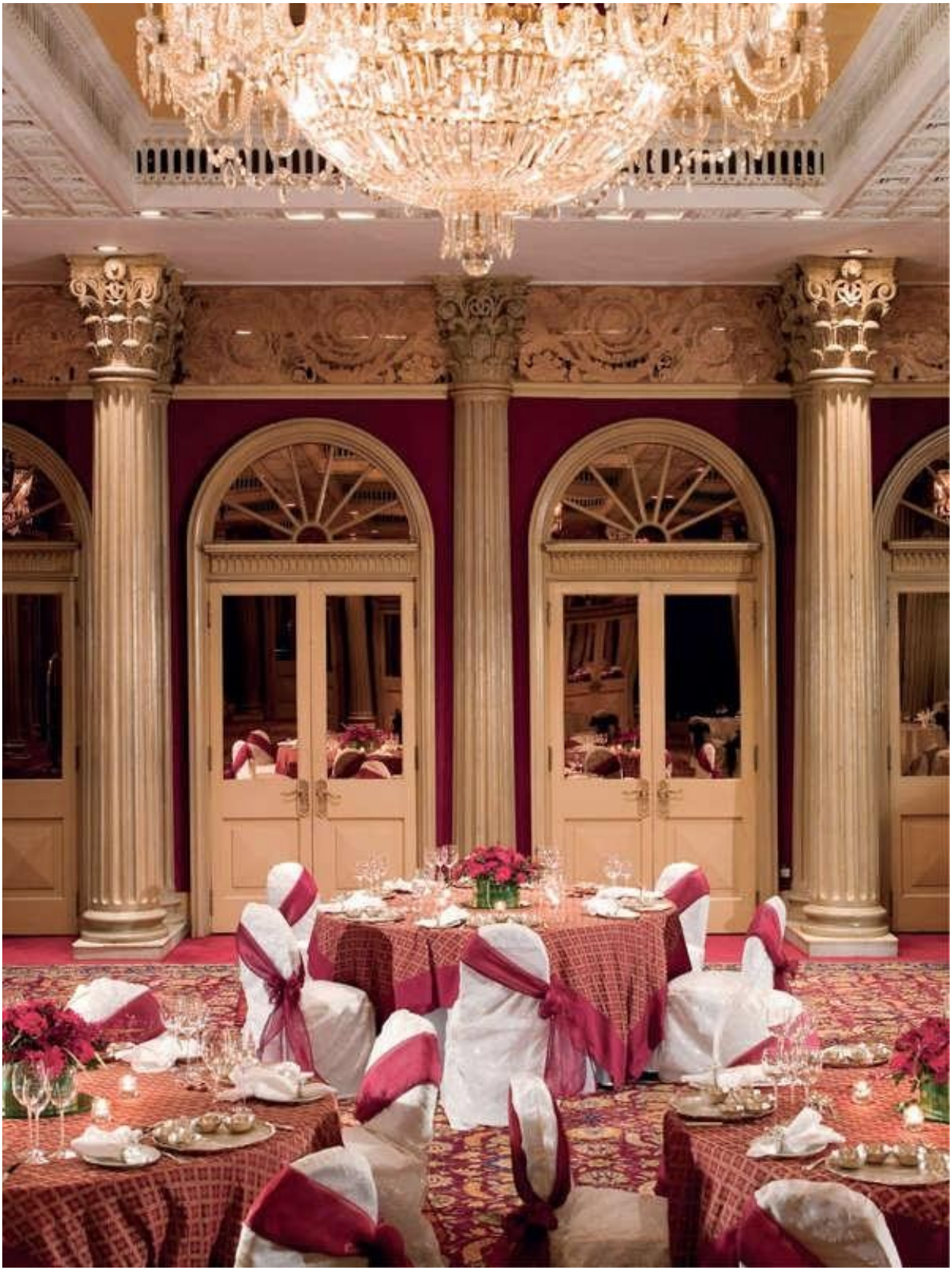

10. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

11. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 25 [illegible] 2008 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

# □□□□ □□□□□

12. [illegible] [illegible] [illegible]

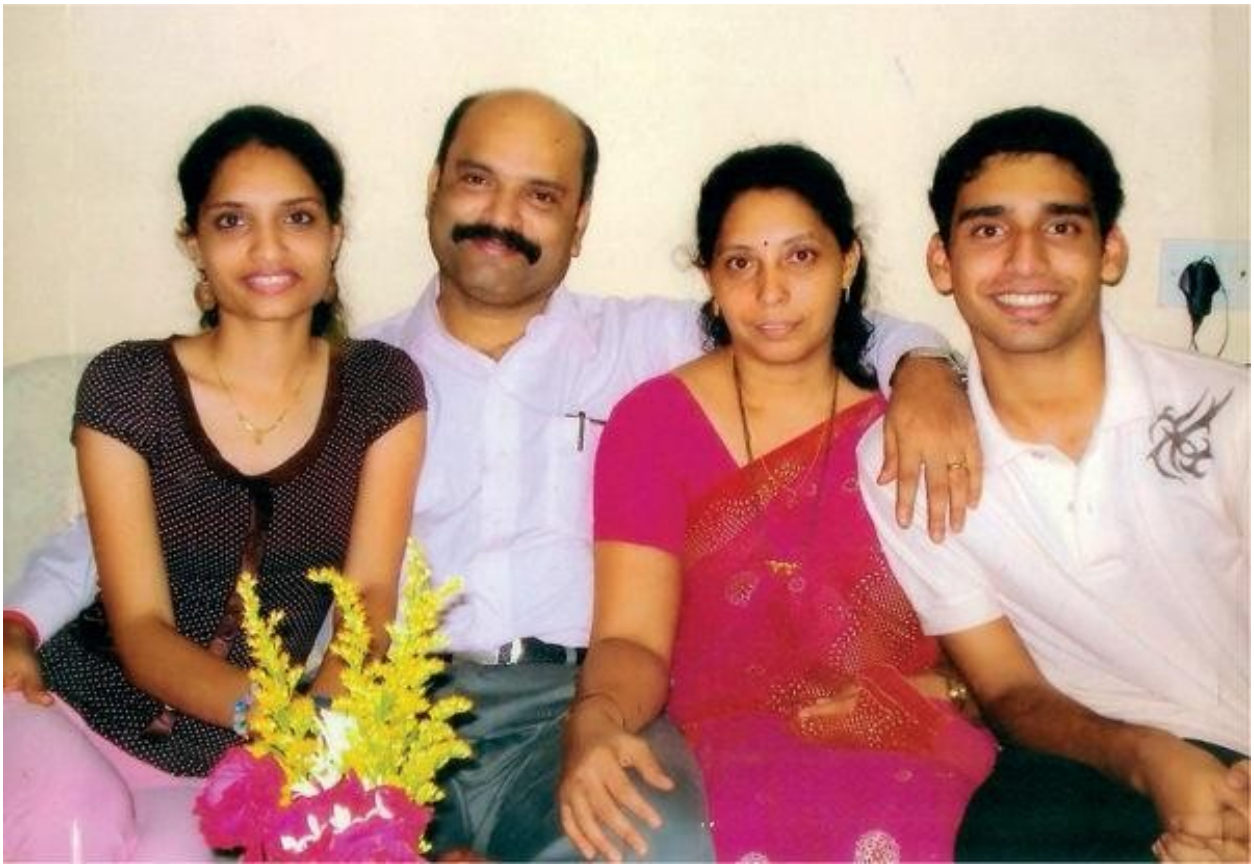

13. (□□□□ □□ □□□□) □□□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□

# [redacted]

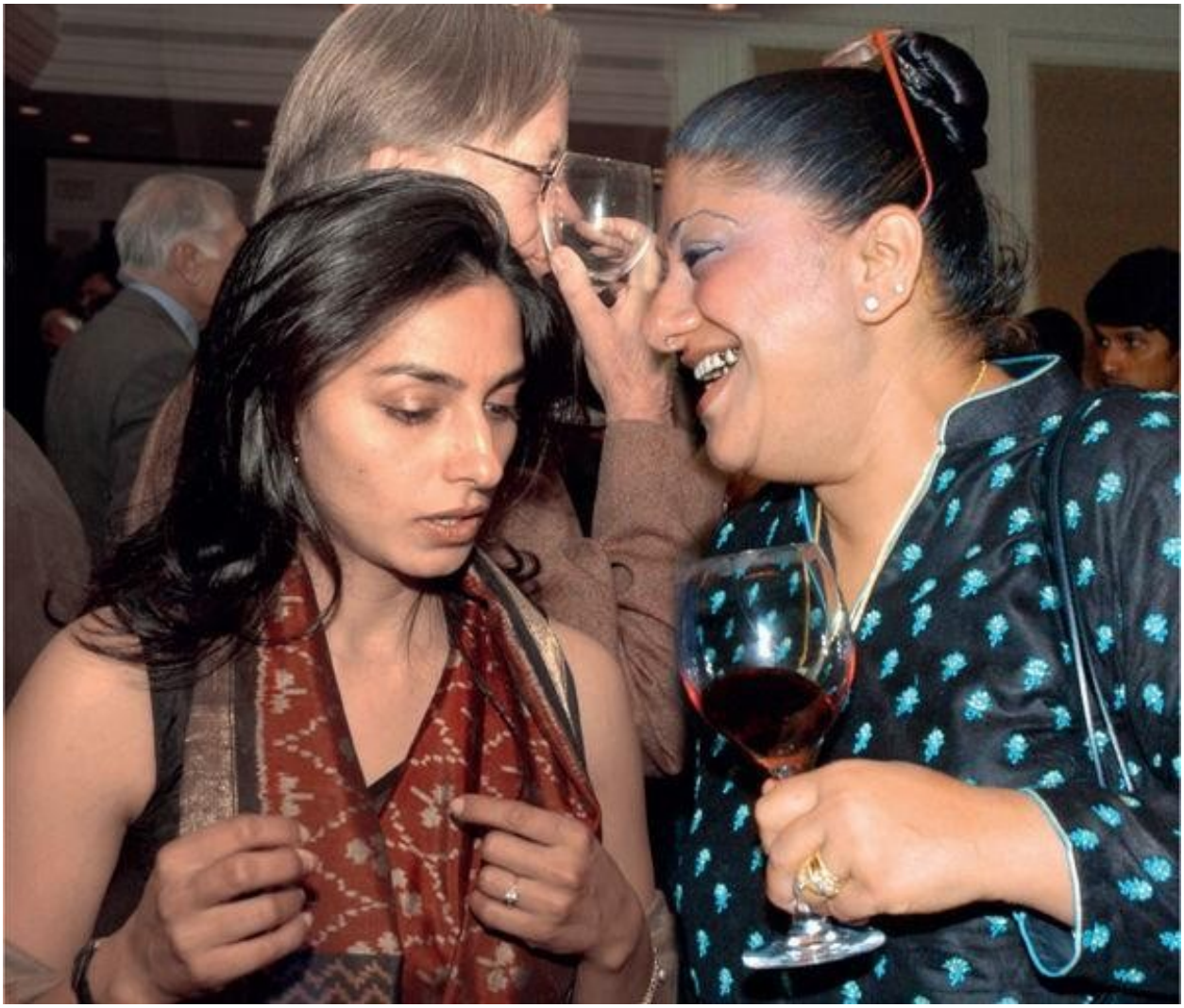

14. (Left to right) Ambreen Khan and Sabina Sehgal Saikia.

Ambreen Khan

15. □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□□□

□□□□ □□□□□□□

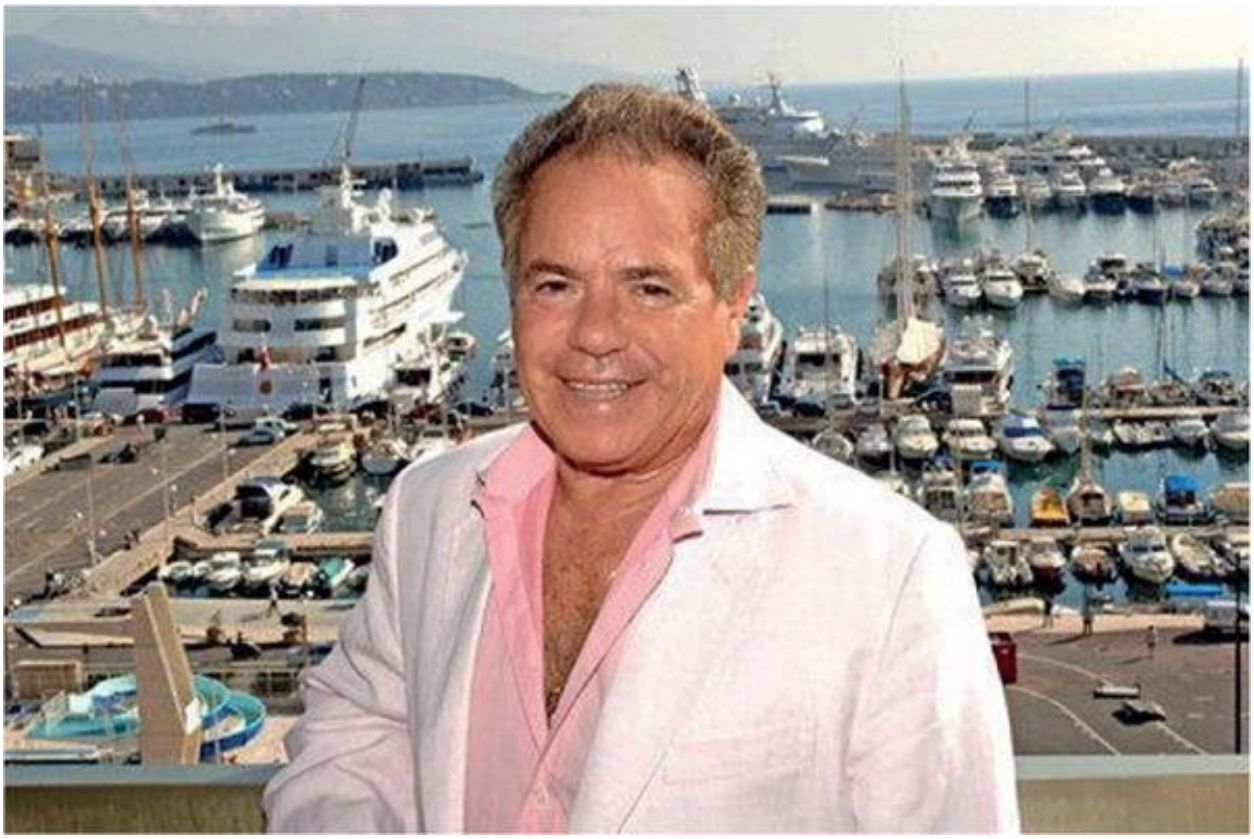

16. कुट्टलम राजगोपालन राममूर्ति, जिन्हें बंधक बनाकर रखा गया था

पोती।
के. आर. राममूर्ति

17. एंड्रियास लिवेरस के क्रूज़ निदेशक, रमेश चेरुवोथ, सुपर-याट के साथ।
पृष्ठभूमि में एलिसिया।

# [redacted]

18. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

# [redacted]

19. डेविड हेडली की यह तस्वीर उनकी माँ की पसंदीदा थी। उनके पास एक
उसकी एक बड़ी प्रिंट कॉपी को लैमिनेट करवाकर उसने उसे दीवार पर टांग दिया।

# [redacted]

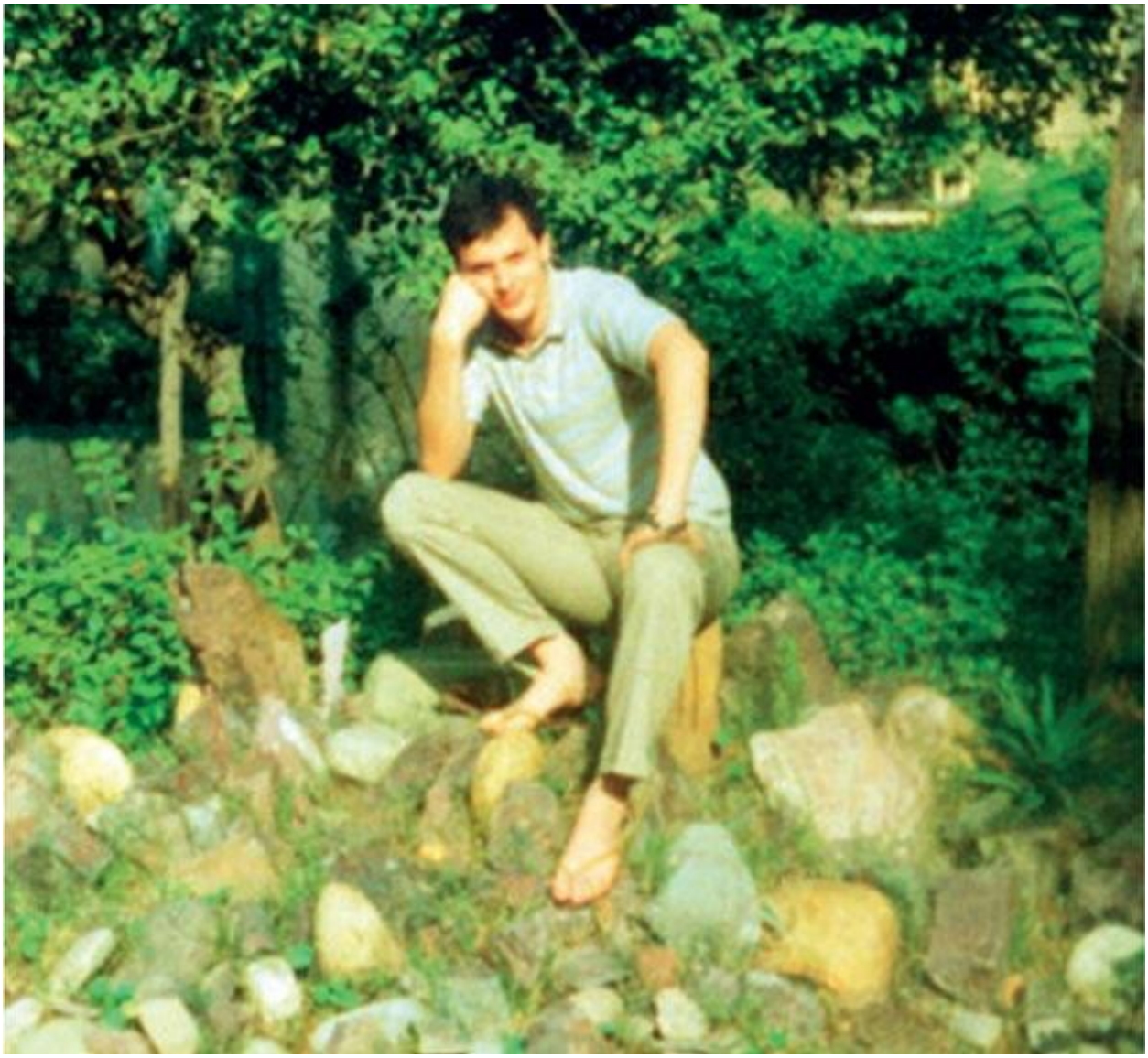

20. [illegible]

[illegible]

21. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

22. डेविड हेडली जुलाई 2008 में अपने अंतिम निगरानी अभियान के लिए भारत में प्रवेश करते हुए।

यह तस्वीर छत्रपति एयरपोर्ट पर इमिग्रेशन लाइन में लगे सीसीटीवी कैमरे ने ली थी।
शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, मुंबई।
मुंबई आव्रजन अधिकारी

23. अब्दुल रहमान 'बदा' (आगे) और अली चैंबर्स के बाहर सीसीटीवी में कैद हुए।
क्लब।

[redacted]

24. □□□□, □□□□□□ □□□□□ '□□□□' □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□
27 □□□□□ 2008 □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□

[redacted]

25. Ajmal Kasab in the Chhatrapati Shivaji Terminus.

□□□□□□□/□ □□□□□□ □□ □□□□□□

26. चैंबर्स के अंदर मोबाइल फोन से ली गई तस्वीर, जिसमें भीष्म मनसुखानी दिखाई दे रहे हैं।
दाहिनी ओर फर्श पर लेटा हुआ एक व्यक्ति काले कपड़े पहने हुए था, और उसकी माँ, एक
काली साड़ी पहने एक महिला उसके पीछे कुर्सी पर बैठी थी। Tilu Mangeshikar

27. Bhisham Mansukhani (right) with Prashant Mangeshikar (left) at 11 p.m. on
26 नवंबर 2008 को, क्रिस्टल होटल के कर्मचारियों द्वारा उन्हें ले जाने के कुछ ही समय बाद।
कमरा कक्षों में बदल गया। प्रशांत बॉम्बे अस्पताल के पति थे। एनेस्थेटिस्ट डॉ. तिलू, जिन्होंने असफल ऑपरेशन के बाद चैंबर्स में घायल कर्मचारियों का इलाज किया।
अगली सुबह तड़के उन्हें वहां से निकाला गया। वह हमलों में बच गए।
Tilu Mangeshikar

28. ताजमहल में आग लगना।
रॉयटर्स/अर्को दत्ता

29. [redacted]

[redacted]

[redacted]

30. □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□
□□□□□/□□□□

31. □□ □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□

□□□□□□□□

32. [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
27 [illegible] 2008 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

33. माइक पोलैक (बाएं से तीसरे) गोलियों से बचने के लिए छिपते हुए, भागने के कुछ ही क्षण बाद।
ताज होटल से।

34. मुंबई क्राइम सेंटर में अजमल कसाब से पूछताछ के दौरान मोबाइल फोन से ली गई तस्वीर।
शाखा, सुबह तड़के, 27 नवंबर 2008।

# मुंबई पुलिस

35. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-47 [illegible] [illegible] [illegible]

36. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

# □□□□□□□

37. □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□: □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□

38. □□□□□□□□□□□□□: □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□

□□□□ □□□□

39. □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ 27 □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□

□□□□□ 2008□

□□□□□□ □□. □□, □□□□□□□□□□, □□□□□□

40. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

41. [illegible] [illegible] [illegible]

42. [illegible]

[illegible]

VIJAY RAO BANJA
KAIZAD KAMDIN
BORIS REGO
HEMANT TALIM
SADANAND PATIL
ZAHEEN MATEEN
GAUTAM GOSAIN
"Never To Be Forgotten"
26-11-2008

43. [illegible]

[illegible]

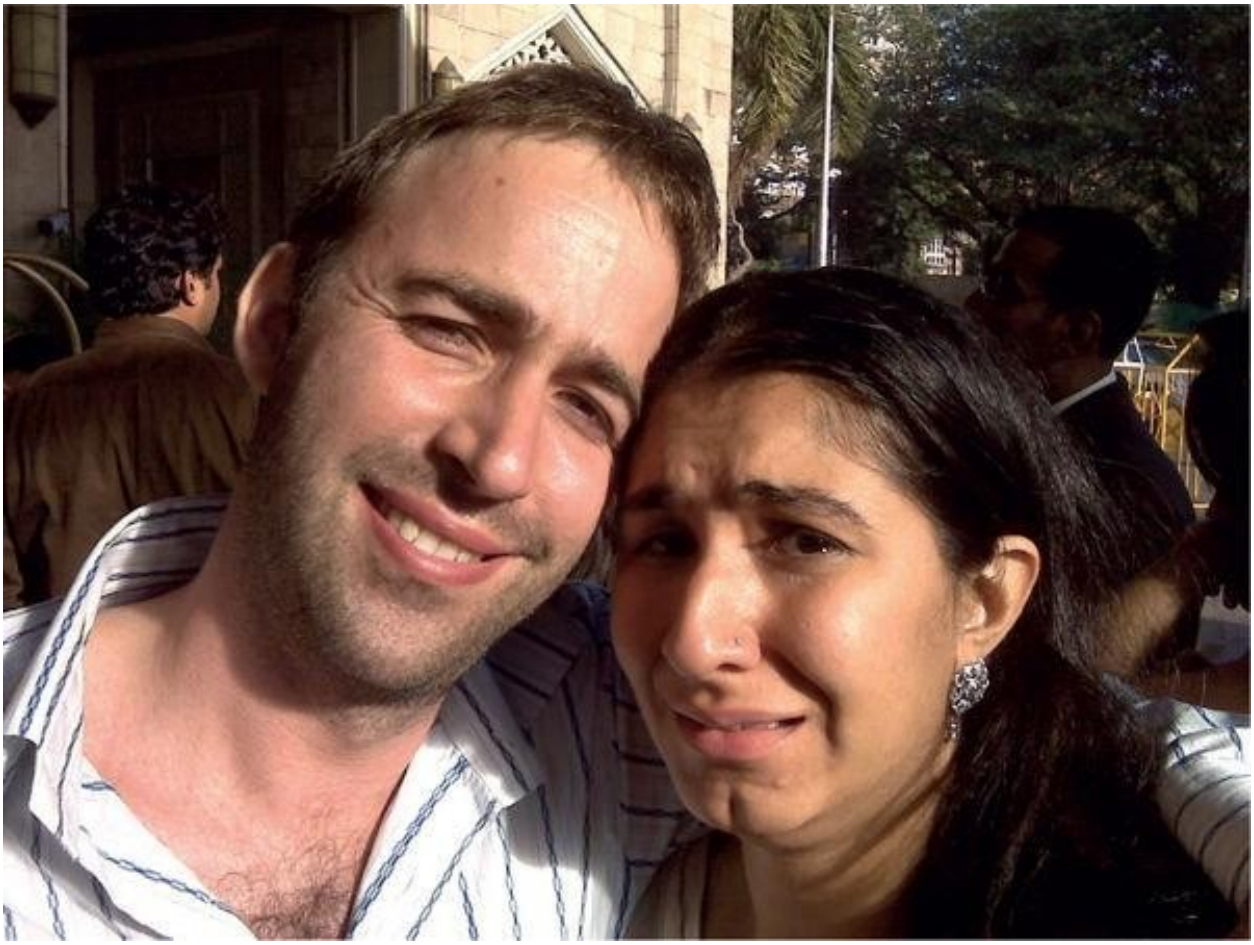

44. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

# □□□□ □□□□□

अंतभाषण

आतंकवाद को अक्सर असममित बताया जाता है, और मुंबई इस बात का एक भयावह उदाहरण प्रस्तुत करता है: दस द्वेषी और गुमराह युवा पुरुष जो दुनिया के चौथे सबसे बड़े शहर को बंधक बनाने में सक्षम थे, उन्होंने तीन रातों के आतंक में 166 लोगों को मार डाला और 300 से अधिक लोगों को घायल कर दिया। तबाह हुए शहर की तस्वीरें पूरी दुनिया में फैल गईं। अनगिनत दुखद कहानियां थीं। छत्रपति शिवाजी टर्मिनस पर, जहां अजमल कसाब और उसके साथी ने 58 यात्रियों को गोली मारकर 104 अन्य को घायल कर दिया, एक तेरह वर्षीय लड़के को गोलीबारी से बचा लिया गया और अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने बड़ी मुश्किल से उसे बताया कि उसके माता-पिता, एक चाचा और तीन चचेरे भाई-बहन मारे जा चुके हैं। चाबाद हाउस के बाहर, सैंड्रा सैमुअल, एक दाई, ने दो वर्षीय मोशे होल्ट्ज़बर्ग को अपनी बाहों में थामे रखा, जब उसके माता-पिता, रब्बी गैब्रियल और उनकी गर्भवती पत्नी रिवका, चार अन्य बंधकों के साथ मारे गए। ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटलों से बत्तीस कर्मचारियों और मेहमानों के शव बरामद होने के बाद, आठ घंटे तक बंधक बनाए गए एक तुर्की मुस्लिम दंपति, सैफी और मेल्टेम मुएज़िनोग्लू ने याद किया कि कैसे बंदूकधारियों द्वारा महिला बंधकों के एक समूह को मारते हुए देखने के बाद वे शोक में डूब गए थे। सैफी ने कहा, 'हम आगे बढ़े, अपने हाथ खोले और जोर से प्रार्थना की।' ‘और जानते हैं क्या हुआ? बंदूकधारियों में से एक हमें बड़ी-बड़ी आँखों से घूर रहा था। उसे यकीन नहीं हो रहा था और वह ज़मीन की ओर देखने लगा। वह शर्मिंदा था। हमने अरबी में प्रार्थना की, और ज़ोर-ज़ोर से, हाथ में हाथ डालकर उन शवों के सामने प्रार्थना की।’ लियोपोल्ड कैफ़े, कामा अस्पताल, मेट्रो सिनेमा और रंग भवन लेन से कई और दिल दहला देने वाली और जीवन की प्रेरणा देने वाली तस्वीरें सामने आईं। शहर के बंदरगाह क्षेत्र से भी, जहाँ एक टैक्सी बम फटा, और विले पार्ले से, जहाँ दूसरा बम फटा, अमानवीयता की इन सभी घटनाओं ने दुनिया भर के पुलिस प्रमुखों को झकझोर कर रख दिया, जो सोच रहे थे कि उनकी पुलिस बल ऐसी स्थिति से कैसे निपटती।
उन्होंने मुंबई के विनाशकारी दिनों का अध्ययन किया और लश्कर की चौंकाने वाली तकनीकों को समझा। पाकिस्तान में तैनात संचालकों ने सस्ते इंटरनेट

टेलीफोनी नेटवर्क का उपयोग करके अपने बंदूकधारियों को वास्तविक समय में निर्देशित किया, साथ ही उनकी लोकेशन भी छुपाई। सैटेलाइट टीवी और गूगल अर्थ से लैस ये अदृश्य नियंत्रक कराची में आराम से बैठे थे और माउस या रिमोट कंट्रोल के एक इशारे से तबाह शहर पर नज़र रख रहे थे। मुंबई में हर वो व्यक्ति जिसने किसी न्यूज़ चैनल को फोन या मैसेज किया, उसने इन लोगों को भारतीय सुरक्षा बलों की रणनीति की जानकारी दी और उन्हें नए लक्ष्यों के बारे में भी सतर्क किया। घंटों तक रिकॉर्ड की गई रोंगटे खड़े कर देने वाली टेलीफोन बातचीत से उन साजिशकर्ताओं की निर्मम योजनाएँ सामने आईं, जिन्होंने अपने आदमियों को नरसंहार में धकेल दिया और फिर यह सुनिश्चित किया कि वे भी उसी नरसंहार में मारे जाएँ। इन असाधारण टेपों ने बंदूकधारियों के बचकाने स्वभाव को भी उजागर किया, जो उन्माद, आत्मसंदेह, क्रूरता और थकावट के बीच झूल रहे थे।
उपरोक्त सभी कारण हमें 26/11 के बारे में लिखने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसा कि भारत में इन हमलों को जाना जाता है, और हमने हमलों के समाप्त होने के तुरंत बाद 'द सीज' पर शोध शुरू कर दिया। हालांकि, जब हमने पहली बार मुंबई के अधिकारियों से संपर्क किया, तो उनकी आम प्रतिक्रिया थकान और संदेह की थी। राकेश मारिया, शहर के सबसे प्रसिद्ध पुलिस अधिकारी, जिन्हें 2010 में आतंकवाद विरोधी दस्ते के प्रमुख के रूप में पदोन्नत किया गया था, और जिन्होंने अपने मारे गए सहकर्मी हेमंत करकरे का स्थान लिया था, ने जोर देकर कहा कि नवंबर 2008 के वे तीन दिन पुलिस और खुफिया एजेंसियों की कल्पनाशीलता की कमी को दर्शाते हैं। नागपाड़ा स्थित एटीएस मुख्यालय में उनके पहली मंजिल के कार्यालय में उनसे मिलने के लिए घंटों इंतजार करने के बाद, मारिया ने शुरू में दावा किया, 'जो कुछ भी कहना जरूरी था, वह कहा जा चुका है।'
लेकिन जब हमने सबूतों की छानबीन शुरू की तो इसके विपरीत बात सामने आई। जहां अमेरिका में 9/11 जांच आयोग ने हमलों के हर पहलू की जांच के लिए दस सदस्यीय द्विदलीय राजनीतिज्ञों के एक बोर्ड को नियुक्त किया था, और लंदन में 7/7 की जांच में हर विवरण और गवाह के बयान को दर्ज करने में छह महीने लगे थे, वहीं 26/11 को प्रधान आयोग द्वारा केवल सतही तौर पर जांचा गया था, जो मुंबई में 30 दिसंबर 2008 को शहर पर हुए 'युद्ध जैसे' हमलों की जांच के लिए गठित दो सदस्यीय पैनल था।

खुफिया एजेंसियों, राजनेताओं या राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड से जिरह करने से रोके जाने के कारण, आयोग ने चौंसठ पृष्ठों की एक जांच रिपोर्ट तैयार की, जिसकी गहराई की कमी के लिए व्यापक रूप से आलोचना की गई। प्रधान आयोग ने मुंबई पुलिस बल को दोषमुक्त कर दिया, हालांकि उसने पुलिस आयुक्त हसन गफूर पर अधिक सक्रिय न होने का आरोप लगाया। राज्य विधानमंडल ने इन कमजोर शब्दों को भी खारिज कर दिया। गफूर ने 26/11 की गलतियों के लिए अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को दोषी ठहराते हुए जवाब दिया और 2012 में ब्रीच कैंडी अस्पताल में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई। तब तक प्रधान आयोग की भविष्य के हमलों का बेहतर पता लगाने (और उन्हें रोकने) के लिए अधिकांश सिफारिशें अभी भी लागू नहीं की गई थीं।
राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड भी खुलकर बोलने से हिचकिचा रहा था, और अंततः उसने हमें लिखित रूप में पुष्टि की कि वह भारत के कठोर गोपनीयता कानूनों के डर से 'एक संगठन' के रूप में पुस्तक में भाग नहीं लेना चाहता। इसके बाद, कई अधिकारी, जिनमें से कुछ अभी भी सेवा में हैं, एनएसजी की तैनाती की विफलता से इतने भयभीत थे, जिसके कारण वे भारत के अब तक के सबसे भीषण आतंकवादी हमले में एक दिन देरी से पहुंचे थे, कि वे अपनी कहानियाँ बताने के लिए सहमत हो गए। खुफिया अधिकारी घबराए हुए थे और राज्य द्वारा नियुक्त अभियोजक स्वार्थी थे, लेकिन उन्होंने भी गुमनाम रहने की शर्त पर हमसे बात की। लेकिन इनमें से कोई भी प्रतिक्रिया ताज होटल की प्रतिक्रिया जितनी कठिन नहीं थी। 'हाउस ऑफ मैजिक' के रूप में अपनी छवि को फिर से बनाने की ज़रूरत और कर्मचारियों और मेहमानों के बलिदान को याद करने के बीच फंसा हुआ, एक संस्था के रूप में होटल ने पहले तो कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, जो हमारे लिए विशेष रूप से चिंताजनक था क्योंकि यह उस पुस्तक के केंद्र में था जिसे हम लिखना चाहते थे।
उस रात जिन लक्ष्यों पर हमला हुआ, उनमें ताज होटल सबसे प्रतिष्ठित था, और इसी कारण लश्कर ने सबसे पहले इसे ही चुना। हमारे लिए ताज होटल की कहानी, और इसके हमलावरों, कर्मचारियों, मेहमानों और मुक्तिदाताओं की कहानियाँ, चाबाद हाउस, सीएसटी नरसंहार और ट्राइडेंट-ओबेरॉय हमले की घटनाओं की झलक भी दिखाती हैं, जिससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि क्या खोया और पुलिस से लेकर चॉलवासियों तक, शहर पर हमला करने वाले बंदूकधारियों से लेकर

एनएसजी के उन जवानों तक, जिन्होंने अंततः उन्हें निष्क्रिय कर दिया, सभी ने क्या सहा और उस पर विजय प्राप्त की।
हमने धीरे-धीरे शुरुआत की, घबराए हुए संस्थानों का विश्वास जीता, ताज होटल के सैकड़ों कर्मचारियों, मेहमानों, पुलिस अधिकारियों और विशेष बलों के सदस्यों से संपर्क किया, मुंबई और पाकिस्तान, यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण-पूर्व एशिया और खाड़ी देशों में हर तरह के प्रत्यक्षदर्शियों और प्रतिभागियों से बात की, और उनकी यादों का इस्तेमाल करके एक समयरेखा तैयार की। एक बार जब हमें स्थान और समय सीमा मिल गई, तो हम कई दर्जन महत्वपूर्ण साक्षात्कारकर्ताओं के पास वापस गए, जिनमें से कई ने पहले कभी बात नहीं की थी, और उनमें से अधिकांश अपने अनुभवों के परिणामस्वरूप उल्लेखनीय रूप से बदल गए थे।
हम भीष्म मनसुखानी से पहली बार 2010 में मुंबई के मरीन ड्राइव पर स्थित भीड़भाड़ वाले पिज़्ज़ा बाय द बे रेस्तरां में मिले थे, जो उनके ब्रीच कैंडी स्थित घर से कुछ ही दूरी पर था। उन्होंने बताया कि ताज होटल से बाल-बाल बचते ही उन्होंने भारत छोड़ने की योजना बनानी शुरू कर दी थी। भीष्म के बाल-बाल बचने के बाद, उनके मन में अधिकारियों के प्रति घृणा का भाव था, जिन पर उन्होंने और कई अन्य लोगों ने अपने कष्टों को लंबा खींचने का आरोप लगाया था, और पाकिस्तान के साथ सीमा पार संबंधों की राजनीतिक गतिरोध से वे निराश थे। ताज़ा नींबू सोडा पीते हुए, भीष्म ने हमें क्रिस्टल रूम से लेकर चैंबर्स तक की अपनी यादें सुनाईं, और घंटों तक बिना रुके बोलते रहे। शुक्रवार की रात की भीड़ के प्रति उनका तिरस्कार का भाव था, जो 26 नवंबर 2008 को रात 9.40 बजे के कुछ ही समय बाद शहर को ठप्प कर देने वाले हमलों को मानो भूल चुकी थी।
सावित्री चौधरी, जिन्होंने खाद्य समीक्षक सबीना सहगल सैकिया के अंतिम दिनों में उनके साथ काफी समय बिताया था, उस समय मुंबई में फ्रीलांसिंग कर रही थीं, ऑस्ट्रेलियाई नाइन नेटवर्क के लिए, जब हमने ईमेल के जरिए मिलने का समय तय किया। अपने ऊंचे अपार्टमेंट में बैठी, जहां से बॉम्बे अस्पताल से लेकर उस जेल तक, जहां अजमल कसाब उस समय कैद था, कई प्रमुख स्थानों का विहंगम दृश्य दिखाई देता था, उन्होंने सबीना के अंतिम क्षणों को याद किया और अपने साझा अतीत की कहानियों को भी साझा किया, जो उनकी दोस्ती को दर्शाती थीं। सावित्री ने उसी दिन बाद में डैनी माइकल पिंटो से अपनी दोस्त के शव को

संरक्षित करवाने की व्यवस्था की थी। पिंटो के अंतिम संस्कार गृह के बाहर आज भी 'डेड सेंटर ऑफ टाउन' का बोर्ड लगा है, जो उनके अंतिम संस्कार गृह को शहर का कब्रिस्तान बताता है, जहां राजीव गांधी और मदर टेरेसा को दफनाने की तैयारी की गई थी। सावित्री उस बोर्ड को देखकर मुस्कुराईं, यह जानते हुए कि सबीना को यह बहुत पसंद आता। उन्होंने हवाई अड्डे पर अपने पति विक्रम के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी, और दोनों ने तब तक देखा जब तक कि ताबूत एक प्रतीक्षारत यात्री विमान के कार्गो होल्ड में गायब नहीं हो गया। राजनेता, फैशन डिजाइनर, पत्रकार, टीवी सितारे और कलाकार नई दिल्ली में सबीना के अंतिम संस्कार में शामिल हुए - जैसा कि उनकी इच्छा थी। उनके भाई निखिल सेगल ने हमें बताया: 'परिवार में हम मजाक में कहते थे कि अगर सबीना को जाना ही था, तो इसी तरह, शान से जाना चाहिए था। उन्हें धीमी और गुमनाम मौत का एक भी पल नापसंद होता।' उनके पति शांतनु ने हमसे कुछ ज्यादा ही संशय जताया। वह अभी भी नई दिल्ली में अपने सोलह वर्षीय बेटे अनिरुद्ध और उन्नीस वर्षीय बेटी अरुंधति के साथ रहते हैं।
माइक पोलैक, जिन्होंने हमें टावर लॉबी से हार्बर बार तक और वासाबी रेस्टोरेंट होते हुए चैम्बर्स तक की अपनी यात्रा पर ले गए, ने बताया कि कैसे उन्होंने बदलाव के अवसर को अपनाया। यह निर्णय तब और पुख्ता हुआ जब ताज होटल के बाहर गोलियों से बचते हुए उनकी एक तस्वीर अखबारों के पहले पन्नों पर छपी। उस तस्वीर को देखते हुए, उन्होंने खुद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जिसे लग रहा था कि वह मरने ही वाला है। जब वह और अंजली न्यूयॉर्क लौटे, तो उन्होंने 2001 में सह-स्थापित हेज फंड को भंग कर दिया और उन्होंने 'वेंचर फिलैंथ्रोपी' को बढ़ावा देने और मुख्य रूप से भारत में सामाजिक उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए एससीए चैरिटेबल फाउंडेशन की स्थापना की। माइक न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी स्टर्न स्कूल ऑफ बिजनेस में दर्शनशास्त्र और व्यवसाय अध्ययन के सहायक प्रोफेसर भी बन गए और वे अपने परिवार की निवेश फर्म, पोलैक होल्डिंग्स का प्रबंधन करते हैं। जब हमने विल पाइक से संपर्क किया, तो शुरुआत में उनके मध्य लंदन स्थित वकील के माध्यम से हुआ, जो ताज होटल के खिलाफ मुकदमा लड़ रहे थे। पहले तो विल अपनी कहानी बताने से हिचकिचा रहे थे। उन्होंने कहा कि तीसरी मंजिल से गिरने के बाद का दर्द उन्हें ऐसा लग रहा था मानो कभी खत्म ही न हो। एक दर्जन से अधिक ऑपरेशन और उत्तरी लंदन के स्टैनमोर स्पाइनल कॉर्ड इंजरी

सेंटर में छह महीने बिताने के बाद, फरवरी 2009 में विल को बताया गया कि वह फिर कभी चल नहीं पाएंगे। 2011 में उनका और केली डॉयल का अलगाव हो गया और हमलों से पहले गोवा के समुद्र तट पर साथ बिताए गए उनके सुपर 8 वीडियो को उन्होंने अभी तक विकसित नहीं कराया है, जो उनकी दुर्भाग्यपूर्ण छुट्टी का एकमात्र बचा हुआ रिकॉर्ड है। ब्रिटिश सरकार से पांच साल तक संघर्ष करने के बाद, जनवरी 2013 में उन्हें आतंकवाद के शिकार के रूप में मुआवजा मिला, लेकिन लकवाग्रस्त के रूप में जीवन को स्वीकार करने का उनका संघर्ष अभी भी जारी है।
लियोपोल्ड कैफे की घटना में जीवित बची लाइन क्रिस्टिन वोल्डबेक शारीरिक रूप से तो बच गईं, लेकिन उन दिनों के सदमे से वह कभी उबर नहीं पाईं।
हमले के बाद वह और उनके प्रेमी अर्ने स्ट्रॉम एक महीने तक मुंबई में रहे, जिसे उन्होंने 'शहर के साथ घावों को भरने' का प्रयास बताया। इस दौरान डॉक्टरों ने अर्ने की कटी हुई उंगलियों को फिर से जोड़ा और उनके चेहरे पर लगे घावों पर टांके लगाए। इसके बाद, लाइन ने पीड़ितों का एक नेटवर्क बनाया और वह उस रात जिन लोगों के संपर्क में आईं, उनमें से कई से आज भी संपर्क में हैं, जिनमें उनके 'देवदूत' अमित पेशावे भी शामिल हैं, हालांकि वह अपनी फेसबुक मित्र मीतू असरानी के परिवार से संपर्क में नहीं हैं, जिनकी कैफे में खून बहने से मौत हो गई थी। लाइन आज भी खूब यात्रा करती हैं, हाल ही में उन्होंने कंबोडिया और अंडमान द्वीप समूह की यात्रा की है, और वह 26/11 को अपना 'पुनर्जन्म' मानती हैं।
सेवानिवृत्त बैंकर के. आर. राममूर्ति को ढूँढना मुश्किल था। शांत स्वभाव के राममूर्ति अपने साथ हुए हादसे के बारे में किसी से भी बात करने से डरते थे और विश्व बैंक के सलाहकार के रूप में दूर-दराज के इलाकों में काम करते रहे। जब हम बेंगलुरु के हरे-भरे इलाके में स्थित उनके घर पर आमने-सामने बैठे, तो परिवार से घिरे राम ने बताया कि कैसे वे भी 1993 में मुंबई बम धमाकों से बाल-बाल बचे थे। इसके बाद उन्होंने 26/11 के दौरान पंद्रह साल बाद झेली दहशत को शब्दों में बयां करने की कोशिश की। राम कई बार मुंबई लौट चुके हैं, लेकिन बचाए जाने के बाद अधिकारियों द्वारा नजरअंदाज किए जाने की निराशा उनके मन से कभी नहीं निकली, जबकि उन्होंने ताज होटल के अंदर चारों हमलावरों के साथ किसी और से ज्यादा समय बिताया था। उन्होंने हिम्मत नहीं

हारी और आखिरकार अजमल कसाब के मुकदमे में बयान दिया। जब हमने आखिरी बार एक-दूसरे को ईमेल किया था, तब वे युगांडा में काम कर रहे थे।
अमित और वर्षा थडानी, जिनका बुधवार, 26 नवंबर को ताज होटल के कार्यक्रम में क्रिस्टल रूम में आयोजित होने वाला विवाह समारोह बेहद महत्वपूर्ण था, जैसे ही संभव हुआ, अपने जीवन को फिर से संवारने में जुट गए। पेडर रोड स्थित अपने अपार्टमेंट में बैठे, उनके बगल में एक नवजात शिशु लेटा हुआ था, उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने बचाए जाने के दो दिन बाद ही ऑस्ट्रेलिया में हनीमून मनाने का फैसला किया, क्योंकि वे उस अनुभव को भुलाकर आगे बढ़ना चाहते थे, हालांकि कुछ दोस्तों का मानना था कि उन्हें शोकग्रस्त शहर में ही रहना चाहिए था। लेकिन अमित दिखावटी भावनाओं में बहने वाले व्यक्ति नहीं हैं और केवल वे और वर्षा ही जानते थे कि उन्होंने क्या झेला था। अमित के स्कूल के दोस्त गुंजन नारंग की बहन झरना नारंग, जिनकी अपने माता- पिता के साथ होटल के तहखाने में मौत हो गई थी, अभी भी मुंबई में रहती हैं। ताज होटल से लगभग मृत अवस्था में निकाले जाने के क्षण से ही उन्होंने तमाम मुश्किलों का सामना किया। डॉक्टर उनकी इस भयानक घटना में जीवित बचने से दंग रह गए और फिर उनकी रिकवरी देखकर और भी हैरान हो गए। महीनों अस्पताल में रहने के दौरान, जहां उन्हें अड़तालीस बोतल खून चढ़ाया गया, उनकी आंतें और गुर्दे खराब हो गए थे, और एक समय तो उनके दोनों पैर लकवाग्रस्त हो गए थे, झरना ने आखिरकार फिर से चलना सीख लिया। उन्होंने अपनी इस अद्भुत सफलता और रिकवरी का श्रेय अपने बौद्ध विश्वासों को दिया, जिन्होंने उन्हें उस आतंक से उबरने में सक्षम बनाया।
सौक से बच निकलने के बाद बॉब निकोल्स और कैप्टन रवि धरणीधरका एक-दूसरे के संपर्क में रहे। मुंबई हमलों की पहली बरसी पर, बॉब - जो अभी भी निकोल्स स्टेन एंड एसोसिएट्स चलाते हैं - और उनकी टीम को उसी रेस्तरां में आयोजित रात्रिभोज में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उनका भारतीय कारोबार फलता-फूलता है: वे अभी भी ताज होटल के सुरक्षा प्रमुख सुनील कुड़ियादी के साथ मिलकर काम करते हैं और सितंबर 2009 में शुरू हुई चैंपियंस लीग ट्वेंटी20 में भी हिस्सा लिया था। रवि, जो सैन डिएगो लौट आए, कैलिफोर्निया की एक एयरोस्पेस कंपनी में कार्यकारी बन गए, लेकिन अभी भी अमेरिकी मरीन कॉर्प्स रिजर्व की चौथी टैंक बटालियन में सेवारत हैं और अपने मुंबई स्थित परिवार के संपर्क में हैं। ताज होटल में जानलेवा हादसे

के बाद, उन्होंने अपनी प्रेमिका से शादी की और हमलों की दूसरी बरसी पर उन्हें सौक में रात्रिभोज के लिए ले गए। अब उनका एक छोटा बच्चा है।
मुंबई के बाद रतन कपूर और निक एडमिस्टन अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े। रतन कपूर भारत की नवोदित फॉर्मूला 1 परियोजना में शामिल हो गए, जबकि निक ने मेक्सिको सिटी, साओ पाओलो और मॉस्को में नए कार्यालय खोले। उन्होंने डियोन लिवेरास को उनके पिता के पार्थिव शरीर को लंदन वापस लाने में मदद की, जहां एंड्रियास की बेटी ने निक से कहा कि उन्हें लगता है कि उनके पिता का 'जीवन चक्र' पूरा हो गया है। लिवेरास परिवार ने उत्तरी लंदन के एक ग्रीक साइप्रस चर्च में भव्य अंतिम संस्कार किया और 2010 में एलिसिया का नाम बदलकर मूनलाइट II कर दिया गया और एडमिस्टन ने परिवार की ओर से इसे 60 मिलियन पाउंड में बेच दिया। अपनी चोटों से उबरने के बाद, एंड्रियास के क्रूज़ निदेशक, रमेश चेरुवोथ, लिवेरास परिवार के लिए काम पर लौट आए और उस सुपर-याट का प्रबंधन करने लगे जिसका नाम डियोन ने अपने पिता के नाम पर रखा था। जब हमारी उनसे आखिरी बार मुलाकात हुई, तब वे लंदन पहुंच चुके थे, जहां वे एक सऊदी अरब के उद्योगपति की संपत्तियों का प्रबंधन कर रहे थे। विश्वास पाटिल के लिए मुंबई हमलों की अभी तक संतोषजनक व्याख्या या जांच नहीं हुई है और ये हमले कल्पना की कमी से कहीं अधिक गंभीर हैं। अपनी निजी भावनाओं के बावजूद, पाटिल महाराष्ट्र में नायक बन गए, साधारण परिवारों के उन लड़कों के लिए एक आदर्श, जो पहले पुलिस सेवा को अभिजात्य वर्ग का क्षेत्र मानते थे। 26/11 पर उनके सार्वजनिक व्याख्यानों को यूट्यूब पर लाखों व्यूज़ मिले। उन्हें पश्चिमी क्षेत्र के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त के पद पर पदोन्नत किया गया और उनका तबादला मुंबई के ग्लैमरस समुद्र तटीय उपनगर बांद्रा में हुआ, जो बॉलीवुड सितारों का चहेता है। हमारी मुलाकात उनसे समुद्र के किनारे स्थित एक कार्यालय में हुई, जिसकी खिड़कियां फर्श से छत तक फैली हुई थीं। उनके सहपाठी राजवर्धन सिन्हा को भी सम्मानित किया गया और उन्हें मुंबई में नए अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (आर्थिक अपराध शाखा) के रूप में नियुक्त किया गया। वे क्रॉफर्ड मार्केट के पास स्थित अपराध शाखा के कार्यालयों से कार्यभार संभालते हैं।
ब्लैक कैट्स ने हर मिनट के बर्बाद होने का विस्तृत ब्यौरा तैयार किया और उसे गृह मंत्रालय को सौंप दिया। यह एक चौंकाने वाला दस्तावेज़ है जो आज भी सैनिकों को आक्रोशित करता है और इसमें विस्तार से बताया गया है कि कैसे

बुधवार, 26 नवंबर 2008 को रात 10:05 बजे, लियोपोल्ड में पहली गोली चलने के मात्र बाईस मिनट बाद, एक संयुक्त टास्क फोर्स को अनौपचारिक रूप से जुटाया गया था। रात 10:30 बजे तक, ब्लैक कैट्स पास के पालम हवाई पट्टी के तकनीकी क्षेत्र में तैनात होने के लिए तैयार थे, लेकिन कैबिनेट सचिव, जो देश के सर्वोच्च सिविल सेवक हैं, को एनएसजी प्रमुख ज्योति दत्त से संपर्क करने में सत्तर मिनट और लग गए। उन्होंने बिना अनुमति दिए या परिवहन व्यवस्था का खुलासा किए बिना तैनाती के बारे में चेतावनी दी।
रात 12:12 बजे संयुक्त सचिव पुलिस (आंतरिक सुरक्षा) ने एनएसजी को फोन किया और संभावित तैनाती की चेतावनी दी, हालांकि उन्होंने हरी झंडी नहीं दी, लेकिन वायुसेना प्रमुख से विमान उपलब्ध कराने का वादा किया। तीन मिनट बाद, ब्रिगेडियर गोविंद सिंह सिसोदिया (डीआईजी ऑपरेशंस) ने टास्क फोर्स को पालम हवाई पट्टी पर भेजा। रात 12:34 बजे मंत्रालय के सबसे वरिष्ठ सिविल सेवक, गृह सचिव मधुकर गुप्ता ने फोन करके बताया कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने आखिरकार एनएसजी को बुला लिया है। समीक्षा में निष्कर्ष निकाला गया कि कोलाबा कॉजवे में पहली गोलीबारी के तीन घंटे बाद उन्हें 'आगे बढ़ने' की अनुमति मिल गई थी।
हालांकि, जब दत्त ने वायुसेना प्रमुख को फोन करके अपने विमान के बारे में पूछा, तो उन्हें बताया गया कि विमानवाहक पोत चंडीगढ़ में 156 मील दूर है। इसके बाद उन्होंने भारत की खुफिया एजेंसी, अनुसंधान एवं विश्लेषण शाखा (आरएडब्ल्यू) से मदद मांगी। आरएडब्ल्यू ने पालम हवाई पट्टी पर खड़े इल्युशिन 76 विमान को देने पर सहमति जताई। लेकिन उसमें केवल 120 सैनिक और उनका सामान ही आ सकता था, जिसका मतलब था कि ब्लैक कैट्स को हमलों का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त बल जुटाने के लिए मुंबई के तीन चक्कर लगाने पड़ते। आरएडब्ल्यू ने यह भी बताया कि चालक दल लापता था और विमानवाहक पोत में ईंधन भी नहीं भरा गया था। चालक दल को ढूंढने और इल्युशिन में ईंधन भरने से मिशन में और देरी हो जाती।
दत्त इतने चिंतित थे कि उन्होंने रात 12:54 बजे गृह सचिव को फोन किया, लेकिन पता चला कि वे सरकारी काम से पाकिस्तान में फंसे हुए हैं और सुबह तक उन्हें कोई उड़ान नहीं मिल सकती। एनएसजी प्रमुख ने कड़वे लहजे में मजाक करते हुए कहा, 'उन्हें तुम्हें बंधक न बनाने दो।'

अंततः, 1:45 बजे, जब चीफ दत्त ने हवाई पट्टी के लिए प्रस्थान करने की कोशिश की, तो उन्हें गृह सचिव को उनके आवास से लेने का अनुरोध किया गया, जबकि उन्होंने मंत्री के परिवार को सूचित कर दिया था कि इससे उनके मार्ग में काफी बदलाव आएगा। पालम पहुँचने पर, उन्होंने देखा कि विमान चालक दल के सदस्य अपना भारी सामान हाथों से उठाकर इल्युशिन विमान में रख रहे थे क्योंकि वहाँ कोई लिफ्टिंग गियर उपलब्ध नहीं था। विमान ने लगभग 2:30 बजे उड़ान भरी, और लगभग तीन घंटे की उड़ान के बाद उस शहर की ओर बढ़ा जहाँ छत्रपति शिवाजी टर्मिनस में नरसंहार शुरू और समाप्त हुआ था, कई बम विस्फोट हुए थे, और चाबाद हाउस, ट्राइडेंट-ओबेरॉय और ताज होटल में घेराबंदी शुरू हो गई थी।
गुरुवार, 27 नवंबर को लगभग 5:30 बजे, एनएसजी आखिरकार मुंबई में उतरी। यह घटना ताज होटल के अंदर मौजूद बंदूकधारियों द्वारा रसोई विभाग पर गोलीबारी करने के एक घंटे बाद हुई, जिन्होंने होटल के अंधेरे तहखानों में जाकर मेहमानों को निशाना बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि, रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला गया कि उन्हें शहर ले जाने के लिए वादा किया गया काफिला नहीं आया। गृह सचिव के लिए सफेद एम्बेसडर कारों और सशस्त्र सुरक्षाकर्मियों का काफिला तो मौजूद था, लेकिन एनएसजी को ले जाने के लिए कोई काफिला नहीं था। विमान से सामान उतारने, स्थानीय बसों का इंतजाम करने और एनएसजी को शहर तक पहुंचाने में कई घंटे लग गए।
एनएसजी की रिपोर्ट में उन चेतावनियों को दोहराया गया जो 2006 में ही मंत्रालय को सौंपी गई थीं। तब दत्त ने पत्र लिखकर स्पष्ट किया था कि उनकी तैनाती रणनीति में 'गंभीर खामियां' थीं। दिल्ली से अधिकांश अन्य शहरों तक पहुंचने में ढाई घंटे से अधिक की हवाई यात्रा का समय लगता था। एनएसजी ने चार क्षेत्रीय केंद्र बनाने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन प्रस्तावों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मंत्रालय को दी गई दूसरी रिपोर्ट में भी कोई जवाब नहीं मिला, जिसमें कहा गया था कि भ्रष्टाचार और खरीद प्रक्रिया में सुस्ती के कारण एनएसजी की कार्यशैली 'अधूरी' है। वर्तमान में एनएसजी के जवान 'बेहद अपर्याप्त उपकरणों' से लैस थे। हल्के बूट, केवलर हेलमेट और आधुनिक बॉडी आर्मर के साथ-साथ हैंड्स-फ्री कम्युनिकेशन सेट के लिए आवेदन अधर में लटके हुए थे। उनके पास उच्च क्षमता वाली थर्मल इमेजिंग यूनिटों की कमी थी; उनकी हल्की सीढ़ियां 1985 की थीं; और उनके पास कोई उपयोगी नाइट विजन उपकरण नहीं

थे। मंत्रालय के एक अधिकारी ने स्वीकार किया कि एनएसजी 'लगभग अंधे' की तरह काम कर रही थी और 'केवल दिन के उजाले में ही प्रभावी ढंग से काम कर सकती थी'। जब ब्लैक कैट्स मुंबई पहुंचे तो यह मशीनरी पर मानव जाति की जीत थी, चीफ दत्त ने हमसे कहा। शहर में उतरते ही एनएसजी के लिए खुशी की एकमात्र वजह यह थी कि आठ महीने पहले जब उन्हें दिल्ली में एक बैठक आयोजित करने के लिए भेजा गया था, तब चीफ दत्त ने जोर देकर कहा था कि तीस ब्लैक कैट्स अपने सामान्य वस्त्र पहनकर एक पांच सितारा होटल में मिलें-जुलें, क्योंकि यह पहली बार था जब उनमें से कोई भी किसी आलीशान होटल में गया था।

सार्वजनिक क्षेत्र लड़खड़ा रहा था, वहीं निजी क्षेत्र आगे बढ़ रहा था। 21 दिसंबर 2008 को, घेराबंदी समाप्त होने के तीन सप्ताह बाद, और सर्वेक्षकों द्वारा यह रिपोर्ट दिए जाने के बाद कि होटल को कोई महत्वपूर्ण संरचनात्मक क्षति नहीं हुई है, टाटा समूह ने समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर घोषणा की कि होटल जल्द ही फिर से चालू हो जाएगा: 'आपका फिर से स्वागत है... मुंबई अपनी पुरानी पहचान को फिर से हासिल करेगा और दुनिया की मेजबानी करेगा।' ब्रिगेडियर सिसोदिया एनएसजी से सेवानिवृत्त हुए और टाटा समूह द्वारा भौतिक सुरक्षा प्रमुख के रूप में नियुक्त किए गए। उनके साथ ताज होटल में घूमते हुए, हर कोना एक बंकर जैसा लग रहा था, और हर लैंडिंग एक जीवंत विजय का अनुभव करा रही थी, जिसे उन्होंने भावपूर्ण अभिनय के माध्यम से बयां किया। ताज होटल में, चैंबर्स, टावर और अधिकांश रेस्तरां उस वर्ष क्रिसमस से पहले फिर से खुल गए। पुनर्निर्मित क्रिस्टल रूम, सी लाउंज और पैलेस विंग के अन्य सार्वजनिक क्षेत्र अगले मार्च में फिर से खुल गए। कुछ कमरों के नाम बदल दिए गए, सबीना का सनराइज सुइट बेला विस्टा सुइट बन गया। होटल ने अगस्त 2010 में भव्य रूप से पुनः शुभारंभ किया, 24 मिलियन पाउंड खर्च करके खुद को सुव्यवस्थित करने के बाद, नवंबर में आए अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के शब्दों में, यह 'भारतीय जनता की शक्ति और लचीलेपन का प्रतीक' बन गया था। पर्दे के पीछे, होटल के ग्रैंड एग्जीक्यूटिव शेफ हेमंत ओबेरॉय को पहली मंजिल पर उनके केबिन में फिर से तैनात कर दिया गया और शेफ के स्टाफ रूम की दीवार पर किचन प्रेयर को वापस लगा दिया गया। इसके साथ ही इयान परेरा द्वारा खींची गई वह ग्रुप फोटो भी लगाई गई जिसमें वरिष्ठ शेफ अपनी सफेद वर्दी में अपने काम के औजारों का इस्तेमाल करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

गोल्डन ड्रैगन के शेफ नितिन मिनोचा (जिनका हाथ आखिरकार बचा लिया गया) की मदद से, ओबेरॉय की किचन ब्रिगेड काम पर लौट आई। उन्होंने खून से लथपथ रसोई में जाकर एक बहुधार्मिक पूजा या शुद्धिकरण अनुष्ठान किया, फिर सभी रेस्तरां के लिए नई वर्दी, बर्तन और मेनू तैयार किए। शेफ ओबेरॉय ने मारे गए लोगों के नाम खुदवाकर एक संगमरमर की पटिया भी बनवाई। शेफ रघु भी मौत के मुंह से वापस लौटे और चैंबर्स पर हमला करने वाले बंदूकधारियों के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ने के बाद ताज होटल में वापस आ गए।
शामियाना के मैनेजर अमित पेशावे समेत अन्य लोगों ने दूर-दूर तक के अवसरों की तलाश की। हमलों के तुरंत बाद, गोल्डन ड्रैगन के हेमंत तालीम समेत कई दोस्तों को खोने के बावजूद, जिनकी हमलों के चार दिन बाद चोटों के कारण मृत्यु हो गई, वे ताज होटल लौट आए। हालांकि, उन्होंने 2009 में नौकरी छोड़ दी और शादी कर ली, ताकि यूरोप में काम करने का मौका मिल सके, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि वे जल्द ही मुंबई लौट आएंगे। हमने लंदन में उनके साथ तीन लंबी शामें बिताईं, जिसमें हमने 26/11 की घटना और उनके द्वारा देखी गई हर बात को याद किया। अमित ने हमें बताया कि कैसे हार्बर बार के शौचालयों से उन्होंने जिस छह वर्षीय बच्चे को बचाने की कोशिश की थी, वह आखिरकार अपने माता-पिता से मिल पाया और कैसे वे अभी भी उस ब्रिटिश व्यक्ति के संपर्क में हैं, जिसकी जान उन्होंने बचाई थी, लेकिन जो गुमनाम रहना चाहता था।
फ्लोरेंस मार्टिस ने भी होटल से दूरी बना ली। ब्लैक कैट्स द्वारा बचाए जाने के कई दिनों बाद गहरी नींद से जागने पर उन्हें पता चला कि उनके पिता का शव सायन अस्पताल के मुर्दाघर में मिला है, जहां उनकी पहचान केवल उनकी पहनी हुई अंगूठी से ही हो पाई। उनके अंतिम संस्कार में 2,000 से अधिक लोग शामिल हुए, जिसकी खबर अखबारों और टीवी पर खूब छपी। फ्लोरेंस ने हमें स्थानीय अखबारों की लैमिनेटेड कटिंग दिखाते हुए कहा, 'उन्हें वैसी मौत मिली जैसी वे चाहते थे, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा उन्होंने सोचा था।' त्रासदी के एक साल बाद, वह कुछ समय के लिए ताज होटल के रसोईघर में वापस आईं और उस मांस भंडार में खड़ी हुईं जहां उनके पिता को गोली मारी गई थी। उन्होंने हमें बताया, 'वहां इतनी ठंड थी कि मैं वहां एक मिनट भी नहीं रुक सकी।' फ्लोरेंस अब टाटा समूह के जिंजर होटल्स के ठाणे मुख्यालय में काम करती हैं। उनकी मां ने ताज पब्लिक सर्विसेज वेलफेयर ट्रस्ट में नौकरी कर ली है - जहां वे हमलों के अन्य पीड़ितों की मदद करती हैं।

करमबीर कांग अभी भी ताज समूह के साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन अब भारत में नहीं रहते। 26/11 की घटना के एक साल बाद, उन्होंने पुणे में एक सादे समारोह में अपनी पुरानी कॉलेज मित्र प्रिया नागरानी से शादी की और संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए, जहाँ वे अमेरिका में ताज होटल्स के निदेशक और ताज बोस्टन के महाप्रबंधक बने। वे सबीना के भाई निखिल के संपर्क में हैं, और दोनों ने ही शोक और दुःख से संबंधित कई बातें साझा की हैं।

हमने इस कहानी के कई अहम पहलू सीमा पार, पाकिस्तानी पंजाब के गांवों में खोजे, जहां लश्कर आज भी फल-फूल रहा है। महीनों की कठिन खोजबीन के बाद, हमने दस बंदूकधारियों के दल के कई रिश्तेदारों का पता लगाया और पाया कि 26/11 के बाद के हफ्तों में लश्कर ने उन सभी को एक ही कहानी सुनाई थी, जिसे बाद में आईएसआई ने उनके दिमाग में बिठा दिया था – और उन्हें बोलने के गंभीर परिणामों की चेतावनी भी दी थी। उन्हें बताया गया था कि उनके बेटे/भाई/भतीजे कश्मीर में शहीद हो गए थे। कुछ युद्ध में मारे गए थे। कुछ नदियों में डूब गए थे या पहाड़ी दर्रों को पार करते समय ठंड से जम कर मर गए थे। मुंबई में किसी की मौत नहीं हुई थी। एक पिता ने हमें दृढ़ता से कहा, 'यह भारत और अमेरिका द्वारा गढ़ी गई एक मनगढ़ंत कहानी है,' यहां तक कि जब उन्हें मुंबई के मुर्दाघर में पड़े अपने बेटे के शव की तस्वीरें दिखाई गईं तब भी।
पंजाब, सिंध और इस्लामाबाद में हमने पाकिस्तान की गतिविधियों पर नज़र रखी।
मुंबई हमलों की आंतरिक जांच एक अधूरी प्रक्रिया साबित हुई। इस्लामिक गणराज्य की भावी एफबीआई मानी जाने वाली संघीय जांच प्राधिकरण (एफआईए), जिसमें मेहनती जांचकर्ताओं की टीम थी, को पहले कभी लश्कर की जांच करने की अनुमति नहीं दी गई थी। लेकिन 26/11 के बाद वैश्विक स्तर पर मचे आक्रोश के चलते, एफआईए को सीमित रूप से ही सही, मुंबई में नकदी और खरीद-फरोख्त के ऑपरेशन की जांच करने, तीन हमलावरों और उनके कई नियंत्रकों के करियर की पड़ताल करने के साथ-साथ संगठन के प्रमुख अधिकारी की भी जांच करने की अनुमति दी गई। जांच के केंद्र में रहे एफआईए के वकील और अभियोजक चौधरी जुल्फिकार अली, जिन्होंने कई महत्वपूर्ण जानकारियां और कानूनी दस्तावेज उपलब्ध कराए, ने हमें बताया कि मुंबई जांच एक बोझ बन गई थी। मई 2013 में

इस्लामाबाद में काम पर जाते समय उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई और यह मामला आज भी अनसुलझा है। इस दौरान पाकिस्तान ने भारत पर स्पष्ट और स्वीकार्य सबूत पेश करने में विफल रहने का आरोप लगाया, जो कई महत्वपूर्ण मामलों में सही भी था, हालांकि एफआईए के जांचकर्ताओं ने निजी तौर पर ऑपरेशन बॉम्बे की जटिलता और व्यापकता पर आश्चर्य व्यक्त किया, जिसके बारे में उनमें से कई का मानना था कि इसे आधिकारिक जानकारी और स्वीकृति के बिना अंजाम नहीं दिया जा सकता था।
एफआईए के अनुसार, अभी और भी कई दोहरे खेल चल रहे थे। जांचकर्ताओं का मानना था कि वाशिंगटन ने भी लश्कर के खिलाफ बढ़ते सबूतों को नजरअंदाज करना चुना, क्योंकि वह पाकिस्तानी सेना को नाराज करने से बचना चाहता था, जिसका समर्थन अमेरिका को अफगान तालिबान और अल-कायदा के खिलाफ लड़ाई में मदद करने के लिए आवश्यक था। इन्हीं जांचकर्ताओं का मानना है कि डेविड हेडली को भी अमेरिकी खुफिया समुदाय में उसके समर्थकों द्वारा तब तक बर्दाश्त किया गया, जब तक वह एक संभावित स्रोत बना रहा जो अंततः उन्हें उस समय के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य तक पहुंचा सकता था: ओसामा बिन लादेन।
इन विचारों को फ्रांसीसी और ब्रिटिश सुरक्षा सूत्रों का ज़बरदस्त समर्थन प्राप्त है, जिन्होंने हमें 2007 में अमेरिकियों को दी गई उस रिपोर्ट के बारे में बताया, जिसमें लश्कर को केंद्र में रखकर एक नए वैश्विक आतंकी गठबंधन की चेतावनी दी गई थी।
साजिद मीर 2003 में ही पश्चिमी खुफिया एजेंसियों की नजर में आ गया था, जब उसने कोकेशियाई और अफ्रीकी धर्मान्तरित लोगों, यानी 'साफ-सुथरे लोगों' की भर्ती शुरू की थी, ताकि भविष्य के अभियानों के लिए उन्हें जुटाया जा सके, जो लश्कर के पाकिस्तान की सेना के साथ हुए समझौते का उल्लंघन था, जिसके तहत केवल भारतीय प्रशासित कश्मीर पर ध्यान केंद्रित किया जाना था।
यूरोपीय दस्तावेज़ ने विस्तृत रूप से बताया कि इन अभियानों में से एक में लश्कर द्वारा भर्ती किया गया एक फ्रांसीसी धर्मान्तरित व्यक्ति शामिल था, जिसकी अक्टूबर 2003 में गिरफ्तारी ने ऑस्ट्रेलिया में एक परमाणु प्रतिष्ठान पर हमले की लश्कर की सुनियोजित साजिश का पर्दाफाश किया। यह साजिश लश्कर के पहले अंतरराष्ट्रीय सनसनीखेज प्रयासों में से एक थी। फ्रांसीसी बंदी से पूछताछ के बाद पश्चिमी खुफिया एजेंसियों ने यूरोप और अमेरिका में उसके जैसे दर्जनों और रंगरूटों की पहचान की, जो जिहादी

'स्लीपर' थे और लंदन के आलीशान होटलों पर कई छापे और अंग्रेजी यहूदी प्रार्थना स्थलों पर हमले सहित कई हमलों को अंजाम देने के लिए सक्रिय होने का इंतजार कर रहे थे।
रिपोर्ट में बताया गया कि मीर अपने ब्रिटिश सहयोगी को 'दुकान' कहकर बुलाता था, जो उर्दू में 'दुकान' का अर्थ है। लेकिन जब ब्रिटिश जासूसों ने दुकान के घर पर छापा मारने की तैयारी की, तो वह भाग गया। व्हाइट हाउस को चेतावनी दी गई थी, 'लश्कर या तो बिखर जाएगा या अल-कायदा जैसी संस्था में बदल जाएगा, जो देश और विदेश में अमेरिका और ब्रिटेन के हितों को निशाना बनाने की पूरी कोशिश कर रही है, खासकर भारत को।' एक साल से भी कम समय में, रिपोर्ट में की गई लगभग सभी भविष्यवाणियां मुंबई में सच साबित हो गईं।
26/11 की घटना के एक महीने बाद, डेविड हेडली के पिता सैयद सलीम गिलानी का लाहौर में निधन हो गया। हेडली उस समय देश से बाहर थे, लेकिन पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने गिलानी परिवार के घर जाकर शोक संवेदना व्यक्त की। हेडली ने इस बात का जिक्र अपने अल-कायदा समर्थक मित्र पाशा को भेजे एक ईमेल में किया, जो गिलानी के अंतिम संस्कार में शामिल हुए थे। पाकिस्तानी सरकार और हेडली के बीच मिलीभगत की खबरों को खारिज करते हुए, हेडली के सौतेले भाई दान्याल ने एक बयान जारी कर कहा कि प्रधानमंत्री शिष्टाचारवश आए थे, 'क्योंकि मैं उनका पीआरओ था और मेरे पिता एक जाने-माने प्रसारक थे।' दिसंबर 2008 में, 26/11 के बाद पाकिस्तान में उत्पन्न स्थिति को लेकर डेविड हेडली और मेजर इकबाल के बीच ईमेल का तांता लग गया। हेडली चिंतित थे कि साजिद मीर और पाशा दोनों ही छिप गए हैं, और उन्हें पता चला था कि एम 2 (फैजा) और चांद भाई से पाकिस्तानी अधिकारी पूछताछ कर रहे हैं। चाचा ज़की के गिरफ्तार होने पर आत्मसमर्पण करने की संभावना और पाशा के पिंडी में आईएसआई के मुखबिरों द्वारा पकड़े जाने की अफवाहों के बाद उन्होंने अपने अधिकांश डिजिटल संचार बंद कर दिए। हालांकि, जल्द ही उनका ध्यान एक नई साजिश, तथाकथित मिकी माउस प्रोजेक्ट, की ओर आकर्षित हो गया। यह डेनिश अखबार जिलैंड्स-पोस्टेन पर हमला करने की योजना थी, जिसने पैगंबर मोहम्मद का मजाक उड़ाने वाले कार्टून प्रकाशित किए थे। एक बार फिर हेडली को पाशा और मेजर इकबाल के निर्देश पर निगरानी के लिए भेजा गया, जो मुंबई में बिना किसी नुकसान के वापस आ गए।

हेडली को अंततः अक्टूबर 2009 में शिकागो के ओ'हेयर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पाकिस्तान जाते समय गिरफ्तार किया गया। हालांकि अमेरिकी विदेश विभाग ने दावा किया कि हेडली विवादास्पद प्रिज्म कार्यक्रम से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक निगरानी के परिणामस्वरूप पकड़ा गया था, लेकिन उसकी गिरफ्तारी ब्रिटिश खुफिया विभाग की सूचना के बाद हुई थी। उसी वर्ष की शुरुआत में वह साजिद मीर के एक जिहादी सहयोगी से मिलने के लिए ब्रिटेन गया था, जो डर्बी में रहता था। जनवरी 2013 में हेडली को मुंबई हमलों में उसकी भूमिका के लिए दोषी ठहराया गया। लेकिन अधिकारियों के साथ एक और समझौता करने के बाद, उसे केवल पैंतीस साल की जेल की सजा सुनाई गई और उसे भारत को प्रत्यर्पित करने से बचा लिया गया।
डेविड हेडली के सह-आरोपी और पूर्व कैडेट कॉलेज मित्र तहाव्वुर राणा को मुंबई हमलों के मामले में निर्दोष पाया गया। डेविड हेडली की दूसरी पत्नी शाज़िया और उनके चार बच्चे अभी भी शिकागो में रहते हैं, जबकि उनकी तीसरी पत्नी फ़ैज़ा औथलहा मोरक्को लौट गईं। वाशिंगटन ने भारी सबूतों के बावजूद हेडली की दोहरी भूमिका को कभी औपचारिक रूप से स्वीकार नहीं किया, लेकिन परिवार के सदस्यों ने हमें बताया कि वे इस बात को सच मानते हैं।
भारतीय जांचकर्ताओं ने अजमल कसाब के खिलाफ 11,000 पन्नों की आरोपपत्र दायर की, जिसे अगस्त 2012 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा युद्ध छेड़ने का दोषी पाया गया और मौत की सजा सुनाई गई। 5 नवंबर 2012 को भारतीय राष्ट्रपति ने उसकी दया याचिका खारिज कर दी और उसकी मां को सूचित करने के औपचारिक अनुरोध के बाद, उसे 21 नवंबर 2012 को सुबह 7:30 बजे पुणे की यरवदा जेल में फांसी दे दी गई और उसके शव को जेल परिसर के भीतर दफना दिया गया। हमलों के बाद, उनके परिवार को अजमल द्वारा रवाना होने से पहले हाथ से लिखा गया एक पत्र मिला। ‘आदरणीय माता-पिता! आज, इंशाअल्लाह, मैं अपना कर्तव्य निभाने के लिए अधिकृत कश्मीर के लिए रवाना हो रहा हूँ। मुस्लिम भाई-बहनों की कराह और चीखें मुझे पुकार रही हैं... जीवन और मृत्यु अल्लाह के हाथों में है, लेकिन युद्ध के मैदान में होने वाली मृत्यु के समान कोई मृत्यु नहीं है।’
उसके नौ सह-हमलावरों के शव जनवरी 2010 तक जेजे अस्पताल के मुर्दाघर में पड़े रहे, जब उन्हें एक गुप्त स्थान पर दफना दिया गया। दस में से किसी भी

शव पर किसी ने दावा नहीं किया। जैसा कि कसाब को आशंका थी, उनमें से कोई भी अपने घर नहीं लौट पाया।
हेडली और कसाब (साथ ही पकड़े गए भारतीय मुजाहिद अबू हमजा) दोनों ने दावा किया कि साजिद मीर ही ब्रदर वसी था, जो कराची नियंत्रण कक्ष में तैनात प्रमुख लोगों में से एक था। एटीएस ने उनकी बातचीत सुनी थी। 2011 में, मीर, जिसने हेडली के साथ अपने कुछ ईमेल पत्राचार में 'वसी' उपनाम का इस्तेमाल किया था, पर मुंबई में हत्या की साजिश रचने के आरोप में एक अमेरिकी जिला अटॉर्नी द्वारा उसकी अनुपस्थिति में मुकदमा चलाया गया, जहां छह अमेरिकी नागरिकों की हत्या कर दी गई थी। वह अभी भी फरार है।
लश्कर के अमीर ज़की-उर-रहमान लखवी को एफआईए ने फरवरी 2009 में कराची के प्रमुख अबू अल-क़ामा और लश्कर के मीडिया आयोजक और कंप्यूटर विशेषज्ञ ज़रार शाह के साथ गिरफ्तार किया था। ज़की रावलपिंडी की अडियाला जेल में मुकदमे का इंतजार कर रहे हैं, जहां उनकी जिंदगी आराम से चल रही है, उन्हें मोबाइल फोन इस्तेमाल करने की इजाजत है और हाल ही में जन्मी अपनी पत्नी के साथ उन्हें वैवाहिक अधिकार प्राप्त हैं। 26/11 के बाद, आईएसआई प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल शुजा पाशा ने उनसे जेल में मुलाकात की, लेकिन मुंबई हमलों में किसी भी तरह की सरकारी संलिप्तता से उन्होंने सख्ती से इनकार किया। दिलचस्प बात यह है कि वासी उपनाम चाचा ज़की के बेटे मोहम्मद कासिम का छद्म नाम था, जो 2007 में कश्मीर में युद्ध में शहीद हो गए थे। अबू हमज़ा, भारतीय फिदायीन प्रशिक्षक, जिसने हमलावरों को हिंदी सिखाई थी, को 2012 में सऊदी अरब से भारत प्रत्यर्पित किया गया था, जहां वह मुकदमे का इंतजार कर रहे हैं।
अबू क़हाफ़ा, जिसे 'बुल' के नाम से जाना जाता था, जो इस गिरोह का संचालक था, की पहचान आज तक नहीं हो पाई है। न ही मेजर इक़बाल की, जो डेविड हेडली का आईएसआई संपर्क था और जिसने मुंबई में अपने सूचना संग्राहकों 'चूहों' की भर्ती की थी, और जिसने 'हनी बी' नाम के एक भारतीय डबल एजेंट का दावा किया था। इनमें से किसी भी सूत्र का पता नहीं चल पाया है और न ही उनकी पहचान हो पाई है।
अप्रैल 2012 में अमेरिकी सरकार ने मुंबई हमलों में अपनी भूमिका के लिए लश्कर के सह-संस्थापक और उसकी मूल संस्था जमात-उद-दावा के अमीर हाफ़िज़ सईद के सिर पर 10 मिलियन डॉलर का इनाम घोषित किया था। लेकिन सईद आज भी

आज़ाद है। जब हम मुरीदके स्थित संगठन के विशाल परिसर में उससे मिले, जो सशस्त्र गार्डों और चौकियों की भारी सुरक्षा से घिरा हुआ था, तो सईद ने अपने ऊपर लगे आरोपों को खारिज करते हुए संगठन के कॉलेज से स्नातक हो रहे कई हज़ार धार्मिक छात्रों के सामने अपनी बात रखी। उसने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'मैं पश्चिम का डरावना आदमी हूँ, किसी के लिए लाखों डॉलर का। लेकिन मैं छिपा नहीं हूँ। मैं यहीं हूँ, आप लोगों के साथ बैठा हूँ।' उसने अपनी दाढ़ी संवारी और फिर अपने छात्रों की ओर दोनों बाहें फैलाकर इशारा किया, जिन्होंने जयकार करते हुए कहा: 'ईश्वर महान है।' फिर सईद खड़ा हुआ और आकाश की ओर इशारा किया। ‘वे मुझे ऊपर से लेने नहीं आए हैं,’ उन्होंने अल-कायदा और तालिबान के कई लोगों को मार गिराने वाले ड्रोन हमलों का जिक्र करते हुए कहा, ‘या वहाँ से।’ उन्होंने बाहर धूल भरी गलियों की ओर इशारा करते हुए उन असाधारण प्रत्यर्पणों की याद दिलाई, जिनमें आतंकी संदिग्धों को हिरासत में लेकर सीआईए के गुप्त ठिकानों पर ले जाया गया था। ‘और ऐसा इसलिए है क्योंकि अमेरिका को मेरी ज़रूरत है ताकि मैं उनके लोगों का ध्यान उनके अपने देश के पतन से हटा सकूँ।’ सईद ने प्रशंसा में सिर हिलाया और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ बाहर निकल गए। वे पिक-अप गाड़ियों के काफिले की ओर बढ़े, जिनमें से कई सशस्त्र सुरक्षाकर्मियों से लैस थे। उनमें से कई एक ही तरह की साफ-सुथरी, संस्थागत वेशभूषा में थे: एविएटर चश्मे, इस्त्री की हुई खाकी पैंट, सेना के छोटे बाल और असॉल्ट राइफलें। एफआईए के जांचकर्ता और अभियोजक चौधरी जुल्फिकार अली की हालिया हत्या यह सुनिश्चित करेगी कि मुंबई और हाफिज सईद की इसमें संलिप्तता के बारे में सच्चाई कुछ और समय तक दबी रहे।

फाड़ना

नवंबर 2008 के आतंकवादी हमलों में कुल 166 लोग मारे गए और 300 से अधिक घायल हुए। ताज होटल में तैंतीस लोगों की मौत हुई: विजय बंजा - शेफ, रसोई में मारे गए।
विलेम-जान बर्बर्स - बेल्जियम-डच अतिथि, चेक-इन करते समय गोली मार दी गई। जर्मन राजनेता और टीवी निर्माता सीनेटर राल्फ बर्कई की खिड़की से गिरने के बाद लगी चोटों के कारण मृत्यु हो गई।
गौतान गोसाईं - रसोई में हत्या किए गए शेफ
चैतलाल गननेस - अतिथि, कमरा नंबर 551 में ली गई तस्वीर
राजन कांबले - ताज इंजीनियर, चैंबर्स निकासी में गोली मार दी गई
कैज़ाद कामदीन - रसोइया, रसोई में मारा गया
नीति सिंह कांग – करमबीर की पत्नी, छठी मंजिल के कमरे में निधन हो गया। समर वीर कांग - पांच साल का, करमबीर का बेटा
उदय सिंह कांग - बारह वर्ष की आयु, करमबीर का पुत्र
हेमटलता कासिपिल्लई - मलेशियाई महिला, उनका शव कमरा नंबर 637 में मिला था। फ़िरोज़ खान - होटल में एक सांसद से मिलने के दौरान उनकी हत्या कर दी गई। रवींद्र जगन कुंवर - सुरक्षा अधिकारी, होटल में गोली लगने से मौत एंड्रियास लिवेरस - ब्रिटिश उद्यमी, चैंबर्स में हत्या कर दी गई
डगलस मार्केल - ऑस्ट्रेलियाई व्यवसायी, तीसरी मंजिल से भागने की कोशिश करते समय गोली लगने से मौत हो गई।
फॉस्टीन मार्टिस - सी लाउंज में मुख्य वेटर, रसोई में हत्या कर दी गई। ज़हीन मतीन - रसोई में हत्या किया गया रसोइया
माइकल स्टुअर्ट मॉस - कनाडाई जनरल प्रैक्टिशनर, पूल में गिरने से मौत हो गई अमित थडानी की दोस्त गुंजन नारंग को तहखाने में गोली मार दी गई।
नीलम नारंग - तहखानों में मारी गई गुंजन की मां
विष्णु नारंग - गुंजन के पिता - को तहखाने में गोली मार दी गई।
सदानंद पाटिल - प्रशिक्षु प्रबंधक, लॉबी में सिर में गोली लगने से मौत रुपिंदर रंधावा - शिक्षक, चैंबर्स से लोगों को निकालते समय मारे गए
बोरिस रेगो - रसोइया, तहखाने में मारा गया

एलिजाबेथ रसेल - कनाडा की नर्स, पूल में गोली लगने से मौत
सबीना सहगल सैकिया - लेखिका, का निधन सनराइज सुइट में हुआ।
राजीव सरस्वती - अतिथि, विल पाइक और केली डॉयल के ठीक ऊपर चौथी मंजिल पर स्थित कमरे में मारे गए।
रहमतुल्लाह शौकतअली - शामियाना में हेड वेटर, रेस्तरां में गोली मार दी गई मकसूद शेख - होटल में एक सांसद से मिलने के दौरान उनकी हत्या कर दी गई।
एसआरपीएफ के रिजर्व कांस्टेबल राहुल शिंदे की सीसीटीवी कक्ष से बाहर निकलते समय हत्या कर दी गई।
हेमंत तालीम - शेफ, रसोई में फिल्माया गया
पाम लाउंज में एनएसजी के मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की हत्या कर दी गई।
थॉमस वर्गीस - मुख्य वेटर, रसोई में हत्या कर दी गई। लुसी, खोजी कुतिया - महल की लॉबी में गोली मार दी गई।

स्रोतों पर एक टिप्पणी

ताज होटल की घेराबंदी को समझने में कई चुनौतियाँ थीं। संकट के समय भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है। आग की चपेट में आए या जलती हुई इमारत में फंसे लोगों की एक ही घटना की यादें बिल्कुल अलग-अलग हो सकती हैं, जिससे हमारे लिए घटनाओं का सटीक क्रम निर्धारित करना मुश्किल हो जाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, हमने इस पुस्तक के लिए चार महाद्वीपों और दस देशों में सैकड़ों लोगों का साक्षात्कार लिया: मेहमान, ताज होटल के कर्मचारी, विशेष बल, पुलिस, सैनिक, चश्मदीद गवाह, हमलों को कवर करने वाले पत्रकार, विदेशी जांचकर्ता, राजनयिक और विदेशी और भारतीय खुफिया एजेंट (सेवारत और सेवानिवृत्त), साथ ही भारतीय आपातकालीन सेवाओं के कई सदस्य, जिनमें अग्निशामक, एम्बुलेंस चालक और अस्पताल के कर्मचारी, सर्जन और नर्स शामिल थे।
एक बार जब हमने विचारों का एक संग्रह तैयार कर लिया, तो हमने प्रमुख दृश्यों की पहचान की और फिर प्रत्येक दृश्य के लिए आम सहमति बनाने का प्रयास किया, लिखित कथनों को ठोस आंकड़ों से मिलाया। मोबाइल फोन उपयोगी साबित हुए। अक्सर किसी अतिथि, होटल प्रबंधक या पुलिसकर्मी द्वारा भेजा गया एक टेक्स्ट संदेश किसी विशेष दृश्य के विवादित समय को निर्धारित करने में सहायक होता था। हमने सैकड़ों टेक्स्ट संदेश और फोन से ली गई दिनांक और समय वाली तस्वीरें प्राप्त कीं, जिनमें से कुछ का उल्लेख हमने पाठ में किया है, लेकिन अधिकांश का उपयोग घटनाओं को सही समय और स्थान पर स्थापित करने के लिए किया गया था।
हमने भारतीय, अमेरिकी और ब्रिटिश सुरक्षा स्रोतों से हमलावरों के फोन पर लगाए गए वायरटैप से ऑडियो फाइलें और ट्रांसक्रिप्ट प्राप्त किए, जो अब तक संकलित किए गए सबसे पूर्ण संग्रह थे, जिनमें पहले कभी प्रकाशित न हुई सामग्री भी शामिल थी। कई भाषाओं में बोले जाने और कभी-कभी मुश्किल से समझ में आने वाली मुहावरों का उपयोग होने के कारण इनका अनुवाद और क्रॉस-चेक किया गया। हमने होटल के अंदर हमलावरों की बातचीत के वायरटैप ट्रांसक्रिप्ट की तुलना ताज होटल के बंधक कर्मचारियों और उन मेहमानों की

यादों से की, जो कराची में अपने नियंत्रकों से सलाह लेते समय उनके साथ कमरे में मौजूद थे। इससे हमें घटना के समय और सटीकता का सटीक अनुमान लगाने में मदद मिली।
सीसीटीवी फुटेज का मिलान साक्षात्कारों में बताई गई घटनाओं से भी किया गया। हालांकि, होटल के कुछ फुटेज ताज होटल पर हमला करने वाले दो हमलावरों की पहचान को लेकर हमारे मन में सवाल खड़े करते हैं। पुलिस का कहना है कि पीले रंग की वर्दी में हमलावर अबू अली था और इसलिए वह फ्रंट लॉबी टीम का हिस्सा था, जबकि काले रंग की वर्दी में हमलावर अबू उमर था और वह लियोपोल्ड टीम का हिस्सा था। लेकिन हमारा मानना है कि सीसीटीवी फुटेज इसके विपरीत साबित करता है। पाकिस्तान में अपने हैंडलरों के साथ आतंकवादियों की हुई बातचीत के रिकॉर्ड में अली बार-बार कहता है कि उसके पैर में चोट लगी है और वह अपना काम ठीक से नहीं कर सकता। पुलिस का कहना है कि जब बंदूकधारियों ने पैलेस लॉबी में ताज होटल की खोजी कुत्तों की टीम पर हमला किया और उन्हें मार डाला, तो एक गोली छिटककर उसके पैर में लगी थी। सीसीटीवी फुटेज में, काले रंग की वर्दी में लंगड़ाते हुए, एक जूता उतारे हुए और पैर पर कपड़ा बांधे हुए एकमात्र आतंकवादी के पैर में चोट दिखाई देती है। अगर इन दोनों की पहचान बदल गई है, तो ट्रायल कोर्ट के सभी दस्तावेज़ गलत हैं। हमें इस संबंध में कई अन्य विसंगतियां मिलीं कि कौन से बंदूकधारी किस स्थान पर थे, और अबू उमर और अबू रहमान 'बदा' के शवों की तस्वीरें कभी उपलब्ध नहीं कराई गईं।
अजमल कसाब के मुकदमे से जुड़े हजारों अप्रकाशित अदालती दस्तावेज़, जिनमें उससे की गई कई पूछताछें भी शामिल हैं, हमने प्राप्त किए। इनमें से कई बयान विरोधाभासी थे, लेकिन हमने उन्हें अपनी समयरेखा में शामिल किया, और हलफनामों ने हमें दिए गए बयानों को और पुष्ट किया। इसी तरह, पुलिस संपर्कों के माध्यम से हमें क्राइम ब्रांच की साक्ष्य पुस्तिकाओं के हजारों पन्ने पढ़ने को मिले, जो 26/11 की आपराधिक जांच के दौरान संकलित किए गए थे, जिनमें सभी गवाहों के बयान और फोरेंसिक साक्ष्य रिपोर्ट शामिल थीं। हमने प्रधान आयोग को प्रस्तुत गोपनीय अनुलग्नकों के साथ-साथ उन विदेशी खुफिया एजेंसियों के आकलन भी प्राप्त किए, जिन्होंने हमले के दौरान भारत को तकनीकी सहायता और बाद में फोरेंसिक सेवाएं प्रदान की थीं। हमने मुंबई में जांचकर्ताओं को प्रदान किए गए एफबीआई विश्लेषण और नई

दिल्ली में घरेलू और विदेशी खुफिया एजेंसियों के साथ साझा किए गए अधिक जटिल खुफिया दस्तावेज़ों का अध्ययन किया।
स्वाभाविक रूप से, इनमें से कुछ पुनर्निर्मित घटनाएँ व्यक्तिगत यादों से मेल नहीं खाएँगी, जो किसी व्यक्ति को किसी अन्य स्थान पर, किसी अन्य समय में रखती हैं, जैसा कि कुछ संवादों के साथ भी हो सकता है। हालाँकि, सटीकता सुनिश्चित करने के लिए हमने प्रत्येक पुनर्निर्मित दृश्य को यथासंभव अधिक से अधिक लोगों को दिखाने का प्रयास किया है। कुछ उद्धरणों की तुलना उन साक्षात्कारों से की गई है जो जीवित बचे लोगों ने उस समय केबल समाचार चैनलों और समाचार पत्रों को दिए थे, या सीधे उनसे लिए गए हैं, ताकि उस क्षण की प्रामाणिकता को दर्शाया जा सके - उनके तत्कालीन विचार, न कि बाद में सोचे गए विचार।
इस पुस्तक के शोध के दौरान हमने भारत और ब्रिटेन के समाचार पत्रों के पुस्तकालयों का उपयोग करते हुए हमलों की हजारों तस्वीरों का अवलोकन किया, साथ ही अधिकांश भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय केबल समाचार चैनलों से सैकड़ों घंटे के टीवी फुटेज भी देखे। सबसे नाटकीय विवरणों में से एक ब्रिटिश निर्देशक डैन रीड द्वारा निर्मित पुरस्कार विजेता फिल्म 'टेरर इन मुंबई' थी, जिसका प्रसारण विश्व भर में हुआ था। हमने सचिन वाजे द्वारा लिखित हमलों का विवरण, 'जिनकुन हारलेली लड़ाई' (जीती और फिर हारी) का मूल मराठी से अनुवाद भी किया। वाजे एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी और मुठभेड़ विशेषज्ञ हैं और उन्होंने सेवारत पुलिस अधिकारियों की एक बड़ी संख्या का साक्षात्कार लिया था, इसलिए उनका काम बल के भीतर से एक दिलचस्प दृष्टिकोण प्रदान करता है, हालांकि कई मामलों में यह हमारे दृष्टिकोण से भिन्न है। हरिंदर बावेजा द्वारा संपादित और 2009 में प्रकाशित पुस्तक '26/11 मुंबई अटैक्ड' हमलों पर एक प्रारंभिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें कुछ ठोस फोरेंसिक रिपोर्टिंग शामिल है, विशेष रूप से तहलका पत्रिका के जांच संपादक आशीष खेतान द्वारा, जिन्होंने हमलों की भविष्यवाणी करने वाले खुफिया सुरागों और ताज होटल और मुंबई के अन्य संस्थानों द्वारा अनदेखी की गई सुरक्षा ब्रीफिंग की जांच की। मुंबई पुलिस बल के सामने मौजूद ऐतिहासिक समस्याओं पर व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए, श्रीनिवासन जैन द्वारा लिखित 'द अनटचेबल्स' नामक समीक्षा को पढ़ना भी उपयोगी होगा, जो सर्वप्रथम 'ओपन' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

पाकिस्तान, लश्कर-ए-तैबा और देश के सुरक्षा तंत्र से संबंधित खंड इस्लामिक गणराज्य में विदेशी संवाददाता, लेखक और फिल्म निर्माता के रूप में अठारह वर्षों के काम का परिणाम हैं, जिसमें हमने आतंकवाद-विरोधी और कट्टरपंथ-विरोधी गतिविधियों में लगे लोगों और सांप्रदायिकता के विभिन्न रूपों का अध्ययन करने वाले विद्वानों के साथ बड़ी संख्या में संपर्क स्थापित किए हैं। 'द सीज' के लिए हमने पाकिस्तान में कई महीने बिताए, जहां हमने सरकारी अधिकारियों, सेवानिवृत्त खुफिया अधिकारियों, राजनयिकों, सेवारत और सेवानिवृत्त सैनिकों, नागरिक जांचकर्ताओं, साथ ही पाकिस्तानी शिक्षाविदों और पत्रकारों के साथ काम किया। हमारे जाने के बाद शोधकर्ताओं के एक समूह ने हमारी ओर से काम जारी रखा। कई मौकों पर, उन्हें खुफिया एजेंट होने का दावा करने वाले लोगों द्वारा किसी गांव या कस्बे को छोड़ने के लिए कहा गया। आईएसआई इस मुद्दे को लेकर बेहद संवेदनशील है और वह नहीं चाहती कि इसकी गहराई से जांच की जाए।
हमने मुज़फ़्फ़राबाद और मुरीदके में स्थित उनके कुछ प्रशिक्षण और शिक्षा केंद्रों का दौरा किया और लश्कर के दर्जनों सेवारत और पूर्व कार्यकर्ताओं से संपर्क साधा, जिनमें विभिन्न गुटों (कल्याणकारी, धार्मिक, सैन्य) के अधिकांश नेता शामिल थे। इस संपर्क को स्थापित करने में कई महीने लग गए, और कुछ काम सेवानिवृत्त खुफिया अधिकारियों के माध्यम से किया गया। हमने अन्य सुन्नी सांप्रदायिक समूहों के प्रमुख सदस्यों और पदाधिकारियों का भी साक्षात्कार लिया, जिन्होंने लश्कर पर करीब से नज़र रखी है और इस दुनिया को अच्छी तरह से जानते हैं, जिनमें सिपाही-ए-सहबा (जिसका नाम 2002 में बदलकर अहले सुन्नत वल जमात कर दिया गया) और लश्कर-ए-झांगवी शामिल हैं। इन दोनों संगठनों को पाकिस्तान और अमेरिका में आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया गया है, जिसके कारण ये बैठकें लंबी और संवेदनशील रहीं, लेकिन अंततः सफल होने पर बेहद उपयोगी साबित हुईं। इन सभी साक्षात्कारों से ऑपरेशन बॉम्बे के संदर्भ, लश्कर के भीतर डेविड हेडली के बारे में बढ़ते संदेह - जिससे अंततः यह निष्कर्ष निकला कि वह 'अमेरिका का एक उपयोगी जासूस' था - और उसके बाद के घटनाक्रमों पर स्पष्ट विचार प्राप्त हुए।
एफआईए ने अपनी जांच में निर्धारित दायरे के भीतर रहते हुए कई महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। देशभर से एफआईए के सेवारत और सेवानिवृत्त एजेंट, जिनमें से कई आतंकवाद के विश्लेषण में लंबा अनुभव रखते हैं, ने लश्कर की भर्ती

रणनीति और खरीद अभियान पर अमूल्य टिप्पणियां प्रदान कीं। एक विदेशी खुफिया एजेंसी ने हमें एफआईए द्वारा संकलित साक्ष्यों का संग्रह दिखाया और हमें तेरह नामजद अपराधियों के संपूर्ण अभियोजन दस्तावेज तक पहुंच प्राप्त हुई, जिनमें से अधिकांश अंतिम अभियान में मध्यस्थ थे। हमने मुकदमे का सामना कर रहे लोगों की पूछताछ रिपोर्ट भी पढ़ीं।
लश्कर के बारे में हमने तीन खंडों वाली पुस्तक 'हम मा'एन लश्कर-ए-तैबा की' (हम, लश्कर-ए-तैबा की माताएँ) का अध्ययन करके बहुत कुछ सीखा। यह पुस्तक 1,000 से अधिक पृष्ठों की है और इसे लश्कर के महिला अनुभाग की प्रमुख उम्म-ए-हम्मद ने लिखा है, जो कथित तौर पर युद्ध में शहीद हुए दो लश्कर कार्यकर्ताओं की माँ हैं। इसमें 184 'शहीदों' के जीवन और मृत्यु का विवरण देते हुए संगठन के गठन और उसके दर्शन की रोचक जानकारी दी गई है। सी. एम. नईम द्वारा इस कृति की एक उत्कृष्ट समीक्षा 15 दिसंबर 2008 को आउटलुक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। अप्रैल 2013 में, वेस्ट प्वाइंट स्थित आतंकवाद विरोधी केंद्र ने 'लश्कर-ए-तैबा के लड़ाके: भर्ती, प्रशिक्षण, तैनाती और मृत्यु' नामक पुस्तक प्रकाशित की। इस अध्ययन में लश्कर के उर्दू प्रकाशनों से सामग्री लेकर 900 लड़ाकों के मार्गों का विश्लेषण किया गया, जिसका उद्देश्य 26/11 के बाद लश्कर के बारे में बढ़ी अंतरराष्ट्रीय जागरूकता को देखते हुए उसकी कार्यप्रणाली पर प्रकाश डालना था। सांख्यिकीय दृष्टि से यह रोचक है, लेकिन लश्कर के मूल स्वरूप से काफी दूर है। अंत में, स्टीवन टैंकेल की पुस्तक 'स्टॉर्मिंग द वर्ल्ड स्टेज: द स्टोरी ऑफ लश्कर-ए-तैबा' लश्कर के उदय और 26/11 हमलों का अच्छा वर्णन करती है, जिसमें लश्कर की अपनी सामग्री के कुछ रोचक अनुवाद शामिल हैं। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में लश्कर के समानांतर चलाए गए सर्वेक्षणों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। ये सभी सर्वेक्षण लश्कर के विदेशी अभियानों के उप प्रमुख साजिद मीर और डेविड हेडली की भूमिका को स्पष्ट करने में विशेष रूप से सहायक रहे। इन सर्वेक्षणों से हेडली की छवि एक डीईए (अमेरिकी खुफिया एजेंसी) के उकसाने वाले और अमेरिकी खुफिया विभाग के सूत्र/मुखबिर के रूप में उभरी। गोपनीय सामग्री तक पहुंच रखने वाली विश्वसनीय एजेंसियों और अनुभवी पर्यवेक्षकों के इन विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि हेडली को अमेरिकी खुफिया समुदाय के कुछ तत्वों द्वारा बर्दाश्त किया जा रहा था, क्योंकि उसने जांचकर्ताओं को ओसामा बिन

लादेन को गिरफ्तार करने के और करीब ले जाने का लुभावना वादा किया था। अमेरिकी खुफिया समुदाय स्वयं हेडली को आतंकवादी के अलावा कुछ और बताने को तैयार नहीं है, और सीआईए और एफबीआई ने इस पर कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है। हेडली के अमेरिकी रिश्तेदारों ने भी हमें अपने विचार बताए। डेविड हेडली का घटनाओं का विवरण मुख्य रूप से एफबीआई और भारतीय खुफिया एजेंसियों द्वारा की गई पूछताछ से प्राप्त हुआ है।
पेरिस स्थित ट्रिब्यूनल डी ग्रांडे इंस्टेंस के पूर्व उपाध्यक्ष, जीन-लुई ब्रुगुइरे, जो आतंकवाद-विरोधी मामलों से निपटने वाले फ्रांस के प्रमुख जांच न्यायाधीशों में से एक थे, ने साजिद मीर को ट्रैक करने के अभियान का स्पष्ट विवरण दिया और बताया कि इससे लश्कर द्वारा अल-कायदा के समान एक वैश्विक ब्रांड बनने के प्रयासों का खुलासा हुआ। वहीं, हेडली पर अब तक प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ कृति सेबेस्टियन रोटेला की है, जो प्रोपब्लिका और पीबीएस के लिए लिखते हैं। उन्होंने हेडली के उदय और पतन का विश्लेषणात्मक और निष्पक्ष वर्णन किया है। रोटेला ने एक उपयोगी ई-पुस्तक भी लिखी है, जिसका शीर्षक है, पाकिस्तान और मुंबई हमले: अनकही कहानी, जबकि ब्रूस रीडेल की पुस्तक "डेडली एम्ब्रेस: पाकिस्तान, अमेरिका और वैश्विक जिहाद का भविष्य" उन सभी के लिए आवश्यक पठन सामग्री है जो पाकिस्तान के गुप्त तंत्र और जिहाद के बीच संबंधों को समझना चाहते हैं।
मुंबई पुलिस बल के कुछ अधिकारियों ने हमारी काफी मदद की, जिससे हमें कंट्रोल रूम के लॉग, साक्ष्य पुस्तिकाएं और विश्लेषण उपलब्ध हुए। हमने इन दस्तावेजों को शहीद पुलिस अधिकारी हेमंत कामते की विधवा विनीता कामते द्वारा सूचना के अधिकार कानून के तहत प्राप्त जानकारी के साथ जोड़ा। विनीता और उनके परिवार ने रंग भवन लेन में हुई हत्याओं की सही तस्वीर जानने के लिए काफी संघर्ष किया है और उन अधिकारियों से जानकारी निकालने के लिए अथक प्रयास किया है जिन्होंने घटनाक्रम को अस्पष्ट करने की पूरी कोशिश की है। ये लॉग पुलिस बल में व्याप्त अराजकता का एक ठोस चित्र प्रस्तुत करते हैं। नायर अस्पताल में तैयार किया गया पूरा पूछताछ वीडियो और प्रतिलेख, जहां कसाब को पकड़े जाने के बाद पहली बार पूछताछ की गई थी, भी अमूल्य साबित हुआ।
ताज होटल के अंदर की कहानियाँ बड़ी मेहनत से ताज के कर्मचारियों और उनके परिवारों के साथ-साथ मेहमानों और भोजन करने वालों से एकत्र की गईं। उनके

बिना, और विशेष रूप से ताज के रसोइयों और प्रबंधकों के बिना, हम कभी भी उन बलिदानों को नहीं समझ पाते जो उन्होंने किसी भी बचाव कार्य के शुरू होने से पहले के घंटों में किए। निःसंदेह, निहत्थे ताज सुरक्षा दल, ब्लैक सूट्स, साथ ही होटल के रसोइयों और प्रबंधकों ने सैकड़ों लोगों की जान बचाई।

स्वीकृतियाँ

मुंबई के ताज महल पैलेस होटल में हमारे साथ सहयोग करने का जोखिम उठाने वाले सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद। कुछ लोगों ने स्वयं आकर हमें मुंबई और होटल का भ्रमण कराया। अन्य लोगों ने दूर से ही घंटों हमारे साथ रहकर उन घटनाओं को जीवंत किया। विशेष रूप से अमित पेशावे, मल्लिका जगद, ग्रैंड एक्जीक्यूटिव शेफ हेमंत ओबेरॉय और सू-शेफ नितिन मिनोचा को धन्यवाद, जिन्होंने धैर्यपूर्वक ताज महल की कार्यप्रणाली को समझाया ताकि हम इसकी बारीकियों को समझ सकें। हमें आशा है कि हमने एक आम सहमति बनाई है और उन कर्मचारियों के प्रति एक श्रद्धांजलि भी प्रस्तुत की है जो बच गए और जो इस दुनिया से चले गए। असाधारण फॉस्टीन मार्टिस के जीवन के बारे में जानकारी साझा करने के लिए फ्लोरेंस मार्टिस और उनके परिवार को भी धन्यवाद।
ताज होटल की जनसंपर्क निदेशक निखिला पलाट का धन्यवाद, जिन्होंने धैर्य बनाए रखा, भले ही होटल के लक्ष्य हमारे लक्ष्यों से भिन्न थे। साथ ही, बिक्री एवं विपणन की वरिष्ठ उपाध्यक्ष दीपा मिश्रा हैरिस का भी धन्यवाद। पिक्टर की प्रकाशक पद्मिनी मिर्चांदानी का भी धन्यवाद, जिन्होंने 'द ताज ऑन अपोलो बंडर' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें हमलों पर एक अध्याय सहित होटल के इतिहास का शानदार चित्रण किया गया है। इसके लेखक चार्ल्स एलन और मुंबई की प्रख्यात इतिहासकार शारदा द्विवेदी का भी आभार। होटल में कई अन्य लोग भी हैं जिन्होंने अपना नाम गुप्त रखने का अनुरोध किया है। आप सभी का हमसे बात करने के लिए धन्यवाद।
दर्जनों सैनिकों और पुलिस अधिकारियों ने भी हमसे बात की और वे अपना नाम उजागर नहीं करना चाहते, और हम उनके बहुत आभारी हैं।
राकेश मारिया को समय देने के लिए धन्यवाद। विश्वास नांगरे पाटिल और राजवर्धन सिन्हा को विशेष धन्यवाद, जिन्होंने हमलों का पता लगाने और उन्हें रोकने के लिए पुलिस के सर्वोत्तम प्रयासों का विस्तृत विवरण दिया। घेराबंदी की समाप्ति और लश्कर के संचालकों की इलेक्ट्रॉनिक निगरानी को समझने में देवेन भारती की अहम भूमिका रही। ताजमहल के आसपास के थानों के दीपक धोले और कई अन्य अधिकारियों ने हमारे साथ धैर्य बनाए रखा, जबकि राज्य और राष्ट्रीय खुफिया विभाग के अधिकारियों ने चेतावनियों के आधार पर

जानकारी जुटाने का जोखिम उठाया और आतंक के दिनों में इलेक्ट्रॉनिक निगरानी अभियान के बारे में खुलकर बताया। खुफिया ब्यूरो के एक दिग्गज अधिकारी ने सार्वजनिक सेवा के दूसरे क्षेत्र में कदम रखा है, जबकि दूसरे अभी भी सेवा में हैं। दो अन्य अधिकारी सेवानिवृत्त हैं और आगे आने का उन्होंने काफी जोखिम उठाया। ब्रिगेडियर गोविंद सिंह सिसोदिया और उनके परिवार को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) के संचालन के कई पहलुओं से अवगत कराने के लिए धन्यवाद। जे. के. दत्त को भी धन्यवाद, जिनका एनएसजी की तैनाती और आधुनिकीकरण का विस्तृत विवरण महत्वपूर्ण था।
ब्रिटेन (स्कॉटलैंड यार्ड और विदेश कार्यालय), फ्रांस और विशेष रूप से अमेरिका में आतंकवाद-विरोधी विशेषज्ञों और विशेषज्ञों का हम तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं। अमेरिका में हमने संयुक्त आतंकवाद कार्य बल, एफबीआई और सीआईए के लिए काम कर चुके सेवानिवृत्त अधिकारियों के उत्साह के बदौलत कई नए क्षेत्रों में सफलता हासिल की। डेविड हेडली के परिवार के उन सदस्यों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद जिन्होंने अपने 'सोशियोपैथ' रिश्तेदार, जिसकी दोहरी मानसिकता थी, के बारे में हमसे खुलकर बात करने का समय निकाला; किसी भी परिवार के लिए यह एक बहुत बड़ा बोझ होता है। फ्रांस और अन्य जगहों पर साजिद मीर के अभियानों के बारे में अपनी अंतर्दृष्टि और विस्तृत जानकारी देने के लिए जीन-लुई ब्रुगुइरे का भी धन्यवाद। विदेश नीति अनुसंधान संस्थान के वरिष्ठ फेलो और सीआईए के प्रमुख अल-कायदा विशेषज्ञ रहे मार्क सेजमैन का भी धन्यवाद। तहाव्वुर राणा के मुकदमे के दौरान उन्हें विशेषज्ञ गवाह के रूप में बुलाया गया था और उन्होंने कई क्षेत्रों में अपना ज्ञान हमारे साथ साझा किया।
ठाणे में रात 1 बजे डिनर कराने और उसके बाद ईमेल पर खूब हंसी-मजाक करने के लिए सचिन वाजे (और उनके परिवार) का बहुत-बहुत धन्यवाद।
पूर्वी क्षेत्र के अतिरिक्त आयुक्त अशोक कामते की विधवा विनीता कामते और उनके परिवार को विशेष धन्यवाद, जिन्होंने रंग भवन लेन गोलीबारी की परिस्थितियों को समझने के लिए बहुत जोखिम उठाए। विनीता कामते की पत्रकार विनीता देशमुख के साथ लिखी पुस्तक 'टू द लास्ट बुलेट' उनके 'वीर पिता' को एक सशक्त श्रद्धांजलि है। हाल ही में उन्होंने 26/11 के पुलिस कॉल लॉग रिकॉर्ड में कथित छेड़छाड़ की सरकारी जांच के लिए दबाव बनाया है।

सुकेतु मेहता और जीत थायिल को मैक्सिमम सिटी और नार्कोपोलिस लिखने के लिए धन्यवाद, जो मुंबई पर समकालीन सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से दो हैं। रेडिफ की प्रबंध संपादक शीला भट्ट को भी धन्यवाद, जिन्होंने निरंतर सलाह, संपर्क, मित्रता और बेहतरीन गुजराती भोजन उपलब्ध कराया। साथ ही अपराध पत्रकार हुसैन जैदी को भी धन्यवाद, जो थायिल की ब्राउन क्रोज़ को सबसे बेहतर जानते हैं। जैदी एक बेहतरीन सलाहकार थे और बांद्रा में आधी रात को उनके साथ भोजन करना एक सुखद अनुभव था। उनके परिवार को इडली और सांबा के लिए और उनकी पुस्तक हेडली एंड आई के लिए भी धन्यवाद, जो बॉलीवुड अभिनेता और बॉडीबिल्डर राहुल भट्ट और डेविड हेडली के बीच पनपे विचित्र रिश्ते का रंगीन और अंतर्दृष्टिपूर्ण वर्णन करती है। आशीष खेतान ने हमारी मदद नहीं की, लेकिन उन्होंने 26/11 की सार्वजनिक और निजी व्याख्याओं के बीच के अंतरों को समझने के लिए लंबे समय तक कड़ी मेहनत की है। मुंबई मिरर की प्रधान संपादक मीनल बघेल को भी धन्यवाद, जो एक कुशल लेखिका भी हैं। बॉलीवुड में हुए एक दिल दहला देने वाले हत्याकांड पर आधारित उनकी सशक्त रचना 'डेथ इन मुंबई' शहर में अपराध साहित्य की दुनिया में अपनी तरह की पहली रचना थी। ताज होटल के रसोइयों का इतना शानदार चित्र खींचने के लिए फोटोग्राफर इयान परेरा और '26/11 मुंबई अटैक्ड' के संपादन के लिए हरिंदर बावेजा का धन्यवाद, जो उन दिनों की घटनाओं पर आधारित एक शुरुआती रचना होने के बावजूद उल्लेखनीय रूप से सुव्यवस्थित थी।
ताज के उन सभी मेहमानों का तहे दिल से शुक्रिया जिन्होंने हमारे साथ अपनी यादों को ताज़ा करने का साहस किया। के. आर. राममूर्ति और उनके परिवार का साथ देने, कहानियाँ सुनाने और अपने विचार साझा करने के लिए धन्यवाद। रमेश चेरुवोथ का अपने पूर्व बॉस एंड्रियास लिवेरस को इतनी जीवंतता से याद करने के लिए धन्यवाद। निक और वुडी एडमिस्टन ने एलिसिया पर बिताए दिनों और रातों को हमारे लिए जीवंत कर दिया, दिल्ली में रतन कपूर और लंदन में विल क्रिस्टी और टोमासो पोली ने भी ऐसा ही किया। विल और निगेल पाइक का हमारे लगातार सवालों और दखलंदाज़ी भरी मांगों को सहने के लिए धन्यवाद। निखिल सेगल और सावित्री चौधरी (और उनके परिवार) का विशेष रूप से धन्यवाद जिन्होंने हमें सबीना सहगल सैकिया और उनकी दुनिया से परिचित कराया। अंबरीन खान का अपने अंतर्मन के विचार साझा करने के लिए और सुनील सेठी का हमें सही राह दिखाने के लिए धन्यवाद।

अमित और वर्षा थडानी। यह आपकी शादी थी। हमारे लिए इसे दोबारा जीवंत करने के लिए धन्यवाद, जो हम जानते हैं कि आपकी व्यस्त जीवनशैली को देखते हुए यह काफी मुश्किल रहा होगा। सर गुलाम नून ने हमारे साथ असीम धैर्य दिखाया, जब हमने ताज होटल में फंसे रहने के उनके अनुभव के बारे में उनसे सवाल किए और हर छोटी-बड़ी बात पर गौर किया। वर्तमान में सिंगापुर में कार्यरत डॉ. मंगेशिकर ने हमें चैम्बर्स और अन्य जगहों के बारे में विस्तार से बताया, साथ ही भीष्म मनसुखानी ने भी, जो एक महान लेखक और जीवन के गहन जानकार हैं और जिन्हें चैम्बर्स में फंसे रहने के घंटों और अंतिम निकासी की अद्भुत यादें हैं। रोरी स्टेन और बॉब निकोल्स को सौक के बारे में जानकारी देने और किस्से सुनाने के लिए धन्यवाद। हम आशा करते हैं कि एक दिन हम सभी एक साथ मुंबई में होंगे। दूरदराज के इलाकों की बारीकियों को बारीकी से देखने वाले रवि धरणीधरका हमें सौक से गेटवे तक ले गए।
माइक पोलैक की प्रतिभा का धन्यवाद। और लियोपोल्ड अस्पताल से बॉम्बे अस्पताल तक हमें पहुंचाने के लिए लाइन क्रिस्टिन वोल्डबेक का विशेष धन्यवाद। वापस जाना और हमें अपने पीड़ितों के संपर्क में लाना वाकई हिम्मत का काम था।
पाकिस्तान में, कई लोगों ने, जिन्होंने हमारी मदद की, अपनी पहचान गुप्त रखने का अनुरोध किया है। जिन लोगों ने लंबे समय तक हमारा समर्थन और मार्गदर्शन किया है, उनके नाम लिए जा सकते हैं, जिनमें इस्लामाबाद के पूर्व पुलिस महानिरीक्षक सैयद कलीम इमाम, सूचना मंत्रालय में बाह्य प्रचार महानिदेशक समीना परवेज़ और लंदन में पाकिस्तान के उच्चायुक्त वाजिद शम्साल हसन शामिल हैं। हम उत्तरी लंदन में आपसे मिलकर सिगार पीने की उम्मीद करते हैं। लंदन में उप उच्चायुक्त सैयद जुल्फिकार गर्देज़ी ने हमारी मांगों को बड़ी ही सहर्ष संभाला, साथ ही प्रेस अटैची मुनीर अहमद और हमारे अच्छे मित्र, प्रेस मंत्री शब्बीर अनवर ने भी, जो उम्मीद है कि इस पुस्तक के प्रकाशन के समय तक अपनी सुखद सेवानिवृत्ति का आनंद ले रहे होंगे। उच्चायुक्त की सामाजिक सचिव नगमा बट ने हमें कई बैठकों में शामिल कराया और उनसे बात करना हमेशा सुखद अनुभव रहा।
हम जियो न्यूज के सबूख सैयद और स्वात तथा अन्य जगहों पर हमारे साथ काम करने वाले तमुर खान यूसुफजई के आभारी हैं। बुद्धिमान और दूरदर्शी, वे खैबर पख्तूनख्वा के एक प्रभावशाली मार्गदर्शक के रूप में उभर रहे हैं। उनके

पिता, रहीमउल्लाह यूसुफजई का भी धन्यवाद, जो देश के सबसे विनम्र लेकिन जानकार और प्रभावशाली पत्रकारों में से एक हैं। कई वर्षों से रहीमउल्लाह ने हमें सलाह दी है, विशेषज्ञता प्रदान की है, हमारी ओर से फोन किए हैं और परिकल्पनाओं का परीक्षण करते हुए आलस्य और सतही धारणाओं को चुनौती दी है। हम पाकिस्तान पर उनकी निर्णायक पुस्तक की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रीय आतंकवाद-विरोधी प्राधिकरण के प्रमुख के रूप में तारिक परवेज़ की सेवानिवृत्ति से हम सभी को गहरा दुख हुआ। पंजाब पुलिस बल में सीआईडी के प्रमुख के रूप में अपने कार्यकाल से लेकर इस्लामाबाद स्थित संघीय जांच एजेंसी (एफआईए) तक, जिसे उन्होंने महानिदेशक के रूप में पुनर्गठित किया, परवेज़ ने पाकिस्तान के पहले वास्तविक आतंकवाद-विरोधी बल के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे आज भी लोगों और विचारों को जोड़ने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। पुलिस के अतिरिक्त महानिरीक्षक सैयद आसिफ अख्तर भी ऐसा ही कर रहे हैं, जिन्होंने पाकिस्तान से इंटरपोल तक का सफर तय किया और अब सेवानिवृत्ति के बाद कराची में कार्यरत हैं। एफआईए के विशेष जांच समूह (एसआईजी) के प्रमुख खालिद कुरैशी और उनके वज़ीरी डिप्टी सोहेल ताजिक, जो अब पंजाब के मध्य भाग बहावलपुर शहर में वरिष्ठ अधीक्षक हैं, को विशेष धन्यवाद।
डॉ. फेरिहा पेराचा, स्वात और अन्य जगहों पर युवा पुरुषों और लड़कों को कट्टरपंथ से दूर करने के आपके कार्य से हमें परिचित कराने के लिए धन्यवाद। उनकी सहायक सादिया खान को भी धन्यवाद। मेहनती और उत्साही डॉ. मोहम्मद फारूक खान के परिवार के प्रति हमारी संवेदनाएं। वे एक व्यावहारिक और आशावादी व्यक्ति थे, जिनका मानना था कि युवा चरमपंथियों को इस्लाम के सच्चे संदेशों से अवगत कराने का उनका कार्य एक बड़ा बदलाव ला सकता है। एक धर्मनिष्ठ और मेहनती शिक्षाविद, उन्होंने जुलाई 2010 में स्वात में हमसे विस्तार से बात की थी, लेकिन अक्टूबर तक उनकी मृत्यु हो गई, पाकिस्तानी तालिबान के बंदूकधारियों ने उनकी हत्या कर दी।
लाहौर स्थित कॉनकॉर्डिया प्रोडक्शंस की कार्यकारी निर्माता और सीईओ सारा तारेन, हमेशा की तरह आपकी मदद के लिए धन्यवाद और राहत फतेह अली खान के पुरस्कार विजेता संगीत से सजी आपकी पहली फीचर फिल्म 'तमन्ना' को बड़े पर्दे पर लाने के लिए बधाई। पाकिस्तानी सेना के अंतर-सेवा जनसंपर्क (आईएसपीआर) विभाग के मेजर मुहम्मद अली दियाल का भी धन्यवाद, जिन्होंने

हमारी बढ़ती मांगों को विनम्रता और कुशलता से संभाला और हमें देश भर में हर जगह पहुंचाया।
मुंबई में, कुशल पत्रकार प्रणति मेहरा का धन्यवाद, जिन्होंने सिलसिलेवार बम धमाकों और सांप्रदायिक दंगों के सबसे बुरे दौर में मुंबई की कुछ सबसे बड़ी खबरों को कवर किया और शोध और योगदानकर्ताओं को जुटाने में हमारी मदद की। कालबादेवी रोड के पास दादिषेठ अग्यारी लेन में स्थित श्री ठाकर भोजनालय का भी धन्यवाद, जिन्होंने ड्राइविंग, मीटिंग और बातचीत के बीच हमें ऊर्जा प्रदान की। दुर्घटनाओं के लिए जाने जाने वाले फिक्सर नंदन किनी का भी धन्यवाद, जिन्होंने हास्य, सटीकता और शांति के साथ अथक प्रयास से स्थानों और लोगों को संभाला। लंदन में, ट्रू विजन टेलीविजन की टीम का धन्यवाद, जो लगातार हमारे प्रोजेक्ट्स को समर्थन और बढ़ावा देती है। हमारे एजेंट डेविड गॉडविन को उनके अमूल्य सहयोग के लिए और डेविड गॉडविन एसोसिएट्स में उनके सहयोगियों अन्ना वाटकिंस और कर्स्टी मैकलैकलन को हार्दिक धन्यवाद। पेंगुइन में हमारे संपादकों की टीम को भी धन्यवाद, जिन्होंने तीन महाद्वीपों में और इसके विभिन्न रूपों के माध्यम से पांडुलिपि को सुव्यवस्थित और परिष्कृत किया: लंदन में जोएल रिकेट, नई दिल्ली में चिकी सरकार और न्यूयॉर्क में एमिली बेकर। पांडुलिपि को सावधानीपूर्वक दोबारा पढ़ने के लिए हमारे कॉपी-एडिटर मार्क हैंड्सले को भी धन्यवाद। अंत में, लंदन में हमारे दोस्तों और परिवार को धन्यवाद, जिन्होंने यूरोप और दक्षिण एशिया के बीच हमारी निरंतर यात्राओं के दौरान हमें ठहराया और भोजन कराया: केटी और केविन व्हेलन, लेस्ली थॉमस, निंदर और अजय खंडेलवाल, और करेन और जेरेमी लेवी।

शुरुआत

चलिए बातचीत शुरू करते हैं... Penguin को Twitter.com@PenguinIndia पर फॉलो करें हमारी सभी खबरों से अपडेट रहने के लिए YouTube.com/PenguinIndia पर जाएं। फेसबुक पर ‘पेंगुइन बुक्स’ को लाइक करें: facebook.com/PenguinIndia लेखक के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें और
इस तरह की और भी कहानियाँ penguinbooksindia.com पर पढ़ें।

# □□□□□□□ □□□□□

□□□□ | □□□□□ | □□□□□□□ | □□□□□□□□□□□
□□□□□□□□□□ | □□□□ | □□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□
□□□ global.penguinrandomhouse.com □□ □□□ □□□□ □□□□

□□ □□□□□□ 2013 □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□
□□□□□□□□ © □□□□ □□□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□, 2013
□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□
ISBN: 978-0-143-42541-0
□□ □□□□□□ □□□□□□□ 2015 □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□
□-□□□□□□□□: 978-9-351-18400-3
□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□

□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□

*****□□□□□□ *****

sjeet